शम्स तब्रीज़ी

रूमी के कामिल मुर्शिद

साइंस ऑफ़ द सोल रिसर्च सेंटर

शम्स तब्रीज़ी

रूमी के कामिल मुर्शिद

फ़रीदा मैलिकी

साइंस ऑफ़ द सोल रिसर्च सेंटर

ॐ अन्नपूर्णा®
Charitable Trust
WZ-5A/1, Ram Nagar,
Choukhandi Chowk,
New Delhi-110018

विषय सूची

भूमिका 7

परिचय 11
- पुस्तक के बारे में 12
- शम्स के बारे में 44

शम्स के अनुसार मनुष्य-जीवन का महत्त्व 83
- मनुष्य की क्षमता 85
- उचित आचरण 103
- मन 137
- शिष्य 143

परमसत्ता के बारे में शम्स के वचन 151
- परमात्मा 153
- पूर्ण सन्त 158
- दिव्यता की प्राप्ति-आन्तरिक मार्ग 173

शम्स कहानी सुनानेवाले के रूप में 235

रूमी के बारे में शम्स के वचन 279

अपने बारे में शम्स के वचन 299

सन्दर्भ सूची 386

शब्दावली 389

सन्दर्भ ग्रन्थ 396

परमार्थ सम्बन्धी पुस्तकें 398

भूमिका

अगर कोई बात कहने योग्य है और मुझे कहने से रोकने के लिए सारा संसार भी मेरी दाढ़ी पर हाथ डाले हुए है, फिर भी मैं वह बात ज़रूर कहूँगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हज़ार साल बाद भी वह बात उस व्यक्ति तक पहुँच जायेगी जिस तक मैं पहुँचाना चाहता हूँ।

शम्से तब्रीज़ी, मक़ालात 681

गुरु और शिष्य के सक्रिय सम्बन्ध के सन्दर्भ में शम्से तब्रीज़ी के लिपिबद्ध प्रवचनों से लिए गये उद्धरण पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है। यह धारणा प्रचलित है कि शम्स एक ही विद्यार्थी, एक ही शिष्य के लिए आये थे, और उन्होंने अपनी सारी शक्ति और सारा उपदेश उसी पर केन्द्रित किया। वह शिष्य था जलाल अल-दीन रूमी, जिसे प्यार से रूमी के नाम से पुकारा जाता है। रूमी को प्रभु की पहचान द्वारा उसके प्रेम में मग्न व्यक्ति में बदल देना ही उनके जीवन का लक्ष्य था।

इस तरह शम्स के अपने वचन दिव्य 'सत्य' के एक प्रेमी को सम्बोधित करके कहे गये थे। वे वचन अध्यात्म-विद्या और सूफ़ीवाद के इतिहासकारों, साहित्य या कलाम के प्रेमियों, या उन दार्शनिकों के लिए नहीं कहे गये थे, जिन्हें जीवन के उद्देश्य के एक व्यवस्थित उल्लेख की

तलाश हो। शम्स के लिए केवल एक ही चीज़ महत्त्व रखती थी और वह थी दिव्य आत्मतत्त्व की वास्तविकता – वह वास्तविकता जिसे कुछ लोग परमात्मा कहते हैं। अगर शम्स की तरह आपकी भी परमात्मा में दिलचस्पी है, तो आप देखेंगे कि शम्स के कथनों में प्रेरणा और विद्वत्ता दोनों निहित हैं, लेकिन हम आपको पहले ही सावधान कर दें: शम्स के कथनों को समझना आसान नहीं है। वे कभी आपको अपनी उदारता से चकित करेंगे और कभी भाव के धुँधलेपन के कारण आपको हताश कर देंगे, लेकिन वे आपको हमेशा बहुत कुछ और भी पेश करेंगे।

इक्कीसवीं शताब्दी के इस प्रकाशन में अनुवाद के लिए, तेरहवीं शताब्दी की मुहम्मद अली मुवहिद की मूल फ़ारसी रचना *मक़ालाते शम्से तब्रीज़ी* के आधुनिक अंग्रेज़ी में अनुवादित शम्स के कथनों के एक संग्रह का उपयोग किया गया है। यह संग्रह इरानी मूल की एक अमेरिकन महिला ने किया है। यह महिला स्वयं एक आध्यात्मिक गुरु की शिष्या हैं जो समकालीन अध्यात्म-ज्ञानियों की परम्परा में से हैं। यह प्रकाशन शम्स के कथनों का एक व्याख्यात्मक उल्लेख, उनके द्वारा दिये गये उत्तरों का संग्रह या एक आरम्भ से अन्त तक पढ़ने वाली पुस्तक नहीं है। यह तो रत्नों से भरी एक तिजोरी है, ऐसे रत्नों से भरी तिजोरी, जिनके बारे में आप जितना अधिक विचार करेंगे, उतना ही अधिक उनके मूल्य का आपको ज्ञान होता जायेगा।

शम्स का एकमात्र उद्देश्य था मनुष्य की आन्तरिक क्षमता के दिव्य पहलू को एक यथार्थ का रूप देना, उसका अनुभव रूमी के साथ बाँटना और उसका गुणगान करना। जैसा कि आप जल्दी ही जान लेंगे, 'सत्य' बताने में शम्स किसी भी प्रकार का समझौता करने को तैयार नहीं थे। वे अकसर अपने को उस 'एक' से, परमात्मा से, अभेद बताते थे, एक ऐसा तथ्य जिसे कई लोग धर्म विरोधी मान सकते हैं। हो सकता है कोई पूछे कि कोई आम इनसान अपने आप को परमात्मा के स्तर पर कैसे

रख सकता है? ऐसा लगेगा कि शम्स के लिए, जो 'सत्य' को ही सब कुछ मानते थे, अपनी असली हस्ती को और किसी भी तरह बयान करना पाखण्ड करना होता। फिर भी, चाहे शम्स अकसर पाखण्ड की घोर निन्दा करते हैं, जिससे हमें उनकी शिक्षा के इस महत्त्वपूर्ण पहलू का पता चलता है, वे यह भी स्वीकार करते हैं कि 'सत्य' अपने विशुद्ध रूप में किसी विरले को ही ठीक से समझ में आता है, और नि:सन्देह अकसर लोगों को दूर भगा देता है।

शम्स के वचन बहुत गहरे और भावपूर्ण अर्थों से भरपूर हैं। इस प्रकाशन में उन्हें विषयानुसार दर्ज किया गया है, और कई अनुच्छेदों के नीचे संक्षिप्त टिप्पणियाँ भी दी गई हैं, जिनका उद्देश्य यह सुझाव देना है कि उनका एक अर्थ यह भी हो सकता है। सम्भव है कि कुछ अनुच्छेदों से आपको कुछ ख़ास प्राप्त न हो, लेकिन कुछ अन्य अनुच्छेद फ़ौरन हृदय का कोई तार ज़ोर से झनझना दें। यह भी सम्भव है कि शम्स के वचन आपके अन्दर की किसी अँधेरी नुक्कड़ को रौशन कर दें।

शम्स अपने वचनों को सत्य के धनुष से चलाये गये 'बाण' बताते हैं। शम्से तब्रीज़ी के उपदेश के प्रकाशक होने के नाते हम यह आशा करते हैं कि यह पुस्तक शम्स के वचनों को अपने लक्ष्य तक पहुँचाने का साधन बनेगी। अगर एक भी बाण अपने लक्ष्य को बींध देता है, तो पुस्तक ने अपना काम कर दिया। हम यह पुस्तक इस उद्देश्य से प्रस्तुत कर रहे हैं कि शम्स के वचनों से उन लोगों को ज्ञान और प्रेरणा प्राप्त हो जो प्रेम के मैदान के योद्धा हैं और अन्दर के स्थायी 'सत्य' के अनुभव की मस्ती के लिए तड़प रहे हैं, उस मस्ती के लिए जो हमेशा बनी रहती है।

फ़ेथ सिंह
आर.एस.एस.बी. प्रकाशन
ब्यास, भारत

परिचय

मैं जब लिखता नहीं, तो 'शब्द' मेरे अन्दर रहता है,
और हर पल अपना एक अलग ही पहलू दिखाता है।
शब्द तो केवल हक़ (परमात्मा) और उसकी
सुन्दरता से परदा हटाने का साधन मात्र होते हैं।

शम्स, मक़ालात 224–5

पुस्तक के बारे में

शम्स का जन्म ईसा की बारहवीं शताब्दी के लगभग अन्त में उत्तर-पश्चिमी ईरान के तब्रीज़ नगर में हुआ था। उनका नाम शम्स अल-दीन* था लेकिन वे सब जगह शम्स के ही नाम से जाने जाते हैं, जो अरबी का शब्द है और जिसका अर्थ है सूरज। उनके सबसे प्रसिद्ध शिष्य जलाल अल-दीन रूमी ने, जिन्हें उन्होंने अपना साथी बनाया, अपने कलाम में शम्स शब्द के साथ लगातार अठखेलियाँ की हैं।

कुछ समय पहले तक शम्स के बारे में ज़्यादातर लोगों की जानकारी रूमी की रचनाओं तक ही सीमित थी। उन्होंने अपनी अद्भुत रचना दीवाने† शम्से तब्रीज़ी में शम्स के व्यक्तित्व को उभारा और उसे एक आवाज़ प्रदान की। फिर भी शम्स के उन प्रवचनों के नोट्स भी लिए गये थे जो उन्होंने आम सभाओं या कुछ ख़ास लोगों के सामने दिये थे। ये नोट्स मौक़े पर उपस्थित लोगों द्वारा लिए गये जिनमें अधिकांश रूमी के अनुयायी और शिष्य थे। यह अव्यवस्थित और टुकड़ों में बँटी लिखित सामग्री पाँच सौ साल से भी अधिक समय तक लगभग हर एक की नज़र

* किसी नाम के साथ जोड़े जाने पर अल-दीन का शाब्दिक अर्थ 'धर्म का' होता है।
† दीवान का शाब्दिक अर्थ है 'कविताओं की पुस्तक'।

से ओझल रही। संग्रह के रूप में यह सामग्री *मक़ालाते शम्स* के नाम से जानी जाती है जिसका शाब्दिक अर्थ है शम्स के वचन।

1940 के दशक में जब तुर्की के पुस्तकालय अपने पास रखी पाण्डुलिपियों की सूची तैयार कर रहे थे, तब उन्हें शम्स की उन पाण्डुलिपियों का पता चलना शुरू हुआ जो अभी प्रकाशित नहीं हुई थीं। सूची तैयार करने की योजना के दौरान ये अनमोल पाण्डुलिपियाँ हेलमट्ट रिट्टर और अब्दुलबकी गोलपिनरली के हाथ लगीं। इनमें से एक पाण्डुलिपि बहा-ए वलद (रूमी के बेटे) द्वारा अपने हाथ से लिखी मानी जाती है, और ऐसा भी विश्वास किया जाता है कि एक अन्य पाण्डुलिपि पर रूमी ने ख़ुद टिप्पणियाँ लिखी थीं। '*मक़ालात*' की पाण्डुलिपियों का मिलना विशेषतया महत्त्वपूर्ण था क्योंकि इससे निश्चित रूप से प्रमाणित हो गया कि शम्स नाम का कोई व्यक्ति सचमुच कभी इस संसार में था (इसमें कुछ विद्वानों को सन्देह था) और वह रूमी का आध्यात्मिक गुरु था। पाण्डुलिपियों को पढ़ने से आध्यात्मिक गुरु और शिष्य के उस सम्बन्ध का विशेष ज्ञान होता है जिसमें वे एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं और जिससे इनसान को परमात्मा का स्वरूप जानने की क्षमता प्राप्त होती है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि शम्स ही वे पूर्ण गुरु थे जिन्होंने रूमी का कायापलट कर दिया, उन्हें इसलाम के एक विद्वान् और गम्भीर व्यक्ति से 'मसनवी' के लेखक और परमात्मा के मिलाप के आनन्द में मस्त दरवेश में बदल दिया।

मुहम्मद अली मुवहिद और स्रोत दस्तावेज़

मूल अंग्रेज़ी पुस्तक ऐसे उद्धरणों का संग्रह है जिनका हाल ही में फ़ारसी से अनुवाद किया गया है। ये उद्धरण मुहम्मद अली मुवहिद की पुस्तक *मक़ालाते शम्से तब्रीज़ी* में से ध्यानपूर्वक चुने गये हैं। मुवहिद ने अपनी पुस्तक का संकलन और सम्पादन तुर्की में मिली मूल पाण्डुलिपियों के आधार पर किया। इन पाण्डुलिपियों में शम्स के इने-गिने लोगों के बीच

और सार्वजनिक सभाओं में बोले गये सभी वचन दर्ज हैं, जो कि उस समय की भाषा में लगभग शब्दश: लिखे गये हैं। शम्स ने ख़ुद कुछ नहीं लिखा।

मुहम्मद अली मुवहिद का जन्म सन् 1923 ईस्वी में ईरान के नगर तेहरान में हुआ था। उन्होंने तेहरान विश्वविद्यालय से क़ानून में और केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून में डिग्री प्राप्त की। ईरान लौटने पर उन्होंने एक लेखक, अनुवादक, सम्पादक तथा संकलनकर्ता के रूप में काम करना आरम्भ किया। उनकी रचनात्मक प्रतिभा और उनका फ़ारसी, अंग्रेज़ी तथा अरबी भाषाओं का ज्ञान लगभग बीस महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की रचना का आधार बना, जिसमें फ़ारसी का महान् साहित्य, अध्यात्मज्ञान तथा राजनीति जैसे विविध विषय शामिल हैं। उन्हें साहित्य के क्षेत्र में अनेक पुरस्कार मिले हैं, और अब वे ईरान में आज के बहुत प्रसिद्ध विद्वानों में गिने जाते हैं।

मुवहिद की पुस्तक *मक़ालाते शम्से तब्रीज़ी* अपने आप में इस बात का प्रमाण है कि पाण्डुलिपियों के संकलन तथा सम्पादन में उन्होंने अथक परिश्रम किया था। इसमें हज़ार से भी अधिक पृष्ठ हैं, जिनका अधिकतर भाग टीका, विस्तृत टिप्पणी तथा एक पूर्ण शब्दावली के रूप में है। यह शब्दावली क़ुरान की आयतों, हदीसों, नामों और ऐसे शब्दों तथा मुहावरों पर प्रकाश डालती है जो आजकल की फ़ारसी में नहीं मिलेंगे। यह विद्वत्तापूर्ण रचना सन् 1990 में 'वर्ष की पुस्तक' के रूप में पुरस्कृत की गई थी। फ्रेंकलिन ल्यूइस ने अपनी पुस्तक *रूमी, अतीत और वर्तमान, पूर्व और पश्चिम* में सच ही कहा है कि *मक़ालाते शम्से तब्रीज़ी* लिखना एक अत्यन्त कठिन काम था। तुर्की में मिली मूल पाण्डुलिपियों में भावों को क्रमपूर्वक व्यक्त नहीं किया गया था जिससे उन्हें समझना ख़ास चुनौती-भरा काम बन गया था। बदी अल-ज़माम फ़ोरूज़ाँफ़र ने, जिनके मत तथा टिप्पणियों को रूमी में रुचि रखनेवालों में दूर-दूर तक सम्मान प्राप्त है, एक मूल पाण्डुलिपि के बारे में लिखा था:

> लेखन-शैली सातवीं सदी (ईसा की तेरहवीं सदी) से मिलती-जुलती है, लेकिन लेखक की टिप्पणियाँ अधूरी हैं, इसलिए अधिकांश अनुच्छेदों में विचार क्रमहीन और अस्पष्ट हैं। कुछ बातों को [उसी पाण्डुलिपि में] बार-बार दोहराया गया है, जिससे ऐसा लगता है कि इस पर दो या दो से अधिक लोगों ने काम किया है। यह कहना मुश्किल है कि पहला प्रयास बेहतर था या दूसरा। पुस्तक के लेखक ने टिप्पणियों का संकलन करने में उनके क्रम की ओर भी विशेष ध्यान नहीं दिया है। इसलिए पुस्तक से लाभ उठाने के लिए इसे बार-बार पढ़ने की ज़रूरत है। क्रम का अभाव तो है ही, साथ ही पुस्तक पर जिल्द चढ़ाते समय शायद कुछ पृष्ठ भी ग़लत जगह पर लग गये थे। यह उल्लेख करना भी ज़रूरी है कि नोट्स लेनेवालों ने कुछ नामों के स्थान पर केवल एक अक्षर, जैसे 'म', 'स' या 'क' का प्रयोग करके और ज़्यादा उलझन पैदा कर दी है।[1]

फ़ोरूज़ाँफ़र ने इस एक पाण्डुलिपि का मूल्यांकन करते हुए उस अव्यवस्था का सही ब्योरा दिया है जो सभी पाण्डुलिपियों में आम पाई जाती है, और यह भी स्पष्ट कर दिया है कि इन पाण्डुलिपियों का संकलन कितना चुनौती-भरा काम था। इस काम को पूरा करने के लिए मुवहिद ने सारी उपलब्ध सामग्री का – तुर्की में मिली छ: मूल पाण्डुलिपियों का और साथ ही बाद में हुए सात रूपान्तरों का – गहरा अध्ययन किया और उन्हें एक-दूसरे से मिलाकर देखा। उसने अन्य छ: दस्तावेज़ों को भी जाँचा जिनमें शम्स के कुछ वचन दिये गये हैं। इनमें से दो दस्तावेज़ रूमी के मेवलेवी फ़िरके के दो सदस्यों, सिपहसालार और अफ़्लाकी ने, रूमी और शम्स के समय से थोड़ा ही बाद लिखे थे। अन्य जिन स्रोतों पर मुवहिद ने सोच-विचार किया वे विभिन्न पुस्तकों के मूल पाठ में ही हाशिये पर, या अलग पृष्ठों पर लिखे हुए थे।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि शम्स के प्रवचनों [*मक़ालाते शम्स* (शम्स द्वारा बोले गये शब्द)] को *अस्रारे शम्स* (शम्स के राज़) और *ख़िरक़ाए शम्स* (शम्स का चोग़ा) भी कहा जाता था। रूमी के अनुयायी अकसर शम्स के वचनों को *ख़िरक़ाए शम्से तब्रीज़ी* के नाम से ही पुकारते थे। यह नाम एक सूफ़ी परम्परा पर आधारित है जिसमें दीक्षा के समय जिज्ञासु को एक ख़िरक़ा (चोग़ा) दिया जाता था। मुवहिद लिखते हैं, "यह अर्थ इस आधार पर किया जाता है कि ख़ुद शम्स ने इस शब्द का एक प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है ... शैख़ सोहरावर्दी कहते हैं, 'चोग़ा पहनना मुर्शिद और मुरीद के रिश्ते की पहचान है, और इसे मुरीद की मुर्शिद के प्रति वफ़ादारी और उसकी रज़ा में रहने की निशानी समझा जाता है...'।[2] लेकिन मुवहिद इस बात का भी उल्लेख करते हैं कि न तो शम्स का, और न ही उनके उस्ताद अबू बक्रे सल्लेह बाफ़ का, ऐसे रिवाज में विश्वास था। मुवहिद के इस प्रश्न का कि आपका चोग़ा किस फ़िरक़े का है, जो उत्तर शम्स ने दिया, वह मुवहिद उन्हीं के शब्दों में लिखते हैं:

> *यह पैग़म्बर साहिब ने मुझे ख़्वाब में बख़्शा था। लेकिन यह ऐसा ख़िरक़ा (चोग़ा) नहीं जो दो दिन में फट जाये, चिथड़े-चिथड़े हो जाये, जिसके एक टुकड़े को जिस्म के निचले सूराख़ों को साफ़ करने के लिए इस्तेमाल किया जाये, या जिसे कचरे में फेंक दिया जाये। यह तो शब्दों का चोग़ा है, उन शब्दों का जो बुद्धि के अन्दर नहीं समा सकते, वे शब्द जिनका न कल था, न आज है, न कल होगा। कल, आज और कल से इश्क़ को क्या सरोकार!*

मुवहिद आगे कहते हैं, "यह चोग़ा है शम्स के प्रवचनों और उनके शब्दों का [अध्यात्म-ज्ञान से सम्बन्धित उनकी शिक्षा का] तथा उनके निर्देशों का जो वे उन लोगों को देते हैं जो प्रभु-प्राप्ति से सम्बन्धित ज्ञान पाने के

इच्छुक और उसके प्रति ग्रहणशील हैं। इससे यह बात समझ में आती है कि *मक़ालात* को *ख़िरक़ाए शम्से तब्रीज़ी* क्यों कहा जाता है।" इसी अन्दाज़ में रूमी शम्स के शब्दों को रहस्यों का नाम देते हैं। उदाहरण के लिए, *दीवाने शम्से तब्रीज़ी* में वे कहते हैं, "अपनी बोलचाल में शब्दों और उच्चारण को मिला देनेवाले शम्स, मुझे साफ़-साफ़, बिना कुछ छिपाये, ये राज़ बतायें।"[3] ख़ुद शम्स *मक़ालात* में कहते हैं, "मैं राज़ बोलता हूँ, शब्द नहीं।"[4]

मक़ालात को कुछ समय पहले तक प्रकाशित क्यों नहीं किया गया था : रूमी क्या कर रहे थे?

जो लोग शम्स और रूमी के सम्बन्ध के बारे में जानते हैं उनके लिए यह शायद एक पहेली है कि रूमी ने स्वयं, या अपने शिष्यों के माध्यम से, शम्स के वचनों की कोई साफ़-सुथरी प्रतिलिपि बनाने की कोशिश क्यों नहीं की। यह विशेष रूप से हैरानी की बात है क्योंकि, जैसा कि मुवहिद ने ज़िक्र किया है, शम्स के बारे में रूमी ने कहा था, "वह प्रकाश है जिसने मूसा से कहा था: मैं ख़ुदा हूँ, मैं ख़ुदा हूँ, मैं ख़ुदा हूँ।"[5] इस विरोधाभास को समझने के लिए मुवहिद एक संकेत देते हैं जिससे शायद कुछ सहायता मिल सकती है। वे लिखते हैं कि शम्स जब पहली बार कोन्या छोड़कर गये तो बिछोड़े के ग़म में रूमी ने लोगों से मिलना-जुलना छोड़ दिया, समाअ* में जाना और कलाम लिखना बन्द कर दिया। लेकिन शम्स के दूसरी बार चुपचाप चले जाने पर रूमी की जो अवस्था हुई, वह इससे बिलकुल भिन्न थी। पहली बार उनकी अवस्था रात के समय एक पहाड़ जैसी थी: भारी, अकेला, ख़ामोश और भावहीन। दूसरी बार वे एक झरने की गरजती, शोर मचाती, शक्तिशाली तेज़ धारा जैसे थे। तब तक वे अपने आप को शम्स में अभेद कर चुके थे।[6]

---

* इसी अध्याय में आगे चलकर समाअ के बारे में पूरी जानकारी दी गई है।

रूमी का कायापलट और उनके अहं का मिट जाना उनकी रचनाओं में साफ़ दिखाई देता था। अपने मुर्शिद से उन्हें जो शिक्षा मिली वह मसनवी और दीवाने शम्से तब्रीज़ी, दोनों की प्रेरणा से भरे कलाम और गद्य-रचना में बह निकली। दीवान में लिखे कलाम की 40,000 पंक्तियों में से एक तिहाई उन्होंने अपने मुर्शिद को समर्पित कीं, और पुस्तक का नाम मुर्शिद के नाम पर रखकर उसका श्रेय मुर्शिद को दिया। उनके ऐसा करने से यह साफ़ ज़ाहिर है कि वे अपने आध्यात्मिक कायाकल्प में शम्स की मूल भूमिका को अच्छी तरह समझते थे। फिर रूमी को शम्स के वचनों को प्रकाशित करने की क्या ज़रूरत थी? वे तो रूमी के हृदय पर अंकित हो गये थे और उनकी रचनाओं में रच गये थे। रूमी ने अपने अहं को पूर्णतया मिटाते हुए अपने अन्दर से उस सूरज को चमकने दिया जिसका नाम शम्स था।

मुवहिद यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि रूमी का निम्नलिखित कलाम इस कायाकल्प का वर्णन करता है:

मैं अपनी आँखें मलता हूँ, ऐ मित्र, और सोचता हूँ:
यह मेरा स्वप्न है या मात्र मेरी कल्पना?
मुझे विश्वास नहीं होता, ऐ मित्र!
विचित्र बात है! क्या यह मैं हूँ?
हाँ, यह मैं ही हूँ, लेकिन 'मैं' को तो मैंने छोड़ दिया है।
आपकी पूर्णता की तुलना में
मैं नये चाँद की पतली-सी लकीर हूँ।
क़यामत के दिन का नगाड़ा हैं आप,
और मैं एक मुर्दा इनसान हूँ।
बहार की ज़िन्दगी हैं आप,
और मैं सरू व सोसन हूँ।
मैंने अभी ख़त्म नहीं किया, शेष आप ही कह दें!

दानाई की दानाई की दानाई हैं आप!
पर मैं निपट गँवार हूँ।
मैंने चित्र बनाया है एक चेहरे का,
लेकिन इसमें प्राण फूँकना आपके हाथ में है।
प्राणों के प्राणों के प्राण हैं आप
और मैं मात्र ढाँचा और जिस्म हूँ।[7]

मक़ालात का स्रोत : शम्स क्या कर रहे थे?

अध्यात्म-ज्ञानियों की गहरी शिक्षा को समझने के लिए यह ज़रूरी है कि हम अपने आप को उन्हें समर्पित करें और उनकी शिक्षा को ग्रहण करने का यत्न करें, अपनी ग्रहणशीलता को अधिक से अधिक सूक्ष्म बनाते जायें और अपने अहं का धीरे-धीरे त्याग करते जायें।

जब शम्स कोन्या गये तो उनका लक्ष्य था रूमी का कायाकल्प; यही उनका एकमात्र उद्देश्य था। उस समय रूमी पहले ही एक परिपक्व और प्रतिष्ठित विद्वान् थे। लोग उनसे इसलामी क़ानून और सूफ़ी मत की शिक्षा ले रहे थे, और कोन्या के कुछ प्रमुख नागरिक भी उनके अनुयायी थे। उनके पास बौद्धिक ज्ञान का भण्डार था। वे अरबी में बोलते और लिखते थे, और धर्म के एक बड़े सफल तथा सम्मानित न्यायशास्त्री थे। उन्होंने कुछ वर्ष सूफ़ियों के मत पर चलने की शिक्षा भी ली थी। उनका सम्बन्ध इसलाम धर्म से था, इसलिए इसलाम, क़ुरान और पैग़म्बर साहिब के वचनों में विश्वास उनके जीवन का केन्द्र था। इसके साथ ही वे भूतपूर्व सूफ़ी मुर्शिदों, शायरों तथा उनकी रचनाओं का भी बहुत सम्मान करते थे।

शम्स चेतना के उस क्षेत्र से आये थे जिसका रूमी को कोई अनुभव नहीं था और जहाँ बुद्धि के बल पर नहीं पहुँचा जा सकता था। जैसा कि मक़ालात से स्पष्ट हो जाता है, जिन ग्रन्थ-शास्त्रों को रूमी उच्च स्तर का मानते थे, शम्स ने रूमी को उनकी ख़ूबियाँ और कमियाँ दोनों बताईं।

उन्होंने रूमी को उनके मोहजाल से छुड़ाया और उनके अभिमान तथा मिथ्या अहं को मिटाया, ताकि उन्हें अपने वास्तविक स्वरूप का अनुभव हो सके। शम्स के सच्चे ज्ञान के निर्मल तथा उज्ज्वल प्रकाश ने रूमी के समक्ष उनके अपने ज्ञान की कमियाँ उजागर कीं, और इस तरह सदा के लिए उनका सत्य से नाता जोड़ दिया। शम्स ने रूमी का ध्यान अनावश्यक ज्ञान की ओर से हटाकर उसे सबसे आवश्यक तथा मूल्यवान् ज्ञान से जोड़ने के लिए उन्हें बार-बार प्रेरित किया।

रूमी की विद्वत्ता और उनके विद्वानों जैसे स्वभाव को पूरी तरह ध्यान में रखकर शम्स ने धर्म, संस्कृति तथा भाषा के क्षेत्रों में उनके अपने ज्ञान को ही उनके कायाकल्प का साधन बनाया। ईरान की संस्कृति में बात को बार-बार दोहराने और प्रसंग के अनुकूल कविता के द्वारा अपने आशय को अभिव्यक्त करने को बहुत महत्त्व दिया जाता है। *मक़ालात* में शम्स को उसी वातावरण में पेश किया गया है: वे कविता का उपयोग करते हैं; इसलाम की शिक्षा का और सूफ़ी मुर्शिदों के वाद-विवादों का सहारा लेते हैं; अरबी भाषा बोलते हैं; अपनी बात बार-बार दोहराते हैं; विविध विषयों से सम्बन्धित आम लोगों के विश्वास को आधार बनाकर विशेष तथा विस्तृत जानकारी देते हैं और ऐसी कहानियाँ सुनाते हैं जिनसे उस समय के लोग साधारणतया परिचित थे। उन्होंने क़ुरान के शब्दों की तह में छिपे सन्देश पर से परदा उठाते हुए क़ुरान की आयतों के बारे में रूमी के ज्ञान को चुनौती दी। उन्होंने रूमी को वह दिखाया जिसकी उन्हें पहले कभी कोई जानकारी नहीं थी – और वह थी रूमी की अपनी आध्यात्मिक क्षमता।

जब तक शिष्य की अन्तर्दृष्टि का क्षेत्र विस्तृत नहीं हो जाता और वह सत्य को ग्रहण करने के योग्य नहीं हो जाता, तब तक शिक्षक उसके हृदय को उन्हीं बातों के माध्यम से प्रभावित करता है जिनसे वह परिचित होता है। अन्य सभी आध्यात्मिक गुरुओं की तरह शम्स ने बड़ी नम्रता

तथा नि:स्वार्थ भाव से रूमी से अपना सम्बन्ध निभाते हुए यह कार्य सम्पन्न किया। शम्स कहते हैं:

> *धरती के कुल आबाद हिस्से में जितने भी विद्या के क्षेत्र हैं, चाहे वह मूल सिद्धान्तों का क्षेत्र हो, चाहे क़ानून का और चाहे व्याकरण का, मौलाना रूमी जैसा कोई नहीं है। वे तर्क में कुशल विद्वानों के साथ इतने सशक्त शब्दों में बातें कर सकते हैं कि मैं अगर सौ साल भी कोशिश करूँ तो उनके ज्ञान और कौशल का दसवाँ हिस्सा भी हासिल नहीं कर सकता।*[8]

और:

> *जिसकी खोज की जा रही थी, वह शख़्स [शम्स] सोलह साल अपने मित्र के चेहरे को देखता रहा है ताकि वह खोजी [रूमी] इतने लम्बे समय के बाद उसे बात करने योग्य समझ सके।*[9]

दरवेशों की भाषा : शम्स शिक्षक के रूप में

अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए शम्स पेटियाँ (बेल्ट) बनाते थे और शिक्षक की हैसियत से बच्चों को क़ुरान पढ़ाते थे। बहुत-से शिक्षकों की तरह सूफ़ी दरवेश शम्स भी अकसर अपने ही जीवन के अनुभवों को उदाहरण द्वारा समझाते थे कि रूमी को आदर्श शिष्य के रूप में कैसे विचरना चाहिये।

> *मैंने उस बच्चे को केवल तीन महीने में क़ुरान पढ़ा दिया। वह ऐसा बच्चा था जो क़ुरान पढ़ने में दो साल लगा चुका था और थोड़ा ही समझ पाया था, और वह भी ख़ास अच्छी तरह नहीं।*

[तीन महीने के बाद] उसने क़ुरान पढ़ना शुरू कर दिया। जब हम उसके पिता से मिले तो उन्हें बेहद हैरानी हुई, और उन्होंने उससे पूछा, "तुम क्या मेरे बेटे हो?..." और उसकी माँ तो बेहोश हो गईं। उन्होंने मुझे 200 के बजाय 500 चाँदी के सिक्के दिये, और बार-बार मुझे अपने घर में रहने और रात गुज़ारने का न्यौता दिया, जिसे मैंने स्वीकार नहीं किया।[10]

किसी भी दरवेश या सन्त के उपदेश में एक ही अनादि रूहानी ज्ञान का सर्वव्यापी सन्देश होता है, साथ ही उसमें समय तथा स्थान की आवाज़ और उनकी विशेष परिस्थितियों में पनपी संवेदना भी होती है, और यह बात शम्स पर भी लागू होती है। फिर भी, जैसा हम आगे देखेंगे, मक़ालत के आगे दिये गये उद्धरणों में सुनाई देनेवाली आवाज़ एक असाधारण आवाज़ है। 'शम्स के अपने बारे में वचन' शीर्षक वाले अध्याय में दिये गये उनके वचनों में यह बात विशेष रूप से दिखाई देगी। वे कहते हैं:

अगर वे आलोचना करते हैं तो मानों यह कहते हैं कि परमात्मा अभिमानी है, लेकिन यह तो सच्चाई है और इसमें समस्या क्या है?[11]

सूफ़ियों के कलाम में, उनकी गद्य-रचना में और उनके प्रवचनों में ऐसे अलंकारों का भण्डार है जिनका उनकी संस्कृति में आम प्रयोग होता है। अपनी चर्चाओं में वे परमात्मा के ध्यान में मग्न होने की अवस्था का वर्णन करने के लिए शराब के नशे से सम्बन्धित जाम, साक़ी, मयख़ाना जैसे शब्दों का प्रतीक के रूप में प्रयोग करते हैं। वे शारीरिक प्रेम (इश्के मजाज़ी) और प्रभु-प्रेम (इश्के हक़ीक़ी) की भाषाओं के अन्तर को धुँधला कर देते हैं (हाफ़िज़ के कलाम पर विचार करके देखें तो उनके बहुत-से शेअर दोनों तरह के प्रेम के कलाम के रूप में सुने जा सकते हैं)।

सूफ़ी दरवेशों के प्रवचनों में निहित आध्यात्मिक ज्ञान कई स्तरों पर होता है और भाषा सांकेतिक होती है, इसलिए कई लोग इन प्रभु-प्रेमियों के गूढ़ सन्देश को समझ नहीं पाये थे, और आज भी नहीं समझते। रूमी के अनुयायी और उनके समय के दूसरे विद्वान् जब शम्स के प्रवचन सुनते तो उनके साथ भी ऐसा ही होता था। उनकी अज्ञानता को शम्स सहन नहीं कर पाते, और जब वे लोग उनकी शिक्षा को ग्रहण नहीं कर पाते थे तो शम्स अकसर उनकी तीखी आलोचना करते थे। वे कहते हैं:

इन शब्दों का वास्तविक अर्थ उनकी [धर्म के विद्वानों की] समझ में नहीं आया। वे जितना थोड़ा-बहुत समझ पाये उससे उनकी रंगत बदल गई ... इसलिए मैंने इस आशा से अपने शब्द दोहराये कि शायद वे समझ जायें। उन्होंने व्यंग्यपूर्ण बातें कहीं, जैसे "यह अपने शब्द इसलिए दोहराता है कि इसके पास ठोस ज्ञान नहीं है।" मैंने उन्हें बताया कि इसका कारण स्वयं उनमें ज्ञान और समझ की कमी है।[12]

शम्स बताते हैं कि एक दरवेश या सन्त के शब्दों में कितनी शक्ति होती है:

मैं जब लिखता नहीं तो 'शब्द' मेरे अन्दर रहता है, और हर पल अपना एक अलग ही पहलू दिखाता है। शब्द तो केवल हक़ (परमात्मा) और उसकी सुन्दरता से परदा हटाने का साधन मात्र होते हैं।[13]

लेकिन शम्स सन्त के मौन की शक्ति पर भी ज़ोर देते हैं:
इसलिए सन्त के मौन का कारण यह नहीं होता कि उसके पास कहने को कुछ नहीं है, बल्कि यह कि उसके पास कहने के लिए बहुत कुछ होता है।[14]

विशेष भाषा, प्रतीक और रूपक

बहुत-सी सभाओं में जब शिक्षा दी जाती है, शिक्षा चाहे आध्यात्मिक हो, चाहे सांसारिक, यह सम्भव है कि अनेक व्यक्ति एक ही बात सुनें और हर कोई उसमें से कुछ थोड़ा-सा ग्रहण करे। किसी बात को ग्रहण करना हर एक की ग्रहणशीलता पर निर्भर करता है, और साथ ही इस बात पर भी कि शिक्षक उन्हें क्या सुनाना चाहता है। आध्यात्मिक गुरु जब शिष्य के बिखरे हुए मन को निर्देश देते हैं तो अकसर कुछ प्रतीकों, उपमाओं और धारणाओं का बार-बार प्रयोग करते हैं। जहाँ तक शम्स का प्रश्न है, उनकी सांकेतिक भाषा में हमेशा ही अर्थ की कई परतें होती थीं। इसलिए शम्स के वचनों की बारीकियों को पूरी तरह समझने के लिए *मक़ालाते शम्से तब्रीज़ी* को एक से अधिक बार, या शायद कई बार भी पढ़ने की ज़रूरत हो सकती है। शम्स हमें याद दिलाते हैं कि उनकी शिक्षा में जटिलता है, और अर्थ की कई परतें हैं, और जान-बूझकर पैदा किया गया धुँधलापन भी है, पर इस सबके होते हुए भी वह समझ में आ जायेगी:

अगर तुम इन्तज़ार करोगे तो जवाब और जवाब देनेवाला दोनों मिल जायेंगे। जवाब अगर तुम्हें न भी मिले, मतलब तो तुम्हारी समझ में आ ही जायेगा। सब्र में यह फल होता है कि उससे सुननेवाले को शक्ति मिलती है, और उसे ज़्यादा जानकारी प्राप्त करने के लिए समय मिल जाता है।[15]

शम्स द्वारा बिम्ब-रचना के उपयोग के कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं, लेकिन इनके अलावा और भी बहुत-से उदाहरण मिल जायेंगे। पाठकों से निवेदन है कि उनका भी ध्यान रखें, क्योंकि शम्स के वचनों में हमेशा कुछ और भी मिल जाता है।

जिसकी खोज की जाती है (इष्ट)

शम्स कहते हैं कि बहुत-से आध्यात्मिक उपदेश चाहे हमेशा खोज करनेवाले की ओर संकेत करते हैं, लेकिन शम्स उसी के बारे में बात

करना चाहते हैं 'जिसकी खोज की जाती है'। खोज किसकी की जाती है? पूर्ण सन्त और परमात्मा दोनों की। शम्स कहते हैं, "मैं वह हूँ जिसकी खोज की जाती है। मैं दुनिया में देखने के लिए आया हूँ।"[16] वे किसे देखने के लिए आये हैं? खोज करनेवालों को, उनको जो परमात्मा की खोज में हैं और जो जानते हैं कि इसके लिए उन्हें एक दरवेश की, एक पूर्ण सन्त की ज़रूरत है। शम्स कहते हैं:

> अब इसमें कोई सन्देह नहीं कि कोई उद्देश्य है, इस दुनिया में कोई ऐसा है 'जिसकी खोज की जाती' है, और कोई ऐसा है जिसके लिए *यह शाही ख़ेमा [दुनिया] खड़ा किया गया है।... 'जिसकी खोज की जाती है', उसे खोजनेवाले होते हैं, लेकिन हर खोजी उस तक नहीं पहुँच सकता। उस तक सिर्फ़ वही खोजी पहुँच सकता है जिसे वह चाहता है कि पहुँचे। कोई भी खोजी अपने आप उस तक नहीं पहुँच सकता, जब तक कि वह ख़ुद को उस खोजी के सामने प्रकट न कर दे।*[17]

और वे कहते हैं कि 'जिसकी खोज हो' उसे खोजना कभी व्यर्थ नहीं होता:

> *कुछ खोजी खोजते-खोजते उस तक पहुँच गये 'जिसकी उन्हें खोज थी', कुछ के लिए मौत के वक़्त उन पर से परदा उठा, जब कि कुछ और उसे खोजते-खोजते ही मर गये। खोज की लालसा लिए मरना भी एक बड़ी प्राप्ति है।*[18]

अर्थ

सूफ़ी दरवेश रह-रहकर हमें याद दिलाते हैं कि किसी चीज़ के नाम को वह चीज़ ही मत समझ लेना, चाहे वह चीज़ कोई विचार हो, कोई वस्तु

हो या परमात्मा। शम्स तो ख़ास तौर पर हमें एक क़दम और आगे ले जाते हैं और हमें याद दिलाते हैं कि कुछ विशेष शब्द अनेक भाव व्यक्त करते हैं, अर्थात् जिस चीज़ को नाम दिया जाता है उसका अर्थ उसे दिये गये नाम के शाब्दिक अर्थ से कहीं ज़्यादा होता है। वे कहते हैं:

> *सब्र का अर्थ है काम के परिणाम पर नज़र टिकाये रखने की क्षमता, और बेसब्री का अर्थ है उस क्षमता का अभाव।*[19]

वे यह सिखाते हैं कि हमें शब्दों से परे उनके अर्थ की तह तक, उनके सार तक, उनके आन्तरिक भाव तक, पहुँचने की कोशिश करनी चाहिए:

> *वृक्ष का महत्त्व उसके फल से होता है, अगर उसमें फल नहीं लगता तो वह जला देने योग्य है। कहने का ढंग तभी महत्त्वपूर्ण है यदि वह अर्थपूर्ण है, क्योंकि केवल अर्थ में उसका महत्त्व है।*[20]

अन्ततः, शम्स के अनुसार अर्थ ही परमात्मा है, 'शब्द' है, 'कलमा' है:

> *शब्दों का क्षेत्र इतना विशाल है कि उन्हें अर्थ देने से वह सीमित होता दिखाई देता है, और उस अर्थ के क्षेत्र से परे भी एक अर्थ है। यह असली अर्थ अन्य सभी अर्थों को अपने अन्दर समेट लेता है, शब्दों को और उनकी आवाज़ को निगल जाता है, जिससे कोई भी मुहावरा बाक़ी नहीं रह जाता।*[21]

और:

> *अर्थ के अन्दर के संसार में से एक अलिफ़ बाहर आया, और जिस किसी ने इस अलिफ़ को समझ लिया, उसने सब कुछ समझ लिया, जब कि जिस किसी ने इसे नहीं समझा, उसने कुछ भी नहीं समझा।*[22]

भावनाओं की आग बनाम प्रकाश

शम्स अकसर कहते हैं कि आध्यात्मिक प्रकाश और भावावेश की आग में आकाश पाताल का अन्तर है। प्रकाश की खोज का स्रोत प्रभु-प्राप्ति की इच्छा होता है, जब कि भावनाओं की आग सांसारिक इच्छाओं से आरम्भ होती है। शम्स हमें बताते हैं कि अहं की शक्ति से प्रेरित हुए स्वभाव के कारण भावनाओं की आग भड़कती है जो हमें कई तरह से गुमराह करती है: हम वासना की मदहोशी में प्रकट हुई अन्तःप्रेरणा को वास्तविक अन्तःप्रेरणा मान बैठते हैं जिससे हम ज्ञानवान् महात्माओं की रचनाओं के सीधे-सादे अर्थ को भी कुछ का कुछ समझ लेते हैं। शम्स कहते हैं:

> *क़ुरान की आयतों के पीछे जो अर्थ स्पष्ट है, वे उसे भी समझ नहीं पाते क्योंकि उसे केवल विश्वास के प्रकाश में ही देखा और समझा जा सकता है, भावावेश की आग में नहीं।*[23]

और वे यह भी कहते हैं:

> *प्रभु-भक्त के प्रेम की आग के अलावा और कोई भी आग शैतान को नहीं जला सकेगी। कोई कितना ही संयम रखे और कितना ही पश्चात्ताप करे, उससे शैतान को कभी भी बाँधा नहीं जा सकेगा, बल्कि वह अधिक शक्तिशाली हो जायेगा क्योंकि वह कामवासना की आग से पैदा होता है, और उस आग को केवल प्रकाश ही बुझा सकता है।*[24]

दया और शक्ति

सृष्टि को चलाये रखने के लिए परमात्मा के ये दो गुण ज़रूरी हैं। दोनों परमात्मा की दया-मेहर के गुण हैं लेकिन संसार में अलग-अलग ढंग से प्रकट होते हैं, और शिष्य को आध्यात्मिक मार्ग के विभिन्न पड़ावों पर कभी कम, कभी ज़्यादा साफ़ रूप से दिखाई देते हैं। संसार में दया और शक्ति दोनों काम करती हैं। इन दोनों में जो अन्तर है शम्स हमेशा उसकी बात करते हैं। वे कहते हैं:

> शक्ति दया को अपनी नज़र से देखती है और वह केवल शक्ति को ही देख सकती है। प्रभु का यह दास एक नास्तिक से कहता है, "तुम उसके हो, मैं भी उसका हूँ, लेकिन तुम्हारी हस्ती उसकी शक्ति से है, मेरी उसकी दया से। दया का महत्त्व शक्ति से अधिक है। इस बात को भूल जाओ कि शक्ति नाम की कोई चीज़ है और दया का आसरा लो। इसमें ज़्यादा आनन्द है।[25]

आख़िर बात यहाँ ख़त्म होती है कि आन्तरिक मार्ग पर दया ही दया है। शम्स कहते हैं:

> एक वर्ग दुखियों के लिए दुआ करता है, और दूसरा वर्ग [जो पूर्ण सन्तों का वर्ग है] ख़ुद ही दुआ है। लोगों को भक्ति के लिए प्रेरित करते हुए परमात्मा शक्ति और दया दोनों का एहसास दिला सकता है, लेकिन आन्तरिक मार्ग पर दया ही दया है।[26]

भाग्यवाद

भाग्यवाद यह धारणा है कि हमारा जीवन हमारे अपने हाथ में नहीं है, और इसलिए हमें आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के लिए कोशिश करने की

ज़रूरत नहीं है। शम्स इस बात पर ज़ोर देते हैं कि जीवन के घटना-चक्र को बदलने के लिए हाथ पर हाथ रखकर परमात्मा की दया की प्रतीक्षा करना व्यर्थ है। बल्कि हमें तो गुरु के निर्देश के अनुसार चलने की कोशिश करनी चाहिए और परमात्मा की खोज में लगे रहना चाहिए। शम्स कहते हैं:

> जो लेख तुम अपने कर्मों से लिखते हो, वह बदला जा सकता है। किसी भी बात पर टिके न रहने की आदत भाग्यवाद में विश्वास के कारण होती है। एक-दूसरे की बात काटनेवाले लेख मत लिखो। अगर तुम भाग्य पर भरोसा करते हो तो कई तरह के लाभ से वंचित रह जाओगे। तुम जल्दी ही कह दोगे, आओ, अब सो जाते हैं और परमात्मा का आदेश होने तक इन्तज़ार करते हैं।"[27]

सामाजिक आदर्शों के अनुसार आचरण

शम्स हमें याद दिलाते हैं कि प्रभु से मिलाप की आकांक्षा रखनेवालों को सामाजिक तथा धार्मिक आदर्शों का पालन करना चाहिए। थोड़ा-सा आध्यात्मिक ज्ञान हो जाने पर दूसरों के सामने उदाहरण प्रस्तुत करने का हमारा दायित्व ख़त्म नहीं हो जाता। एक बार इनसान को परमात्मा के अस्तित्व का अनुभव हो जाता है तो उसकी समझ में आ जाता है कि परमात्मा ही सब कुछ है। इसलिए वह हर बात को हरि-इच्छा मानकर स्वीकार कर लेता है:

> जब कुछ महात्माओं ने अन्दर पूर्णता प्राप्त कर ली तो उन्होंने [धार्मिक तथा सामाजिक ज़िम्मेदारियों को निभाने का] दिखावा छोड़ दिया। ...जो महात्मा ज़िम्मेदारियाँ निभाने में विश्वास नहीं रखते, वे आध्यात्मिक अगुवाई करने के योग्य नहीं होते, क्योंकि पूरा संसार आध्यात्मिक नेताओं से ही सहायता और शरण की आशा करता है।[28]

ज़रूरत का एहसास

शम्स अकसर ज़रूरत की बात करते हैं। ऐसा लगता है कि इसके कई अर्थ हैं और यह अपने में कई विचारों को समेटे हुए है: आन्तरिक 'प्रियतम' और परमात्मा से मिलाप की प्रबल इच्छा का होना; कुछ हद तक इस बारे में सचेत होना कि अपनी अयोग्यता और लाचारी के बलबूते पर खोज नहीं की जा सकती; तड़प, बेचैनी, किसी चीज़ के अभाव का एहसास और साथ ही इस भावना का होना कि मैं इस संसार का नहीं हूँ। ये सब उन लोगों के लक्षण हैं जो परमात्मा की खोज में लगे हैं। शम्स उनमें तथा संसार से सन्तुष्ट रहनेवाले लोगों में अन्तर बताते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि ज़रूरत के एहसास से जिज्ञासु के अन्दर गहरी नम्रता और प्रार्थना की भावना प्रकट होती है। इसका मतलब है कि जिज्ञासु सन्त और परमात्मा से सहायता और मार्गदर्शन के लिए विनती करता है। शम्स कहते हैं:

> *"मैं ज़रूरतमंदों से ज़रूरत की आशा रखता हूँ, लेकिन केवल असली ज़रूरत की, उस ज़रूरत की नहीं जो दिखावे की है।"*[29] *और "जब तुम्हारा रवैया ज़रूरत का होता है तो उसका मतलब असल में यह होता है कि तुम मुझसे परमात्मा तक पहुँचने का रास्ता पूछने आये हो।"*[30]

वे रूमी से कहते हैं:

> *"असली 'तुम' वह 'तुम' है जो ज़रूरत को प्रकट करता है। वह 'तुम' नहीं जो अजनबी बनकर यह जताता है कि उसे ज़रूरत नहीं है; वह तुम्हारा दुश्मन था।"*[31]

शम्स कहते हैं कि सन्त के पास जाने के लिए सबसे पहली शर्त ज़रूरत का एहसास है, विद्वत्ता नहीं। वे कहते हैं, "अगर कोई तर्क का, शब्दों या दूसरे दरवेशों की दलीलों या क़ुरान की कहानियों का प्रयोग करता हुआ मेरी बातें सुनना चाहता है, तो वह मुझसे न कोई शब्द सुन पायेगा, और न ही मुझसे कुछ प्राप्त कर सकेगा। लेकिन अगर वह नम्रता के साथ मेरे पास आता है, ज़रूरत का एहसास लिए आता है ... तो फिर वह लाभ उठा सकता है।"[32] अगर कोई दुनियावी दौलत पेश करता है तो शम्स उसे और भी ज़्यादा ज़ोरदार शब्दों में ठुकरा देते हैं: "अगर तुम्हारे पास चाँदी के एक लाख सिक्के या सोने से भरा एक क़िला है और वह तुम मुझे पेश करते हो तो मैं तुम्हारे माथे पर दृष्टि डालता हूँ, और अगर मुझे उसमें प्रकाश दिखाई नहीं देता और तुम्हारे दिल में कोई ज़रूरत नहीं दिखती तो तुम्हारी भेंट मेरे लिए गोबर का एक ढेर है।"[33] नीचे लिखे दो उद्धरणों में शिष्य की ज़रूरत का होना और इसकी तुलना में सन्तों और परमात्मा में ज़रूरत का न होना बताया गया है:

> *इनसान के दो गुण होते हैं: एक पहलू ज़रूरत का एहसास है। उस पहलू पर नज़र टिकाये रखो, उसी की नींव पर अपनी आशा का भवन खड़ा करो ... दूसरा पहलू ज़रूरत का न होना है। अगर ज़रूरत ही नहीं है तो आशा किस बात की करोगे? ... लेकिन ज़रूरत का अन्तिम लक्ष्य क्या है? उसे खोजना जिसे कोई ज़रूरत नहीं है।"*[34]

और

> *... बादशाह [परमात्मा] को बिलकुल कोई ज़रूरत नहीं है, और उसे पाने का साधन है ज़रूरत का एहसास, दीनता और प्रार्थना।*[35]

और शम्स हमें बताते हैं कि जब दिल की गहराइयों से ज़रूरत का एहसास होता है तो उससे क्या लाभ होता है: "इस तरह तुम अपनी ज़रूरतमंदी के कारण इस निकृष्ट वातावरण [सृष्टि] में से फ़ौरन निकल जाते हो। इस सृष्टि के परे की कोई चीज़ तुम्हारे पास आ जायेगी – और वह है प्रेम। प्रेम का जाल आता है और तुम्हें अपने में समेट लेता है...।"[36]

'प्रियतम' की पुस्तक

शम्स 'प्रियतम' की पुस्तक पढ़ने की बात करते हैं। यह वह पुस्तक है जो हमारे मनुष्य होने के नाते हमारी मूल विरासत है। यह वह दिव्य सम्पत्ति है जो परमात्मा से हमारे पास आती है। यह प्रेम के अनन्त स्रोत से मिलनेवाला उपहार है। यह वह पुस्तक है जिसे पढ़ने की सन्त हमें शिक्षा देते हैं। शम्स कहते हैं:

> *तुमने सिर्फ़ अपना लिखा पढ़ा है, 'प्रियतम' का लिखा नहीं पढ़ा। वह भी पढ़ो जो 'प्रियतम' ने लिखा है।*[37]

और

> *कल्पना करो कि एक ऐसा पन्ना है जिसका एक पृष्ठ तुम्हारी तरफ़ है, दूसरा 'प्रियतम' की तरफ़। तुम वह पृष्ठ पढ़ते हो जो तुम्हारी तरफ़ है, लेकिन तुम्हें वह पृष्ठ भी ज़रूर पढ़ना चाहिए जो 'प्रियतम' की तरफ़ है।*[38]

शराब

सूफ़ियों की पुस्तकों में जगह-जगह शराब, मयख़ाना, साक़ी और मदहोशी जैसे प्रतीकों का बार-बार प्रयोग किया गया है। दुर्भाग्य से पाठक

कभी-कभी इन शब्दों का आम अर्थ ले लेते हैं, लेकिन 'शराब' शब्द का उल्लेख अधिकतर 'शब्द', 'कलमा', 'इस्मे आज़म' के लिए सांकेतिक रूप में किया जाता है। इसलाम में चाहे शराब की मनाही है, फिर भी इतिहास में कुछ ऐसे युग आये हैं जिनमें दरवेश होने के बजाय शराबी होने को कम ख़तरनाक समझा गया है। इन अनेक प्रतीकों के प्रयोग में बेअन्त विविधता देखने को मिलती है जो परमात्मा के अस्तित्व के निजी अनुभव तथा उस ज्ञान की प्राप्ति के अभ्यास का अनमोल और विविध चित्र प्रस्तुत करती है।

शम्स कई जगह शराब का ज़िक्र करते हैं। जैसे, यह बताने के लिए कि उन्होंने शब्द के अभ्यास को रूमी के जीवन का अंग बना दिया, वे कहते हैं:

> *यह इलाही शराब का एक कनस्तर था जो बड़ी सावधानी से छिपाकर रखा गया था, और इसका किसी को कोई ज्ञान नहीं था। मैंने दुनिया में अपने कान खुले रखे, ध्यान से सुनता रहा और इन्तज़ार करता रहा। यह कनस्तर मौलाना के कारण खोला गया...।*[39]

वे अपने बारे में यह भी बताते हैं कि उनमें इतनी क्षमता थी कि कलमे की मदहोश करनेवाली शक्ति को अपने पर हावी न होने दें:

> *लेकिन दुनिया ने कभी ऐसा 'इनसान' न देखा, न सुना, जो शराब पर विजय पा लेता है और जितनी ज़्यादा शराब पीता है, उतना ही ज़्यादा उसे होश और ख़बर रहती है। वह जितना ज़्यादा मस्त होता है, उतना ही ज़्यादा शान्त और सचेत होता है।*[40]

रूपक, व्यंग्य और विनोद

शम्स के प्रवचनों में रूपकों का विस्तृत रूप दिखाई देता है। अलग-अलग समय और स्थान पर हुए सन्तों की तरह शम्स ने भी बहुत-से रूपक अपने समय के लोगों के दैनिक जीवन से लिए हैं। बाग़बानी और वृक्षों के प्रतीकों का प्रयोग करके वे परमात्मा, सृष्टि और रूहानी अभ्यास की चर्चा करते हैं। वे कठोर शारीरिक परिश्रम और सफ़र की बात करते हैं, खाने-पीने और सोने तथा जंगली और पालतू पशु-पक्षियों का ज़िक्र करते हैं। उनके रूपकों में अकसर ऐसी बातें होती हैं जो हैरान कर देती हैं और सुननेवाला एक भिन्न दृष्टिकोण अपनाने के लिए मजबूर हो जाता है। कभी-कभी वे बहुत पेचीदा होते हैं। अधिकतर विस्तृत रूपकों का, जिनमें से कुछ तकनीकी दृष्टि से उपमाएँ हैं, शब्दावली में उल्लेख किया गया है। शम्स के शिक्षा देने के अनेक साधनों में विनोद और व्यंग्य के शब्द भी हैं। शब्दावली में हमने इनका भी उल्लेख किया है।

शम्स द्वारा अभद्र भाषा का प्रयोग

जो पाठक यह मानने का आदि है कि परमात्मा का साक्षात्कार कर चुके महात्मा शिष्टता तथा सौम्यता के उदाहरण होते हैं, उसके लिए शम्स की भाषा में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो पाठक को निराश कर देती हैं। शम्स के स्पष्ट रूप से बात कहने के ढंग पर हैरानी नहीं होती और न ही उनके उस लहजे पर हैरानी होती है जो आलोचनात्मक जान पड़ता है। यह लहजा वे ख़ास तौर पर रूमी के अनुयायियों के साथ अपनाते थे जो उन्हें समझ नहीं पाते थे। जो चीज़ पाठक को एकदम हक्का-बक्का कर देती है, वह है उनके द्वारा अशिष्ट भाषा और चरागाह के बाड़े में होनेवाले प्रतीकों का इस्तेमाल। हमने इन दोनों को इस अनुवाद से दूर ही रखा है।

फिर भी, यह पूछना उचित जान पड़ता है कि शम्स कर क्या रहे थे। पहले तो हमें रूमी से सम्बन्धित इस तथ्य की ओर ध्यान देना चाहिए।

वे भी ऐसे प्रतीकों और कहानियों का प्रयोग करते थे जिनका उद्देश्य लोगों को ठेस पहुँचाना था। अपने श्रोताओं का ध्यान केन्द्रित करने के लिए वे साफ़ तौर पर ऐसी भाषा और रूपकों का प्रयोग करते थे जिनसे उनका दिल दहल जाये। आर.ए. निकलसन ने रूमी की रचनाओं के कुछ अंशों का अंग्रेज़ी के बजाय लैटिन में अनुवाद करना बेहतर समझा, क्योंकि उसका विश्वास था कि जो लोग इतने शिक्षित थे कि लैटिन समझ सकते थे, उन्हें ऐसी कहानियाँ रोमांचित नहीं करेंगी और न ही उनका कुछ बिगाड़ेंगी। ऐसी भाषा में उन समाजों को भी झकझोर देने की क्षमता होती है जिनमें साफ़ तौर पर अपमानजनक भाषा का बुरा नहीं माना जाता, या उसका आम प्रयोग होता है।

तो शम्स अपने शब्दों द्वारा किन्हें झकझोरना चाहते थे? वे रूमी को आध्यात्मिक ज्ञान देने के कार्य में पूर्णतया तल्लीन थे, उनके द्वारा ऐसी भाषा का प्रयोग किये जाने का कारण रूमी के अनुयायियों और ख़ुद अपने विरोधियों को सम्बोधित करना था जो आपके सब्र का बांध तोड़ देते थे। हो सकता है कि इसमें उनका उद्देश्य यह था कि केवल सच्चे जिज्ञासु ही उनके साथ रहें और बाक़ी सब भाग जायें, ताकि वे रूमी के ध्यान की एकाग्रता में बाधक न बनें। शायद उन लोगों का ध्यान आकर्षित करना भी उनका उद्देश्य रहा हो।

अन्य आध्यात्मिक साहित्य में भी प्रस्तुत प्रसंग से सम्बन्धित कुछ कहानियाँ मिलती हैं जिनमें से भारत के राजा गोपीचन्द और राजा भर्तृहरि, जो साधु बन गये थे, से सम्बन्ध रखती हैं। उन्होंने अपने पास आये अनचाहे लोगों को अपने एकान्त स्थान से हटाने के लिए (स्वयं उनके शब्दों में "मक्खियों से छुटकारा पाने के लिए") लड़ने का नाटक किया। यह बड़ी कारगर युक्ति थी, क्योंकि साधुओं से यह आशा नहीं की जाती कि वे उग्र स्वभाव के होंगे। फलस्वरूप उन्हें निम्न स्तर के साधु मानकर लोग उन्हें छोड़कर चले गये।[41]

ऐसी ही एक और कहानी शम्स ख़ुद सुनाते हैं। यह उस सूफ़ी की कहानी है जिसे "ईसा के श्वास" (मुर्दों में जान डालने की शक्ति) का वरदान मिला हुआ था। जो लोग उस सूफ़ी की सिर्फ़ चमत्कारी शक्ति में दिलचस्पी रखते थे, वे इस कहानी से उसकी ओर आकर्षित हुए और वह ऐसा क़तई नहीं चाहता था। ऐसे लोगों को अपने से दूर हटाने की उस सूफ़ी की चाल शम्स की उस भद्दी-सी कहानी का आधार है (देखिए शम्स कहानीकार के रूप में) जिसमें वे बताते हैं कि सच्चा शिष्य कोई विरला ही होता है।

जिन दरवेशों ने वेश्याओं के साथ समय बिताया, या उन्हें खुले आम गले लगाया, उनके रचे साहित्य में भी ऐसी कहानियाँ मिलती हैं। जो लोग व्यवहार के सतही पहलुओं के आधार पर परख करते हैं, वे दूर हट जायेंगे, और जो शिक्षा लेने आते हैं वे डगमगायेंगे नहीं, अपने निश्चय पर दृढ़ रहेंगे।

समाअ

समाअ शब्द का अर्थ है सुनना। सूफ़ियों की पारिभाषिक शब्दावली में यह शब्द भक्ति के कलाम को संगीत और नृत्य के साथ या उनके बिना सुनने की ओर संकेत करता है। उचित शिक्षा ग्रहण करके इस तरह सुनने की प्रथा का प्रयोग सूफ़ी लोग हृदय के दायरे को विस्तृत करने के लिए करते हैं। ऐसा विश्वास है कि समाअ के कई लाभ हैं: इससे रास्ते के असफल प्रयत्नों से उत्पन्न निराशा या नीरसता का मुक़ाबला करने की शक्ति मिलती है; यह प्रेमी और 'प्रियतम' के बीच के परदों को हटाने में सहायक होती है; और हो सकता है कि यह आत्मा को छू ले और परमात्मा की ओर जा रहे रास्ते को छोटा बना दे।

समाअ के लाभ का इस तरह वर्णन किया गया है:

> मन की बुरी आदतें परदा बन जाती हैं जो आध्यात्मिक अनुभव के मार्ग में रुकावटें खड़ी कर देता है, और परिणाम यह होता है कि जिज्ञासु का जोश ठण्डा पड़ जाता है। समाअ से यह परदा हट जाता है और उन रुकावटों को दूर करने में कम समय लगता है। समाअ में मधुर संगीत या कलाम, जिसके द्वारा जिज्ञासु अपनी दशा को समझ सकता है, परदे को हटा सकती है और आध्यात्मिक उन्नति का द्वार खोल सकती है।[42]

> जिन लोगों को अपने अन्दर ऐसे अनुभव होते हैं मानों वे चल ही रहे हैं, उड़ नहीं रहे, उनकी आत्मा के कान संगीत सुनने से खुल सकते हैं। उस समय अनादि, अमर, अनन्त से चला आ रहा दिव्य शब्द उन्हें सुनाई दे सकता है। ऐसी हालत में उनका आत्मारूपी पक्षी पल भर में दो जहानों से अलग हो जाता है।[43]

शम्स ख़ुद समाअ की महफ़िलों में शामिल होने में विश्वास रखते थे। संगीत सुनने का सही तरीक़ा वे साफ़-साफ़ बयान करते हैं:

> जब समाअ की महफ़िल में 'हक़' (परमात्मा) ने ख़ुद को प्रकट कर दिया हो और परदा उठा दिया हो तो वहाँ उपस्थित कौन व्यक्ति कविता की एक पंक्ति भी सुनाने का साहस कर सकता है? वहाँ सिर्फ़ देखा जाता है, बोला नहीं। साफ़ ज़ाहिर है कि जो कोई भी महफ़िल में शामिल होता है, लेकिन अभी इस हालत में नहीं पहुँचा है, वह निःसन्देह अपमानित होगा। वह नेक और सुन्दर के बीच अँधेरे जैसा होगा – नंगा, अपमानित, कामवासना और भावावेश से भरा हुआ।[44]

रूमी ने समाअ पर निम्नलिखित पंक्तियाँ लिखी हैं:

वह नृत्य नहीं है,
(प्रेम और वियोग की) पीड़ा के बिना जब तुम
(महफ़िल के) बीच में से धूल की भान्ति उठते हो,
वह नृत्य (समाअ) नहीं है।

नृत्य वह है,
जब तुम दो जहान छोड़कर उठते हो,
चीर देते हो दिल अपना और क़ुरबान हो जाते हो,
नृत्य वह है।[45]

पुस्तक में कविता

पाठक देखेंगे कि शम्स के जो वचन लिए गये हैं उनमें कई जगह कविताएँ भी दी गई हैं, जिनमें ऐसी कविताएँ शामिल हैं जो रूमी की लिखी मानी जाती हैं। आम तौर पर कहा जाता है कि ये कविताएँ नि:सन्देह रूमी की हैं जिनका प्रयोग शम्स ने परमात्मा की ओर जानेवाले रास्ते का वर्णन करने के लिए किया है। दूसरी कविताएँ अत्तार और सना'ई जैसे सूफ़ी कवियों की हैं। कुछ और पंक्तियाँ उस समय में प्रसिद्ध कविताओं में से ली गई हैं जिनके लेखकों का पता नहीं है। सूफ़ी दरवेश अपने उपदेश में अकसर ऐसी लोक-परिचित कविताओं का प्रयोग करते थे।

यह अनुवाद

मक़ालात की मूल प्रतिलिपियों में शम्स की कुछ लोगों के साथ बातचीत और उनके प्रवचनों से लिए गये नोट्स का संग्रह था। उन दिनों यह परम्परा थी कि शिष्य अपने गुरु के वचनों की ऐसी पाण्डुलिपियाँ तैयार

करते थे, और उन पर जिल्द चढ़ने से पहले गुरु उनमें शुद्धियाँ कर देते थे। शम्स के वचनों के सम्बन्ध में ऐसा जान पड़ता है कि शुद्धियाँ नहीं हो सकीं, जिसका कारण शायद यह था कि शम्स मुख्य रूप से रूमी के प्रशिक्षण और उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान देने के कार्य में व्यस्त रहते थे और शिष्यों के साथ कम समय बिताते थे।

इस रुकावट के और मूल पाण्डुलिपियों से सम्बन्धित अन्य रुकावटों के बावजूद मुवहिद ने एक ऐसी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पुस्तक लिखी है जिसमें शम्स का गहरा आध्यात्मिक ज्ञान सफलतापूर्वक अभिव्यक्त हुआ है। पुस्तक में इस कामिल दरवेश की ज़िन्दादिली, प्रेम तथा ज्ञान, उसकी क़ाबिलीयत को सरल और सुन्दर परन्तु प्रभावशाली भाषा में व्यक्त किया गया है। कभी-कभी शम्स बिना लिहाज़ साफ़-साफ़ कुछ ऐसा कह देते हैं जो अचम्भे में डाल देता है। अन्य अवसरों पर वे अपने विचार संयत भाषा में प्रकट करते हैं, लेकिन जो लोग आध्यात्मिक धारणाओं से परिचित हैं वे उसमें छिपे दिव्य सत्य को ग्रहण कर सकते हैं। कभी-कभी ऐसा लगता है कि वे अन्य महात्माओं का अपमान कर रहे हैं। वे सत्य को महत्त्व देते थे और पाखण्ड तथा मिथ्याभिमान से घृणा करते थे। सबसे बड़ी बात यह है कि शम्स के वचन उन सभी महात्माओं की शिक्षा को दोहराते हैं जिन्होंने प्रभु का साक्षात्कार किया है।

प्रस्तुत पुस्तक के लिए हमने ऐसे लेखांश चुने हैं जो सत्य के जिज्ञासुओं के सामान्य प्रश्नों पर प्रकाश डालते हैं, चाहे जिज्ञासुओं का किसी भी सभ्यता और समय से सम्बन्ध रहा हो। ये लेखांश दिखाते हैं कि जिन महात्माओं ने प्रभु का साक्षात्कार किया है, उनकी शिक्षा सारे संसार के लिए है। पुस्तक में हमने वे लेखांश नहीं लिए जिनके लिए इसलाम धर्म से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों के अर्थ विस्तार से समझाने की ज़रूरत पड़े। वे अंश भी नहीं लिए गये जो ख़ास तौर पर इसलाम की शरीअत से सम्बन्ध रखते हों, और न ही शम्स के कोई ऐसे वचन चुनकर पुस्तक में रखे गये जिन्हें समझने के लिए फ़ारसी संस्कृति और सभ्यता के गहरे ज्ञान

की ज़रूरत हो। ऐसे लेखांश भी नहीं दिये गये जिनमें कोई बात दोहराई गई है, या जो अनियमित या अधूरे हैं।

मुवहिद ने *मक़ालाते शम्से तब्रीज़ी* में जो विस्तृत नोट्स दिये हैं, उनसे इस अनुवाद के लिए अन्य स्रोतों की खोज में तथा और जानकारी प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन मिला है।

प्रस्तुत पुस्तक का ढाँचा

मक़ालाते शम्से तब्रीज़ी में किसी भी प्रकार का क्रम नहीं है – न समयानुसार, न विषयानुसार। यह केवल उन अंशों की एक लड़ी है जो उन अवसरों पर लेखबद्ध किये गये जब शम्स (और कभी-कभी रूमी) थोड़े-से लोगों को सम्बोधित करते थे। यहाँ विषय-वस्तु को अध्यायों की शृंखला में क्रम-बद्ध किया गया है। उद्देश्य एक ऐसा ढाँचा प्रस्तुत करना है जिसमें सामान्य विषय उभरकर सामने आयें और आज के पाठक विशेष विषयों पर शम्स की शिक्षा का एक चित्र तैयार कर सकें।

मनुष्य-जन्म का महत्त्व – इस अध्याय में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि शम्स मनुष्य-जन्म का महत्त्व जानते हैं, चाहे वे एक असाधारण मनुष्य की ही बात करते हैं। वे मनुष्य की आन्तरिक क्षमता के बारे में बात करते हैं, मनुष्य की पूर्ण आत्म-ज्ञानी होने की सामर्थ्य, उचित आचरण और आध्यात्मिक जीवन बिताने का ढंग बताते हैं। साथ ही वे यह भी बताते हैं कि मन आध्यात्मिक मार्ग में साधन भी बन सकता है और बाधा भी खड़ी कर करता है। वे शिष्य के गुणों के बारे में भी चर्चा करते हैं।

परमसत्ता के बारे में शम्स के वचन – इस अध्याय में शम्स का परमात्मा, पूर्ण सन्त और आन्तरिक मार्ग पर चलने के विषयों पर उपदेश है।

शम्स कहानीकार के रूप में – इसमें शम्स कहानियों के माध्यम से कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों को स्पष्ट करते हैं। कुछ कहानियाँ अशिष्ट हैं और कुछ गूढ़ अर्थ से भरी हुई, लेकिन सब विषय पर केन्द्रित हैं।

रूमी के बारे में शम्स के वचन – इसमें शम्स दूसरों से अपने चहेते शिष्य के बारे में बात करते हैं; कभी उसकी प्रशंसा करते हैं, कभी कटु आलोचना, लेकिन उनके हृदय में उसके लिए हमेशा प्रेम और दया की भावना होती है।

अपने बारे में शम्स के वचन – इसमें परमात्मा के मार्ग की यात्रा के मूलभूत सिद्धान्त समझाने के लिए शम्स अधिकतर अपने बारे में बात करते हैं।

अरबी और फ़ारसी के जो शब्द पुस्तक में देवनागरी लिपि में लिखे गये हैं, पाठकों के लिए उनका शब्दावली में उल्लेख किया गया है और साथ ही वहाँ विशेष सिद्धान्तों की व्याख्या और ऐतिहासिक व्यक्तियों का परिचय भी दिया गया है। यह नोट करना ज़रूरी है कि शब्दावली में 'काफ़िर' जैसे शब्द भी मिलेंगे क्योंकि इस पुस्तक में उनका प्रयोग किसी विशेष अर्थ में किया गया है जो उनके आम प्रयोग से कुछ भिन्न है। 'वली' (जिसका बहुवचन औलिया है) शब्द का प्रयोग उस महात्मा के लिए किया गया है जो परमात्मा से एक हो चुका है, और फ़ारसी में भी इसका यही अर्थ है। 'मुर्शिद', 'कामिल दरवेश' और 'शैख़' पारिभाषिक शब्द हैं। 'शैख़' इस पुस्तक में केन्द्रीय शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ है विद्वान्, शिक्षक, बुज़ुर्ग या मुखिया। आजकल यह शब्द आम तौर पर उच्च कुल के लोगों या शासकों के नाम के साथ जोड़ा जाता है, लेकिन सूफ़ी परम्परा में इसका अभिप्राय "मुराद" से, ऐसे व्यक्ति से है जो कामिल दरवेश है, जिसने उच्च आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त कर ली है, और जिसे शरीअत (धार्मिक विधि-विधान), तरीक़त (आन्तरिक मार्ग), और हक़ीक़त (सत्य) का पूरा ज्ञान हो गया है।

पुस्तक में शम्स के वचनों के अलावा हमने उनकी तीन तरह की व्याख्या भी शामिल की है। एक तो फ़ुट-नोट हैं जिनमें शब्दों और सिद्धान्तों की संक्षेप में व्याख्या की गई है और ख़ास-ख़ास व्यक्तियों का परिचय भी दिया गया है।

दूसरे, हमने कहीं-कहीं शब्दों को ऐसी ब्रैकेट [ ] के अन्दर रखा है। ऐसा विशेष रूप से तब किया गया है जब शब्दानुवाद से अर्थ पूरी तरह स्पष्ट नहीं होता। कुछ स्थानों पर पहले शब्दानुवाद करके फिर ब्रैकेट में टिप्पणियों के द्वारा व्याख्या करने के बजाय चुने गये लेखांश का सीधे उपयुक्त शब्दों में अनुवाद कर दिया गया है। उद्देश्य यह है कि अर्थ भी स्पष्ट हो जाये और शम्स के वचन भी मूल रूप से सुरक्षित रहें।

तीसरे, पाठकों को यह स्पष्ट हो जायेगा कि शम्स के वचन ही पुस्तक का मुख्य केन्द्र हैं। लेकिन, अधिकांश लेखांशों के नीचे संक्षिप्त टिप्पणियाँ दी गई हैं। ऐसी व्यवस्था इसलिए की गई है कि इन टिप्पणियों को अनदेखा भी किया जा सकता है। ये टिप्पणियाँ लेखांश को पढ़ने के लिए एक सम्भव दृष्टिकोण सुझाती हैं, लेकिन हमारा इरादा अन्य अर्थों की खोज पर प्रतिबन्ध लगाने का नहीं है। हर लेखांश पर टिप्पणी नहीं दी गई है, न ही टिप्पणियों में लेखांश के हर मुद्दे को छूने की कोशिश की गई है। हमें शम्स की पेचीदा भाषा से जूझना है। उसे समझने के लिए अनुवादकर्ता, सम्पादक, समालोचक और पाठक, हम सबको समान रूप से कड़ी मेहनत करने की ज़रूरत है। यह आशा न करें कि वह आसानी से समझ में आ जायेगी। शम्स के कई लेखांशों के बाद, और कभी-कभी उनके बीच में ही दी गई इन टिप्पणियों का उद्देश्य लेखांशों की पूरी व्याख्या करना नहीं है, और न ही ये ऐसा करने का झूठा दावा करती हैं। बल्कि हर टिप्पणी को दूर स्थित किसी प्रकाश-स्तम्भ के प्रकाश की एक कौंध समझें जो सारे लेखांश पर प्रकाश नहीं डालती, बल्कि चट्टानी तट-रेखा के एक-दो आकर्षक स्थलों को ही आलोकित करती है।

शम्स के विस्तृत रूपकों और उपमाओं का सन्दर्भ-सूची में उल्लेख कर दिया गया है। यह बात उनकी सभी कहानियों पर लागू होती है, केवल *शम्स कहानीकार के रूप में* शीर्षक वाले अध्याय के अन्तर्गत कहानियों पर ही नहीं।

लेखांशों के अनुवाद को उसी क्रम के अनुसार रखा गया है जिस क्रम में वे मुवहिद की *मक़ालाते शम्से तब्रीज़ी* के पन्नों पर लिखे हैं।

शम्स के अधिक जटिल प्रवचनों और लेखांशों को पढ़ते समय कुछ और नुक़तों को ध्यान में रखने से उन्हें समझने में और सहायता मिलेगी:

उत्सुकतावश कुछ जानने की इच्छा रखनेवालों के प्रति शम्स अकसर मुँहफट होते थे और उनका रवैया ऐसा होता था कि लोग वहाँ से हट जायें, क्योंकि अपने बहुमूल्य आध्यात्मिक ज्ञान को वे उन लोगों पर व्यर्थ नहीं गँवाना चाहते थे जो उसे ग्रहण करने के लिए अभी तैयार नहीं थे। वे अकसर पहेलियों में बातें करते थे ताकि केवल सच्चे जिज्ञासु ही उनका मतलब समझ पायें। उनका मुख्य उद्देश्य रूमी को आध्यात्मिक ज्ञान देना था, और वे वास्तव में केवल उसी को अपने ज्ञान और प्रेम का पात्र बनाना चाहते थे, इसलिए सम्भव है कि कभी-कभी ये उद्धरण एकदम कड़वे, अहंकारपूर्ण और उपेक्षा-भरे प्रतीत हों। इस बात को ध्यान में रखना भी शायद उपयोगी हो कि न तो मूल पुस्तक में और न इस पुस्तक में काल-क्रम का ध्यान रखा गया है, इसलिए शम्स कभी तो शिष्य रूमी से (या उसके बारे में) बातें कर रहे हैं और कभी उस रूमी से (या उसके बारे में) जिसने परमात्मा का साक्षात्कार कर लिया है।

मक़ालाते शम्से तब्रीज़ी की विषय-वस्तु जटिल है, लेकिन ज्ञान की किरणें बिखेरती है। वह हमेशा परमात्मा से सम्बन्धित गहरे और व्यावहारिक ज्ञान से परिपूर्ण है, और वह जितना सुन्दर है, समझने और आत्मसात् करने की दृष्टि से उतना ही चुनौती-पूर्ण है। जो भी हो, हमारे पास एक अनमोल ख़ज़ाना है जो हमें एक महान् सूफ़ी दरवेश शम्से तब्रीज़ी से मिली विरासत है।

शम्स के बारे में

शम्स का बचपन और युवावस्था

मौलाना शम्स अल-दीन मुहम्मद इब्ने-मलिकदादे तब्रीज़ी, शम्से तब्रीज़, शम्से तब्रीज़ी, शम्स तब्रीज़, या शम्स तब्रेज़ के नाम से जाने जाते हैं। उनका जन्म सन् 1184 ईसवी के आसपास ईरान में अज़रबायजान प्रान्त की राजधानी तब्रीज़ में हुआ था। उस समय वहाँ बहुत राजनीतिक हलचल हो रही थी। 1096 ईसवी में इसलाम से प्रभावित प्रदेशों और ईसाई धर्म के अनुयायी पश्चिमी देशों के बीच धर्मयुद्ध शुरू हुए जो लगभग दो शताब्दियों तक चलते रहे। इस दौरान पश्चिमी देशों का दबदबा बना रहा, चाहे कहीं-कहीं उन्हें हार का भी सामना करना पड़ा। जब शम्स केवल तीन वर्ष के थे तो सलाह अद-दीन यूसुफ़ इब्न अय्यूब ने, जिसे पश्चिम में सलदीन के नाम से जाना जाता है, ईसाइयों को हत्तिन नामक स्थान पर पराजित करके फ़िलिस्तीन पर फिर कब्ज़ा कर लिया। पूर्व में चंगेज़ ख़ाँ ने चीन पर विजय प्राप्त करने के बाद सन् 1218 में फ़ारस पर आक्रमण कर दिया, और चालीस वर्ष बाद मंगोलों ने बग़दाद को अपने क़ब्जे में करके अबास्सिद ख़िलाफ़त का अन्त कर दिया।

शम्स की युवावस्था में तब्रीज़ में अनेक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें रूहानियत का अच्छा ज्ञान और अनुभव था। फ़्रैंकलिन लुईस की पुस्तक रूमी,

पास्ट एण्ड प्रेज़न्ट, ईस्ट एण्ड वैस्ट में हफ़ीज़ हुसैन करबलाई[46] तब्रीज़ी के हवाले से बताया है कि उनकी संख्या लगभग सत्तर थी। इनमें से कुछ कम पढ़े-लिखे परन्तु आकर्षक व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। उस समय कई सूफ़ी विद्वान् भी तब्रीज़ में रहते थे।

हालाँकि मानव-जाति के इतिहास के अधिकांश भाग में ज्ञान और विवेक की बातों को ज़बानी ही लोगों तक पहुँचाने का ज़िक्र है, लेकिन उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में विशेषकर, हम मौखिक परम्परा को निम्न स्तर का समझने लगे हैं और साक्षरता को ही ज्ञान मानने लगे हैं। इन दो सदियों में, विशेषकर पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित समाजों में, हम अनुभव पर आधारित ज्ञान या आध्यात्मिक ज्ञान की अपेक्षा बौद्धिक ज्ञान को अधिक महत्त्व देने लगे हैं। आजकल हम शिक्षा और रूहानी उपलब्धियों में भेद नहीं कर पाते और दोनों को साक्षरता के साथ जोड़ देते हैं। इसलिए शायद उन अनपढ़ लेकिन अलौकिक व्यक्तित्व वाले, उच्च रूहानी अवस्था प्राप्त कर चुके व्यक्तियों को हम और भी अधिक सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। लेकिन हमेशा ऐसा नहीं था। इतिहास के बड़े भाग में ज्ञान और बुद्धिमत्ता को मौखिक रूप से ही आगे से आगे पहुँचाया जाता था। उदाहरण के तौर पर, हज़रत मुहम्मद साहिब, जिनसे इसलाम धर्म और सूफ़ी सन्तों की विभिन्न परम्पराएँ आरम्भ हुईं, पढ़े-लिखे विद्वान् नहीं थे और उनका उपदेश शुरू में ज़बानी ही लोगों तक पहुँचता था। यही बात बाद में आनेवाले कुछ सूफ़ी सन्तों पर भी लागू होती है जिनमें शम्स और रूमी के समकालीन भी शामिल हैं। जैसा कि हम देखेंगे, शम्स ने स्वयं औपचारिक शिक्षा प्राप्त की थी लेकिन उनके समय में, और बाद में भी, उन्हें अकसर अशिक्षित और गँवार ही समझा जाता रहा। शम्स ने भी लोगों की इस धारणा को दूर करने की कोशिश नहीं की। शम्स के जीवन और रूमी को दिये रूहानी प्रशिक्षण से साफ़ ज़ाहिर होता है कि वे शिक्षा और विद्वत्ता की अपेक्षा आध्यात्मिक ज्ञान को अधिक महत्त्व देते थे।

अपने बारे में शम्स कहते हैं कि बचपन से ही उनमें आध्यात्मिक प्रतिभा थी और आध्यात्मिकता की चाह भी:

> अपनी जवानी के दिनों में मैं अपने से पूछता, "खाने और सोने में क्या समझदारी है? अगर मैं पहले ख़ुदा को न देख सकूँ जिसने मुझे ऐसा बनाया है, या जब तक वह बिना किसी माध्यम के मुझसे बातें न करे और मैं उससे तरह-तरह के सवाल न पूछ सकूँ जिनका वह जवाब दे, तब तक मैं कैसे कुछ खा सकता हूँ या सो सकता हूँ?"[47]

शम्स उन गिनी-चुनी आत्माओं में से थे जिन्हें ऐसे प्रश्न पूछने की इच्छा भी होती है और जिनके भाग्य में ऐसे प्रश्नों का उत्तर पाना भी लिखा होता है:

> अभी मैं जवान भी नहीं हुआ था कि तीस-चालीस दिन तक मैं ख़ुदा के इश्क़ में इतना खोया रहा कि मुझे कुछ खाने की इच्छा ही नहीं रही।[48]

लेकिन उनकी यह हालत उनके पिता समझ नहीं सके:

> शहर के लोगों की बात तो छोड़ो, मेरे अब्बा भी मेरी हालत समझ नहीं सके। अपने ही शहर में मैं अजनबी था, और मेरे अब्बा मेरे लिए किसी और देश के वासी थे।[49]

हर समाज स्वयं निर्धारित करता है कि लकीर से हटकर चलनेवालों को कहाँ तक सहन करना है। वर्तमान पश्चिमी समाज में लोगों से जिस आचरण की आशा की जाती है वह निभाना बड़ा कठिन है। दूसरे समाजों

में कुछ ऐसी स्थितियाँ हैं जिनमें असाधारण आचरण स्वीकार किया जाता है। इससे एक बात तो निश्चित हो गई है कि कभी-कभी, और किसी-किसी स्थिति में, प्रभु-प्रेम के नशे में मस्त लोगों को समाज स्वीकार कर लेगा, यहाँ तक कि वह उन्हें सुरक्षा और सम्मान भी देगा। इसका मतलब यह नहीं कि ऐसे व्यक्तियों ने स्वयं यह महसूस किया कि उन्हें समाज ने स्वीकार कर लिया है। असल में, यह भावना मनुष्य के अस्तित्व का अभिन्न अंग है कि इस दुनिया में हर मनुष्य अकेला है, न कोई उसका है, न वह किसी का है। यह स्थिति विशेष रूप से उन लोगों की होती है जो रूहानियत के खोजी होते हैं, और यह भावना उन लोगों के हृदय में और भी प्रबल होती है जो अपनी युवावस्था में कुछ रूहानी अनुभव प्राप्त कर लेते हैं। शम्स के अपने कथन के अनुसार वे एक असाधारण बच्चे थे जिन्हें अकेलेपन का बहुत तीव्र अनुभव हुआ और जिन्हें उनके माता-पिता पूरी तरह से समझ नहीं पाये—एक ऐसा अनुभव जो अधिकतर उन जैसे लोगों को होता है।

एक और जगह शम्स कहते हैं:

> बचपन से ही मेरे साथ एक अजीब बात होती चली आ रही है जिसकी किसी को कोई ख़बर नहीं, मेरे अब्बा को भी नहीं। वे कहते थे, "तुम सौदाई तो नहीं हो, लेकिन तुम्हारा काम करने का ढंग मेरी समझ में नहीं आता। तुम एक फ़क़ीर की तरह भी पेश नहीं आते, वग़ैरह-वग़ैरह।" मैं उनसे कहता, "मेरी बात को ध्यान से सुनें। आपका मेरे साथ उस मुर्ग़ी जैसा सम्बन्ध है जिसके नीचे बतख़ के अण्डे रख दिये गये थे। मुर्ग़ी अण्डे सेती रही और जब वे पक गये तो चूज़े अपना खोल तोड़कर बाहर निकल आये। एक दिन जब वे बच्चे अपनी माँ के साथ दरिया के पास से गुज़र रहे थे तो पानी में कूद पड़े और तैरने लगे। उनकी माँ तैर नहीं सकती

थी क्योंकि वह मुर्ग़ी थी, इसलिए वह कुट-कुट करती हुई दरिया के किनारे-किनारे चलती रही।

"अब, मेरे अब्बा, मैं देखता हूँ कि समुन्दर ही मेरी सवारी बन गया है, और यही मेरा घर है और यही मेरी जागीर। अगर आप मेरे हैं और मैं आपका, तो आयें और इस समुन्दर में कूद पड़ें। वरना, और परिंदों के साथ अपनी दुनिया में वापस लौट जायें। यह आपका इम्तिहान है।"

मेरे अब्बा ने कहा, "अगर तुम अपने दोस्तों से ऐसा सुलूक कर रहे हो तो अपने दुश्मनों से कैसा सुलूक करते होगे?"[50]

यह सच है कि रूहानियत शम्स के दैनिक जीवन का अंग बन चुकी थी, लेकिन शम्स के पिता अपने बेटे के दृष्टिकोण से बेहद हैरान और परेशान थे। फिर भी शम्स बचपन में दु:खी नहीं थे। शम्स के पिता ने उनकी असाधारण प्रतिभा को नहीं पहचाना, फिर भी वे उनसे नाराज़ नहीं होते थे, और न ही उन्होंने अपने विचित्र बेटे को अपना कहने से कभी इनकार किया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि शम्स को बचपन में बहुत प्यार मिला। वे कहते हैं:

मुझे बिगाड़ने के लिए मेरे अम्मी-अब्बा ज़िम्मेदार थे। अगर बिल्ली कोई बरतन तोड़ डालती तो मेरे सामने में वे उसे भी सज़ा नहीं देते थे।[51]

यह भी सच है कि उनके पिता ने ही उन्हें उनके आध्यात्मिक गुरु शैख़ अबू बक्र-ए सल्लह बाफ़ को सौंपा था।

उनकी शिक्षा

आम तौर पर शम्स को एक अशिक्षित परन्तु आकर्षक व्यक्तित्व वाला व्यक्ति माना जाता है। मक़ालाते शम्से तब्रीज़ी से उनकी शिक्षा के बारे में कुछ जानकारी मिलती है और यह भी पता चलता है कि अपने समय के किन-किन विद्वानों से उनकी जान-पहचान थी। उन्हें फ़ारसी और अरबी कलाम की, विज्ञान की, ऐतिहासिक सूफ़ी हस्तियों की और इसलाम के क़ानून की विस्तृत जानकारी थी। मुवहिद[52] इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उनका प्रशिक्षण शाफ़ेई शाख़ा* में हुआ था। शम्स के बारे में रूमी कहते हैं कि रसायन-विद्या में उन जैसा विद्वान् और कोई नहीं था, और जहाँ तक सितारों की स्तुति, गणित में वर्गीकरण, धर्म-दर्शन, न्याय के प्रश्न, ज्योतिष विद्या, तर्क-शास्त्र और वाद-विवाद का प्रश्न है, उनके बारे में कहा जाता था कि पूरी दुनिया में उन जैसा विद्वान् कोई नहीं है...।[53] शम्स भी हमें बताते हैं कि अन्त में प्रभु से साक्षात्कार की उनकी इच्छा इतनी प्रबल हो गई कि उनके मन में न्यायशास्त्र के लिए कोई स्थान ही नहीं रहा। वे कहते हैं:

हालाँकि, मैं क़ानून का जानकार था और मैंने तनबीह† व दूसरी किताबें कई बार पढ़ी थीं। पर अब उनमें से कोई भी मुझे याद नहीं, एक भी नहीं।[54]

शम्स रूमी को उनकी क़ानूनी ट्रेनिंग का हवाला देकर समझाते हैं कि वे अपने विचारों को कैसे उदार बनायें तथा कैसे दूसरों के विचारों पर

---

* शाफ़ेई और अबू हनीफ़ेह इसलाम के क़ानून के चोटी के दो विशेषज्ञ थे। दोनों इसलामी क़ानून की अलग-अलग प्रमुख शाखाओं के मुखिया थे।

† तनबीह शाफ़ेई शाखा के क़ानून की पाँच सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण तथा प्रसिद्ध पुस्तकों में से एक है।

प्रतिक्रिया व्यक्त करें, और इस बात पर भी ज़ोर देते हैं कि उन्हें धर्मग्रन्थों से ही नहीं, दुनिया से भी कुछ सीखना चाहिए। उनका उद्देश्य रूमी को संसार में निर्लिप्त रहने की शिक्षा देना था:

> अब बताओ कि तुम्हारी कल्पना में सूरज के उगने और सितारों की गर्दिश की कैसी तसवीर उभरकर आती है। क्या वही तसवीर जिसमें सितारों की विद्या जाननेवाले उनका बयान करते हैं? सरसरी तौर पर क़ुरान पढ़ लेने से यह विषय अच्छी तरह से समझ में नहीं आ सकता। आओ ज़रा सोचें! पूरा विश्वास उसी को होता है जो खोजी है। सितारों की विद्या में कोई भी बात जो समझ में आ सकती हो और सही लगती हो, ज़रूर मान लेनी चाहिए। मिसाल के तौर पर, मैं शाफ़ेई की शाखा का हूँ। अगर मुझे अबू हनीफ़ेह की शाखा में कोई अच्छी बात मिल जाये जिससे मेरे काम में मदद मिल सके, और वह बात मैं न मानूँ, तो यह सिर्फ़ मेरी ज़िद होगी।[55]

यह बात वे स्पष्ट कर देते हैं कि वे एक दरवेश हैं, एक फ़क़ीर हैं, लेकिन अकसर वे अपनी शिक्षा को इसलाम धर्म के विद्वान् की भाषा में व्यक्त करते हैं ताकि केवल वे लोग ही, जो सचमुच बात को समझ सकते हैं, क़ानून की भाषा के परदे में छिपे अर्थ को पकड़ सकें:

> मेरे एक दोस्त से पूछा गया कि क्या मैं क़ानून का जानकार हूँ या एक फ़क़ीर। उसने जवाब दिया, "दोनों, क़ानून का जानकार भी और फ़क़ीर भी।"
>
> तब उससे पूछा गया, "तो फिर उनके सभी शब्द क़ानून से ही क्यों सम्बन्ध रखते हैं?"

> मेरे दोस्त का जवाब था, "उनकी फ़क़ीरी इतनी खोखली और सतही नहीं है कि वे फ़क़ीरी की बातें इन लोगों को यूँ ही बता दें। इन्हें ये बातें बताना तो नादानी होगी, इसलिए अपनी क़ानून की जानकारी का सहारा लेते हुए वे रूहानियत के राज़ों को छिपाकर ऐसे शब्दों में प्रकट करते हैं जिन्हें दोहराया न जा सके।"[56]

रूहानी शिक्षक तथा अन्य शैख़ (कामिल दरवेश)

शम्स अभी बहुत छोटे ही थे जब उन्हें शिक्षा के लिए वहाँ के एकमात्र प्रतिष्ठित आध्यात्मिक गुरु शैख़ अबू बक्र-ए सल्लह बाफ़ के हवाले कर दिया गया। इस नाम का अर्थ है 'टोकरियाँ बुननेवाला'। शम्स बताते हैं:

> तब्रीज़ में मेरे एक रूहानी गुरु थे जिनका नाम था अबू बक्र। उनसे मैंने अन्दर के तमाम मुक़ामों का मालिक बनना सीख लिया था, लेकिन मेरे अन्दर कोई ऐसी चीज़ थी जो न मेरे गुरु देख पाये थे और न ही वह अभी तक किसी और को दिखाई दी थी।[57]

और अफ़्लाकी[58] से हमें यह भी पता चलता है:

> उस समय जिसे परमात्मा की दोस्ती भी हासिल हो और जो अपने दिल को खोलकर भी रख दे, ऐसी ऊँची हस्ती के जोड़ का कोई नहीं था। जो आध्यात्मिक पद और अन्दर के मुक़ाम शम्स अल-दीने तब्रीज़ी ने हासिल किये थे, उनसे उन्हें सन्तोष नहीं हुआ था। वे तो और ऊँचे मुक़ाम पर पहुँचना चाहते थे; वे चाहते थे कि और आध्यात्मिक उन्नति करें; शैख़ साहिब की संगति की दया से वे जहाँ तक पहुँचे थे उससे भी आगे बढ़ें; जहाँ तक हो सके पूर्ण मनुष्य बनें; अन्दर ऊँचा और फिर ज़्यादा ऊँचा मुक़ाम हासिल कर सकें।

प्रभु की खोज में सफलता प्राप्त करने की लगन उन्हें एक क़स्बे से दूसरे क़स्बे में और एक शहर से दूसरे शहर में ले गई। दूर-दूर की अपनी यात्रा के कारण वे शम्से परिंदा और शैख़े परिंदा यानी 'उड़ता शम्स' और 'उड़ता शैख़' के नाम से पुकारे जाने लगे। शम्स कहते हैं:

> *शुरुआत में, ख़ुदा से मिलाप की तड़प के लिए यह ज़रूरी है कि हमें बेचैनी महसूस हो और हम भ्रमण के लिए तत्पर रहें, हालाँकि जिसकी खोज होती है, वह 'लामकान' है, उसका कोई ठिकाना नहीं।*[59]

शम्स अपने समय के कई अध्यात्म-विद्या के विद्वानों और महात्माओं से मिले। दमिश्क की अपनी एक यात्रा के दौरान शैख़ मुहम्मद (मोही अल-दीन मुहम्मद इब्ने अली इब्न-अल अरबी) से मिले जो इब्न अरबी के नाम से जाने जाते हैं। वे अंदलुस के एक महान् सूफ़ी थे। शम्स अपने प्रवचनों में अकसर शैख़ मुहम्मद के नाम से उनका उल्लेख करते थे। इब्न अरबी का जन्म सन् 1165 में हुआ था और वे शम्स से लगभग बीस साल बड़े थे। यह तो स्पष्ट है कि दोनों का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध था, फिर भी शम्स रूमी से कहते हैं कि उन्होंने जितना इबन-अल अरबी से सीखा हुआ है, उससे कहीं ज़्यादा वे उनसे (रूमी से) सीख रहे हैं:

> *कभी-कभी शैख़ मुहम्मद सिजदा करते हुए कहते, "मैं मज़हबी उसूलों को मानता हूँ," लेकिन वे उन उसूलों के अनुसार चलते नहीं थे। मुझे उनसे बहुत फ़ायदा हुआ है, मगर उतना नहीं जितना आपसे होता रहा है।*[60]

इसमें कोई सन्देह नहीं कि शम्स जब कभी अरबी से नाराज़ भी होते, तो भी उनके मन में अरबी के लिए सम्मान की भावना रहती:

> *कई बार शैख़ मुहम्मद ज़िक्र करते कि यह व्यक्ति या वह व्यक्ति ग़लती पर है। फिर मैं उनको ग़लती करते हुए देखता और कभी-कभी उनसे उसका ज़िक्र भी कर देता। वे सिर झुका लेते और कहते, "बच्चे! तुम मुझे बहुत बुरी तरह डाँट रहे हो।" वे तो पहाड़ जैसे ऊँचे व्यक्तित्व के मालिक थे। मैं जो कुछ भी कहने जा रहा हूँ, उसमें मेरा बिलकुल कोई बुरा इरादा नहीं है। उनकी कही मामूली-सी बात में भी इतनी गहराई होती कि [पैग़म्बर का दर्जा हासिल करने के सपने देखनेवाले] शैख़ों की समझ से बाहर होती। कभी-कभी उन्हें अपने अन्दर कोई रूहानी अनुभव होता और वे उसके बारे में मुझसे बात करते। फिर मैं उन्हें बता देता कि वे कैसे उस आन्तरिक अवस्था को बनाये रख सकते हैं।*[61]

औहद अल-दीन किरमानी एक और सूफ़ी दरवेश थे जिनका *मक़ालाते-शम्से-तब्रीज़ी* में ज़िक्र किया गया है। बग़दाद की एक यात्रा के दौरान शम्स की उनसे मुलाक़ात हुई। शैख़ औहद उस समय एक ख़ानक़ाह (फ़क़ीरों के रहने का स्थान) का कार्यभार सँभालते थे। शम्स ने उनसे पूछा कि वे क्या कर रहे हैं। शैख़ ने ख़ूबसूरत चेहरों को देखने का अपना शौक़ ज़ाहिर करते हुए जवाब दिया, "मैं तालाब में चाँद को देख रहा हूँ।" तब शम्स ने उनसे पूछा, "अगर आपकी गरदन में कोई नासूर नहीं है तो आप सर उठाकर चाँद को ऊपर आसमान में ही क्यों नहीं देखते?"[62] शम्स औहद को यह याद दिला रहे थे कि परमसत्य परमात्मा तो अन्तर में है, कहीं बाहर नहीं, और वे परमात्मा को बाहर परछाइयों में देखने के बजाय अपने अन्दर देख सकते हैं।

शम्स का जीवन और उनकी यात्राएँ

अपनी अनेक यात्राओं के दौरान शम्स शहर पहुँचकर किसी कारवाँ सराय में ठहर जाते थे। फ़रीदुन सिपहसालार के शब्दों में:

शम्स नाम व शोहरत से हमेशा कतराते और आम लोगों से दूर अकेले रहते। शहर पहुँचने पर वे सौदागरों का रंग-ढंग अपनाते। वे कारवाँ सराय में एक कमरा किराये पर ले लेते और दरवाज़े पर एक भारी ताला लगा देते, मानों अन्दर बड़ा क़ीमती सामान रखा हो। मगर अन्दर एक पुआल की चटाई, पानी के घड़े और मिट्टी की एक ईंट के सिवा कुछ नहीं होता था।[63]

शम्स का ध्यान सदा आन्तरिक मार्ग पर ही केन्द्रित रहा। उन्होंने केवल उन्हीं कुछ वस्तुओं को चाहा जो जीवित रहने के लिए ज़रूरी थीं और किसी से भी अपनी विशेष सेवा करवाना कभी गवारा नहीं किया:

जिन दिनों शम्स दमिश्क में थे, वे फ़ाक़ा तोड़ने के लिए कभी-कभार ही अपने कमरे से बाहर निकलते थे। एक साल तक उन्होंने ऐसा ही जीवन बिताया। जिस दुकानदार से वे अपना खाना ख़रीदते थे, उसे आख़िर शक हो गया कि वह ज़रूर एक महान् सन्त होगा जो अपनी इच्छा से इस तरह का जीवन जी रहा है। इसलिए अगली बार जब शम्स ने अपना हमेशा का खाना माँगा तो दुकानदार ने बड़े आदर से दो ताज़ी रोटियों के साथ एक स्वादिष्ट पकवान भी परोस दिया। शम्स ने तुरन्त इस ख़िदमत का कारण भाँप लिया और हाथ धोने के बहाने उठ गये, और वह जगह और वह शहर ही छोड़कर चले गये।[64]

कुछ समय बाद शम्स भी सफ़र से तंग आ गये:

इस सफ़र के दौरान मुझे इतनी मुश्किलों का सामना करना पड़ा और इतनी तकलीफ़ें सहनी पड़ीं कि अगले दो सालों में भी उनका दर्द नहीं जायेगा। उस दर्द की भरपाई करने के लिए अगर कोन्या को सोने से भर दिया जाता तो भी मुझे जो कुछ भुगतना पड़ा था, उसका हिसाब बराबर न होता।... लेकिन आपकी दोस्ती में इतनी ताक़त थी कि मैंने सब कुछ सह लिया।[65]

शम्स अपने प्रवचनों में बार-बार यात्रा से सम्बन्धित दृष्टान्त देते थे और रूहानी मार्ग समझाने के लिए स्थानीय भूगोल तथा यात्रा का ही प्रतीक के रूप में प्रयोग करते थे:

अगर तुम रास्ते से एक क़दम भी भटक गये तो रेगिस्तान में पहुँच जाओगे। आक़सरा से कुछ ही आगे चलकर तुम कोन्या पहुँचोगे, और अगर सही रास्ता पकड़ने में तुमसे ज़रा-सी भी चूक हो गई तो गहरे बियाबान में जा पहुँचोगे। रास्ते पर ध्यान रखो और पता लगाओ कि क्या यही सही रास्ता है।... रास्ते में से और कई रास्ते निकलते हैं; कोई एक तरफ़ जाता है कोई दूसरी तरफ़। तुम्हें सही रास्ते पर चलते रहना होगा। एक बार कोन्या पहुँच जाओगे तो फिर सोच-विचार करने की कोई ज़रूरत नहीं रहेगी।[66]

बुद्धि से प्राप्त किये गये ज्ञान और करनी के द्वारा प्राप्त किये गये ज्ञान के भेद को स्पष्ट करने के लिए भी शम्स यात्रा से सम्बन्धित दृष्टान्तों का उपयोग करते थे:

ख़ुदा की राह के बारे में बहस करने में आप जितनी जान खपाते हैं, उससे जान पड़ता है कि आप ज्ञान के सहारे इस रास्ते पर चलना चाहते हैं। पर इस रास्ते पर चलने के लिए आपको कोशिश और मेहनत की ज़रूरत है।[67]

शम्स की रूमी से भेंट

जैसा कि हम देख चुके हैं, शम्स को बचपन से ही प्रभु-प्राप्ति की बहुत लगन थी और वे दरवेशों और शैख़ों के संग समय बिताया करते थे। आगे चलकर वे परमात्मा से विशेष रूप से प्रार्थना करने लगे कि उन्हें अपनी एक प्रिय आत्मा की संगति प्रदान करे। वे कहते हैं:

> मैं अल्लाह से फ़रियाद किया करता था कि मुझे अपने वलियों [औलिया] से मिला दे और उनकी संगति बख़्शे। मैंने एक सपने में सुना कि मुझे एक सन्त की संगति बख़्शी जायेगी। मैंने पूछा कि वे कहाँ हैं। अगली रात सपने में मैंने सुना कि वे रूम में हैं। कुछ अरसे बाद एक और सपने में मुझसे कहा गया कि अभी उस मुलाक़ात का वक़्त नहीं आया है। "सब कुछ अपने वक़्त से होता है।"[68]

शम्स ने कई जगह लिखा है कि उन्होंने रूमी से मिलाप के सोलह साल पहले उन्हें प्रवचन करते सुना था। बाद में शम्स ने रूमी को बताया कि वे उनसे मुलाक़ात के लिए इन्तज़ार क्यों करते रहे:

> मैं शुरू में ही आपकी तरफ़ बहुत खिंच गया था, हालाँकि जब आपने प्रवचन देना शुरू किया तो मैंने देख लिया था कि अभी आप इन राज़ों को समझने के लिए तैयार नहीं हैं। अगर ये राज़ मैंने आपको तब बताये होते तो आप इन्हें समझ न पाते। तब बताना सिर्फ़ वक़्त बरबाद करना होता क्योंकि समझने की जितनी क्षमता आपमें अब है, उतनी उस समय नहीं थी।[69]

रूमी के बेटे बहा अल-दीन मुहम्मद सुल्ताने वलद ने, जिनका आगे बहाए वलद के नाम से उल्लेख किया जायेगा, अपनी पुस्तक वलद नामा

में लिखा है कि रूमी एक पूरे गुरु की ज़रूरत को अच्छी तरह समझते थे। बहाए वलद कहते हैं:

> मौलाना रूमी ने ऊँचे दर्जे की शिक्षा प्राप्त की थी और धर्म के विद्वान् के रूप में उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, और साथ ही वे अपने पिता सुल्ताने वलद की तरह, जिन्हें समाज में वही पद प्राप्त था, सूफ़ियों के रूहानी रास्ते के राहगीर भी थे। बहुत-से लोग, जिनमें कई प्रमुख शैख़ भी शामिल थे, रूमी के श्रद्धालु थे। उन्हें धर्म-सम्बन्धी समस्या को हल करने की रूमी की योग्यता पर विश्वास था। लेकिन अपने समाज में सम्मान, ऊँचा स्थान और प्रतिष्ठा प्राप्त होने के बावजूद रूमी के दिल में किसी सन्त और कामिल मुर्शिद की अनमोल संगति की कामना थी।[70]

आख़िर 21 नवम्बर, 1244 को शम्स तुर्की में कोन्या गये और रूमी से मिले। इस मुलाक़ात से रूमी और शम्स दोनों में गहरे आध्यात्मिक प्रेम का बीज फूट पड़ा। इस मुलाक़ात के बारे में कई कहानियाँ प्रचलित हैं। बहाए वलद की कहानियों के सिवा बाक़ी सब कहानियों ने बहुत समय बाद लिखित रूप लिया। सिपहसालार की कहानी रूमी के देहान्त के 40 साल बाद और अफ़्लाक़ी की 85 साल बाद लिखी गई। कुछ वृत्तान्तों को चमत्कारों से सजाया गया है, पर वे ख़ुद शम्स द्वारा लिखे गये वृत्तान्तों से मेल नहीं खाते। सिपहसालार और अफ़्लाक़ी की कहानियों में भी बहुत अन्तर है।

दो वृत्तान्तों में रूमी को किताबों से घिरे अकेले या अपने शिष्यों के साथ बैठे बताया गया है। जब शम्स वहाँ पहुँचे तो उन्होंने रूमी से पूछा, "इन पुस्तकों में क्या है?" रूमी ने उत्तर दिया कि आप नहीं समझ सकेंगे। तब, एक वृत्तान्त के अनुसार, पुस्तकों को आग लग गई और दूसरे वृत्तान्त

के अनुसार उन्हें पानी में फेंक दिया गया। बाद में शम्स ने उन्हें ज्यों का त्यों बाहर निकाल लिया। इस पर रूमी ने पूछा कि यह सब क्या है। शम्स ने उत्तर दिया कि आप नहीं समझ सकेंगे।

अहमद अफ़्लाक़ी एक और वृत्तान्त में लिखते हैं:

> जब शम्स ने मौलाना को देखा तो पूछा कि क्या हज़रत मुहम्मद (इसलाम के पैग़म्बर) बड़े हैं या बायज़ीद (एक प्रसिद्ध सूफ़ी दरवेश)। मौलाना ने कहा, "यह कैसा सवाल है? मुहम्मद साहिब ही आख़िरी पैग़म्बर हैं।* सवाल उठता ही कहाँ है?" शम्स ने पूछा, "तो फिर हज़रत मुहम्मद ने ख़ुदा से यह क्यों कहा, 'हम आपको अभी ठीक-ठीक नहीं जान पाये', और बायज़ीद ने यह क्यों कहा, 'तारीफ़ के क़ाबिल हूँ मैं; कितना ऊँचा दर्जा है मेरा!' मौलाना ने यह आश्चर्यजनक प्रश्न सुना तो बेहोश होकर गिर गये, और जब होश में आये तो शम्स को अपने घर ले गये। फिर चालीस दिन तक किसी ने उनके एकान्त में विघ्न डालने का साहस नहीं किया।[71]

सिपहसालार लिखते हैं:

> शम्स एक सौदागर के वेश में कोन्या आये और वहाँ चावल बेचनेवाले एक दुकानदार के मकान में किराये पर जगह ले ली। बाहर मेज़, कुर्सी वग़ैरह से सजे छोटे-छोटे कमरे थे जिनमें शहर के बड़े-बड़े दुकानदार और सम्मानित व्यक्ति आपस में मिलने के लिए इकट्ठे होते थे। एक सुबह जब शम्स कमरे में बैठे थे तो उन्होंने मौलाना रूमी को आते देखा।...जब मौलाना नज़दीक आये

---

* इसलाम के अनुसार हज़रत मुहम्मद आख़िरी पैग़म्बर थे।

> तो उन्होंने शम्स को देखा, कुछ पल रुके, और जिस कमरे में शम्स बैठे थे उसके ठीक सामने वाले कमरे में जा बैठे।
>
> थोड़ी देर तक बिना एक भी शब्द बोले दोनों एक-दूसरे को देखते रहे। शम्स को कोई नहीं जानता था, और न ही कोई यह अनुमान लगा सकता था कि मौलाना वहाँ शम्स से मिलने के लिए बैठे थे। फिर शम्स ने मौलाना के साथ बातें करना शुरू किया। कहा, "ख़ुदा की मेहर हो आप पर, मौलाना! बायज़ीद के बारे में आपकी क्या राय है? कहा जाता है कि उन्होंने ख़रबूज़ा कभी नहीं खाया और इसका कारण वे यह बताते थे कि उन्होंने कभी भी हज़रत मुहम्मद के ख़रबूज़ा खाने की बात नहीं सुनी। ऐसे इनसान के बारे में आप क्या कहेंगे? वे हमेशा हज़रत मुहम्मद के चरण-चिह्नों पर चलते थे, फिर भी उन्होंने कहा, 'या ख़ुदा! मेरा रुतबा कितना ऊँचा है!' और वे दावा करते थे कि उनके चोग़े में दूसरा कोई नहीं, ख़ुदा ही है, जब कि ख़ुद पैग़म्बर ने, जिनका रुतबा इतना ऊँचा और शानदार था, यह कहा था, 'मुझे कभी-कभी चिन्ता होने लगती है और मैं दिन में सत्तर बार ख़ुदा से माफ़ी माँगता हूँ।'"

इस पर मौलाना ने जवाब दिया:

> बायज़ीद फ़क़ीरी के एक ख़ास मुक़ाम पर पहुँच चुके थे, उससे आगे नहीं गये। वहाँ का अलौकिक सौन्दर्य और शान देखकर वे उसमें इतना खो गये कि उन्होंने आगे कुछ देखना ही न चाहा। अपने पर नियन्त्रण खोकर वे चिल्ला उठे कि मेरे चोग़े में सिर्फ़ ख़ुदा है। लेकिन पैग़म्बर साहिब के क़दम पूर्णता की तरफ़ बढ़ते रहे, कभी रुके नहीं। हर रोज़ सत्तर ऊँचे मुक़ामों में से गुज़रते हुए

वे हर मुक़ाम को उससे पहले के मुक़ाम से ज़्यादा शानदार पाते। इसलिए वे निचले मुक़ामों पर रुकने के लिए ख़ुदा से माफ़ी माँगते।

सिपहसालार आगे लिखते हैं:

इस सवाल-जवाब के दौर के बाद शम्स और मौलाना अपने-अपने कमरे में से निकले और एक-दूसरे के गले लग गये। छः महीने तक वे साथ-साथ रहे। यह समय बीत जाने के बाद मौलाना ने अपना इसलामी क़ानून का चोग़ा उतार फेंका और शम्स जैसा दिखने के लिए अपना लिबास बदल लिया। शम्स एक काला ऊनी चोग़ा और काली पगड़ी पहनते थे। कहा जाता है कि रूमी भी काली पगड़ी और हिन्दुस्तान का बना धारीदार कपड़े का चोग़ा पहनते थे।[72]

शम्स के निम्नलिखित कथन से सिपहसालार के वृत्तान्त की सत्यता की पुष्टि होती है:

मौलाना से मेरे पहले शब्द ये थे: बायज़ीद को हज़रत मुहम्मद के चरण-चिह्नों पर चलने की ज़रूरत क्यों नहीं थी और उन्होंने ऐसा क्यों नहीं कहा: "सुबहान अल्लाह*" और "हमने इबादत नहीं की...?†" मौलाना इन शब्दों को पूरी तरह समझ गये और ज़ाहिर है कि वे हज़रत का असली इरादा और उनके शब्दों में छिपे अर्थ को भी समझ गये। उनका मन निर्मल था, इसलिए वे मस्ती में

* मस्ती में बायज़ीद बस्तामी एक बार चिल्लाए थे: काश! मेरी तारीफ़ हो! कितना ऊँचा रुतबा है मेरा!

† हज़रत मुहम्मद को यह कहते सुना गया था: हमने आपकी इस तरह इबादत नहीं की जिस तरह की जानी चाहिए थी।

आ गये। उनके मन की निर्मलता और पवित्रता के कारण उन पर कुल राज़ प्रकट कर दिया गया। उनकी मस्ती को देखकर मुझे इन शब्दों से मिलनेवाली ख़ुशी का एहसास हुआ, हालाँकि पहले मैं इस ख़ुशी से बिलकुल बेख़बर था।[73]

जब वे एक-दूसरे से मिले तो रूमी तुरन्त शम्स की ओर आकर्षित हो गये और उन्हें देखते ही रह गये:

मौलाना रूमी शम्स अल-दीन के नूर की चमक में पूरी तरह खो गये क्योंकि उन्हें शम्स के व्यक्तित्व में ऐसे चिह्न और प्रकाश की ऐसी झलकें दिखाई दीं जिनमें 'प्रियतम' के सौन्दर्य का अपार महासागर लहरा रहा था। और शम्स के मनमोहक शब्दों से बरस रहे प्रेम में सराबोर हो जाने पर उन्हें यह एहसास हो गया था कि शम्स आनन्द के उस दिव्य महासागर में मिलकर उसी का रूप हो गये थे। शम्स के प्रबल आकर्षण ने रूमी को दीवाना बना दिया और उन्होंने अपना सर शम्स की बतायी राह पर झुका दिया।[74]

आध्यात्मिक गुरु की खोज से सम्बन्धित कहानियों में अकसर यह पढ़ने को मिलता है कि शिष्य गुरु को नहीं खोजता, बल्कि प्रभु के प्रेम में लीन गुरु ही अपने शिष्य को खोजता है। फिर भी यह भेद उस शिष्य पर प्रकट नहीं होता जिसने अपने अन्दर खींच महसूस की और गुरु की खोज में निकल पड़ा है। शम्स और रूमी के मामले में यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि वह गुरु ही था जो अपने शिष्य को ढूँढ़ने के लिए सफ़र पर निकल पड़ा था। वह जानता था कि ठीक किस जगह और किस समय उन दोनों की भेंट होगी। जैसा कि पहले कहा गया है, शम्स ने रूमी से कोन्या जाकर मिलने से पहले 16 वर्ष प्रतीक्षा की थी।

मानव-जाति के इतिहास में कुछ कामिल दरवेशों के शिष्यों की संख्या बहुत बड़ी रही है और कुछ की बहुत कम, लेकिन ऐसा कभी साफ़ ज़ाहिर नहीं हुआ, जैसा कि उस समय हुआ, कि कोई कामिल दरवेश विशेष रूप से केवल एक ही शिष्य के लिए आया हो। शम्स ने रूमी को खोजा क्योंकि वे जानते थे कि वही एक ऐसा मित्र होगा जो उनकी बातें समझ सकेगा। शम्स ने रूमी को खोजा ताकि रूमी के दिल में उनकी संगति की चाह उत्पन्न हो। शम्स ने रूमी को दुनिया से विरक्त करने का पक्का इरादा कर लिया था। रूमी के अनुयायियों के सक्रिय विरोध के बावजूद उन्होंने उन्हें रूहानियत का पाठ पढ़ाया। शम्स ने जिस दृढ़ता से अपना ध्यान रूमी को पूर्ण ज्ञान देने पर केन्द्रित किया, उसके वृत्तान्त से परमात्मा की दया और जीवों के उद्धार करनेवाले पैग़म्बरों के बारे में बहुत कुछ पता चलता है।

जब शम्स आये तो रूमी एक नए जिज्ञासु नहीं, बल्कि इसलामी क़ानून के एक परिपक्व और सम्मानित विद्वान् थे जिनके अपने भी चेले थे। अनेक परम्पराओं में ऐसे कई वर्णन मिलते हैं कि शैख़, रब्बाई, या गुरु कैसे प्रचार आरम्भ करते हैं और इनमें बहुत-से वर्णन काफ़ी रोमांचक हैं। गॉस्पल्ज़ में लिखित उस क्षण को याद करें जब जीज़स ने आम श्रमजीवियों को अपने पास बुलाकर कहा था कि वे उनके उपदेश का पालन करें और वे उन्हें "आदमियों के मछुआरे" बना देंगे। शुरू-शुरू में ऐसे प्रस्तावों की विभिन्न प्रतिक्रियाएँ हुईं। रूमी के अपने बहुत-से अनुयायी थे और उनकी अपनी हैसियत थी, फिर भी उन्हें तत्काल शम्स की महानता का एहसास हो गया और वे उनके उपदेश का पालन करने के लिए तैयार हो गये, हालाँकि उन्हें इस बात का अन्दाज़ा नहीं था कि उनके जीवन में कितना परिवर्तन आ जायेगा।

बहाए वलद शम्स की उच्च आध्यात्मिक अवस्था का वर्णन करते हुए बताते हैं कि इससे रूमी में परिवर्तन क्यों आयेगा और दोनों के लिए इसके क्या परिणाम होंगे:

अचानक उनके [रूमी के] सामने आया धर्म का सूरज,*
चमक में उसके प्रकाश की अस्तित्व उनका मिट गया।
इश्क़ की दुनिया से भी दूर से, बिन साज़ बिन डफ़ली आया इक नग़मा,
किया प्रियतम की हालत का बयान कुछ ऐसा
कि राज़ भी कपिला† के फीके पड़ गये।
कहा उसने रूमी से: नाता है अगरचे तुम्हारा अन्दर के मुक़ामों से,
तो मैं हूँ अन्दर के भी अन्दर के मुक़ामों का।
सुनो, अब जो कहता हूँ मैं:
राज़ों का राज़ हूँ मैं, चिराग़ों का चिराग़।
फ़क़ीर भी थाह नहीं पा सकते मेरे राज़ों की।
इश्क़ एक परदा है मेरी राह में;
इश्क़, एक ज़िन्दा हस्ती, है मुर्दा मेरे सामने।
एक अजब संसार था जिसमें आने की दावत दी उसने उसे,
स्वप्न में भी न देखा जिसे किसी तुर्क या अरब के रहनेवाले ने।
जो ख़ुद ही थे मौलाना, फिर नौसिखिया बने,
प्राप्त फिर से किया ज्ञान प्रतिदिन उनकी संगति में।
अन्त तक पहुँच चुके थे वे, कर लिया आरम्भ फिर से,
अपने ही शिष्य थे उनके, फिर ख़ुद शिष्य बन गये।
फ़क़ीरी के ज्ञान में अगरचे पूर्णता प्राप्त कर चुके थे वे,
उन्हें और आगे ले जाया गया।
मार्गदर्शक उनके बने शम्स तब्रीज़ ऐसे,
इरादा जिनका लहू बहाने का था।‡[75]

---

* शम्स=आफ़ताब, सूरज; अल-दीन=धर्म का।

† एक सितारा।

‡ अहं को मिटा देने का।

साधारण भाषा में बहाए वलद आगे कहते हैं:

मौलाना रूम ने मौलाना शम्स अल-दीन को अपने घर आने की दावत दी और अर्ज़ की कि उनका घर और सारा साज़ो-सामान उनकी सेवा में हाज़िर है। इस तरह दोनों ख़ुशी-ख़ुशी उनके घर गये।[76]

शम्स अपने बारे में कहते हैं:

मैं किसी की नक़ल नहीं करता, और वे लोग जिन्हें ख़ुदा की ख़िदमत भाती है, पहले ही मेरे शब्द सुन चुके हैं। मैं बहुत-से प्यारे दरवेशों से मिला हूँ और मैंने उनके साथ समय बिताया है। सच्चे ईमानदार दरवेशों और धोखेबाज़ व बेईमान दरवेशों में जो अन्तर है, वह मैं उनकी बातों और उनके कर्मों से अच्छी तरह समझता हूँ। जब तक कोई पूर्ण रूप से सबसे ऊँचा और श्रेष्ठ न हो, उस पर इस नाचीज़ का दिल नहीं आता – यूँ ही कोई इसका चहेता नहीं बन जाता, और यह परिन्दा हर किसी चोगे पर चोंच नहीं मारता।[77]

वास्तव में, शम्स किसी ऐसे व्यक्ति की संगति के इच्छुक थे जो उनके उपदेश, उनके वचनों और कार्यों को समझने के योग्य हो। सूफ़ी दरवेशों का कहना है कि परमात्मा ने अपना स्वरूप प्रत्यक्ष करने के लिए सृष्टि की रचना की। एक पूर्ण सन्त ही वह दर्पण होता है जिसमें परमात्मा का रूप प्रत्यक्ष होता है। शम्स कहते हैं:

मैं अपने ध्यान का केन्द्र बनाने के लिए अपने जैसे व्यक्ति को ढूँढ़ रहा था क्योंकि मैं अपने आप से तंग आ चुका था। मेरी इस बात

से कि मैं अपने से ऊब चुका था, पता नहीं आप क्या समझेंगे। अब जब मैंने उसे अपने ध्यान का केन्द्र-बिन्दु बना लिया है तो मैं जो भी कहता हूँ, वह [रूमी] समझ लेता है और उसे ग्रहण कर लेता है।[78]

शम्स और रूमी के मिलन की कोई भी कहानी इतनी रोचक नहीं है जितनी उनके उपदेश की शक्ति या उस प्यार का आकर्षण जो रूमी की इन पंक्तियों में साकार हुआ है:

तेरी ख़ुशबू पर दीवानी होकर रूह जिस रोज़ उड़ान भरती है,
जान लेती है वह, 'प्रियतम' की ख़ुशबू पहचान लेती है।
ख़ुशबू तेरी की लपटें उड़ जाती हैं जिस पल दिमाग़ से,
दिल सैकड़ों आहें भरता है, रोयाँ-रोयाँ फ़रियाद करता है।
घर को मैंने ख़ाली कर दिया सामान से छुटकारा पाने के लिए,
पस्त हो रहा हूँ मैं तेरे इश्क़ के बढ़ने और दमकने के लिए।
रूह को दाँव पर लगाना बेहतर है इतने बड़े फ़ायदे के लिए,
सुकून!! जिसे पाने के लिए, मेरे मुर्शिद, उचित हर क़ुरबानी है।
तेरे इश्क़ की तलाश में, ऐ तब्रीज़ के शम्सी-अल हक़,
रूह मेरी समुन्दर में
जहाज़ की मानिन्द बिन पैर दौड़ती जा रही है।[79]

शम्स और रूमी की घनिष्ठ मित्रता

अगले सोलह महीने शम्स ने रूमी को रूहानियत का पाठ पढ़ाया। मक़ालात में बहुत कुछ साफ़ तौर पर रूमी के ही मार्गदर्शन के लिए कहा गया है। जिन लोगों ने शम्स के वचन लिखे, वे केवल सौभाग्यवश उनके पास खड़े थे। शम्स रूमी के पास आने का अपना उद्देश्य बताते हैं:

मौलाना के पास आने के लिए मेरी पहली शर्त यह थी कि मैं वहाँ शैख़ की हैसियत से नहीं रहूँगा। ख़ुदा ने दुनिया में कोई ऐसा पैदा ही नहीं किया जो मौलाना का शैख़ हो। ऐसा इनसान के रूप में हो ही नहीं सकता था। मैं ऐसा भी नहीं हूँ कि शिष्य बन सकूँ। मुझमें ऐसा कुछ तो रहा ही नहीं।

अब क्योंकि हमारा रिश्ता सिर्फ़ दोस्ती का है और दिल की तसल्ली के लिए है, मुझे छल करने की कोई ज़रूरत नहीं होनी चाहिए। ज़्यादातर पैग़म्बरों ने सच्चाई बयान नहीं की है। छल का मतलब है, जो दिल में है वह प्रकट न करते हुए कुछ और कहना। "जो अपने मन को जानता है, वह अपने ख़ुदा को समझ लेता है"*...मैं मौलाना का दोस्त हूँ, और मुझे विश्वास है कि वे ख़ुदा के कामिल दरवेशों में से एक दरवेश हैं। ख़ुदा के दरवेश का दोस्त ख़ुदा का दोस्त होता है। यह दस्तूर चला आ रहा है।[80]

रूमी और उसकी लगन के बारे में वे आगे कहते हैं:

पृथ्वी के किसी भी आबाद हिस्से में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में मौलाना की तुलना कर सकता हो, चाहे वह मूल सिद्धान्तों का क्षेत्र हो, चाहे न्यायशास्त्र का और चाहे व्याकरण का। वे तर्कशास्त्र के विशेषज्ञों से बड़े जोश के साथ गहरी अर्थपूर्ण बातें उनसे बेहतर कर सकते हैं...अगर मैं सौ साल भी कोशिश करूँ तो उनके ज्ञान और कौशल का दस फ़ीसदी भी हासिल नहीं कर सकता। लेकिन अब उन्होंने इन सबकी तरफ़ बेपरवाही का रवैया अपना लिया है और – मुझे यह कहते हुए शर्म महसूस हो रही है – मेरी बातें सुनते समय वे अपने को बाप के सामने बैठा दो साल का बच्चा समझते हैं, या उस व्यक्ति जैसा जो अभी-अभी मुसलमान बना है और उसने इसलाम के बारे में कुछ नहीं सुना है। कैसा आत्म-समर्पण है![81]

रूमी के परिवार में शम्स की भूमिका एक बहुत निकट सम्बन्धी जैसी रही:

क्या आप हैरान नहीं होते कि मुझे उसके [रूमी के] घर में प्रवेश कैसे मिला और किस तरह उन्होंने अपनी पत्नी को – जिस पर अगर गेब्रियल की नज़र पड़ जाये तो उसे उनसे ईर्ष्या हो जाये – मेरा विश्वासपात्र बना दिया? मेरे सामने वे ऐसे बैठते हैं जैसे एक बच्चा रोटी की इन्तज़ार में अपने बाप के सामने बैठा हो।[82]

शम्स और रूमी की इस रूहानी मित्रता जैसी और किसी भी मित्रता के बारे में हमनें नहीं सुना। अपनी इस मित्रता के विषय में शम्स कहते हैं:

अगर आपने मुझे देखा है और मैंने मौलाना को देखा है तो आपको ऐसा लगेगा कि आपने मौलाना को देख लिया। मैं सौ बार कह चुका हूँ कि मुझमें उनकी तरफ़ देखने की हिम्मत नहीं है, और मौलाना भी मेरे बारे में यही कहते हैं कि वे मेरी तरफ़ नहीं देख सकते, लेकिन मैं जानता हूँ कि मौलाना का देहान्त होने पर लोगों को बेहद अफ़सोस होगा कि वे उन्हें समझ नहीं पाये और उन्होंने यह अवसर गँवा दिया। तब बहुत देर हो चुकी होगी। अब आप फ़ायदा उठायें और दोस्तों के इकट्ठा होने के महत्त्व को समझें।[83]

* एक हदीस (पैग़म्बर साहिब की फ़रमाई हुई बात)।

शम्स अपने विशेष शिष्य के लिए खुलकर प्रेम व्यक्त करते हैं:

> यह अलौकिक शराब से भरा एक मटका था जो सावधानी से छिपाकर रखा गया था, और सब उससे बेख़बर थे। मैंने दुनिया में अपने कान खोलकर रखे और ध्यान से सुनता हुआ इन्तज़ार करता रहा। वह कनस्तर मौलाना के कारण खुला ...। सच तो यह है कि हम [शम्स] उनके [रूमी के] अपने हैं। हमारे इरादे का और हमारी आँखों के नूर का फ़ायदा उन्हें पहुँचेगा...अगर आपको उनकी कही बातें एक बार सुनना अच्छा लगता है तो मैं उन्हें सौ बार सुनना चाहता हूँ। आप उनके शब्दों के अर्थ लगाने लगते हैं और उन पर टीका-टिप्पणी करते हैं, इसलिए थोड़ी-सी मेहनत जो आप करते हैं, बेकार हो जाती है। लेकिन जिस ढंग से वे अपनी बात कहते हैं, उसी से सौ फ़ायदे मिल सकते हैं।[84]

बार-बार ऐसा जान पड़ता है कि शम्स रूमी के आध्यात्मिक गुरु के रूप में अपनी भूमिका पर सन्देह कर रहे हैं। ऐसा वे शायद इसलिए करते हैं कि रूमी सोचें और समझें कि असल में कौन किसे आध्यात्मिक ज्ञान दे रहा है, और उनमें परिवर्तन किस तरह आयेगा:

> मेरे लिए यह समझना ज़रूरी है कि हमारे सम्बन्ध का आधार क्या है। यह सम्बन्ध भाइयों और मित्रों जैसा है या गुरु और शिष्य जैसा? यह दूसरी तरह का सम्बन्ध मुझे पसन्द नहीं।[85]

बहाए वलद में से लिए इस उद्धरण से हमें शम्स और रूमी के सम्बन्ध की घनिष्ठता का और अधिक गहराई से ज्ञान होता है:

> एक दिन मेरे माननीय पिता मौलाना शम्स अल-दीन की बहुत प्रशंसा कर रहे थे और उनकी ऊँचे रूहानी मुक़ामों में पहुँच, उनकी करामातों और उनकी रूहानी शक्ति के बारे में इतने जोश के साथ बातें कर रहे थे कि ख़ुशी व आदरभाव से भरा मैं जाकर मौलाना शम्स अल-दीन के कमरे के बाहर खड़ा हो गया। उन्होंने मुझे देख लिया और पूछा, "क्या बात है, बहा अल-दीन?" मैंने जवाब दिया, "आज मेरे अब्बा जान आपकी शान में ख़ूब खुलकर बातें कर रहे थे।" उन्होंने कहा, "या ख़ुदा! या ख़ुदा! मैं तो उनकी शान के समुन्दर की केवल एक बूँद हूँ। फिर भी, उन्होंने जो कहा, उससे तो मैं हज़ार बार बढ़कर हूँ।" मैं फिर अपने अब्बा के पास गया और उन्हें यह बात बता दी। इस पर मेरे अब्बा जान ने कहा, "उन्होंने अपनी तारीफ़ की, अपनी शान ज़ाहिर की, लेकिन जो उन्होंने कहा, उससे वे सौ गुना ज़्यादा हैं।[86]

रूमी इसलामी क़ानून के एक शान्त-स्वभाव विद्वान् थे और उनके अपने चेले थे। फिर भी उनमें इतना परिवर्तन आया कि वे एक दीवाने और बेपरवाह कामिल दरवेश बन गये।

> ... रूमी ने पहले कभी समाअ नहीं किया था, लेकिन वे अपनी पारखी नज़र से प्रेमियों के सरताज मौलाना शम्स अल-दीन तब्रीज़ी को समाअ करते देख सकते थे, इसलिए उन्होंने समाअ करना शुरू कर दिया। बाद में उन्होंने यह अपनी ज़िंदगी का दस्तूर बना लिया और आख़िरी दम तक निभाया।[87]

रूमी के अनुयायियों ने जब शम्स के प्रति उनकी श्रद्धा देखी और उन्हें ख़ुद समाअ की मजलिस में जाते देखा जहाँ वे पहले कभी नहीं जाते थे,

तो वे बहुत परेशान हुए। रूमी ने अपने कलाम में अपने गुरु के ध्यान में मग्न होकर अपने आप को खो देने की अवस्था को बहुत सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त किया है। ये कविताएँ बहुत समय से पश्चिम के पाठकों को भी उपलब्ध हैं। रूमी की मसनवी और दीवाने शम्से तब्रीज़ी के अंग्रेज़ी, फ्राँसिसी और जर्मन भाषाओं में अनुवाद उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ से ही उपलब्ध हैं। नीचे दी जा रही पंक्तियों में रूमी ने अपने प्यारे गुरु के प्रेम, दया, मेहर तथा आध्यात्मिक शक्ति का विरोधाभास कथनों में वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि शम्स एक उदार अत्याचारी हैं क्योंकि वे शिष्य को स्वतन्त्रता तो देते हैं, लेकिन बदले में उससे सब कुछ माँग लेते हैं; वे शिष्य को विश्वास तो प्रदान करते हैं, लेकिन उसकी विरह को प्रबल करने के लिए ख़ुद को उससे छिपा लेते हैं। अन्त में वे कहते हैं कि शम्स का चेहरा वह सूर्य है जो नश्वर को अनश्वर बना देता है।

नहीं था कोई उपकार जो उस मनमोहक सौंदर्य ने किया नहीं,
क्या दोष है हमारा गर दया कोई उसने तुम पर की ही नहीं?
तुम कोस रहे हो उसको कि ज़ुल्म ढाया है उस जादूगर ने तुम पर,
पर कौन है दो जहाँ में भला हसीन ऐसा जिसने ज़ुल्म कभी किया नहीं?
गन्ना है इश्क उसका, गो शक्कर उसने कभी दी ही नहीं,
पूरी वफ़ा है सौन्दर्य उसका, गो वफ़ा उसने कभी की ही नहीं।
क्षितिज की शान है चेहरा शम्सेदीन का, चमका नहीं जो कभी
किसी नश्वर चीज़ पर, अविनाशी जिसे उसने कर दिया नहीं।[88]

रूमी के अनुयायी

ऊपर दी गई कविता में रूमी न केवल शम्स के प्रति अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त करते हैं, बल्कि शुरू की पंक्तियों में वे स्वीकार करते हैं कि दूसरों का अनुभव उनसे भिन्न था, क्योंकि दूसरे यह नहीं समझ सकते थे कि शम्स

असल में क्या हैं। "क्या दोष है हमारा गर दया कोई उसने तुम पर की ही नहीं? तू कोस रहा है उसको कि ज़ुल्म ढाया है उस जादूगर ने तुम पर।" स्पष्ट है कि रूमी का इशारा अपने अनुयायियों की तरफ़ है जो इस बात से परेशान और दु:खी थे कि रूमी का ध्यान हर समय शम्स की ओर लगा रहता था जिसका आध्यात्मिक महत्त्व वे समझ नहीं सके थे। बहाए वलद ने उनके क्रोध और ईर्ष्या को निम्नलिखित पंक्तियों में चित्रित किया है:

कौन है यह शख़्स जो हमारे बीच में से ले गया है हमारे मुर्शिद को,
बहा ले जाये पानी जैसे एक तिनके को?
क्या जादूगर है कोई जिसके जादू ने
खींच लिया है मौलाना को अपनी तरफ़?
नहीं तो और क्या है वह? क्या बात है उसमें?
कौन जी सकता है ऐसे छल-कपट में?
पता नहीं लगा सकते उसके वंश या वंशावली का।*
इतना भी नहीं जानते हम तो कि वह है कहाँ का।[89]

और फिर, यह तो शम्स के अपने वचनों से साफ़ ज़ाहिर है कि उन्होंने रूमी के अक्खड़ मुरीदों के मन को जीतने के लिए शायद ही कोई कोशिश की थी। उनका तो सारा ध्यान अपने इस दृढ़ निश्चय पर केन्द्रित था कि रूमी में बदलाव लाना है:

अगर मैं पाखण्ड कर सकूँ तो वे [शम्स के आलोचक] मुझे सोने से ढक दें। मैं तो रूमी को ही इसलाम का सब से बड़ा धार्मिक नेता मानता हूँ, और किसी को भी नहीं। [प्रभु के प्रेम में] उससे बढ़कर

* वंश परम्परा।

ईमानदार यहाँ और कौन है? अगर मैं क़ाज़ी के लिए यही बात कह सकूँ तो वह मेरे सैकड़ों हुक्म मान ले।...मौलाना को छोड़ आप लोगों में से और किसी से भी मुझे कुछ नहीं चाहिए। उनके साथ रहकर ही मैं शान्ति प्राप्त कर सकता हूँ।[90]

और:

मैं हर किसी को शिष्य नहीं बनाता, सिर्फ़ शैख़ को ही शिष्य बनाता हूँ, और हर शैख़ को नहीं, सिर्फ़ किसी कामिल शैख़ को ही।[91]

वे अपनी शक्ति पूरे विश्वास के साथ स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करते हैं, क्योंकि सभी पूर्ण सन्तों की तरह वे यह जानते हैं कि परमात्मा ने उन्हें दूसरों में परिवर्तन लाने की योग्यता प्रदान की है। एक स्थान पर तो वे यह दावा करते हैं कि उनका अभिशाप भी उन लोगों को पूरी तरह बदल देगा जो उन्हें स्वीकार करने को तैयार हैं। वे कहते हैं:

मैंने यह नहीं कहा कि शम्स अल-दीन एक सन्त है; मुझ पर झूठा इलज़ाम लगाया गया है। मैंने तो यह कहा था कि शम्स अल-दीन जिसे बददुआ भी देता है, वह शख़्स सन्त है, बशर्ते कि वह बददुआ उस तक पहुँच जाये।[92]

रूमी को शम्स में बहुत श्रद्धा थी। शम्स को उन्होंने "धर्म का सार" और "परमात्मा का राज़" कहा है, और उनका उल्लेख इस तरह करते हैं:

मेरा मुर्शिद, मेरी मंज़िल, मेरा रोग, मेरी दवा,
खुले आम बोलता हूँ ये शब्द मैं; ऐ सूरज मेरे, मेरे ख़ुदा।[93]

शम्स ने रूमी से बार-बार कहा कि अपने शिष्यों से कहें कि वे अपनी हद में रहें, एक ऐसा कार्य जिसे करने में रूमी को हिचकिचाहट हो रही थी। एक स्थान पर वे कहते हैं:

मैंने उम्मीद की थी कि जो लोग मेरे ख़िलाफ़ हैं, जो मुझ पर सन्देह करते हैं और मेरे बारे में फ़र्ज़ी किस्से गढ़ते हैं, उन लोगों को समझाने का आपको अवसर मिल गया होगा। वे लोग समझ नहीं पा रहे कि वे किसकी बात मानें, अपने दोस्तों की या अपने दुश्मनों की। वे नहीं जानते कि दोनों में से कौन सच्चाई बयान कर रहा है। वे इन्तज़ार कर रहे हैं कि कुछ पता चले जिससे वे यह फ़ैसला कर सकें कि दोनों में से किस पर विश्वास करना बेहतर होगा। मेरा ख़्याल था कि आप उन्हें प्यार से समझा लेंगे, लेकिन आपने उनसे कुछ कहा ही नहीं। आपको उन्हें यह बात सच-सच बता देनी चाहिए थी कि आपने उनसे बोलना इसलिए बन्द कर दिया था कि दरवेश [शम्स] आप लोगों से नाराज़ थे। इससे उन्हें फ़ायदा होता, क्योंकि अभी उन्हें यह एहसास नहीं है कि अगर आप उनसे दूर रहते हैं तो सिर्फ़ इसलिए कि आपको मुझसे मुहब्बत है।[94]

मन में स्वाभाविक ही प्रश्न उठता है कि अपना ध्यान पूर्णतया रूमी पर केंद्रित करके और दूसरों की तरफ़ अवहेलना का रवैया अपनाकर शम्स रूमी और उनके शिष्यों को क्या शिक्षा दे रहे थे। शम्स और रूमी के रहस्यपूर्ण गहरे सम्बन्ध के प्रति उनके अनुयायियों की प्रतिक्रिया पर विचार करना भी उचित जान पड़ता है।

शम्स का प्रस्थान और वापसी

हम इतिहास के एक ऐसे युग में जी रहे हैं जिसमें लोगों की बातचीत में इस धारणा के लिए कोई स्थान नहीं रहा कि रूहानी खोज अपने अन्दर ही करना तर्कसंगत है। आज ऐसा समय है जब मनुष्य के प्राय: सभी कार्यों को आर्थिक परिणाम के तराज़ू पर तोला जाता है, जब जीवन को शारीरिक और भौतिक दृष्टिकोण से देखते हुए स्थूल जगत् तक सीमित मान लिया जाता है। जब यह भी मान लिया जाता है कि जीवन के अन्य उद्देश्य भी हैं, जिनमें परमात्मा की खोज मुख्य है, तो भी यह पहेली बनी रहती है कि आख़िर परमात्मा को पाया कैसे जा सकता है।

इसलिए रूहानी गुरु और शिष्य के सम्बन्ध के विषय में, विशेषतया ऐसे सम्बन्ध के विषय में जो शम्स और रूमी के सम्बन्ध की तरह पूर्णतया एक ही बिन्दु पर केन्द्रित हो, ग़लतफ़हमी उत्पन्न हो सकती है। अध्यात्म-विद्या में, किसी भी और विद्या की तरह, एक देहधारी गुरु की ज़रूरत होती है क्योंकि इनसान इसी तरह से सीखता है; बाहरी गुरु शिष्य को समझाता है कि अन्दर का सफ़र किस प्रकार तय करना है। बाद में शिष्य और उसके अन्दर बैठे 'प्रियतम' का सम्बन्ध ही मूल सम्बन्ध बन जाता है। आश्चर्य की बात नहीं कि जब तक यह रहस्य समझ में नहीं आता, शम्स और रूमी के सम्बन्ध को केवल दो बुद्धिजीवियों के बौद्धिक सम्बन्ध जैसा, और यहाँ तक कि हमारे वासना-प्रधान संसार में दो शरीरों के सम्बन्ध जैसा भी समझ लिया जाता है। लेकिन शम्स और रूमी का सम्बन्ध ऐसा बिलकुल नहीं था। वह अत्यन्त गहरा आध्यात्मिक सम्बन्ध था। रूमी को यह शिक्षा अन्दर के रास्ते पर डालने के लिए दी जा रही थी। शम्स के जाने के बाद रूमी के दिल में उनके लिए जो तड़प थी, वह वास्तव में उनके अपने अन्दर बैठे उनके 'प्रियतम' के लिए, उनके दिव्य स्वरूप के लिए तड़प थी, और यही रूमी के बहुत-से कलाम की विशेषता है। यह बात ख़ास तौर पर मसनवी और दीवान को ध्यान से पढ़ने से स्पष्ट हो जाती है।

रूमी के शिष्यों और कोन्या में रहनेवाले धर्म के प्रमुख विद्वानों ने शम्स के प्रति जो अज्ञानता, ईर्ष्या और क्रोध प्रकट किया, वही अन्तत: उनके कोन्या छोड़कर चले जाने का कारण बन गया। रूमी ने जो कलाम लिखा वह शम्स के प्रति गहरे प्रेम से लबालब भरा हुआ है और शम्स की मिन्नत-समाजत की गई है कि वे रुक जायें। लेकिन शम्स पर कोई असर नहीं हुआ। कोन्या आने के केवल सोलह महीने बाद ही वे वहाँ से चले गये और फिर दिखाई नहीं दिये। शम्स के देह-स्वरूप से दूर होकर रूमी को बिछोड़े की असह्य पीड़ा का कटु अनुभव हुआ। उनकी कलम थम गई। इस दर्दनाक बिछोड़े से और शम्स की संगति की तीव्र इच्छा से रूमी को अन्दर के 'प्रियतम' से मिलाप की तड़प का ज्ञान हुआ। कुछ देर बाद लिखी अपनी कविता में वे कहते हैं:

कल शाम एक सितारे को दिया आपके लिए एक सन्देश मैंने:
कहा मैंने, "पेश करना ख़िदमत मेरी उस चाँद-सी सूरत वाले को"।
सर झुकाया और बोला मैं, "पेश करना ख़िदमत मेरी उस सूरज को,
तपाकर अपनी आग में जो बना देता है सोना सख़्त चट्टानों को।"
खोलकर रख दिया दिल अपना सामने उसके, दिखा दिये अपने ज़ख़्म मैंने;
फिर बोला मैं, "देना उस 'प्रियतम' को ख़बर मेरी जो पीता ही ख़ून है।"*
तन के पालने में झुलाया अपने दिल को कि वह बच्चा शान्त हो जाये,
नींद आ जाती है बच्चे को जब पालना डुलाया जाता है।
पिला दो दूध मेरे दिल के बच्चे को, उसके रोने से हमें राहत दे दो,
मदद करते हो हर पल तुम तो, मुझ जैसे सैकड़ों बेबस इनसानों की।
दिल मेरा वहीं है अब तक जहाँ हुआ मिलाप आपसे;
कब तक देशनिकाला दिये रखोगे मेरे इस उजड़े दिल को?

---

* अंह को मिटा देता है।

कुछ नहीं कहूँगा आगे मैं, पर सर दर्द से बचने के लिए,
मेरी तरसती आँखों को अब कर दे मदहोश ऐ साक़ी।[95]

बाद में रूमी ने सुना कि शम्स को दमिश्क में देखा गया था। उन्होंने शम्स को कोन्या लौटने के लिए मनाने की ख़ातिर अपने बेटे वलद को बीस साथियों के साथ अपनी कविताएँ और कुछ उपहार देकर उनके पास भेजा। उनमें से एक कविता में उन्होंने लिखा है:

आप जिस पल यहाँ से चले गये,
रह गई ज़िन्दगी मोम की तरह जब शहद की मिठास निकल गई मेरी ज़िन्दगी से।
हर रात जलती हूँ, पर वह शमा हूँ मैं जिसमें लौ तो है,
पर आपके दीदार बिन जलने के आनन्द से जो वंचित है।
खण्डहर हो गया है तन मेरा, इसलिए
रूह मेरी है उल्लू जैसी हो गई।[96]

जब शम्स ने रूमी की चिट्ठी और उनकी कविता पढ़ी तो वे मन्द-मन्द मुसकुराये और बोले कि उन्हें वापस बुलाने के लिए सोने से लुभाने की ज़रूरत नहीं थी, रूमी का सिर्फ़ बुलावा ही काफ़ी था। शम्स रूमी की उपेक्षा नहीं कर सकते थे। रूमी के अनुयायी अब समझ सकते थे कि रूमी के लिए शम्स का कितना महत्त्व था, इसका कारण चाहे वे समझ नहीं पाये:

[बहाए] वलद ने कहा, "रूमी के सब साथियों ने पूरी ईमानदारी से अपना सिर झुका लिया है। वे अपने किये पर शर्मिंदा हैं। खेद प्रकट करते हुए उन्होंने सच्चे दिल से बार-बार माफ़ी माँगी है। अब उन्होंने पक्का इरादा कर लिया है कि आज के बाद वे कभी

गुस्ताख़ी नहीं करेंगे और अपने दिल में ईर्ष्या को कभी स्थान नहीं देंगे। वे सब आपके पहुँचने का इन्तज़ार कर रहे हैं।" फिर अपनी नेकदिली और उदारता के कारण शम्स मान गये और उन्होंने रूम वापस जाना स्वीकार कर लिया।[97]

और सिपहसालार कहते हैं:

अब की बार जब मौलाना शम्स अल-दीन और उनके साथी कोन्या पहुँचे तो रूमी और शहर के सभी उच्च अधिकारी और प्रतिष्ठित व्यक्ति उनके स्वागत के लिए गये। कुछ दिन तक रूमी के शिष्य आभार प्रकट करने के लिए जगह-जगह जश्न मनाते रहे और जलसे करते रहे। मौलाना ने शम्स के प्रति असीम निष्ठा और उनसे अत्यन्त निकटता प्रकट की, और उनके साथ पहले से भी अधिक समय गुज़ारा। दिन-रात वे दोनों साथ-साथ रहे।[98]

पहले के बिछोड़े की तरह यह पुनर्मिलन भी 'प्रियतम' से मधुर मिलन की अन्तर्मुख दया का बाहरी प्रतीक बन गया। रूमी कहते हैं:

सपनों में भी नहीं देखा आसमान ने जिसे, वह चाँद लौट आया है,
पानी जिसे बुझा नहीं सकता, आग ऐसी वह लाया है।
देखो जिस्म के घर को, और देखो मेरी रूह को,
यह नशे में चूर है और वह है प्रेम प्याला पीकर शोक में डूबी हुई।
जब मालिक मयख़ाने का बन गया दोस्त मेरा,
शराब बन गया लहू मेरा, और दिल मेरा कबाब।
जब भर आती है आँख मेरी उसकी याद से, तो आती है इक आवाज़:
'वाह-वाह ऐ सुराही, शाबाश शराब!'

किरणें प्रेम की गिरती हैं जिस किसी घर पर,
फाड़ देती हैं, जड़ से उखाड़ देती हैं उसे प्रेम की ये उँगलियाँ।
देखा जब प्रेम का समुन्दर मेरे दिल ने, तो छोड़कर अचानक मुझे
कूद पड़ा समुन्दर में चिल्लाते हुए: अब ढूँढ़ लो मुझे।
शाने तब्रीज़* चेहरा शम्से दीन का है वह सूरज
चले जा रहे हैं दिल जिसकी राह पर बादलों की तरह।[99]

यही वह समय था जब इस कोशिश में कि शम्स कोन्या में ठहरे रहें, रूमी ने उन्हें कीमिया नाम की एक युवा लड़की से शादी करने की सलाह दी। उस लड़की का पालन-पोषण रूमी के घर में ही हुआ था। शादी के कुछ ही समय बाद वह लड़की बीमार पड़ गई और उसका देहान्त हो गया।

जल्दी ही रूमी के अनुयायियों में एक बार फिर शम्स के प्रति नकारात्मक रवैये और व्यवहार के लक्षण दिखाई देने लगे। रूमी के सुपुत्र बहाए वलद कहते हैं:

रूमी के अनुयायियों के दिल में ईर्ष्या की भावना ने फिर ज़ोर पकड़ लिया। मौलाना शम्स अल-दीन ने उनके गुस्ताख़ रवैये और बातों पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने धैर्य के साथ सब सहन किया और रूमी से उसका ज़िक्र नहीं किया।[100]

और अफ़्लाक़ी कहते हैं:

जब तब्रीज़ के शम्स अल-दीन के प्रेम में रूमी पहले से कहीं ज़्यादा गहरे डूब गये, और उनका जुनून और बेचैनी और उनके

* तब्रीज़ की शान।

दिल में मची उथल-पुथल पहले से सौगुना ज़्यादा हो गई, तो उनके विरोधी शिष्य फिर भड़क उठे और ईर्ष्या के मारे उनसे धृष्टतापूर्ण और लज्जाजनक व्यवहार करने लगे।
जैसा कि किसी कवि ने कहा है:
विद्रोही हैं जो, शिष्टता को उन्होंने ताक़ पर फिर रख दिया है,
बीज कृतघ्नता का और ईर्ष्या का उन्होंने फिर बो दिया है।
कर ली है आत्महत्या और भटक गये हैं राह से,
बोया था जो उन्होंने, अब फिर काट लिया है।[101]

शम्स का अन्तिम प्रस्थान

जब यह अविश्वास और विद्रोह थमा नहीं, तो शम्स ने बहाए वलद से कहा:

इस बार मैं इस तरह यहाँ से जाऊँगा कि किसी को मेरा निशान तक नहीं मिलेगा। मैं अब वापस नहीं आऊँगा ताकि कुछ साल बाद वे यह कहने लगें कि किसी दुश्मन ने उसकी हत्या कर दी। उन्होंने कई बार इन शब्दों पर ज़ोर दिया, और फिर वे अचानक उन लोगों के बीच से ग़ायब हो गये ताकि हर दिल से नाराज़गी दूर हो जाये।[102]

सिपहसालार कहते हैं:

इसलिए एक सुबह जब रूमी मदरसे आये तो उन्होंने देखा कि मौलाना शम्स अल-दीन की जगह ख़ाली है। वे बादल की तरह गरजे और बहाए वलद के घर जाकर बहुत ऊँची आवाज़ में बोले, "ओ बहा अल-दीन! तुम सो क्यों रहे हो? उठो और अपने मुर्शिद की तलाश करो। मेरी ज़िन्दगी एक बार फिर उनकी दया की सुगन्ध से वंचित हो गई है।"

रूमी ने फिर अपने मुर्शिद की सब जगह तलाश की। इस बार वे ईर्ष्या में डूबे नादान लोगों से एकदम दूर रहे। दिन-रात वे प्रेम की कविताएँ लिखते रहे। देर तक शम्स की तलाश करने के बाद रूमी और उनके मित्र और निकट के सम्बन्धी दमिश्क गये (क्योंकि रूमी ने सुना था कि शम्स को वहाँ देखा गया है) और वहाँ ठहरकर उन्होंने मौलाना शम्स अल-दीन की तलाश की। लेकिन उन्हें आख़िर ख़ाली हाथ कोन्या लौटना पड़ा।[103]

शम्स के कोन्या छोड़कर चले जाने और फिर अदृश्य हो जाने के बारे में बहुत-सी कहानियाँ गढ़ी गईं जिनमें उनकी क्रूर हत्या की कहानियाँ भी शामिल हैं। शम्स के अपने शब्दों से हमें पता चलता है कि हम निश्चित रूप से कभी भी नहीं जान सकते कि अन्त में वे किन परिस्थितियों में ग़ायब हुए।

अगर मैं केवल सच्चाई बयान करूँ तो शहर के सब लोग मुझे फ़ौरन बाहर निकाल देंगे। छोटे-बड़े, शहर के सब लोग, जिनमें मौलाना (रूमी) भी शामिल होंगे, मुझे बाहर निकाल देंगे। पूछिये मुझसे कि क्या मौलाना ऐसा कैसे कर सकते हैं। जब वे सबको मुझे निकालते देखेंगे तो वे भी मदद करने के लिए उनके साथ हो लेंगे, लेकिन सिर्फ़ यह देखने के लिए कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। फिर वे मेरे पीछे-पीछे आ जायेंगे। लेकिन इन शब्दों में भी कुछ हद तक छल शामिल है। अगर मैं पूरी सच्चाई बयान कर दूँ तो यहाँ के आप सब लोग मुझे मार डालने की कोशिश करेंगे। लेकिन यह आप कर नहीं सकते। चाहें तो कोशिश करके देख लें। नुक़सान आप लोगों का ही होगा।[104]

अधिकांश लेखकों की कहानियों में शम्स के विरोधियों द्वारा उनके मारे जाने का उल्लेख है, लेकिन बहाए वलद के काव्यात्मक विवरण में, जो शायद सबसे अधिक प्रामाणिक है, ऐसा कोई क़िस्सा नहीं मिलता। अगर यह बात सच होती तो यह सम्भव नहीं जान पड़ता कि रूमी शम्स की खोज में दमिश्क जाते।

मौलाना शम्स अल-दीन मुहम्मद इब्ने-मलिकदादे तब्रीज़ी ने सन् 1244ई. में रूमी को अपना परिचय दिया, और केवल तीन साल बाद वे ग़ायब हो गये। जैसा कि शम्स ने बहाए वलद को पहले ही बता दिया था, उनका कभी कहीं कोई निशान नहीं मिला; यहाँ तक कि उनके वचन भी 500 साल तक छिपे रहे। इस दौरान अपने चरम सौन्दर्य का जादू बिखेरती रूमी की कविताएँ हमें उपलब्ध रही हैं। अब हम उस कुशल माली से मिल सकते हैं और उस समय की उसकी एक झलक देख सकते हैं जब वह बीज बो रहा था। जब रूमी और शम्स क़दम से क़दम मिलाते हुए चले, तब से हमें रूमी की कविताओं से चाँद की उजली चाँदनी मिली है। अब सूर्य उदय हो गया है।

शम्स के अनुसार
मनुष्य-जीवन का महत्त्व

महिमा है प्रभु की!
मनुष्य पर सब कुछ क़ुरबान है,
और मनुष्य अपने आप पर क़ुरबान है।

शम्स, मक़ालात 203

मनुष्य की क्षमता

यह संसार प्रतिबिम्ब है नरदेह का,
और नरदेह प्रतिबिम्ब है इससे परे के संसार का।

शम्स, मक़ालात 266

69 – अगर तुम अपना ध्यान शरीर की ओर से हटा लेते हो और उसे ख़ाली कर देते हो तो तुम अभी सृष्टि के केवल एक अन्य भाग में ही पहुँचे हो। जब सत्य शाश्वत है, उसकी रचना नहीं हुई, तो कोई रचित वस्तु उस अरचित को कैसे खोज सकती है? जिस परमात्मा की आराधना देवता भी करते हैं, उसकी तुलना मिट्टी के साथ [मनुष्य के नश्वर शरीर के साथ] कैसे की जा सकती है? तुम अपनी जान को इतना क़ीमती समझते हो कि उसे हर ख़तरे से बचाने का यत्न करते हो। अगर तुम अपनी इस क़ीमती जान को हथेली पर रखकर [परमात्मा को] भेंट कर भी दो तो क्या महत्त्व है उस भेंट का? जल को सागर के पास ले जाने का क्या महत्त्व है, और इसमें मान और सम्मान की क्या बात है? जब ऐसा उदार-हृदय राजा मौजूद है जिसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, तो तुम अपनी ज़रूरत लेकर उसके पास जा सकते हो, क्योंकि जिसे किसी चीज़ की ज़रूरत न हो वह ज़रूरतमंदों को अपने पास आते देखकर ख़ुश होता है।

इस तरह तुम अपनी ज़रूरत के एहसास के सहारे अचानक इस घटिया वातावरण से [इस सृष्टि से] बाहर निकल जाते हो। तब तुम्हें इस सृष्टि से परे का कुछ मिलेगा, और वह है प्रेम। प्रेम का प्रवाह आता है और तुम्हें चारों ओर से अपनी लपेट में ले लेता है, क्योंकि अगर "वे उससे मुहब्बत करते हैं (क़ुरान 5/54)" तो इसका कारण यह है कि "वह उनसे मुहब्बत करता है (क़ुरान 5/54)।" तुम सृष्टि के माध्यम से ही उसका साक्षात्कार करोगे जो सृष्टि से परे है। "और वह आँखों में समाया हुआ है (क़ुरान 6/103)।"

सारी बात तो यही है; मगर यह कभी ख़त्म नहीं होगी, चाहे तुम क़यामत के दिन तक इसके बारे में बात करते रहो।

शम्स: ज़रूरत का एहसास ही प्रभु के पास जाने का मार्ग है।

84 – मान लो कोई व्यक्ति रास्ते में एक राजा से मिलता है, उसे रुकने को कहता है, और जब राजा लगाम खींचकर घोड़े को रोक लेता है और धीरे-से पूछता है, "तुम क्या चाहते हो?" तो वह व्यक्ति उत्तर देता है, "पकाने के लिए एक-दो प्याज़।"

हम तुमसे कहते हैं, "तुम्हारी क़ीमत इस दुनिया से और इससे परे की दुनिया से भी ज़्यादा है; तुम्हारा अपना महत्त्व है। तुम प्यारे हो और सम्मान के योग्य हो।" तुम कहते हो, "नहीं, सिर्फ़ दो पैसे; मेरी क़ीमत सिर्फ़ दो पैसे है।" मैं कहता हूँ, "काश! तुम पवित्र हृदय के विश्वास के द्वारा हमें देखो और हम जो कहें उसे मान लो। परमात्मा तुम्हारे दायरे विशाल करे।"

हमारे [शम्स के] पास दोनों हैं, वह जो मुख्य है [अन्दर का ईश्वरीय तत्त्व] और वह भी जो गौण है [भौतिक शरीर]। जब मुख्य तुम्हारी पकड़ में आ जाता है तो गौण तत्त्व भी पकड़ से बाहर नहीं रह सकता।

हम न तो पूर्ण सन्त का अपार महत्त्व समझ पाते हैं
और न ही मनुष्य-जीवन का मूल्य।

85-6 – अगर तुम किसी काम को पूरी लगन के साथ नहीं करते तो वह तुम्हें कठिन लगेगा। जब एक बार तुम उस काम में जुट जाओगे तो कठिनाई दूर हो जायेगी। "विलायत*" का क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ एक ऐसा व्यक्ति है जिसका शहरों या गाँवों पर शासन है? नहीं, इसका अर्थ है वह व्यक्ति जिसका अपना मन, अपनी दशा, अपने गुण, अपने वचन और अपना मौन, सब कुछ उसके अपने वश में है। जहाँ शक्ति की आवश्यकता है, वह शक्ति दिखाता है, और जहाँ दया की, वहाँ दया। एक भाग्यवादी की तरह वह यह नहीं कहता कि मैं कुछ नहीं कर सकता, परमात्मा ही सब कुछ करता है। नहीं, उसके गुण उसके वश में होने चाहिएँ; जब उत्तर देने की आवश्यकता हो, वह उत्तर दे और जब चुप रहना आवश्यक हो तो चुप रहे। अन्यथा उसके गुण उसके विनाश का कारण बनेंगे, उसे तड़पाने का कारण बनेंगे। अगर ये उसके वश में नहीं है तो यही इस पर हावी हो जायेंगे।

मन मनुष्य के वश में होना चाहिए,
न कि मनुष्य मन के वश में।

91-2 – सच्चे प्रेमियों के शब्द सुनकर मनुष्य दंग रह जाता है। जब प्रेम सच्चा हो, खोज सच्ची हो तो वह खोज नहीं रहती। मैं बात करता हूँ उस प्रेम की जो सच्चा है, उस खोज की जो सच्ची है। तब वह खोज, खोज नहीं होती, वह तड़प हो जाती है, जिसका अर्थ है "काश! मैं जानता कि परमात्मा कहाँ है!"

सच्चे प्रेमी के पैरों की धूल के बदले अन्य प्रेमियों या किसी भी युग के शैख़ों के सिर मुझे मंज़ूर नहीं। उन लोगों से तो कठपुतलियों की परछाइयों का खेल करनेवाले ही अच्छे हैं जो रात के समय परदे के पीछे से अपने

* शाब्दिक अर्थ हैं, संरक्षकता, किसी प्रान्त का शासन, पवित्रता, युवराज का पद; इसका अर्थ सन्त का पद भी हो सकता है।

तरह-तरह के काल्पनिक खेल दिखाते हैं। वे यह मानते हैं कि वे केवल खेल दिखा रहे हैं। वे स्वीकार करते हैं कि वे जो दिखाते हैं उसमें कोई सच्चाई नहीं है। वे कहते हैं, "हम तो मजबूरी में तमाशा दिखा रहे हैं ताकि हम अपनी रोज़ी-रोटी कमा सकें।" वे बेहतर इनसान हैं क्योंकि वे ईमानदारी से यह सच्चाई स्वीकार करते हैं।

मनुष्य में प्रभु को पाने की तड़प तो है, लेकिन उसमें सिर से पैर तक, तह दर तह, वासना भरी हुई है। जिस पल किसी ऐसी हस्ती का नूर, जिसमें लेशमात्र भी वासना नहीं है [जिसने प्रभु का साक्षात्कर कर लिया है], वासना से भरे इनसान तक पहुँचेगा, या उसके वचनों का प्रकाश उसे ज़रा-सी भी छुएगा, उसे अपनी वासना से कुछ हद तक छुटकारा मिल जायेगा और उसका चेहरा खिल उठेगा। वासना जल्दी ही उसे अपनी लपेट में लेने के लिए लौट आयेगी, लेकिन यह तथ्य कि उन वचनों से उसे ख़ुशी मिली थी उसके लिए काफ़ी पक्का प्रमाण होगा।

शम्स सच्चे प्रेम और वासना में अन्तर बता रहे हैं।

93—शक्ति दया को अपनी ही आँखों से देखती है, इसलिए उसे केवल शक्ति ही दिखाई देती है। प्रभु का यह दास एक काफ़िर से कहता है, "तुम उसके हो, मैं भी उसका हूँ। लेकिन तुम्हारी हस्ती उसकी शक्ति के सहारे है, और मेरी हस्ती उसकी दया के सहारे। दया का महत्त्व शक्ति से ज़्यादा है। इस बात को भूल जाओ कि शक्ति नाम की कोई चीज़ है, और दया का आसरा लो। इसमें ज़्यादा आनन्द है।" इस कथन का अर्थ है कि पैग़म्बर अपने अनुयायियों के हृदय में ऐसा कुछ नहीं डालता जो उनमें पहले से ही नहीं है। वह अपने मनमोहक वचनों से उस परदे को हटाने की कोशिश करता है जो उन्हें सत्य को देखने नहीं देता। सब पैग़म्बरों के वचनों का निचोड़ यही है, [अपने वास्तविक स्वरूप को देखने के लिए] अपने लिए एक दर्पण जुटाओ।

एक पवित्र हृदय ही वह दर्पण है जिसमें प्रभु दिखाई देता है।

97—ऐ सच्चे खोजी! ख़ुश रहो, क्योंकि जो दिलों को ख़ुशी देता है, उसका ध्यान तुम्हारा काम पूरा करने में लगा है। "उसका काम ही दिन के तमाम मामलों को देखना है।"* वह जो भी करता है, प्रेमी या 'प्रियतम' का ही काम होता है। जो कोई कहता है इन दो कामों के अलावा वह कुछ और करता है, वह मूर्ख और अज्ञानी है, चाहे उसे अपनी मूर्खता दिखाई नहीं देती। जिनके पास अलौकिक विवेक है, वे प्रभु के प्रकाश के द्वारा देख सकते हैं। वे समझ जाते हैं कि आम तौर पर जिसे कला और ध्यान की एकाग्रता कहा जाता है, वह वास्तव में आँख पर पड़ा एक परदा है, अज्ञानता का परदा, जो बाक़ी सब कुछ नष्ट हो जाने पर भी क़ायम रहेगा।

ऐ सच्चे खोजी! सर्वशक्तिमान् परमात्मा स्वयं तुम्हारे काम पूरे कर रहा है, अन्दर भी और बाहर भी। वह पूरी तरह तुम्हारा है। तुम्हारा कोई भी काम वह भूलेगा नहीं।

प्रभु ही सब कुछ करता है।

98-9—अगर किसी इनसान ने कभी किसी कमी के बारे में सोचा है तो उसने अपना लिखा पृष्ठ ही पढ़ा है, अपने 'मित्र' का लिखा नहीं। अगर उसने 'मित्र' की लिखी एक भी पंक्ति पढ़ी होती तो उसे ऐसा विचार कभी आ ही नहीं सकता था। वह केवल अपने लिखे पृष्ठ की टेढ़ी-मेढ़ी, उलटी-सीधी निरर्थक काली लकीरें ही पढ़ता है। उसके विचार और उसकी कल्पनाएँ अपनी ही गढ़ी होती हैं, मानों उसने अपने लिए एक बुत तराश लिया हो और फिर उसका बेबस ग़ुलाम बन गया हो।

विशेष धार्मिक त्योहार उन बुतों जैसे होते हैं जो मानों यह कहते हैं, "अपनी वास्तविकता से अनजान इनसानो, तुम चाहते हो कि हम तुम्हें पवित्र कर दें, हम चाहते हैं कि तुम हमारी तरफ़ देखो ताकि तुम्हें दिन में दिन

---

* एक हदीस।

का एहसास न रहे, घंटे में घंटे का एहसास न रहे [समय का कोई अर्थ न रहे] और निर्जीव में कुछ निर्जीव न रहे।"

हम केवल अपने मन के परदों में से देखते हैं।

111-2—कुछ लोग पहुँचे हुए महात्माओं के पास इसलिए नहीं जाते कि उनमें ग्रहणशक्ति कुछ कम होती है। ऐसे महात्माओं से मिलने का लाभ तभी मिलता है जब जिज्ञासु में ग्रहणशीलता हो, योग्यता हो और उसका मन दुनियावी उलझनों से मुक्त हो। जो जिज्ञासु ज़रूरत का एहसास और हृदय में नम्रता की भावना लिए ऐसे महात्माओं के पास जाते हैं, उनमें चाहे योग्यता न भी हो, तो भी उनसे उनकी भेंट निष्फल नहीं होती। फिर भी, मनुष्य को बेहतर बनने की कोशिश तो करनी ही चाहिए, चाहे मुझे आशा नहीं है कि कुछ लोग समय रहते जाग उठेंगे और मौत के समय उन्हें समय गँवाने का पछतावा नहीं होगा।

143—रूमी ने कहा, "इनसान में दो ख़ासियतें होती हैं। एक तो है ज़रूरत के एहसास का होना। इस पहलू को ध्यान में रखो, इसी पर अपनी आशा का महल खड़ा करो; ऐसा करने से तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो जायेगा। दूसरी ख़ासियत है ज़रूरत का एहसास न होना। अगर ज़रूरत ही नहीं है तो आशा किस चीज़ की कर सकते हो? और ज़रूरत की आख़िरी मंज़िल क्या है? उसकी खोज करना जिसे कोई ज़रूरत नहीं है। खोज का असली उद्देश्य क्या है? 'जिसकी खोज है', उस तक पहुँचना। और 'जिसकी खोज है' उसका मूल उद्देश्य क्या है? खोज करनेवाले तक पहुँचना।"

इस पर शम्स ने कहा, "काफ़िर मैं हूँ, और मुसलमान आप हैं। मुसलमान काफ़िर के अन्दर छिपा हुआ है। बतायें कि दुनिया में कोई काफ़िर कहाँ है ताकि मैं उसके क़दमों में गिरकर उन्हें सौ बार चूम लूँ। आप कह दें कि मैं काफ़िर हूँ, तब मैं आपको चूम लूँगा।

"...आप ऐसे मुसलमान हैं जो किसी को चोट या नुकसान नहीं पहुँचाता। चाहे आप मुसलमान हैं, पर इस बात पर ही सन्तोष करके न बैठ जायें। कोशिश करें कि आप ज़्यादा, फिर और ज़्यादा अच्छे मुसलमान बनें। हर मुसलमान को एक काफ़िर की और हर काफ़िर को एक मुसलमान की ज़रूरत होती है। इसलाम की पहचान और इसके नियमों की जानकारी आप एक काफ़िर से ही हासिल कर सकते हैं, एक मुसलमान से नहीं। आपने जो यह कहा—'जिसकी खोज करते हैं' उसका उद्देश्य है खोज करनेवाले तक पहुँचना—उसी बात को ज़्यादा गम्भीरता से कहना चाहिए, लेकिन आम लोग हमारी बातों से परिचित नहीं हैं। इससे वे उलझन में पड़ जाते हैं।"

आवश्यकता मनुष्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

157—जब मनुष्य किसी नश्वर पदार्थ के मिल जाने पर ही ख़ुशी से फूला नहीं समाता, तो कल्पना करो कि अगर वह अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्य, जो उसके जीवन की पूँजी है, उस स्थायी, जीवनदायी 'सत्य' को प्राप्त करने में लगाये तो उसे कितनी ख़ुशी, कितना आनन्द मिल सकता है।

संसार से प्राप्त होनेवाली ख़ुशी प्रभु से मिलाप के आनन्द के आगे फीकी पड़ जाती है।

199—जब तुम अपने आप तक पहुँच गये हो तो ख़ुशी-ख़ुशी आगे बढ़ते चलो। अगर तुम्हें अपने जैसा कोई और मिले तो उसे गले लगा लो, और अगर अपने जैसा कोई और न मिले तो अपने आप को गले लगा लो। उस सूफ़ी की तरह अपने से ही सन्तुष्ट रहो जो हर सुबह अपने पास एक रोटी रख लेता और उससे कह देता कि अगर मुझे खाने को कुछ और मिल गया तो तुम बच जाओगी, नहीं तो मेरे पास तुम तो हो ही।

अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने से सन्तोष मिलता है।

200—हर वह चीज़ जिसका अस्तित्व है, चाहे वह स्वर्ग है और चाहे स्वर्ग का सिंहासन, और चाहे सात आकाश, पृथ्वी, शरीर, मन और आत्मा, सब एक परदा है जिसमें मनुष्य लिपटा हुआ है। जहाँ तक समझ काम करती है, ये सब चीज़ें खोल के ऊपर खोल हैं, परदे के ऊपर परदा। अध्यात्म-विद्या के ज्ञानी का स्तर भी एक परदा ही है जिसका 'प्रियतम' के सन्दर्भ में उसका कोई महत्त्व नहीं। वह 'प्रियतम' है, इसलिए अध्यात्म-विद्या के ज्ञानी का स्तर उससे नीचा है।

सारी सृष्टि प्रभु में समाई हुई है; प्रभु के सिवा
और सब कुछ एक परदा है।

203—प्रभु की महिमा अपार है। मनुष्य पर सब कुछ क़ुरबान है, और मनुष्य अपने आप पर क़ुरबान है।

क्या परमात्मा ने कभी कहा, "हमने आकाश का सम्मान किया," या "हमने सिंहासन को सम्मान दिया?" नहीं, क़ुरान में तो यह कहा गया है, "हमने आदम की औलाद [आदमी] को इज़्ज़त बख़्शी (क़ुरान 17/70)।" यदि तुम सिंहासन तक पहुँच जाओ, या उससे भी परे चले जाओ, या पृथ्वी की सातों तहों के नीचे भी खोज कर लो, तो कोई फ़ायदा नहीं। दिल के दरवाज़े का खुलना ज़रूरी है। यही कारण है कि सब सन्त [औलिया], पैग़म्बर और सच्चे जिज्ञासु घोर संघर्ष करते हैं। वे इसी खोज में हैं।

सम्पूर्ण सृष्टि हर मनुष्य के अन्दर है, इसलिए जब वह अपने आप को जान लेता है तो सब कुछ जान लेता है। तातार* तुम्हारे अन्दर है; तुम्हारे अन्दर क्रोध की भावना ही तातार है। पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद ने कहा था, "या ख़ुदा! मेरे लोगों के रहनुमा बनो, उन्हें राह दिखाओ क्योंकि वे नादान हैं।"

* तातार फ़ारसियों के साथ लड़ रहे थे, इसलिए मन के लिए तातार शब्द का प्रयोग किया गया है।

इसका मतलब है: "ऐ प्रभु! राह दिखाओ उन्हें जो मेरा हिस्सा हैं।" उनका इशारा क़ाफ़िरों की तरफ़ था, पर वे भी उनका हिस्सा तो थे ही। अगर वे उनसे अलग थे तो वे (हज़रत मुहम्मद) पूरे कैसे हो सकते थे? तुम कहते हो कि परमात्मा सम्पूर्ण को जानता है, उसके हिस्सों को नहीं। लेकिन जब तुम कहते हो कि वह सम्पूर्ण है तो कौन-सा हिस्सा उससे अलग रह जाता है? अगर वह किसी एक हिस्से को नहीं जानता तो वह पूरे को भी नहीं जानता, क्योंकि अगर तुम पूरी चीज़ का एक भी हिस्सा उससे अलग कर दो तो वह पूरी नहीं रह सकती।

सौन्दर्य इस चाँद का कुछ उसके सौन्दर्य जैसा दिखता है...
याद दिलाता है उसके फ़रिश्तों जैसे रूप का।
नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं, चाँद क्या है उसके सामने?
ऐ रूह मेरी! हो जा तू ग़ुलाम उसकी।
वह तो ख़ुद अपने जैसा ही दिखता है। (रूमी)

चाँद आया था पिछली रात
घर में तुम्हारे बिस्तर के पास।
जलन के मारे यह सोचा मैंने
कुचल सकता हूँ मैं अपने पैरों तले इसे।
कौन है यह चाँद; और किस अधिकार से
बैठ सकता है इतनी देर तक तुम्हारे साथ,
जैसे कि यह तुम्हारे बराबर का हो?
सब जानते हैं इसे, करते हैं इसकी तरफ़ इशारे,
रात को जगह-जगह घूमता है यह। (रूमी)

सब कुछ मनुष्य-शरीर के अन्दर है और
सब कुछ परमात्मा का अंश है।

212-3—तुम्हें वे सब अपने अन्दर दिखाई देंगे—मूसा, हज़रत ईसा, इब्राहीम, नूह, आदम, हव्वा, ख़िज़्र, एलाइज़ा, आइसिस और बाक़ी सब भी। तुम एक ब्रह्माण्ड हो जिसका कोई किनारा नहीं, पृथ्वी और आकाश की तो बात ही क्या करें! "मैं न तो पृथ्वी में समाया हुआ हूँ, न आकाश में, मैं तो अपने निष्ठावान् सेवक के दिल में रहता हूँ।"*

सब कुछ मनुष्य के अन्दर है।

218—"यह जान लो कि उस ख़ुदा के सिवा और कोई ख़ुदा नहीं है (क़ुरान 19/47)।" यह तुम्हें बताने के लिए एक आदेश है। "अपने गुनाह पर पश्चात्ताप करो (क़ुरान 19/47)।" यह तुम्हें अपने अहं को नकारने का आदेश है क्योंकि यह अहं तुम्हारी अपनी रचना है, और एक रची हुई चीज़ उसे कैसे देख सकती है जिसकी कभी रचना नहीं हुई? तुम्हारे शरीर को भी तो अभी कल ही अस्तित्व मिला है। अब अपनी आत्मा के लिए थोड़े और समय की कल्पना कर लो, और अगर वह समय लाख साल का भी हो तो भी वह थोड़ा-सा ही समय है।

शम्स: हर रचना का समय सीमित है, उस आत्मा का भी जो अपनी अलग हस्ती मानती है।

221—तुम्हें इससे क्या मतलब अगर ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति उससे हुई जो आदि-काल से है? तुम यह जानने की कोशिश करो कि तुम स्वयं आदि-काल से हो या तुम्हारी रचना हुई है। अपना जीवन यह जानने में लगाओ कि तुम कौन हो। तुम इसे ब्रह्माण्ड के स्रोत का पता लगाने में क्यों गँवा रहे हो? या यह जानने में कि परमात्मा कितना रहस्यमय है? अरे मूर्ख! तुम्हारे अपने अन्दर गहरा रहस्य है; अगर कहीं कोई रहस्य है तो वह तुम्हारे

* एक हदीस।

अपने अन्दर है। कैसे मित्र हो तुम अगर तुम अच्छी तरह यह नहीं जानते कि तुम्हारा वह 'मित्र' अन्दर और बाहर कैसा है? प्रभु के कैसे दास हो तुम अगर तुम्हें उसके पूरे रहस्य का और उसकी आन्तरिक अवस्था का ज्ञान नहीं है।

शम्स: अपने अन्दर परमात्मा और उसके रहस्य को जानो।

226—मेरा कोई शिष्य एकदम मुसलमान नहीं बन सकता। पहले वह मुसलमान बनता है, फिर क़ाफ़िर, और फिर दोबारा मुसलमान बन जाता है। हर बार उसका अहं कुछ कम होता जाता है जब तक कि वह पूर्णता प्राप्त नहीं कर लेता।

शम्स: अहं धीरे-धीरे मिटता है।

248—जब तक तुम जीवित हो, और मौत का एलान करनेवाला नहीं आ जाता, तुम्हें प्रभु को पाने की कोशिश करते रहना चाहिए। क्या तुम्हें वह सुनाई देता है जो मौत का एलानची मीनार पर चढ़कर एलान करता है? वह कहता है, "वे किसी को इस शहर से बाहर निकाल रहे हैं। आओ, उनकी मदद करो ताकि उसे जल्दी से जल्दी यहाँ से ले जाया जा सके, नहीं तो उसकी भयंकर दुर्गन्ध सबको यहाँ से भगा देगी और अपना घर छोड़ने पर विवश कर देगी।"

क्षणभंगुर मनुष्य-जीवन प्रभु को पाने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है।

266—यह संसार प्रतिबिम्ब है नरदेह का, और नरदेह प्रतिबिम्ब है इससे परे के संसार का।

299-300—वे भाग्यवादी क्या कर रहे हैं? क्या एक समझदार व्यक्ति जानता नहीं कि यह सब कुछ परमात्मा ही कर रहा है? अगर तुम एक बच्चे

से भी पूछो कि हमें किसने बनाया है तो उसका उत्तर होगा, "परमात्मा ने।" अगर तुम उससे पूछो कि क्या कोई ऐसा घूमनेवाला चक्र है जिसे कोई इनसान या कोई और चीज़ नहीं घुमा रही है तो वह कहेगा, "तुम पागल हो क्या? यह क्या कह रहे हो?" अगर तुम फिर उस बच्चे से पूछो कि कौन अधिक शक्तिशाली है, जिस पर हमारा होना या न होना निर्भर करता है, तो वह उत्तर देगा, "अगर वह अधिक शक्तिशाली न होता तो हमारा होना या न होना उस पर कैसे निर्भर करता? इसलिए वही सबसे शक्तिशाली है।"

मानव की मानवता उसी का साक्षात्कार करने में है जिसका सब पर प्रभुत्व है – उसका साक्षात्कार करने में, जो सृजन करता है, जो सृष्टिकर्ता है, और यह जानने में कि वह सबका सृजन कैसे करता है। आँखें खोलकर और बिना किसी परदे के परमात्मा का उसके असली रूप में साक्षात्कार करने में ही मानव की मानवता है।

नरदेह पाकर जीव को परमात्मा की खोज करने का अवसर मिलता है।

301-2 – जिसे विश्वास है उसके मन में सन्देह अथवा दुविधाएँ नहीं होतीं। वह ऐसा व्यक्ति है जिसके लिए प्रभु ने परदा उठा दिया है। उसे अपना लक्ष्य साफ़ दिखाई देता है। वह निश्चयपूर्वक प्रभु की सेवा करता है, उसका दर्शन करता है और ख़ुश होता है। अगर पूर्व से पश्चिम तक सभी लोग प्रभु के अस्तित्व को अस्वीकार करें और कोई मुझे यह बात बता दे, फिर भी मेरे मन में सन्देह के लिए कोई जगह नहीं होगी। जब मैं उसका प्रत्यक्ष दर्शन करता हूँ और आनन्द लेता हूँ तो मुझे सन्देह क्यों हो? नि:सन्देह, मैं यह कह सकता हूँ, "तुम जो चाहो, कह लो," या शायद मैं उसकी बात हँसी में ही उड़ा दूँ। यह तो ऐसी ही बात हुई कि कोई दिन के उजाले में एक हाथ में छड़ी लिए और दूसरे हाथ से रास्ता टटोलते-टटोलते दीवार के साथ-साथ चलता हुआ, काँपते पाँवों से क़दम रखता हुआ और रोता-चीख़ता तुम्हारे

पास आये और कहे, "तुम मुझे बताते क्यों नहीं कि क्या हो रहा है? कैसी लापरवाही है! सूरज आज निकला ही नहीं।" और कोई दूसरा भी आकर कहता है, "हाँ, मैं भी हैरान हूँ कि आज दिन क्यों नहीं निकला।" इसके विपरीत, तुम देख सकते हो कि इस समय दिन की रोशनी पूरी खिली हुई है। इसलिए अगर हज़ारों लोग भी कहें कि ऐसा नहीं है तो तुम उनके कहे पर केवल और अधिक हँस दोगे।

जिसे विश्वास है वह प्रभु-दर्शन से वंचित नहीं रहता। आओ अब देखते हैं कि विश्वास किसको है।

प्रत्यक्ष दर्शन से ही विश्वास होता है!

322-3 – सृष्टि में जितनी भी रचना हुई है और जिसका अस्तित्व है, उसमें मनुष्य का स्थान सबसे ऊपर और सबसे परे है, क्योंकि उसके ध्यान के दायरे में सब कुछ है, स्वर्ग, दिव्य सिंहासन, आकाश, पृथ्वी और इन दोनों के बीच की हर वस्तु। उसकी दृष्टि हर गुण की गहराई तक भी पहुँचती है, परन्तु प्रभु का दर्शन हज़ारों दृश्यों से बढ़कर है। इसलिए यदि प्रभु में सब गुण हैं और जिसकी रचना हुई है वह भी उसमें मौजूद है, तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है? "... और तुम जहाँ कहीं भी हो, वह तुम्हारे साथ है।" (क़ुरान 57/4)

परमात्मा ने संसार के हर मनुष्य की चेतना को एक निश्चित दिशा दी है, इसलिए वह किसी और दिशा में देख ही नहीं सकता।

उदाहरण के लिए हम सुनार को ले सकते हैं। गहने गढ़ते हुए उसका ध्यान गहने बनाने की कला की बारीकियों, हाथ की कारीगरी, धातुओं के मिश्रण या दिखावे और धोखेबाज़ी की तरफ़ जा सकता है। कोई दूसरा व्यक्ति वाद-विवाद की असलीयत, क़ानून की बारीकियों तथा धर्म के मूल सिद्धान्तों के बारे में सोचता है। किसी और का ध्यान आत्मा, परलोक में शान्ति और परमात्मा के प्रकाश की ओर रहता है, जब कि किसी और का सौन्दर्य, वासना और

प्रेम में। कोई केवल जादू-टोना और हँसी-दिल्लगी करना ही जानता है, और किसी को केवल फ़रिश्तों, स्वर्ग और वहाँ के निवासियों, आकाशमण्डल तथा दिव्य सिंहासन के विषय में ही जानकारी होती है।

सृष्टि के मण्डप में परमात्मा ने हर किसी के लिए एक अलग स्थान निर्धारित कर दिया है और उसके देखने के लिए दृश्य भी अलग हैं, ताकि किसी को किसी दूसरे की स्थिति का पता ही न हो। लाखों प्रकार के अनगिनत पशुओं, पक्षियों, कीड़ों, फ़रिश्तों आदि के लिए तथा मनुष्यों में वैद्यों, ज्योतिषियों आदि के लिए उसने स्थान निश्चित कर दिये हैं। जो जितना ऊँचा उठता है, उतने ही ज़्यादा ये स्थान...

परमात्मा अनेक रूपों के माध्यम से अपनी भक्ति करता है।

640—मनुष्य वास्तव में वही है जो दुःख की घड़ी में ख़ुश रहता है, सुखी न भी हो तो प्रसन्नचित्त रहता है। वह जानता है कि उसकी यह इच्छा या वह लक्ष्य इस प्रतिकूल स्थिति में ही लिपटा और छिपा हुआ है। लक्ष्य की पूर्ति न होने से उत्पन्न हुई निराशा में ही उसकी पूर्ति की आशा निहित है, लक्ष्य के अन्दर ही लक्ष्य को प्राप्त न होने का दुःख छिपा हुआ है।

शम्सः धीरज रखो और निराशा से ऊपर उठो।

651—"मैं सच कहता हूँ, ज़िन्दगी का फ़ुज़ूल इस्तेमाल करनेवाले लोग शैतान के भाई हैं (क़ुरान 27/17)।"

नर-देह का व्यर्थ उपयोग वे करते है जो अनन्त सौभाग्य से प्राप्त मूलधन व्यर्थ गँवा देते हैं, और वह मूलधन है बहुमूल्य मनुष्य-जीवन। अगर हम मान भी लें कि न कभी दण्ड मिलता है और न कभी मुर्दे फिर से जी उठते हैं, फिर भी क्या तुम्हें दुःख नहीं होगा कि तुमने ऐसे सार पदार्थ को एक पत्थर के नीचे दबा दिया और वह नष्ट हो गया?

मनुष्य-जन्म व्यर्थ गँवाने के लिए नहीं है।

चाहे सभी लक्षण इस तथ्य की ओर संकेत करते जान पड़ते हैं कि उसके जीवन का सूर्य अस्त हो रहा है, फिर भी वह सचमुच अपने रात के पहरावे में ही है। वे उसे यहाँ सोने के लिए लाये हैं।

यह तो निश्चित है कि वह आन्तरिक शक्ति हर किसी में जागृत नहीं होती, फिर भी जब परमात्मा के विषय में बात हो रही है तो यह ज़रूरी है कि सबको निमन्त्रित किया जाये ताकि सब प्रभावित हों। सबको निमन्त्रण दो, यद्यपि कुछ की टाँगें नहीं हैं और कुछ को यह पता ही नहीं कि उनकी टाँगें हैं क्योंकि वे सो गई हैं। जब कभी कोई और चलेगा तो उसे देखकर वे भी चल पड़ेंगे और लाभ महसूस करेंगे।

शम्सः सबको मुक्ति के बारे में बताने की आवश्यकता।

676-7—"जलाल अल-दीन रूमी की तरह बात करना असम्भव है"। यही सच्चाई है, क्योंकि प्रभु के वचन और भाषा कौन समझ सकता है? केवल प्रभु के भक्त ही। प्रभु के भक्त बनो ताकि तुम उसके वचन और उसकी भाषा समझ सको।

संसार के भिन्न भिन्न प्रकार के पौधे, पशु तथा निर्जीव पदार्थ, सब स्वर्ग के शान्त वातावरण के साथ मनुष्य-शरीर के अन्दर विद्यमान हैं, और जो मनुष्य के अन्दर है वह उनके अन्दर नहीं है। मनुष्य ब्रह्माण्ड ही है। प्रभु के वचन हैं, "मैं न तो अपने आकाश में समाया हुआ हूँ और न ही अपनी पृथ्वी में। मैं तो अपने प्रेमी भक्त के हृदय में रहता हूँ।"

परमात्मा को मनुष्य-शरीर के अन्दर ही पाया जा सकता है।

679—तुमने अपना केवल यही एक जन्म देखा है, और तुम्हारी तरह जन्म तो सभी पशुओं का भी हुआ है। अगर तुम्हारा केवल यही एक जन्म होता तो तुम किसी भी तरह उनसे भिन्न न होते।

जब तक कोई दोबारा जन्म न ले, वह दयालु प्रभु के दरबार में एक क़दम भी नहीं रख सकता, और न ही वह प्रभु तक पहुँच सकता है।

आत्मा के उत्थान पर शम्स के वचन।

681—कुछ लोग परमात्मा के प्रकट होने के बारे में लिखते हैं, और अन्य कुछ के अन्दर परमात्मा प्रकट हो जाता है। कोशिश करो कि तुम्हारे अन्दर परमात्मा प्रकट भी हो और तुम अपने अन्दर उसके प्रकट होने के बारे में लिखो भी।

690—रूप या आकार भिन्न-भिन्न दिखाई दे सकता है, परन्तु मूलत: वह एक ही होता है। मुझे याद है, सोलह साल पहले मौलाना रूमी कह रहे थे कि सब लोग अंगूरों जैसे होते हैं। अगर गुच्छे में कई अंगूर दिखते हैं तो केवल आकार के कारण, लेकिन जब उनका रस एक कटोरे में निचोड़ लिया जाता है तब क्या वे एक से ज़्यादा होते हैं? अगर कोई इस कथन का अर्थ समझ ले तो मानों उसका काम बन गया।

मूलत: सब मनुष्य एक हैं।

705—कुछ लोगों ने खोज के दौरान ही उसको पा लिया जिसकी उन्हें खोज थी। कुछ के लिए वह मृत्यु के समय प्रकट हुआ, जब कि कुछ अन्य उसे खोजते-खोजते ही चल बसे। उसे पाने की इच्छा लिए मरना भी महान् उपलब्धि है।

शम्स: मनुष्य-जन्म का सदुपयोग करने के कई तरीक़े हैं।

710—वृक्ष का महत्त्व फल पर निर्भर करता है। अगर वृक्ष में फल नहीं लगता तो वह जला देने योग्य है। कहने के ढंग का तभी महत्त्व है यदि वह अर्थपूर्ण है, क्योंकि केवल अर्थ में ही उसका महत्त्व है।

मनुष्य-जीवन का महत्त्व परमात्मा को खोजने में है।

712—अगर तुममें इतना बल है कि उससे दूसरों को बल मिलता है तो तुम अपने को दुर्बल क्यों कहते हो? हाँ, अगर कोई महानता के शिखर पर पहुँचकर नम्रतापूर्वक अपने को दुर्बल कहता है तो यह उसकी महानता का लक्षण है। अब तुम अपना मुँह बन्द कर लो, क्योंकि तुम मुझे मजबूर कर रहे हो कि मैं तुममें अपना विश्वास खो दूँ।

अगर मैं वह व्यक्ति हूँ जिसकी महानता पर तुम्हें विश्वास है तो यह बहुत अच्छी बात है। और अगर मैं महान् नहीं हूँ तो कम से कम बुद्धिमान तो हूँ। मेरी बुद्धि कहती है कि तुम उसे खोज रहे हो। तुम एक जिज्ञासु हो। जब कोई रोगी डॉक्टर के पास जाता है और उससे कहता है कि मेरे जलोदर का इलाज कर दो, तो उसे केवल अपने इलाज की तरफ़ ध्यान देना चाहिए, किसी और तरफ़ नहीं। या जब एक प्यासा मीठे पानी की खोज में आता है और उसे रोटी के साथ मीठा हलवा पेश किया जाता है, और वह हलवा खा लेता है तो उसका प्यासा होने का दावा सरासर झूठा है।

जिज्ञासु के बारे में शम्स के विचार।

718—उस पर परदा पड़ा हुआ है, क्योंकि महात्माओं के लिए मनुष्य का जीवन गौण है, (कम महत्त्वपूर्ण है) जब कि विश्व मुख्य है। पैग़म्बरों के लिए यह संसार गौण है और मनुष्य-जीवन मुख्य है। इसलिए यह विश्व उस संसार का एक नमूना है जो मनुष्य के अन्दर है।

मनुष्य-शरीर के अन्दर सारी सृष्टि है, तथा और भी बहुत कुछ है।

739—मुराद किसे कहते हैं? उसे जो ज़िन्दा (मुर्शिद) है। मुरीद किसे कहते हैं? जो मृत है, जिसने अपनी हस्ती को मिटा दिया है। जब तक मुरीद (शिष्य) अपनी हस्ती को मिटा नहीं देता, वह मुरीद नहीं है।

जब तक किसी का अहंभाव नहीं मिट जाता,
वह सच्चा प्रेमी नहीं है।

790—हृदय को परमात्मा की चाह से जीवंत करना ही जाग्रत होना है। महिमा हो प्रभु की, यशोगान हो उसका! अन्त कर दो उसका जो जीवित है, और वह तुम्हारी देह है। जान डालो उसमें जो निर्जीव है, और वह तुम्हारा मन है। जो सामने नहीं है उसे प्रत्यक्ष करो, उसकी ओर ध्यान दो, और वह है इस संसार के परे का जीवन। यह संसार जो सामने है, उसकी ओर ध्यान मत दो। जो है, उसे मिटा दो, और इसका अर्थ है इच्छा को मिटा देना। जो नहीं है, उसे जीवंत करो, और इसका तात्पर्य है अपने संकल्प को साकार करना।

इच्छा तथा मोह को त्यागना, जीवन के उद्देश्य को पूरा करना, और अपनी ईश्वरीय विरासत को पुनः प्राप्त करने पर शम्स के विचार।

811—जिस इनसान का ध्यान इस ओर नहीं जाता कि उसकी बाहरी और आन्तरिक अवस्थाओं में क्या बदलाव आ रहे हैं, वह क्या जानता, समझता, सुनता और देखता है, और यह संसार किस योजना के अनुसार चल रहा है, उस इनसान के मन में सन्देह बना रहता है। अगर सभी पैग़म्बरों और सन्तों की करामातों और फ़रिश्तों की प्रेरणा की पुष्टि भी उसके सामने कर दी जाये तो भी उसे सन्देह रहता है। वह अपने आप से पूछेगा कि वह कौन है जो इतनी आसानी से इच्छाएँ पूरी कर देता है या क्या इच्छाएँ अपने आप ही पूरी हो जाती हैं? या फिर इच्छा पैदा ही बाद में होती है? वह कहता है, "शायद कोई ऐसी दयावान्, ज्ञानवान् या शक्तिशाली हस्ती है जो किसी कमज़ोर, ज़रूरतमन्द इनसान को देखकर उसका हर काम कर देती है।"

अन्तहीन परिवर्तन अनन्त सन्देह को जन्म देता है।

उचित आचरण

ज्ञान बिना शरीर जैसे पानी बिना शहर;
संयम बिना शरीर जैसे फल बिना वृक्ष;
दीनता बिना शरीर जैसे नमक बिना भोजन;
परिश्रम बिना शरीर जैसे मालिक बिना ग़ुलाम।

शम्स, मक़ालात 793

74—क्या हमारे मित्र [शिष्य] गाँजा खाकर उत्तेजित हो गये थे? नहीं, ऐसी कल्पना तो केवल शैतान की ही हो सकती है। यहाँ तो फ़रिश्ते के बारे में सोचने का भी महत्त्व नहीं, शैतान के बारे में सोचना तो दूर रहा। हम फ़रिश्ते से सन्तुष्ट नहीं होते, उसकी कल्पना से सन्तुष्ट होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। और फिर, शैतान का क्या महत्त्व है जो उसके विचारों का कोई मोल होगा? क्यों न हमारा यह निर्मल, अनन्त संसार हमारे मित्रों की उमंग और उत्साह का स्रोत बने? यह नशीली घास खाने से तो इनसान कुछ भी नहीं समझ सकता; वह तो केवल अपनी सुध-बुध खो बैठता है।

किसी ने पूछा, "क़ुरान में शराब पीने की मनाही क्यों की गई है, जब कि गाँजे के इस्तेमाल पर कोई रोक नहीं है?" मैंने उसे बताया कि हर आयत

जो हमें क़ुरान में मिलती है, उसके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य है। मुहम्मद साहिब के शिष्य इस हरी घास का इस्तेमाल नहीं करते थे, क्योंकि अगर वे ऐसा करते तो उनकी मौत का हुक्म आ गया होता। हर आयत [उस वक़्त की] ज़रूरतों के मुताबिक़ ख़ुदा की तरफ़ से आई है।

89 — मनुष्य परमात्मा को पाना चाहता है, लेकिन वह कुछ और भी पाना चाहता है। उस परमात्मा ने इस आकाश का सृजन किया है, जिसके बारे में सोचते-सोचते बुद्धि और कल्पना दोनों ऐसे खो जाते हैं कि मनुष्य एक भी सितारे को समझ नहीं पाता। न ज्योतिषी और न महात्मा, और न ही वे लोग जो उनके पद-चिह्नों पर चलते हैं, इसे समझ सकते हैं। वे उस सितारे के बारे में चाहे कुछ भी कहें, पर उनकी समझ अधूरी ही रह जाती है। अब कल्पना करो उस संसार की जो इस संसार का स्रोत है। इनसान क्या है? गोबर के ढेर पर रेंग रहा एक छोटा-सा कीड़ा जो परमात्मा को जानना और देखना चाहता है, और अपनी सारी इच्छाएँ भी पूरी करना चाहता है!

सन्तों ने अनेक कष्ट सहे और अत्यन्त कठोर आध्यात्मिक संयम का पालन किया; लोगों ने सीना फाड़कर उनका दिल निकालकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया, फिर भी वे अपने लक्ष्य पर दृढ़ रहे। कुछ सन्तों का पेट लहूलुहान हो गया और वे मौत के किनारे पहुँच गये। उनके कष्टों के बदले परमात्मा ने उन्हें नया जीवन दिया। उन्होंने अपने राज्य, ठाठ-बाट, गौरव तथा प्राणों तक की बलि दे दी। उदाहरण के लिए हम मौलाना के शहर के शासक इब्राहिमे अधम के जीवन को ले सकते हैं जो परमात्मा को पाना चाहता था।

जब कोई स्त्री या पुरुष किसी से प्रेम करता है और उसे पाना चाहता है, तो वह अपने कारोबार या दुकान के बारे में नहीं सोचता। अगर उस स्त्री या पुरुष को यह भी बताया जाये कि लोग उसे फाँसी पर चढ़ा देंगे तो उसका जवाब होगा, "मैं फाँसी पर चढ़ना चाहता हूँ; चढ़ाने दो उन्हें मुझे फाँसी पर।" उसके लिए जान या दौलत का कोई महत्त्व नहीं होता,

चाहे उसे पता होता है कि जिससे उसे प्रेम है, वह नाशवान् है। प्रेमी भी और प्रियतम भी, दोनों अन्ततः काल का ग्रास हो जायेंगे और उन्हें दफ़ना दिया जायेगा। इसलिए उस शाश्वत और अविनाशी, निष्कलंक, निर्मल और दोषरहित परमात्मा के लिए प्रेम और भी अधिक बलिदान माँगता है, उससे कहीं अधिक।

शम्स: अपने लक्ष्य पर ध्यान टिकाये रखो।

91 — जो लेख तुम अपने कर्मों से लिखते हो, उसमें परिवर्तन हो सकता है। मन की अस्थिरता भाग्यवादी होने के कारण होती है। परस्पर विरोधी लेख मत लिखो। यदि तुम भाग्यवादी होकर जियोगे तो कई लाभों से वंचित रह जाओगे। जल्दी ही वह नौबत आ पहुँचेगी जब तुम्हारी ज़बान पर ये शब्द आ जायेंगे, "अब तो सो जाना चाहिए और इन्तज़ार करना चाहिए जब तक कि प्रभु का आदेश नहीं आ जाता।"

नेक इनसान न तो कभी किसी के बारे में कोई शिकायत करता है और न ही किसी के दोषों की ओर ध्यान देता है। जो शिकायत करता है वह ग़लती पर होता है। अगर तुम किसी पर दबाव डालना शुरू कर देते हो, तो निःसन्देह, जल्दी ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उसमें कोई दोष है। एक इनसान इधर से शिकायत करता है, दूसरा उधर से। दोनों के ही मन अस्थिर होते हैं और दोनों ही भाग्यवादी होते हैं। हर कोई अपनी-अपनी तरफ़ से शिकायत करता है, जो उनके 'प्रियतम' की रज़ा के अनुकूल नहीं होती। भाग्यवाद के बारे में वे जानते ही क्या हैं? यह दूसरा वर्ग, उच्चतम कोटि के अध्यात्म-ज्ञानियों का वर्ग, भाग्यवाद को समझता है। भाग्यवाद के दोनों पहलू हैं, असली भी और नक़ली भी।* तुम नक़ली पहलू को

* भाग्यवाद के असली पहलू में परिश्रम के लिए भी स्थान होता है, जब कि नक़ली पहलू में हाथ पर हाथ धरकर प्रभु की दया-मेहर की प्रतीक्षा की जाती है।

क्यों अपनाते हो? असली पहलू को क्यों नहीं अपनाते? तुम और अधिक आध्यात्मिक अभ्यास करो, ताकि हम [शम्स] तुम्हारे लिए और दुआ करें।

95—अपने शत्रु को दया और प्यार की भावना से देखो। जब तुम किसी से दयापूर्ण व्यवहार करते हो, तो चाहे वह शत्रु भी हो, उसे अच्छा लगता है। जब वह तुमसे आशा तो रखता है क्रोध और बदले की भावना की, लेकिन इसके विपरीत उसे तुम्हारे मन में प्रेम और दया की भावना दिखाई देती है तो उसे ख़ुशी होती है।

99—ऐसा भाट जिसमें प्रेम की भावना नहीं है और ऐसा व्यक्ति जो दु:ख प्रकट करने आया है पर स्वयं उस दु:ख का अनुभव नहीं करता, ये लोग दूसरों को भावनाओं के प्रति उदासीन कर देते हैं, जब कि उनका उद्देश्य लोगों के हृदय में भावनाएँ पैदा करना होता है।

शम्स: निजी अनुभव आवश्यक है।

107—जब कोई तुमसे किसी की अच्छाई की चर्चा करता है या किसी के गुणों के बारे में पूछता है तो वह तुमसे कह रहा है कि नेक इनसान बनो। यह उस हालत में भी सच है जब कोई बुराई की चर्चा करता है। ध्यान रहे कि इस तरह से परमात्मा तुम्हें कह रहा है कि अपने अच्छे और बुरे कर्मों की ख़ुद ज़िम्मेदारी लो ताकि तुम सुधर जाओ।

114—इनसान को हर सम्भव कोशिश करनी चाहिए कि वह उसे [परमात्मा को] भूलने न पाये। हमने साधन भी बता दिया है और रास्ता भी दिखा दिया है; वह रास्ता है दुनिया से पूरी तरह मोह हटा लेना। परमात्मा चाहता है कि तुम ऐसा बनने की कोशिश करो कि जब वह तुम्हारा इम्तिहान लेने के लिए तुम्हें जुदाई दे तो वह जुदाई, जुदाई न लगे। सुख के दिनों में परमात्मा

का दास बन जाना और दु:ख की घड़ी में उसकी ओर से मुँह मोड़ लेना तो एक आम बात है।

वह 'प्रियतम' कहता है, "यह बात जँचती नहीं कि जब मैं मीठे बोल बोलूँ तो तुम्हारी वाणी भी मधुर हो, या जब मैं कुछ नाराज़ होऊँ तो तुम भी नाराज़गी दिखाओ। मेरी नाराज़गी के अन्दर मिठास होती है। यह नाराज़गी मिठास ही होती है, जब कि आम तौर पर इससे उलट होता है। नाराज़गी के रूप में मैं असल में अपना धैर्य ही प्रकट करता हूँ। मैं जो ख़ुशी प्रदान करता हूँ, वह मेरे इसलाम से ज़्यादा मेरे कुफ़्र और नास्तिकता में छिपी होती है।"

मैंने आपको बता दिया था कि एक-दूसरे से जुदा होते समय मैं आपकी बेवफ़ाई आईने की तरह अपने सामने रख लूँगा, और आपने यह पूरी तरह मान भी लिया था। जान पड़ता है कि अब आप यह समझने लगे हैं कि मेरे वे शब्द आपके लिए नहीं, किसी और के लिए थे। अगर आपने उन शब्दों को अच्छी तरह से समझ लिया होता तो बाद में रूठने की नौबत न आई होती, लेकिन बुरा तो आप मान ही गये।

शम्स रूमी से: दृढ़ता और निरन्तर याद आवश्यक है।

126—यह तर्क या बहस का रास्ता नहीं है। यह रास्ता है नम्रता, अहंकार के त्याग और दीनता का तथा ईर्ष्या और शत्रुता से दूर रहने का। जब एक बार कोई भेद तुम पर प्रकट कर दिया जाता है तो तुम्हें शुक्रगुज़ार अवश्य होना चाहिए।

क्या तुम्हें यह बताने की ज़रूरत है कि सच्ची शुक्रगुज़ारी कैसी होती है और दिखावे की कृतज्ञता कैसी? निराशा को मन में स्थान मत दो, क्योंकि प्रभु की दया से निर्मलता, निर्मल प्रकाश, सुख, स्वास्थ्य और आनन्द तुम्हारे सामने हैं; दिल की ठेस और नाराज़गियाँ बीती बाते हैं। मैं चाहे यहाँ थोड़ा समय ही रहा हूँ, फिर भी मेरा सारा ध्यान यहीं रहा है। मौलाना जानते हैं कि मैं दिन-रात प्रार्थना में लगा रहा हूँ।

126 — मन की सुननेवाले को हज़ार सिक्के देने से बेहतर है उसे चाँदी का एक सिक्का देना जो हृदय में ध्यान केन्द्रित करता है। और इस विषय पर मैं तुम्हारे साथ बहस नहीं कर सकता, क्योंकि तुम्हारा मन चंचल है और बहुत सोच-विचार करता है। अगर मैं कुछ कहूँगा तो तुम जवाब में कुछ कह दोगे, और फिर तुम मुझसे नाता तोड़ लोगे।

मन की सुननेवालों को हृदय में ध्यान केन्द्रित करनेवालों के बारे में बताना व्यर्थ है।

127-8 — मैंने तुमसे कहा था कि वह चक्की मत ख़रीदो जो तुम सबके सामने दान में देना चाहते हो, बल्कि वे दो हज़ार चाँदी के सिक्के तुम मुझे दे दो ताकि मैं तुम्हारे लिए चक्की की तरह काम कर सकूँ, और जब मैं ऐसा करूँगा तो ऐसा आटा तैयार होगा जिसके गुणों का वर्णन नहीं हो सकता। क्या तुम जानते हो कि एक बीमारी क्या कुछ कर सकती है? हज़ार योगी अगर चाहें भी तो वह काम नहीं कर सकते जो एक बीमारी कर सकती है।*

फिर किसी ने पूछा कि बहा को इतना आज्ञाकारी होने से क्या मिलेगा। मैंने उत्तर दिया कि मैं आज्ञापालन की बात नहीं कर रहा हूँ। अगर कोई कामिल दरवेश रास्ते पर चलते-चलते किसी काफ़िर के पास से गुज़रे जिसने पानी का एक घड़ा उठा रखा हो, और दरवेश अपनी प्यास बुझाने के लिए उससे पानी लेकर पी ले जिससे उसकी तृप्ति हो जाये, तो चाहे वह काफ़िर पर दया-मेहर की नज़र न भी डाले, फिर भी क़यामत के दिन वह काफ़िर लाखों मुसलमानों का सहारा बनेगा। परमात्मा के काम बुद्धि के क्षेत्र से परे होते हैं। कोई इनसान चाहे किसी शैख़ पर चाँदी की दो सौ मोहरें भी ख़र्च

* शम्स का इशारा वहाँ की उस बीमारी की तरफ़ है जिसने उसके कर्मों का बोझ हलका कर दिया था ताकि उसकी आत्मा आगे बढ़ सके। कभी-कभी सतगुरु कोई शारीरिक या मानसिक रोग देकर शिष्य का मोह दूर कर देते हैं ताकि उनकी दया को ग्रहण करने की उसकी क्षमता बढ़ जाये।

कर दे, पर शायद वे वैसा असर न करें जो किसी और द्वारा ख़र्च की गई पाँच मोहरें कर सकती हैं।

अगर केवल धर्मग्रन्थ पढ़ने से या बातें करने से यह बात समझ में आ सकती, तो बायज़ीद व जुनैद ने फ़ख़्रे राज़ी* से ईर्ष्या के मारे दुनिया भर की ख़ाक ज़रूर अपने सिर पर डाल ली होती† और सौ साल के लिए उनके शिष्य बन गये होते, क्योंकि कहा जाता है कि उन्होंने क़ुरान पर हज़ार-कुछ लोगों के अनुसार पाँच सौ-लेख लिखे थे। फिर भी, सच्ची बात तो यह है कि फ़ख़्रे राज़ी जैसे लाख लोग भी बायज़ीद के रास्ते की धूल तक भी नहीं पहुँच सके। फ़ख़्रे राज़ी तो उस व्यक्ति के समान हैं जो केवल बाहर के दरवाज़े पर दस्तक देता है, अन्दर के अपने ख़ास दरवाज़े पर नहीं। वह ख़ास दरवाज़ा तो किसी दूसरे महल का है जहाँ बादशाह अकेले में कुछ विशेष लोगों से मिलता है। इसलिए वे उस ख़ास दरवाज़े पर दस्तक देनेवाले के समान नहीं, बल्कि बाहर के दरवाज़े पर दस्तक देनेवाले के समान हैं।

प्रेम तथा आज्ञापालन से शैख़ को ख़ुश करने, और उसके ख़ुश होने पर उसकी अपार दया के बारे में शम्स का रूमी के सबसे बड़े बेटे को उपदेश।

128-9 — तुम्हारे रास्ते में कुछ बाधाएँ हैं। कुछ लोगों की भक्ति में पैसा ही ध्यान का केन्द्र होता है। आध्यात्मिक मार्ग के लोगों ने पैसे का मोह त्याग दिया है। संसार के भक्त को पैसा प्राणों से भी अधिक प्रिय होता है, मानों उसके प्राणों का कोई मूल्य ही न हो। अगर वह जानता कि उसके प्राण कितने मूल्यवान् हैं, तो पैसा उसे प्राणों से अधिक प्रिय न होता। मैं सौगन्ध

* फ़ख़्रे राज़ी फ़ारस का एक बहुत बुद्धिमान् और ज्ञानवान् व्यक्ति था।

† यह वाक्य शोक, दु:ख और पछतावा प्रकट करता है।

खाकर कहता हूँ कि संसार के भक्त के लिए उसकी मुट्ठी का एक पैसा उसकी भक्ति का केन्द्र होता है।

131-2 — कुछ शैख़ों ने जब अपने अन्दर पूर्णता* की अवस्था प्राप्त कर ली तो उन्होंने आम तौर पर ज़रूरी समझी जानेवाली धार्मिक तथा सामाजिक ज़िम्मेदारियाँ निभाना छोड़ दिया। कुछ लोग इसे उचित मानते हैं, और कुछ नहीं। मेरे [शम्स के] साथी कहते हैं कि पहले वुज़ू [बाहर की सफ़ाई]† के बाद दूसरा वुज़ू [अन्दर की सफ़ाई] करना उजाले पर और अधिक उजाला करने के समान है [इससे फ़ायदा ही फ़ायदा है]। जो अपनी धार्मिक तथा सामाजिक ज़िम्मेदारियाँ पूरी करने में विश्वास नहीं करते, वे लोगों को आध्यात्मिक मार्ग दिखाने के योग्य नहीं हैं, क्योंकि आध्यात्मिक मार्गदर्शक तो समस्त संसार और संसार के लोगों का सहारा और आसरा होते हैं।

जिन्होंने पूर्णता प्राप्त कर ली है, वे ख़ुशी से सामाजिक नियमों तथा मर्यादाओं का पालन करते हैं, और अपने शिष्यों को भी ऐसा करने का आदेश देते हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि अन्दर की गन्दगी को साफ़ करना ज़रूरी है, क्योंकि अन्दर की तिल मात्र गन्दगी वह गुल खिला सकती है जो बाहर की लाख गन्दगियाँ भी नहीं खिला सकतीं। और वह पानी कौन-सा है जिससे अन्दर की गन्दगी को धोया जा सकता है? तीन-चार मशकों में भरे आँसू। पर हर तरह के आँसू नहीं, केवल प्रभु के सच्चे प्रेम में बहे आँसू ही यह गन्दगी दूर कर सकते हैं। इसके बाद इनसान को सुरक्षा और मुक्ति

* अपने अहं को पूरी तरह नष्ट कर दिया।

† इबादत से पहले वुज़ू का नियम। वुज़ू का अर्थ है नमाज़ से पहले नियम से हाथ-पैर, मुँह आदि धोना।

की सुगन्ध का सुखद अनुभव होगा। तब तुम उससे चैन की नींद सोने को कहना। पर फिर वह सो कैसे सकता है जब वह प्रभु के साथ है?

विरह से मन की सफ़ाई होती है।

ज़रूरत के एहसास और सच्चे प्यार के बिना बहनेवाले आँसू क़ब्र के किनारे से आगे नहीं जाते; वे वहाँ से लौट आनेवालों के साथ ही लौट आते हैं। जो आँसू मरनेवाले की कमी महसूस करते हुए निकले हैं, वे मरनेवाले के साथ क़ब्र में जायेंगे, क़यामत के दिन उसके साथ उठ खड़े होंगे, और आगे परलोक की ओर बढ़कर परमात्मा तक पहुँचेंगे।

अगर तुम्हारे पास ऐसा जागृत हृदय है तो तुम सो सकते हो, वरना होशियार रहो; तुम एक बाढ़ की राह में सो रहे हो। फिर भी, जो हलकी नींद सोया है वह आसानी से जाग जाता है। पहले उसे कोहनी मारकर हिलाया जाता है; अगर वह नहीं उठता तो उसके सिर पर चोट की जाती है; अगर वह फिर भी नहीं उठता तो उसकी दाढ़ी तब तक खींची जाती है जब तक वह आँखें नहीं खोल देता। जब एक बार वह बाढ़ आती देख लेता है तो सारा कष्ट भूल जाता है और झुककर जगानेवाले के क़दम चूम लेता है। अगर कोई शत्रु गहरी नींद में सोये किसी व्यक्ति का आधा गला काट देता है तो उसकी आँखें भी नहीं खुलेंगी, लेकिन अगर वह अपनी आँखें खोल ही लेता है, तो वह अपने शत्रु को अपना काम तमाम करते देख सकता है।

शम्स: हृदय का जागृत होना आवश्यक है।

139 — सच्चे दिल से मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ। पाखण्ड लोगों के दिलों को भाता है और सच्चाई उनके दिलों को ठेस पहुँचाती है। लोगों के बीच ख़ुश रहने के लिए तुम्हें पाखण्ड का सहारा लेना पड़ता है। ज्यों ही तुम सच्ची बात कहोगे, तुम्हें किसी पहाड़ या रेगिस्तान का रास्ता पकड़ना पड़ेगा, क्योंकि तब तुम लोगों के बीच और अधिक नहीं टिक सकोगे।

140 — किसी एक वर्ग के लोगों का मानना था कि जब एक बार उनका मन अन्दर टिकने लगता है तो फिर उन्हें बाहरी तौर पर नमाज़ पढ़ने की ज़रूरत नहीं होती। अपनी मंज़िल पर पहुँच जाने के बाद रास्ते की खोज में लगे रहना शर्म की बात समझी जाती है। चाहे उनका प्रभु से मिलाप हो गया है, वे सन्त का दर्जा हासिल कर चुके हैं और उनका दिल इबादत में लगा रहता है, फिर भी उनका बाहरी नमाज़ जारी रखना कमज़ोरी की निशानी मानी जायेगी। क्या पैग़म्बर ने तुम्हारे जैसा दर्जा हासिल कर लिया था या नहीं? अगर कर लिया था तो तुम उनकी राह पर क्यों नहीं चलते? अगर तुम यह कहते हो कि उन्होंने वह दर्जा हासिल नहीं किया था तो लोग तुम्हारा गला काट देंगे, तुम्हारा काम तमाम कर देंगे।

अगर परमात्मा का कोई सन्त, जिसके सन्त होने में कोई शक न हो, लेकिन जो धार्मिक तथा सामाजिक नियमों का पालन न करता हो, यहाँ मौजूद हो, और ऐसा शिष्य भी यहाँ मौजूद हो जो बाहर के नियमों के अनुसार चलता हो, तो चाहे उसने सन्त का दर्जा हासिल न किया हो, तो भी मैं उसके अनुसार चलूँगा, और सन्त को प्रणाम तक नहीं करूँगा।

फिर शम्स मौलाना सलाह अल-दीन* की तरफ़ मुड़े और उनसे पूछा, "मैं जो कह रहा हूँ, वह तुम्हें कैसा लगता है, सही या ग़लत?" और मौलाना सलाह अल-दीन ने जवाब दिया, "आपका कहा हुक्म है। आप जो भी कहें, उसके बारे में मुझे न तो कुछ कहना है, न ही उसके बारे में मेरी कोई राय है।"

शम्स सामाजिक प्रथाओं को मानने पर फिर ज़ोर देते हैं।

146-7 — ये धर्म के रखवाले क़ुरान के स्पष्ट अर्थ भी नहीं समझते क्योंकि वे अर्थ केवल विश्वास के प्रकाश में ही देखे और समझे जा सकते हैं,

* मौलाना सलाह अल-दीन शम्स का शिष्य था जिसके बारे में फ़ारस के विद्वानों का कहना है कि उसे रूमी ने शम्स के रूप में ढाल दिया था, और जो शम्स के दूसरी और आख़िरी बार कोन्या छोड़ देने के बाद रूमी का साथी बन गया था।

भावना के जोश में नहीं। अगर उनके पास विश्वास का प्रकाश होता तो वे मान या पद हासिल करने के लिए सोने के हज़ारों सिक्के क्यों किसी को भेंट करते? क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो सँपेरे से साँप ख़रीदने के लिए उसे बोरी भरकर सोना दे दे – पानी का साँप नहीं जिसमें ज़हर नहीं होता, बल्कि पहाड़ी साँप* जो ज़हर से भरा होता है?

दुलहन क़ुरान की तभी परदा उठायेगी,
जब उसे विश्वास का क्षेत्र
अशान्ति से मुक्त और ख़ाली नज़र आयेगा। (सना'ई)

जिसने यह नज़्म लिखी है, उसका अहं इस हद तक मिट चुका है कि उसका वचन प्रभु का वचन है, और प्रभु का वचन पूर्ण होता है, उसमें कोई कमी नहीं होती।

द्वैत की भावना से मुक्त मन ही सही अर्थ को समझ पाता है।

148 — जब कोई समुन्दर में गिर जाता है तो अपने को बचाने के लिए तैरने की कोशिश में हाथ-पैर मारता है। लेकिन अगर वह मुर्दे जैसा न दिखे, तो समुन्दर उसका अन्त कर देता है, चाहे वह शेर जैसा बहादुर भी हो। समुन्दर की ख़ूबी है कि अगर इनसान ज़िन्दा है तो उसे नीचे खींच लेता है ताकि वह डूब जाये। जब इनसान डूब जाता है और मर जाता है, तो समुन्दर कुली की तरह उसे उठाकर ऊपर ले आता है। इसलिए यही बेहतर है कि इनसान शुरू से ही मुर्दे जैसा बना रहे ताकि उसे आराम से पानी की सतह पर लाया जा सके। इस तरह वह इस अँधेरी दुनिया की काली आँधी से बच जाता है और निर्मल, सुखद, जीवनदायी जल के साथ रहता है। प्रभु के सेवकों में समुन्दर भी एक सेवक है।

* पहाड़ी साँप संसार और उसके पदार्थों के मोह का प्रतीक है।

ख़ैर, अगर यह सब तुम्हारी कहानी नहीं है तो इसका कुछ हिस्सा तो है ही, और कुछ हिस्सा तुम्हारे साथियों की कहानी है। अगर अभी तक यह सब तुम्हारे साथ नहीं घटा है तो आगे चलकर घट जायेगा।

जो संसार की ओर से मृत हैं और अपने अन्दर 'प्रियतम' के संग हैं, वे मुक्त हैं।

149—कुछ लोग मनुष्य के गुण-दोष का निर्णय उसका चोग़ा, उसका पहरावा देखकर करते हैं। अगर किसी ने सूफ़ियों जैसा चोग़ा या किसी धर्म का लिबास पहन रखा है तो वे उसे धर्मात्मा मान लेते हैं, और अगर किसी ने टोपी व चोला पहन रखा है तो उसे पापी ठहरा देते हैं। एक और वर्ग के लोग मनुष्य को इस दृष्टि से देखते हैं कि उसमें प्रभु की महिमा झलकती है या नहीं। वे लोग मन के संघर्ष से ऊपर उठ चुके हैं, और उनके लिए दुनिया के रंग तथा गन्ध महत्त्वहीन हो चुके हैं।

अगर तुम उस व्यक्ति को उसके पहरावे से अलग करके देखो तो वह केवल नरक के ही योग्य है। नरक भी उसे स्वीकार करने में अपना अपमान समझेगा। दूसरी तरफ़ वे लोग भी हैं जिन्हें पहरावे के बिना देखा जाये तो वे स्वर्ग के योग्य दिखाई देंगे। उधर एक और व्यक्ति है जो प्रार्थना के लिए प्रार्थना-स्थल पर बैठा ऐसा इरादा कर रहा है जो उसे उस इनसान से भी बदतर बना देता है जिसका पराई औरत से सम्बन्ध है।

चुग़लख़ोरी व्यभिचार से भी बुरी है, क्योंकि व्यभिचार का एक बार पता चल गया तो दोषी को सज़ा मिल जायेगी और मामला ख़त्म हो जायेगा। अगर इनसान पश्चात्ताप करे तो एक अच्छी आदत उसकी बुरी आदत की जगह ले लेगी। लेकिन चुग़लख़ोर अपनी आदत से कभी छुटकारा नहीं पा सकता, चाहे वह योगी बनकर हवा में उड़ने की योग्यता भी क्यों न प्राप्त कर ले।

अगर किसी का पहरावा भी धर्मात्माओं जैसा है और उसके मन की वृत्ति भी धर्मात्माओं जैसी है, तो वह व्यक्ति प्रकाशपुंज हो जाता है।

आन्तरिक दशा और बाहरी रूप पर शम्स के विचार।

150—दान इस तरह दो कि कोई तुम्हें दान देते हुए न देखे क्योंकि देखनेवाले को और कुछ न भी हो, तुम्हारे कार्य से ईर्ष्या तो हो ही सकती है।

161—दुनिया में सब धोखा-धड़ी और भ्रष्टाचार इसलिए होता है कि दूसरे की नक़ल करने के लिए कोई बिना सोचे-समझे या तो उसका विश्वास कर लेता है या उसकी बात को नकार देता है। नक़ल का रूप बदलता रहता है, वह कभी जोश से भरी होती है और कभी बेजान। नक़ल करनेवाले को मुसलमान कहना उचित कैसे हो सकता है?

163—किसी ने पूछा, "क्या यह हमारे मन की चंचलता और अस्थिरता है कि हम एक पल तो खाने-पीने में मस्त होते हैं और दूसरे ही पल मन के साथ लड़ाई कर रहे होते हैं?" शम्स ने उत्तर दिया, "नहीं, सन्तों और पैग़म्बरों का भी यही हाल था, लेकिन वे चाहे भक्ति कर रहे होते या कुछ खा रहे होते, उनका ध्यान अपनी आत्मा का उत्थान करने में लगा रहता था, मन को सुधारने में नहीं। जब लड़ाई चल रही हो तो आराम का वक़्त भी लड़ाई में ही गिना जाता है। दोनों में परस्पर विरोध नहीं है, लेकिन तुम अपने को उन हस्तियों के बराबर नहीं मान सकते। अगर तुम भक्ति और अपनी करनी में उनके बराबर होते तो तुम अपने अन्दर वह ढूँढ़ पाते जो उन्हें मिला और तुम्हारी भावनाएँ भी उन जैसी ऊँची होतीं।"

शम्स: मन के साथ संघर्ष करना कभी नहीं भूलना चाहिए।

178—तुम दुनियावी ज़रूरतें पूरी करने के लिए ज्ञान क्यों प्राप्त करते हो? ज्ञान की डोरी का उद्देश्य यह है कि तुम इसकी सहायता से कुएँ से बाहर निकल आओ, न कि एक कुँए में से निकलकर दूसरे में जा गिरो। तुम्हारी दिलचस्पी यह जानने में होनी चाहिए कि तुम कौन हो, तुम्हारा असली

स्वरूप क्या है, तुम यहाँ क्यों हो, कहाँ से आये हो, कहाँ जा रहे हो, इस वक़्त क्या कर रहे हो, और तुम्हें अब किस दिशा में जाना है।

ज्ञान की डोरी का काम अज्ञानता के कुएँ में से बाहर निकलने में हमारी सहायता करना है।

179 — चुग़लख़ोरी चार सबसे बड़े गुनाहों में से एक है जो अपने घिनौनेपन के कारण दूसरे गुनाहों से अलग माने जाते हैं। पहला गुनाह चुग़लख़ोरी है, दूसरा झूठा दोष लगाना, तीसरा हत्या करना और चौथा अत्याचार करना। अत्याचार के लिए इनसान को तब तक माफ़ी नहीं मिल सकती जब तक वह शख़्स उसे माफ़ नहीं कर देता जिस पर उसने अत्याचार किया है।

गुनाह पर शम्स के विचार।

199 — जब तुम्हें मुर्शिद के चेहरे पर नाराज़गी झलकती दिखाई दे, तो भी मुर्शिद का ही आसरा लो और उसकी संगति में रहो जिससे तुम्हारा व्यवहार मधुर हो जाये। उस नाराज़गी के बादल में ही तुम्हारी तरक़्क़ी छिपी है। उस बादल के नीचे पूरी तरह विकसित हो जाने पर अंगूरों और दूसरे फलों की तरह तुममें भी मिठास आ जायेगी।

199-200 — दुनिया में भले लोग तो हैं, परन्तु यहाँ ज्ञान की बहुत कमी है। हो सकता है कि एक नेक इरादे वाला लेकिन ज्ञानहीन व्यक्ति कहे, "मुझे परमात्मा पर विश्वास है," लेकिन यह न जानता हो कि किस पर भरोसा करे। नियमों का पालन करना और मालिक की रज़ा में रहना ऐसा ही है जैसा कि हज़रत मुहम्मद ने कहा था, "अपने ऊँट की टाँग बाँध दो, फिर ख़ुदा पर भरोसा करो।" क्या इसका यह मतलब है कि उन्हें परमात्मा पर विश्वास नहीं था, जब कि वे इतने ज्ञानवान् और बुद्धिमान् थे?

शम्स प्रयत्न करने का महत्त्व बताते हैं।

200 — एक धार्मिक, लेकिन कपटी मनुष्य को चाँदी के सौ सिक्के देने से बेहतर है एक सच्चे और ईमानदार मनुष्य को चाँदी का एक सिक्का देना, क्योंकि चाँदी का वह एक सिक्का नेक काम में ख़र्च होगा। जो ऐसे मनुष्य की सेवा करता है, उसे भी चाँदी का एक सिक्का देना बेहतर है क्योंकि वह सिक्का भी प्रभु की राह पर नेक काम में ख़र्च होगा।

205-6 — कुछ दरवेशों को दूसरों के द्वारा दी गई बददुआ या गाली अखरती नहीं, लेकिन अगर कोई उनके लिए यह कामना करे, "कल आपके सभी काम पूरे हो जायें" तो वे इसे बड़ी भारी बददुआ समझेंगे। वे कहेंगे, "क्यों? आज को क्या हुआ? आज ने क्या गुनाह किया है जो तुम आज की बात नहीं कर रहे हो?"

शम्स द्वारा मज़ाक के लहजे में आलस त्यागने की सलाह।

206 — तुम्हें अपने युद्ध-कौशल से सरोकार होना चाहिए, सेनापति का पद प्राप्त करने से नहीं। सेनापति लड़ाई में शामिल नहीं हो सकता क्योंकि उसे इस बात का ध्यान रखना होता है कि कहीं किसी ग़लती के कारण सेना तितर-बितर न हो जाये। सेना का संचालन करने की तुम्हारी क्षमता तुम्हारे लड़ने के कौशल में झलकनी चाहिए। हो सकता है कि सेना में कोई ऐसा सैनिक हो जो दस सेनापतियों को पराजित कर सके।

शम्स: मनुष्य का ध्यान अपनी करनी में होना चाहिए, दूसरों को उपदेश देने की कोशिश में नहीं।

211 — इनसान वह है जो अपने को दोषी मानता है। चाहे माना यह जाता है कि सब कुछ परमात्मा ही करता है, लेकिन जब दूसरों पर आरोप लगाने की प्रवृत्ति हो तो मनुष्य को अपने बारे में सोचना चाहिए, और इस तरह दोष अपने सिर लेने की आदत डालनी चाहिए।

शम्स: केवल अपने दोषों को देखना चाहिए।

231—धीरे-धीरे लोगों से अपना मोह छुड़ाने की कोशिश करो। उस 'सत्य' [हक़्क़] का किसी से कोई सम्बन्ध या मोह नहीं है। मैं नहीं जानता कि लोगों की संगति से किसी को क्या मिल सकता है। वे मनुष्य को किससे बचा सकते हैं या किसके निकट ला सकते हैं? ख़ुदा के वास्ते, समझो कि तुम अन्दर से पैग़म्बरों जैसे हो और उनकी राह पर चल रहे हो। पैग़म्बरों ने लोगों से ज़्यादा मेलजोल नहीं रखा; वे ख़ुदा के बने रहे, चाहे बाहर से वे लोगों से घिरे रहते थे।

शम्स रूमी से: दुनिया से रिश्ता तोड़ो, परमात्मा से जोड़ो।

241-2—वह कहता है, "मैं जानता हूँ कि यह बुरी आदत है, लेकिन मैं अपने मन की इच्छा पर बिलकुल भी क़ाबू नहीं पा सकता।" कैसे शब्द हैं ये? मैं जानता हूँ कि मैं इस समुन्दर में डूब जाऊँगा, फिर भी मैं इसमें कूद जाता हूँ। या मैं जानता हूँ कि यह आग मुझे जला देगी, या यह कुआँ सौ मील गहरा है, या यह साँप का बिल है, या यह भयंकर ज़हर है, या यह बहुत ख़तरनाक रेगिस्तान है; मैं सब जानता हूँ, लेकिन फिर भी मैं चला जाता हूँ। अगर जानते हो तो रुक जाओ, नहीं तो तुम वास्तव में जानते ही नहीं। यह कैसा ज्ञान या बुद्धिमानी है? इसे ज्ञान या बुद्धिमानी कैसे कहा जा सकता है?

मैंने इतनी बातों की, इतनी सलाह की और इतने उपदेश की पूँजी तुममें लगाई है। अगर यह सब मैंने शहर में किया होता तो एक बहुत बड़ी भीड़ मेरे पीछे चल पड़ती और अपनी क़ीमती जानें और धन-दौलत मुझ पर क़ुरबान कर देती, लेकिन इसका तुम पर कोई असर नहीं हुआ। तुम्हारा यह पत्थर दिल नरम नहीं हुआ।

सही काम न करने के परिणाम।

257—"ख़ुदा सन्तुलन और समता के सिंहासन पर विराजमान है (क़ुरान 5/20)।" इस आयत का वही मतलब है जो इस हदीस का है, "जो अपने

मन को जानता है...।"* यह हदीस एक ख़ज़ाना है, और इसका मतलब भी वही है जो ऊपर लिखी आयत का है, इसमें कोई उलझन नहीं है। जिसका सम्बन्ध परमात्मा से जुड़ा हुआ है, वह ख़ुद को और दूसरे लोगों को, सबको त्याग देता है।† "ऊँची आवाज़ में बोलने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि ख़ुदा तो छिपी हुई बात और छिपी से छिपी बात को भी जानता है (क़ुरान 7/20)," लेकिन ख़ुदा हाथ नहीं आता।

परमात्मा एक अति सूक्ष्म शक्ति है।

तुम्हें पैग़म्बर मुहम्मद में अहद [परमात्मा जो एक है] मिल सकता है, लेकिन अहद में हज़रत मुहम्मद नहीं। ये लोग अहदी हैं (एक ख़ुदा में यक़ीन रखते हैं); हम मुहम्मदी हैं [हज़रत मुहम्मद के अनुयायी हैं]।

"ये लोग" का अभिप्राय कुछ प्रमुख शैख़ों और सूफ़ियों से है जो ख़ुद को और ख़ुदा को एक मानते हैं और इसलिए इसलाम के सब नियमों का पालन करना आवश्यक नहीं समझते।

266—वह कहता है, "हे प्रभु, तू यह काम कर; हे प्रभु, तू वह काम न कर।" यह कहना तो ऐसा है जैसे वह राजा से कहे, "वह घड़ा उठा और यहाँ रख दे।" उसने राजा को अपना निजी सेवक बना लिया है जिसे वह आदेश देता रहता है कि यह काम कर, या वह काम न कर।

266—भाग्यशाली है वह जिसकी आँखें सोती हैं, हृदय नहीं। धिक्कार है उसे जिसका हृदय सोता है, चाहे उसकी आँखों में नींद नहीं।

संसार को भूल जाओ और परमात्मा को याद रखो, इसका उलट मत करो।

---

* एक हदीस: जो अपने मन को जानता है, वह अपने ख़ुदा को जानता है।

† अहं और मोह त्याग देता है।

267—मैं और किसी की अपेक्षा अपने अधिक निकट हूँ, परन्तु फिर भी मुझे अपने सिर और दाढ़ी तक की सुध नहीं है, तो तुम्हारी सुध मुझे कैसे रहती? तुमने अपने मन में कोई सोच बना ली है और अपनी उस सोच से ही तुम्हें दुःख पहुँचा है। एक विचार से दूसरा विचार जन्म लेता है और पहले विचार की पुष्टि करता है; फिर एक और विचार जन्म लेता है, फिर और, फिर और।... तीन बार हर विचार को हटाने की कोशिश करो, न हटे तो फिर तुम हट जाओ। जब तुम्हें कुछ खाने या करने से डर लगे, तो मत खाओ, मत करो।

मन को भटकानेवाले विचारों की शृंखला पर
विजय पाने के बारे में शम्स के विचार।

268—जिन्हें परमात्मा को पाने की इच्छा है, उनकी इच्छा के प्रवाह को पैग़म्बर आगे बढ़ाते हैं और उनका मार्गदर्शन करते हैं। लेकिन अगर वह इच्छा ही नहीं है तो पैग़म्बर किसे आगे बढ़ायें, और किसका मार्गदर्शन करें?

परमात्मा को पाने की इच्छा ही मनुष्य के जीवन का सार है।

274—जो मुर्शिद का विरोध करता है, उसकी हालत उस ग़ुलाम जैसी होती है जो अपने मालिक के साथ ज़िद में आकर अपने को मार डालता है। जब उससे पूछा जाता है कि तुम आत्महत्या क्यों कर रहे हो, तो वह जवाब देता है, "क्योंकि इससे मालिक का नुक़सान होगा।"

गुरु का विरोध करने से शिष्य की ही हानि होती है।

302-3—किसी ने कहा, "मुझे खाना खाने की तमीज़ सिखायें क्योंकि खाना खाने के बाद मुझे पेट में भारीपन महसूस होता है और कष्ट होता है।" मैंने जवाब दिया, "खाना ऐसे खाओ कि कष्ट खाने को हो, ऐसे नहीं कि खाना तुम्हारे लिए कष्ट का कारण बन जाये। खाना यह ध्यान में रखकर खाओ

कि खाने को अपने भारी होने का एहसास हो, नहीं तो कहीं ऐसा न हो कि खाना खाने से तुम्हें भारीपन महसूस हो।"

जीने के लिए खाओ, खाने के लिए मत जियो।

303-4—उसने कहा, "मुझे क्षमा करें, क्योंकि मैंने आज कुछ नहीं पकाया।" मैंने कहा, "मुझे तुम्हारा पकाया खाना नहीं चाहिए; मुझे सिर्फ़ तुम्हें पकाना है।" उसने पूछा, "मुझे कैसे पकाया जा सकता है?" और मैंने जवाब दिया, "तुम कैसे शिष्य हो जो मेरे शब्दों में छिपे अर्थ को नहीं समझ सकते?" उसने कहा, "अगर वचनों और उनकी तह में छिपे अर्थों के बारे में कोई सन्देह न होता तो मुसलमान महात्माओं को अपने धर्मग्रन्थों के अर्थों को लेकर मतभेद न होता।" मैंने कहा, "इसलाम की रूहानी हस्तियों की राय अलग-अलग कैसे हो सकती है? वे एक-दूसरे की बात को कैसे काट सकते हैं? यह तो तुम सोचते हो कि उनकी राय एक-दूसरे से नहीं मिलती और वे दूसरे की राय को ग़लत समझते हैं। अगर अबू हनीफ़ेह की शाफ़ेई से मुलाक़ात हो जाये तो वे शाफ़ेई के सिर को हाथों में लेकर उनकी आँखें चूम लें। परमात्मा के भक्त उसके सम्बन्ध में एक-दूसरे का विरोध कैसे कर सकते हैं? मतभेद हो ही कैसे सकता है? यह सिर्फ़ तुम्हें दिखाई देता है। ख़ुद को क़ुरबान कर दो ताकि तुम्हें दुई से छुटकारा मिल जाये।"

उसने पूछा, "वह वक़्त कब आयेगा जब मैं क़ुरबानी की इस कहानी से छुटकारा पा लूँगा?" मैंने जवाब दिया, "ख़ुद की क़ुरबानी दो, तब तुम्हें क़ुरबानी से छुटकारा मिल जायेगा। जब प्रार्थना करते हुए तुम कहते हो कि 'परमात्मा महान् है', तो मतलब मन की क़ुरबानी देना होता है। मन कब तक हावी हुआ रहेगा? जब तक तुममें झूठा अभिमान है और तुम्हारी अलग हस्ती क़ायम है, तुम्हें कहना चाहिए, 'परमात्मा महान् है', और साथ ही ख़ुद की क़ुरबानी देने का पक्का इरादा भी करना चाहिए। जब तुम प्रार्थना शुरू करते हो तो कब तक तुम उस बुत [अपने अहं] को अपनी बाहों में लिए

रहते हो? तुम बार-बार कहते हो, 'परमात्मा महान् है', लेकिन पूरा वक़्त अपने उस बुत को एक नास्तिक की तरह कसकर गले लगाये रखते हो।

शम्स: अहं को जड़ से उखाड़ फेंको।

305-6 — उसने पूछा, "जब आप कहते हैं कि एतराज़ नहीं करना चाहिए तो फिर आप क्यों एतराज़ करते हैं?"

मैंने कहा, "जब तुम मुझसे इस तरह बात करते हो तो तुम्हारे कहने का मतलब होता है कि मैं कुछ नहीं जानता और तुम, जो मेरे शिष्य हो, मुझे सिखा रहे हो। गुरु और शिष्य के बीच यह उचित नहीं; शिष्य से इस तरह के व्यवहार की अपेक्षा नहीं की जाती।

"और फिर, अगर शिष्य एक बार एतराज़ कर दे तो गुरु को कोई आज़ादी नहीं रहती, उसकी अपनी कोई मरज़ी नहीं रहती। मुझे पूरी आज़ादी होनी चाहिए ताकि मैं अपनी मरज़ी से जाऊँ, अपनी मरज़ी से बैठूँ या सोऊँ। अपनी मरज़ी का मालिक होना मेरे लिए ज़रूरी है। जब तुम मेरे साथ होते हो तो मेरी मरज़ी तो रहती ही नहीं। मुझे या तो तुम्हारे रास्ते पर चलना पड़ता है, या तुम्हें मेरे। मुझे या तो मालिक बनकर रहना पड़ता है, या नौकर, और दोनों हालात में आज़ादी ख़त्म हो जाती है। फ़क़ीर किसी का मालिक नहीं होता, न ही फ़क़ीर का कोई मालिक होता है।"

गुरु की स्वतन्त्रता के लिए ज़रूरी है कि शिष्य उसकी किसी बात पर एतराज़ न करे।

309 — अगर यह काफ़िर सौ साल भी बोले तो मैं ऊबूँगा नहीं। जो ऊब जाता है और विरोध करता है, उसे मैंने जला डाला है। सहनशील होने के लिए अहं को जलाना पड़ता है, और मैंने अपने अहं को भस्म कर दिया है क्योंकि नये सिरे से निर्माण करने के लिए उसे नष्ट करना ज़रूरी था। इनसान बहुत कुछ जानता है, लेकिन यह नहीं जानता कि उसकी सबसे अधिक

भलाई किसमें है। वह यह सोचकर कोई काम करता है कि इससे उसकी हालत सुधर जायेगी। उसने छेद को कुछ और समझ लिया है और शौचालय [इस दुनिया] में बैठा वह कहता है, "मुझे स्वर्ग की सुगन्ध से तरोताज़ा कर दो।"* प्रार्थना तो सही है, लेकिन छेद के बारे में उसे ग़लतफ़हमी है।

औपचारिक वुज़ू में असली वुज़ू के भ्रम पर एक अश्लील टिप्पणी।

312 — कोई व्यक्ति दुनिया के बारे में शिकायत कर रहा था। मैंने उसे समझाया कि बड़ों की दृष्टि में दुनिया एक खेल और एक मज़ाक है, लेकिन बच्चों की दृष्टि में एक भारी ज़िम्मेदारी। अगर तुम्हें खेलना और मज़ाक करना अच्छा नहीं लगता तो मत खेलो, लेकिन अगर सहन कर सकते हो तो हँसते-हँसते चपत लगाओ और खाओ, क्योंकि खेल का आनन्द हँसने में है, रोने में नहीं।

शम्स: प्रभु की राह पर हँसते-हँसते चलो।

314 — ख़ुदा के लिए, कोई ऐसा पेशा सीख लो जिससे दाल-रोटी कमा सको। कब तक ऐसे परेशान होते रहोगे?

315 — अगर कोई तुमसे कहे कि किसी ने तुम्हें ईर्ष्यालु कहा है, तो यह जवाब दो, "ईर्ष्या दो तरह की होती है; एक ईर्ष्या इनसान में जोश भर देती है।" इस तरह की ईर्ष्या हो तो कहो, "किसी की विशेषताओं या गुणों में मैं उससे कम क्यों रहूँ?" यह सोचकर तुम और ज़्यादा कोशिश करोगे और यह ईर्ष्या तुम्हें स्वर्ग ले जायेगी। मैं रोज़ जो कुछ कहता हूँ, तुम्हारे दिलों

---

* संकेत एक प्रार्थना की ओर है जो वुज़ू के दौरान नाक साफ़ करते हुए बार-बार की जाती है ताकि नाक साफ़ होकर दिव्य सुगन्ध ग्रहण कर सके।

में इस तरह की ईर्ष्या जगाने के लिए कहता हूँ। दूसरी तरह की ईर्ष्या तब होती है जब मेरे कोई उपकार करने पर तुम ईर्ष्यावश यह चाहते हो कि मैं फिर उपकार न करूँ। तुम मुझे परोपकार से दूर रखना चाहते हो। इस तरह की ईर्ष्या तुम्हें नरक में पहुँचा देगी।

शम्स: क्या हम अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं या दूसरों को ऐसा करने से रोक रहे हैं?

315-6—हुज़ूर यह आपका ही घर है। आप यहाँ से मत जायें; मैं चला जाऊँगा, और मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए कुछ दान भी दे जाऊँगा। जो परमात्मा के सन्तों के साथ द्वेषपूर्ण व्यवहार करते हैं, वे समझते हैं कि वे उनका अहित कर रहे हैं। उनकी यह सोच ग़लत है। वे तो उन पर उपकार करते हैं, क्योंकि वे सन्तों को अपने प्रति उदासीन कर लेते हैं। सन्त सारे संसार के साथ इतनी सहानुभूति रखते हैं कि लोगों के लिए उनका प्रेम और उनकी चिन्ता उन पर बोझ बन जाती है। जब कोई व्यक्ति ऐसा काम करता है जो सहानुभूति के इस बन्धन को काट देता है, तो उनके मन पर से मानों एक पहाड़ जैसा बोझ उठ जाता है।

वास्तव में, जो शत्रुता का व्यवहार करते हैं वे यह नहीं जानते कि असली शत्रु कैसे बना जाता है। असली शत्रुता तो तब होगी जब वे सन्त की पीठ और कन्धों पर पड़े पहाड़ जैसे प्रेम को दृढ़ करें, उस प्रेम को बढ़ायें और उसे अधिक बोझिल बनायें जिससे सन्त को उनके साथ और अधिक सहानुभूति हो। इसलिए, अगर वे सन्त से प्रेम और चिन्ता के उस बोझ को हटा देते हैं तो सन्त की कोई हानि नहीं होती, बल्कि उसे राहत मिलती है।

उलटी-पलटी बातें करनेवाले शम्स के अनुसार सन्तों के प्रति शत्रुता व्यक्त करने का ढंग।

607-8—मुसलमान होने और ख़ुदा पर भरोसा रखने का मतलब है दुनियावी इच्छाओं का डटकर मुक़ाबला करना, और काफ़िर होने का मतलब है उन्हें सही मानना और उन्हें पूरा करने की कोशिश करना। जब कोई भरोसा करना शुरू कर देता है तो इसका मतलब होता है, "मैं हर मनोवेग और इच्छा का सामना करने का वादा करता हूँ।"

हो सकता है कोई कहे, "मैं वफ़ादार नहीं हूँ, क्योंकि इच्छाओं से लड़ना न तो मेरा काम है और न ही मेरे बस में है।" दूसरा कह रहा है, "मैं तो वफ़ादार हूँ, पर वह नहीं है। मैं इच्छाओं से तंग आ गया हूँ, लेकिन वह तंग नहीं आया है। मुझे चैन मिल गया है, लेकिन वह चैन से नहीं है। मैं एक मित्र हूँ, एक भक्त हूँ, पर वह नहीं है। मैं बाज़ हूँ, लेकिन वह बाज़ नहीं है। वह कौआ है!"

वफ़ादार इनसान के लिए यह ज़रूरी है कि वह अपने को भाग्यशाली समझे कि वह काफ़िर नहीं है, और एक काफ़िर के लिए यह ज़रूरी है कि वह अपने को भाग्यशाली समझे कि वह पाखण्डी नहीं है।

यह एक अजीब और अनजानी कहावत है कि जब नरक के दरवाज़े खुलते और बन्द होते हैं और उसके बहुत-से हिस्से ख़ाली पड़े होते हैं, उस वक़्त कुछ लोग उसे देखने आते हैं। जब वे नरक के अग्निकुण्ड के ज़्यादा नज़दीक आते हैं तो देखते हैं कि उसके दरवाज़े एक खण्डहर बने ख़ाली मकान के दरवाज़ों की तरह अपने आप खुल रहे हैं और बन्द हो रहे हैं। वे धोखे की ज़िन्दगी जीनेवालों की दुर्दशा देखते हैं, उनकी कराह सुनते हैं। उनसे पूछते हैं, "आप लोग कौन हैं? नरक ख़ाली हो रहा है, लेकिन आप अभी तक यहाँ पड़े हैं।" वे जवाब देते हैं, "हम धोखे और मक्कारी की ज़िन्दगी जिये, इसलिए हम कभी इस क़ैद से आज़ाद नहीं हो सकते, न ही हमें कभी चैन मिल सकता है।" कोई समझदार व्यक्ति ही इन शब्दों में छिपे भाव को समझ सकता है।

मक्कारी बाहर की भी हो सकती है और अन्दर की भी। परमात्मा करे कि हम और हमारे मित्र बाहरी मक्कारी से बचे रहें। जहाँ तक अन्दरूनी मक्कारी का सवाल है, उसे अपने अन्दर से निकाल फेंकने के लिए इनसान को पूरी कोशिश करनी चाहिए।

एक वफ़ादार इनसान दूसरे वफ़ादार इनसान के लिए एक आईना होता है। भक्त के लिए 'हक़' [सत्य] आईना होता है और सत्य के लिए भक्त ही आईना होता है।

इनसान की सबसे बड़ी कमज़ोरियों पर शम्स के विचार।

608-9—झगड़ा करना जिसका स्वभाव है, उस पर विश्वास कैसे किया जा सकता है, उसे रहस्यों का भागीदार कैसे बनाया जा सकता है? झगड़ा करना और विरोध करना छोड़ दो। इच्छा ही हर युद्ध का कारण होती है। जहाँ भी तुम्हें झगड़ा दिखाई देता है, वह किसी इच्छा को पूरा करने की कोशिश से आरम्भ हुआ है। जिसे शान्ति की चाह है, वह न तो कभी ऐसी बातें करता है और न ही कभी ऐसा काम करता है जो लड़ाई-झगड़े का कारण बने। बल्कि उसकी बातें और काम तो ऐसे होते हैं जो औरों को भी शान्तिप्रिय बनने की प्रेरणा देते हैं, जिससे उन्हें अपनी पिछली करतूतों पर पश्चात्ताप होता है। फिर वह पश्चात्ताप ही उनके हृदय में मीठे शब्दों के बीज बोता है, दूसरों को ख़ुशी देनेवाले काम करने की भावना को जन्म देता है, और हृदयों में भरी वह मिठास शान्ति की माँग करती है।

तुम्हारा मालिक प्रेम है,
और जब तुम वहाँ पहुँचोगे,
प्रेम की हालत बोल उठेगी,
बता देगी तुम्हें कि करना क्या है। (अखसिकति)

609-10—मित्रता इसे कहते हैं: अगर किसी का मित्र सोया पड़ा है और कोई दूसरा आकर उस मित्र के नंगे बदन पर पड़ी चादर खींच लेता है, तो वह शरारत करनेवाले को एक ज़ोरदार घूँसा लगाता है और चादर खींचकर अपने सोये हुए मित्र के बदन पर फिर डाल देता है। वह इस शरारत पर हँसता नहीं ताकि शरारत करनेवाले की भावना को ठेस न पहुँचे। इस तरह की हँसी-मज़ाक में साथ देना न तो उचित है और न ही यह मित्रता की निशानी है।

610—मुझे आशा थी कि आपको (रूमी को) उन लोगों से बात करने का अवसर मिल गया होगा जो मेरे साथ शत्रुता करते हैं, और उनसे भी जो मुझ पर सन्देह करते हैं, जो मेरे बारे में झूठी-सच्ची कहानियाँ गढ़ते हैं। वे समझ नहीं पाते कि अपने मित्रों की कही बात मानें या अपने शत्रुओं की। उन्हें पता नहीं चलता कि सच कौन बोल रहा है। वे इस इन्तज़ार में हैं कि कुछ सुनने को मिले जिससे एक पक्ष के बजाय दूसरे पक्ष पर विश्वास करना बेहतर लगे। मुझे आशा थी कि आप उन लोगों से प्यार से बात करेंगे, लेकिन आपने उनसे कुछ कहा ही नहीं। आपको उन्हें यह सच्चाई बता देनी चाहिए थी कि आपने उनसे बोलना इसलिए छोड़ दिया था कि उन्होंने दरवेश [शम्स] को नाराज़ कर दिया था। इससे उन्हें फ़ायदा होता, क्योंकि अभी वे यह नहीं समझते कि आप मुझसे प्रेम के कारण उनसे दूर रहे। वे समझते हैं कि आपको किसी बात से दु:ख पहुँचा था या आप नाराज़ हो गये थे इसलिए आप उनसे दूर रहे। अगर मन में कोई विचार उठता है, जैसे अगर मैं यह कहूँगा तो इससे नुक़सान होगा, या कोई और बात मन में आती है, तो फ़ौरन किसी मित्र को बता देनी चाहिए, उसे अपने तक नहीं रखना चाहिए।

शम्स रूमी को बताते हैं कि उनके प्रति द्वेषभावना रखनेवाले अपने अनुयायियों से उन्हें कैसे निपटना चाहिए।

611—परेशान करनेवाले किसी विचार को अपने तक नहीं रखना चाहिए क्योंकि इससे इनसान को घुटन महसूस होती है। उसे अपने दिल की हालत फ़ौरन किसी मित्र को बता देनी चाहिए और इस तरह दिल हलका हो जाता है। ऐसा मत सोचो कि मैं उसे यह कैसे बताऊँगा, क्योंकि अगर तुम उसे नहीं बताते तो भी तुम्हारा मित्र ख़ुद ही भाँप लेगा, और समझ जायेगा।

कुछ भी हो, उस 'मित्र' से कभी कुछ छिपा नहीं रहता।

622—परमात्मा ने मुझे बुला भेजा और मुझसे कहा, "हमारा प्यारा भक्त कुछ ऐसे लोगों के गुट में फँस गया है जो उसके योग्य नहीं हैं, और अगर यह उसके लिए हानिकारक सिद्ध हुआ तो कितने दुःख की बात होगी।"

दो मित्रों को इकट्ठे बैठकर बातें करने से जो ख़ुशी मिलती है उसकी तुलना उस ख़ुशी के साथ कैसे की जा सकती है जो मित्र को दूर से देखने पर मिलती है? वह दूरी आपके लिए एक परदा बन जाती है, चाहे आपकी रूह इतनी पवित्र हो कि आप परदे के पीछे छिपे नहीं रह सकते। लेकिन निकटता में कुछ और ही आनन्द होता है। अगर कोई आपसे दूर होते हुए भी आपके पास है तो सोचो कि असली निकटता कैसी होती होगी।

अगर वे कहें, "चलो, कहीं चलें" तो पूछें, "क्या शम्स वहाँ होंगे?" अगर नहीं, तो उनसे कह दें कि अभी आपको किसी काम के लिए जाना है।

शम्स रूमी को मुर्शिद की संगति का महत्त्व समझाते हैं।

629—कितने महान् थे वे शैख़! जब कोई उन्हें अपने घर खाने पर बुलाता तो वे कहते, "पहले आप एक घण्टे के लिए यहाँ आइये ताकि मैं देख सकूँ कि मैं आपको हज़्म कर सकता हूँ या नहीं। अगर मैं ऐसा नहीं कर सकता, तो फिर मैं आपका खाना कैसे खा सकता हूँ? जिसे खाने की मनाही है, उस खाने को पेट में डालने की मुझे इजाज़त नहीं।"

कितने ज़हरीले हैं हम!

637—अगर तुम वेश्या के पास जाते हो तो परमात्मा का क्या जाता है? ठीक है, वह परमात्मा की निन्दा करता है। परमात्मा की निन्दा के अलावा नास्तिक और कर भी क्या सकता है? परमात्मा में विश्वास रखनेवाले उसके विश्वास की बात करते हैं। "सुराही में से वही चीज़ निकलती है जो सुराही में होती है।"* यदि मन पवित्र है तो वचनों में पवित्रता होगी। यदि मन नास्तिक है तो वचनों द्वारा परमात्मा की निन्दा होगी।

वाणी स्वभाव को प्रकट करती है।

651—संसार एक धनुष के आकार का पुल है, एक टूटा-फूटा पुल, जिसके नीचे आग की लपटों पर लपटें उठ रही हैं। लेकिन कुछ लोग इस पर अपना विश्रामगृह बना लेते हैं। तुम्हारे लिए संसार तब तक है जब तक शरीर है, फिर इस नश्वर शरीर के बनाव-शृंगार में तुम इतने व्यस्त क्यों रहते हो? इसका उतना ही ध्यान रखो जितना आवश्यक है, उससे अधिक नहीं।

शरीर में हमारे क्षणभंगुर संघर्ष भरे
निवास पर शम्स के विचार।

651—जब मनुष्य को रोटी-कपड़ा जुटाने की ही चिन्ता लगी रहती है, तो भला आज़ादी कहाँ रही? देखो, ग़ुलाम को ऐसी कोई चिन्ता नहीं होती। उसका मालिक उसके रोटी-कपड़े का ध्यान रखता है। तब उसे अन्दर रोटी की चिन्ता क्यों होगी?

पूर्ण आत्मसमर्पण से मिलनेवाली आज़ादी पर शम्स के विचार।

656—अगर तुम परमात्मा की महिमा करते हो तो दूसरों की निन्दा क्यों करते रहते हो? निन्दा तो तुम्हीं करते हो। अगर तुम्हारे मुँह में शक्कर भरी

---

* फ़ारसी की एक कहावत।

है तो उसमें सिरका क्यों है? ऐसे में तो तुम्हारे मुँह में सिरका ही सिरका है, शक्कर नहीं!

परमात्मा की महिमा और दूसरों की निन्दा साथ-साथ नहीं चल सकतीं।

अगर नमाज़ न पढ़ना तुम्हारे लिए एक परदा नहीं है तो नमाज़ पढ़ना एक परदा क्यों हो? तुम समझ सकते हो कि यह तुम्हारी ही कमज़ोरी है जो तुमने नमाज़ को परदा बना रखा है।

शम्स पाखण्ड को बेपरदा करते हैं।

680—दु:ख भोगने से मनुष्य भलाई करने के योग्य हो जाता है। अगर कोई दु:ख न आये तो अहं एक परदा बन जाता है। दु:ख न होते हुए भी मनुष्य को दु:ख का एहसास कभी नहीं भूलना चाहिए, और अगर वह दु:ख को नहीं भूलता तो कोई मुसीबत उस पर हावी नहीं हो सकती।

शम्स परमात्मा के आगे नम्रता की आवश्यकता बताते हैं।

696—हज़रत मुहम्मद ने [रूहानी तौर पर] अन्धे इनसानों के हाथ में इबादत की चाबुक थमा दी, क्योंकि वे जानते थे कि ये लोग यह सत्य कभी समझेंगे ही नहीं कि असली बात तो परमात्मा का दास हो जाना है। उन्होंने उन्हें नमाज़ और इबादत बख़्श दी ताकि ये कम से कम उस सत्य की हलकी-सी ख़ुशबू तो पा सकें। अगर कोई कहे कि हज़रत मुहम्मद ख़ुद नमाज़ इसलिए पढ़ते थे कि हम भी पढ़ें, तो वह काफ़िर और नादान है, क्योंकि ऐसा वे इसलिए करते थे कि उन्हें ख़ुदा से प्यार था। वे सिर्फ़ "अल्लाहो अकबर" [परमात्मा महान् है] कहकर इस दुनिया से ऊपर उठ जाते थे।

आन्तरिक मार्ग पर पहले क़दम के रूप में प्रार्थना और भक्ति की भूमिका।

713-4—जब तुम किसी ऐसे व्यक्ति को मिलते हो जो शान्त स्वभाव का है, मीठा बोलता है, धैर्यवान् है, और सारे संसार के कल्याण के लिए प्रार्थना करता है, तो उसकी बातें तुम्हें भी उदार-हृदय बना देती हैं और तुम संसार और उसके घुटन से भरे वातावरण को भूल जाते हो। जब किसी की बातें ऐसी नहीं होतीं कि उसके कुफ़्र पर तुम्हें हँसी आ जाये, बल्कि उनमें सारभूत एकता की भावना होती है, तब बाहरी तौर पर तो तुम आँसू बहाते हो, लेकिन अन्दर से बहुत ख़ुश होते हो। ऐसा व्यक्ति एक फ़रिश्ता है जिसका स्थान स्वर्ग में है।

जिसकी बातों और बरताव में तुम्हें बनावटीपन, तनाव और रूखापन दिखाई देता है और वे बातें तुम्हारे हृदय में उसी तरह रूखेपन की भावना जाग्रत करती हैं जिस तरह दूसरे की बातों से प्रेम की भावना उमड़ती है, वह शैतान है और उसका स्थान नरक में है।

जो कोई इस रहस्य को समझता है, और जिसके हृदय में यह बात बैठ गई है, वह इन शैख़ों की ओर ध्यान नहीं देता। मृत्यु उसके लिए शोक का कारण नहीं होती। वह अपने दिमाग़ [मन और इन्द्रियों] का कहा नहीं मानता। पशु अपने सिर (बुद्धि) के सहारे जीता है, मनुष्य अपने सिर्र* के सहारे। जो सिर के सहारे जीता है, वह "...नहीं, शायद ज़्यादा गुमराह... (क़ुरान 7/179)"† होता है। जो अपने सिर्र (शब्द रूपी रहस्य) के सहारे जीता है, उसे "हमने इज़्ज़त बख़्शी है...(क़ुरान 17/70)।"‡ 'सिर्र' इस

* सिर्र (अरबी और फ़ारसी) का शाब्दिक अर्थ रहस्य है। सूफ़ियों की भाषा में इसका अर्थ 'शब्द', इस्मे आज़म या कलमा है, और मनुष्य की आत्मा उसकी बूँद है।

† क़ुरान की इस आयत में परमात्मा कहता है, 'उनके पास दिल है और वे समझते नहीं, उनके पास आँखें हैं और वे देखते नहीं, और उनके पास कान हैं और वे सुनते नहीं। वे जानवरों जैसे हैं; नहीं, शायद ज़्यादा गुमराह हैं, क्योंकि वे लापरवाह हैं।'

‡ इस आयत में परमात्मा कहता है, 'हमने आदम के बेटों को इज़्ज़त बख़्शी है ... और उन पर ख़ास मेहरबानी की है, जो उन पर की गई मेहरबानी से ऊपर है जो हमारी क़ायनात का एक बहुत बड़ा हिस्सा हैं।'

सिर में कैसे समा सकता है? जब 'सिर्र' सिर्र में नहीं समा सकता तो इस सिर का मैं क्या करूँ?

सच्चा ज्ञान 'शब्द' से प्राप्त होता है, बुद्धि से नहीं।

715-6 — अपनी किसी ग़लती पर पछताने के बाद वही ग़लती दोबारा करना काम पूरा करने का हिस्सा नहीं है। बल्कि यह तो काम न करना कहलाता है। तुम्हें अपनी ग़लती पर पछताना चाहिए और वहाँ से तुम्हें अपना काम फिर से आरम्भ करना चाहिए क्योंकि लक्ष्य अत्यन्त सूक्ष्म है।

जब तुम यहाँ से गये थे तो तुममें बड़ा स्नेह और उत्साह था, लेकिन तुमने उस दूसरे रास्ते के बारे में सोचना शुरू कर दिया [जिसमें चालीस दिन तक एकान्त में बैठना होता है]। चाहे तुमने उस रास्ते को अपनाया नहीं, पर तुमने उसके बारे में सोचा ज़रूर, और उस पर सवाल उठाये, और इससे तुम्हारा उसके प्रति उत्साह ठण्डा पड़ गया।

जब शिष्य किसी ऐसे विचार की ओर आकृष्ट होता है जिसका गुरु समर्थन न करता हो, तो उसके लिए शिष्य का उत्साह ख़त्म हो जाता है।

हाँ, जाओ, सबके साथ पाँच बार अपनी नमाज़ पढ़ो और दूसरी इबादत भी करो। रात को अपनी पत्नी को सुला दो, अपने बेटे को किशमिश और बेटी को अखरोट खाने में लगा दो, और फिर तुम सुबह तक इबादत करो। यह इबादत स्वीकार होती है और यही हज़रत मुहम्मद का धर्म है। यह इबादत करते हुए तुम अपने अन्दर के सत्य में इतना खो जाओ कि बाक़ी की इबादत करते हुए तुम्हें यह भी ख़बर न रहे कि तुम इबादत कर रहे हो।

ख़ुदा के लिए, यह जान लो कि इस तरह इबादत करने में गुफा* में जाकर इबादत करने से कहीं ज़्यादा असर है।

शम्स: संसार में रहते हुए अपने अन्तर में एकान्त में रहने की आदत डालो।

---

* रूहानी अभ्यास के लिए गुफा में जाने पर एक तीखी टिप्पणी।

731 — तुम अपने को उसके भरोसे छोड़ दो, औरों से मदद मत माँगो। मैं थोड़ी देर में ख़ुद ही तुम्हें बताऊँगा, और बेहतर ढंग से और प्यार से बताऊँगा। जिसमें कुछ नम्रता है, उसे मेरा मित्र बन जाने पर और अधिक नम्र और शिष्ट बनना चाहिए। अगर पाप से बचने के लिए वह आज तक वह सब करने से परहेज़ करता है जो करने की अनुमति नहीं है, तो आज से उसे वह सब करने से परहेज़ करना चाहिए जिसे करने की अनुमति है।

पूरे गुरु के आगे पूर्ण आत्मसमर्पण की आवश्यकता।

760 — मेरी आदत है कि जब कोई मेरे पास आता है तो मैं उससे पूछता हूँ, "हुज़ूर, आप कुछ कहना चाहते हैं या सुनना चाहते हैं?" अगर वह कहता है, "मैं कहना चाहता हूँ" तो मैं लगातार तीन दिन और तीन रात सुनता हूँ, बशर्ते कि वह मुझे छोड़कर भाग नहीं जाता। अगर वह कहता है, "मैं सुनूँगा," तो मैं बोलता हूँ। लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि हम दोनों एक-साथ बोलें, क्योंकि ऐसा न हो कि जब मैं बोलना शुरू करूँ तो वह बीच में बोलकर मेरी बात का सिलसिला तोड़ दे।

762 — तुम्हें पहले क्रोध आता है और फिर तुम शान्त हो जाते हो। पहली भावना, क्रोध की भावना, तुम्हारे अन्दर से उठी थी और दूसरी भी तुम्हारे अन्दर से, परन्तु वह भावना पहली भावना से बेहतर थी। अगर शान्त रहना क्रोध करने से बेहतर है तो तुम समझ सकते हो कि दया का स्थान कितना ऊँचा है।

763 — "मैं परमात्मा हूँ*," यह कहना उचित नहीं है, और इसमें सन्देह भी झलकता है। क्योंकि जब तुम "मैं" कहते हो तो वह परमात्मा कैसे हो

---

* एक कथन जो मन्सूरे हल्लाज का माना जाता है।

सकता है? अगर वह "मैं" परमात्मा है तो फिर जिसे "मैं" कहा जाता है, वह तो नंगा और अपमानित हो गया।

768-9—धार्मिक विश्वास वालों की सोच तो इस तरह की है कि हमें परमात्मा की भक्ति किसी-किसी समय ही करनी चाहिए क्योंकि वह अपने भक्तों को तभी देखता है, और बाक़ी समय वह आँखें बन्द किये रहता है और हमसे बेख़बर होता है।

कुछ लोगों का सचमुच यही विश्वास है। जब से परमात्मा का अस्तित्व है, वह सब देख रहा है, सब सुन रहा है, और उसे सब ख़बर है। तुम यह क्या कह रहे हो? रमज़ान के दौरान गुनाह मत करो; वह तुम्हें देखता है। शाबान में गुनाह से बचो; वह तुम्हें देखता है। लेकिन जब शव्वाल* में पहुँच जाओ, तो अपनी बदी, बेईमानी और बदचलनी फिर से शुरू कर दो। आपके कहने से यह पता लगता है कि ख़ुदा चला गया है, अब वह तुम्हें नहीं देखेगा, और न ही अगले रमज़ान तक उसे और कुछ पता चलेगा। इसलिए तुम कहते हो शराब और दिल-बहलाव के वे सामान ले आओ जिनकी मनाही है और फिर आओ, शराब का आनन्द लें।

769—यह उन थोड़ी-सी अनजानी कहावतों में से है जिनकी याद तभी आती है जब कोई ख़ास दिन हो और उनकी ख़ास ज़रूरत पड़े। जो हर रोज़ तौबा करता है और फिर अपनी कसम तोड़ देता है, उसकी शैतान इसलिए हँसी उड़ाता है कि वह परमात्मा की भक्ति करनेवाले उन लोगों में से नहीं है जो पाप करके पछताते हैं। अगर एक पहरेदार हँसी उड़ाता है तो अलग बात है, क्योंकि अगर पहरेदार बादशाह के सेवक से बदतमीज़ी करता है तो बादशाह उसके दो टुकड़े कर देगा! लेकिन शैतान दरवाज़े का पहरेदार है,

* रमज़ान इसलामी कैलन्डर का नौवाँ महीना है, शाबान आठवाँ और शव्वाल दसवाँ।

वह दरवाज़े के बाहर खड़ा है। उसे दूर रहने की बददुआ मिली हुई है। इस बददुआ का मतलब है वह परमात्मा से बिछुड़ा रहेगा।

शैतान (मन) पवित्रात्मा की हँसी नहीं उड़ा सकता।

790—सर्वशक्तिमान् परमात्मा हर किसी से केवल तीन चीज़ें माँगता है: पहली है आज्ञापालन, दूसरी है सन्तोष और तीसरी है उसकी याद। आज्ञापालन भक्ति है, सन्तोष समर्पण है और उसकी याद उसके होने का एहसास है।

790—दूसरों पर से अपना बोझ हटा लो और उनका बोझ ख़ुद उठा लो। मन में कोई लालच या उनसे किसी लाभ की आशा न रखो, बल्कि जो तुम्हारे पास है उनके आगे रख दो। अगर वे धन-दौलत चाहते हैं तो अपने लिए ग़रीबी माँगो। अगर वे सम्मान चाहते हैं, तो नम्रता माँगो।

792—जो परमपूज्य परमात्मा को याद रखता है, उसकी आत्मा के अलावा और सब आत्माएँ [इच्छाएँ पूर्ण न होने के कारण] प्यासी ही शरीर को छोड़ जाती हैं।

793—ज्ञान के बिना शरीर बिना पानी के शहर के समान है और संयम के बिना शरीर बिना फल के वृक्ष के समान है; दीनता के बिना शरीर बिना नमक के भोजन के समान है और परिश्रम के बिना शरीर बिना मालिक के ग़ुलाम के समान है।

794—ज़बान को ज़्यादा बोलने से, पेट को ज़्यादा खाने से, और आँखों को ज़्यादा देखने से रोको।

797—जिस तरह मौत से कोई नहीं बच सकता, उसी तरह किसी की रोज़ की रोटी उससे कोई नहीं छीन सकता। जब भाग्य निश्चित है तो योजनाएँ

बनाना व्यर्थ है; दया-मेहर के बिना कोशिशें बेकार हैं। भाग्य से बचना सम्भव नहीं, और लम्बे जीवन की कामना करना व्यर्थ है। ऐ आदम की सन्तान, जब तुम मौत से नहीं बच सकते, अपनी सब इच्छाएँ पूरी नहीं कर सकते, जब यह हो नहीं सकता कि तुम्हें अपनी रोज़ की रोटी न मिले और किसी और की रोटी तुम्हें मिल जाये, तो भले आदमी! तुम जी तोड़ मेहनत करके अपने शरीर को इतना कष्ट क्यों दे रहे हो?

797—समृद्धि सन्तोष में है, सुरक्षा एकान्तवास में। स्वतन्त्रता इच्छा-रहित होने में है और सफलता धीरज रखने में।

797—जो लोभी हैं उनका कोई मान-सम्मान नहीं होता, और जो सन्तुष्ट हैं उनका कोई अपमान नहीं होता। जो आज़ाद हैं वे लोभ के ग़ुलाम हो जाते हैं, और जो ग़ुलाम हैं वे सन्तोष करके आज़ाद हो जाते हैं।

810—जो कुछ सर्वशक्तिमान् परमात्मा तुम्हें देता है उसको अपना परम सौभाग्य मानकर स्वीकार करने में ही सुख है।

मन

"जो अपने मन को पहचान लेता है, वह अपने ख़ुदा को पहचान लेता है।"

...बचपन में तुम्हें जो आदतें पड़ जाती हैं, वही आदतें पक्की होकर मन का रूप ले लेती हैं।

शम्स, *मक़ालात* 309-10

185—मुझे केवल सतही ज्ञान का प्रयोग करते हुए उनसे अरबी भाषा में बातचीत करनी चाहिए*। आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में उनसे बातचीत करना व्यर्थ है। इस ज्ञान को लेकर कोई उनके साथ कैसे उलझ सकता है? वे इस ज्ञान के योग्य नही हैं, इसलिए उन्हें उनके अपने ज्ञान में ही लगे रहने देना बेहतर है।

हर कोई ज्ञान का लाभ उठाना चाहता है, लेकिन तुम तो अच्छे कर्मों द्वारा परमप्रिय परमात्मा की दया प्राप्त करना चाहते हो। कर्म ही गिरी है, ज्ञान तो केवल बाहर का खोल है।

करनी के बिना ज्ञान व्यर्थ है।

---

* अरबी क़ुरान की भाषा है, इसलिए सम्भव है कि अधिकांश विद्वान् वह भाषा पढ़ना और लिखना जानते थे। उन्हें अपने अरबी के ज्ञान पर गर्व था और वे अपने को ज्ञानी समझते थे।

192-3 — कुछ दार्शनिक कहते हैं कि हम हज़रत मुहम्मद के चमत्कार का उतना ही भाग स्वीकार करते हैं जो तर्कसंगत है। विवेक से यह प्रमाणित हो जाता है कि परमात्मा है, और परमात्मा के अस्तित्व के प्रमाण परस्पर विरोधी नहीं हैं। हम कहते हैं कि चमत्कार वह होता है जो बुद्धि की पहुँच से परे हो। बुद्धि न तो यह समझ सकती है कि चमत्कार किस कोटि का है और न यह कि वह किस तरह किया गया है। परमात्मा ने मनुष्य को विवेक दिया है, लेकिन यदि हम इसका सही उपयोग नहीं करते तो हमें विरोधाभास लगता है। यही कारण है कि संसार में बहत्तर कौमें* हैं। एक की बुद्धि और विवेक दूसरे की बुद्धि और विवेक के विपरीत है, इसलिए उनमें परस्पर विरोध है। उदाहरण के लिए, यदि तुम दो व्यक्तियों से पूछो कि दो गुणा दो कितने होते हैं तो वे एक ही उत्तर देंगे, परस्पर विरोधी उत्तर नहीं, क्योंकि इतने सरल प्रश्न का उत्तर देना भी सरल है। लेकिन जब तुम उनसे सात और सात का, या सत्रह और सत्रह का गुणनफल पूछोगे तो हो सकता है कि उन्हीं दो बुद्धिमान् व्यक्तियों के उत्तर भिन्न-भिन्न हों, क्योंकि अधिक जटिल प्रश्न का उत्तर देना अधिक कठिन होता है।

जब लोग आलस के कारण अपने विवेक से काम नहीं लेते तो मानों उन्होंने दर्पण को टेढ़ा पकड़ा हुआ है। अगर तुम एक लाख दर्पण भी सीधे पकड़ो तो उनमें वही प्रतिबिम्ब दिखाई देता है, सब एक ही भाषा बोलते हैं। अगर सौ आदमी दिन के उज्ज्वल प्रकाश में आँखें खोले खड़े हैं, और कोई दूर से ढोल बजाता और नाचता आ रहा है, तो उनको जो दिखाई देता है उसके बारे में उनमें कोई मतभेद नहीं होगा। लेकिन अगर अँधेरी रात में जब बादल छाये हों, उन्हें कोई ढोल बजता सुनाई देता है तो उनके मन में सैकड़ों परस्पर विरोधी विचार उठेंगे। कोई कहेगा फ़ौज आ रही है, कोई कहेगा कोई दावत या समारोह हो रहा है, वग़ैरह, वग़ैरह।

---

* एक हदीस।

दार्शनिक समझते हैं कि पैग़म्बरों में लोगों की सहायता और उनका मार्गदर्शन करने की योग्यता नहीं होती। उनकी धारणा है कि पैग़म्बरों को अपनी शान और पदवी की गरिमा से प्रेम होता है, इस कारण वे लोगों की सहायता करते हैं। वे मानते हैं कि पैग़म्बर चाहे पूरी तरह गुमराह नहीं हुए होते और परमात्मा का रास्ता उनके लिए पूरी तरह बन्द नहीं होता, फिर भी वे पूरी तरह से संसार से विरक्त नहीं होते, और न ही उन्होंने अपने अन्दर पूर्ण एकान्त की अवस्था प्राप्त की होती है। पैग़म्बर का शादी करना भी अनुचित समझा जाता है और इसे अपूर्णता का कारण माना जाता है।

शम्स: बुद्धि में परख करने की पर्याप्त क्षमता नहीं होती।

204-5 — परमात्मा में कोई परिवर्तन नहीं आता, परन्तु तुममें परिवर्तन आता है। उदाहरण के लिए, रोटी कभी तुम्हें अच्छी लगती है और कभी नहीं। या एक दिन किसी के साथ तुम्हारा व्यवहार मित्रतापूर्ण और प्रेम से भरा होता है और वह तुम्हें प्यारा लगता है, और बाद में तुम बदल जाते हो और उससे घृणा करने लगते हो। अगर तुम्हारा रवैया न बदलता तो तुम पहले की तरह उससे प्रेम करते।

परिवर्तन मन का स्वभाव है, परमात्मा का नहीं।

249 — जब महात्मा कोई कहानी सुनाते हैं तो उस ज्ञान के लिए जो उसमें निहित होता है, न कि बोरियत को दूर करने के लिए। ज्ञान को कहानी का रूप इसलिए दिया जाता है कि भाव और अधिक स्पष्ट हो जाये।

281-2 — बाहर दरवाज़े पर खड़ा कोई एक मिनट के लिए अन्दर आने की सौ बार अनुमति माँगता है, और उसे कह दिया जाता है, "बिलकुल नहीं।" कोई दूसरा दरवाज़े के अन्दर खड़ा एक घण्टे के लिए बाहर जाने की अनुमति माँगता है, और उसे कह दिया जाता है, "नहीं, यह सम्भव नहीं है।"

भले आदमी, लोग अपने मन की अवस्था बयान कर रहे होते हैं, और कहते यह हैं कि वे परमात्मा के वचनों का भाव स्पष्ट कर रहे हैं।

297—किसी भी वस्तु की इच्छा का उठना इस बात का शुभ संकेत है कि परमात्मा वह इच्छा पूरी करेगा।

307—बुद्धि निर्बल है, अधिक सफलता प्राप्त नहीं कर सकती। फिर भी इसे पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता, क्योंकि यह कुछ हद तक तो काम आती है। यह एक रची हुई वस्तु है और रचना केवल घर के दरवाज़े तक ही जाती है, दरगाह में प्रवेश करने का साहस नहीं करती।

बुद्धि की सीमाएँ।

309-10—"जो अपने मन को पहचान लेता है, वह अपने ख़ुदा को पहचान लेता है।"* उन्होंने यह क्यों नहीं कहा, "जो अपनी बुद्धि या अपने स्वभाव को पहचानता है? "... इसलिए कि मन में यह सब शामिल है। बचपन में तुम्हें जो आदतें पड़ जाती हैं, वही आदतें पक्की होकर मन का रूप ले लेती हैं।

312—एक सूफ़ी फ़कीर ने कहा, "एक दिन जब मैं शैख़† के जूते उनके पाँवों के पास रख रहा था तो मेरा हाथ उनके पाँव से छू गया, और मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने आग में तपकर लाल हुई लोहे की चादर को छू लिया हो।" वह आग वह सब कुछ जला देगी जो जल जाता है: प्रलोभन, विचार, विचार उत्तेजित करनेवाली बातें और विचारों के पुजारी। जैसा कि कवि ने कहा है:

* एक हदीस।

† शैख़ सदिदे अनबरी।

देखी हैं मैंने पानी की
और सुबह की ओस की जितनी बूँदें,
उनसे ज़्यादा दिखते हैं मुझे उसमें
सामेरी और बछड़े। (सना'ई)*

जिनको आत्मबोध हो गया है, उनकी संगति का प्रभाव।

313—दुनिया एक ख़ज़ाना है और एक साँप भी। एक वर्ग ख़ज़ाने के साथ खेल रहा है और दूसरा साँप के साथ। जो साँप के साथ खेल रहे हैं, वे घावों से बच नहीं सकते। साँप उन पर कभी अपनी पूँछ से वार करता है और कभी अपने फण से। जब उसकी पूँछ की चोट से कोई बेहोश हो जाता है तो वह उसे डस लेता है।

साँप (मन) के प्यार और उपहारों ने जब कुछ लोगों के अहंकार को बढ़ावा नहीं दिया तो उन्होंने साँप का साथ छोड़ दिया और विवेक का साथ ले लिया, क्योंकि विवेक से उत्पन्न बोध ही उस साँप के काटे का इलाज है। जब उस भयंकर साँप ने देखा कि विवेक इन लोगों का मार्गदर्शक बन गया है तो वह शक्तिहीन हो गया, उसकी अकड़ जाती रही और उसमें दीनता आ गई। वह पानी के अन्दर एक ह्वेल के समान था, लेकिन अब वह विवेक के क़दमों तले एक पुल बन गया। उसका ज़हर शक्कर हो गया और उसके ज़हरीले दन्त फूल। वह डाकू था और अब रक्षक साथी बन गया। वह डरावना था और अब सुरक्षा का साधन बन गया।

शम्स के अनुसार मन का कायापलट: मनुष्य विवेकशील हो जाये तो उसका मन स्वामी से दास बन जाता है।

* हज़रत मूसा का एक अनुयायी जिसने उनकी बराबरी करने के लिए उनकी अनुपस्थिति में एक सुनहरी बछड़े की रचना की थी। यहाँ चालबाज़ी और कपट के प्रतीक के रूप में उसका उपयोग किया गया है।

726—यह मार्ग अत्यन्त गुप्त है, असाधारण रूप से गुप्त। रास्ते में इतने पहरेदार बैठे हैं; अन्दर जाने का कोई रास्ता नहीं है; इस पर चलना असम्भव है। सावधान! आगे मत बढ़ना। छः दिशाओं में परमात्मा का प्रकाश फैला हुआ है, लेकिन बेचारा दार्शनिक सातवीं दिशा से भी परे खड़ा है, अधर में खड़ा है।

शम्स विनोदपूर्ण शैली में बुद्धि को रूहानी मार्ग में एक बाधा बताते है।

737—परमात्मा की सृष्टि अत्यन्त विशाल है। तुमने इसे एक छोटे-से डिब्बे में बन्द कर दिया है और कहते हो कि बस, यह इतनी ही है, क्योंकि तुम्हारी बुद्धि यही समझती है। इसलिए तुमने बुद्धि बनानेवाले की इस विशाल रचना को अपनी बुद्धि के दायरे तक सीमित कर दिया है। जिसे तुमने पैग़म्बर मान लिया है वह तुम्हारा दूत है, परमात्मा का दूत नहीं। तुमने सिर्फ़ वही पढ़ा है जो तुमने लिखा है, वह नहीं पढ़ा जो प्रियतम (परमात्मा) ने लिखा है। जो उस प्रियतम ने लिखा है, वह भी पढ़ो।

शिष्य

कुछ लोग प्रभु के दर्शन के बारे में लिखते हैं,
और कुछ को अपने अन्दर प्रभु का दर्शन होता है।
कोशिश करो कि तुम दोनों बनो,
जिसे अपने अन्दर प्रभु का दर्शन हो गया है, वह भी,
और दर्शन होने के बारे में लिखनेवाला भी।

शम्स, *मक़ालात* 681

108—कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके अन्दर प्रवचन सुनने से विश्वास उत्पन्न हो जाता है, लेकिन प्रवचन सुनकर चले जाने के बाद उनका जोश ठण्डा पड़ जाता है और उनका हृदय पहले जैसा कठोर हो जाता है, बिलकुल वैसे ही जैसे सिक्का आग में से निकलने के बाद फिर ठण्डा और कड़ा हो जाता है। कुछ लोगों का हृदय प्रवचन सुनते हुए भी कोमल नहीं होता, लेकिन किसी और तरह से, जैसे कोई असाध्य रोग आने से, कोमल हो जाता है। जिस तरह इस दृश्यमान संसार में हर कड़ी चीज़ को नरम करने के लिए कोई विशेष साधन अपनाना पड़ता है, उसी तरह कुछ लोगों के दिलों में कोमलता लाने के लिए कोई ख़ास ढंग अपनाना पड़ता है।

हृदय की कोमलता पर शम्स के विचार।

108 — अगर तुम कड़वाहट को सहन कर लोगे तो मिठास भी आ जायेगी। अगर कोई कड़वाहट के होते हुए भी ख़ुश रहता है तो उसका कारण यह है कि उसकी आँखें अन्त में मिलनेवाली मिठास पर टिकी हुई हैं। सब्र का मतलब है अपने काम के परिणाम पर नज़र टिकाये रखने की क्षमता का होना, और बेसब्री का मतलब है इस क्षमता का अभाव।

दृढ़ता, धैर्य और विश्वास के फल पर शम्स के विचार।

251 — जब प्रेमी अहंभाव त्याग देता है तो 'जिससे उसे प्रेम है' और जिसकी उसे खोज है, वह भी अपने अलग अस्तित्व को भूल जाता है।

...और 'प्रियतम' प्रेमी से एक हो जाता है।

666 — तुमने मुझसे कहा, "मैं अपने आन्तरिक अनुभवों के बारे में इसलिए बताता हूँ कि मेरा मन ख़ाली हो जाये।" कितनी विचित्र बात है! मन को आन्तरिक अनुभवों से ख़ाली कर देने पर तुम उसे भरोगे किस चीज़ से? यह तो वही बात है कि शराब बेच रहे एक मनुष्य से किसी दूसरे मनुष्य ने कहा, "विचित्र बात है! जब तुम शराब बेच दोगे तो उसके बदले में तुम ख़रीदोगे क्या?"

शम्स: अन्दर के ख़ज़ाने की रक्षा ज़रूरी है।

678-9 — *अरे! हैरान हूँ मैं तुम पर जो अपनी समस्या को सुलझाने की कोशिश में मर रहे हो। (अत्तार)*

मनुष्य को इस विशेष उद्देश्य से बनाया गया है कि वह अपने निजी अनुभव से जाने कि वह कहाँ से आया है और उसे लौटकर कहाँ जाना है। आवश्यक आन्तरिक और बाहरी इन्द्रियाँ उसे विशेष रूप से इसी खोज के लिए दी गई हैं, लेकिन वह उनका प्रयोग किन्हीं और चीज़ों के लिए करता है।

ऐसा करके वह अपने आप को वह सुरक्षा नहीं दे पाता जिसकी उसे ज़रूरत है, जिससे उसे सच्ची ख़ुशी मिले और अपने आदि और अन्त का ज्ञान हो जाये। वह अपना जीवन वैज्ञानिक ज्ञान की खोज में व्यस्त रहकर बिता देता है, जो दुनियादार लोगों का काम है, और इस तरह वह अपनी मंज़िल से दूर रह जाता है।

बहस और तकरार के एक विशेषज्ञ* ने अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में कहा था, "हमारे शरीरों के अन्दर हमारी आत्माएँ डरते हुए जीती हैं और हमारे लिए दुनिया कुल मिलाकर एक मुसीबत और परेशानी बन जाती है।" यह सारी दुनिया के लिए एक नसीहत है। ऐसे समय में [जीवन के अन्त में] भला वे असलीयत को छिपाते हुए कोई कपटपूर्ण बात क्यों कहते!

रूमी ने कहा, "हाँ, इनसान अपने लिए सुख-चैन और सुरक्षा का प्रबन्ध नहीं करता, और उन्हें प्राप्त करने के साधन नहीं अपनाता। अपने को भूलकर किसी दूसरे को लम्बी-चौड़ी बातें करके सलाह देने से भला क्या मिलता है? इससे तो केवल ध्यान बिखरता है।" शम्स ने कहा, "हाँ, लोग दूसरों को सलाह देते हैं, ख़ुद को नहीं। आप मुझे क्यों छोड़ गये जिससे बाद में आपको मुझसे क्षमा माँगनी पड़ी और अपने चले जाने पर खेद प्रकट करना पड़ा? अब मैं भी आपकी सज़ा के तौर पर आपसे उतनी ही दूर चला जाऊँगा, क्योंकि मैंने दावा किया है कि हम दोनों में प्रेम है और आपके साथ रहकर मिट्टी हासिल करना किसी दूसरे के साथ रहकर सोना पाने से बेहतर है। आप इस रिश्ते की क़द्र नहीं करते। सो डाँट तो आपको पड़ेगी ही।"

उपदेश देने और अमल करने में अन्तर।

680 — क्या मौलाना यहाँ हैं? आओ, मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ बैठें। आप मौलाना ही हैं न? आओ, इकट्ठे बैठें। अपने उद्देश्य को पूरा

---

* फ़ख़्रे राज़ी।

करने के लिए क्या एक बार का प्रवचन काफ़ी नहीं? बार-बार प्रवचन किसलिए होता है? वह आत्मा की ख़ुराक होता है और भक्ति में जान डाल देता है।

685 — जब एक शिष्य से पूछा गया कि क्या तुम्हारे मुर्शिद ज़्यादा अच्छे हैं या बायज़ीद, तो उसने जवाब दिया, "मेरे मुर्शिद।" तब उससे पूछा गया, "तुम्हारे मुर्शिद ज़्यादा अच्छे हैं या पैग़म्बर मुहम्मद?" तो उसने जवाब दिया, "मेरे मुर्शिद।" फिर उससे पूछा गया, "तुम्हारे मुर्शिद ज़्यादा अच्छे हैं या ख़ुदा?" उसका जवाब था, "मैं अपने मुर्शिद से एक हो गया हूँ। इसके अलावा और किसी एकता का मुझे ज्ञान नहीं है।"

एक सच्चा शिष्य जानता है कि उसके गुरु ने ही उसे सब कुछ दिया है।

714-5 — उसने कहा, "हे प्रभु, अब जब कि मेरी कोशिशों की हद हो गई है तो तुम कहते हो कि असली दुनिया इस आईने से परे है, लेकिन मुझे तो इस आईने में ही दिव्य प्रकाश दिखाई देता है। अब मुझमें कोई बल या शक्ति नहीं रह गई। अब तुम्हीं मुझे शक्ति दोगे।"

परमात्मा ने जवाब दिया, "ठीक है, लेकिन तुम स्वयं थोड़ा चलो, ताकि हम तुम्हें शक्ति प्रदान करें।"

तब उसने कहा, "हे प्रभु! मैं तो चल ही रहा हूँ। इस मुश्किल हालत में भी मैं रस्मी तौर पर तो हाथ-पैर मार ही रहा हूँ।"

परमात्मा-उसकी अपार महिमा हो-नाड़ियों का ऑपरेशन करनेवाले डॉक्टर के जैसा है। उस डॉक्टर को जब किसी बच्चे की चमड़ी को किसी छुरी से चीरा देना होता है तो वह उसे पहले किशमिश और अखरोट दे देता है ताकि उसे नश्तर की चुभन ज़्यादा महसूस न हो और उसका ध्यान दर्द की तरफ़ न जाये।

परमात्मा ने भक्त को कोशिश करने में लगाये रखा; फिर उसके सामने प्रकट हो गया जिससे उसका आईना टूट गया। पहले भक्त अपने हृदय में लीन रहता था, अब वह परमात्मा में विलीन हो गया है।

करनी से दया-मेहर मिलती है और वह हमें प्रभु की ओर ले जाती है।

716 — प्रभु का भक्त प्लेटो (Plato) को उसके सारे ज्ञान से ख़ाली कर सकता है। और चाहे वह क्षण भर में ऐसा कर सकता है, लेकिन वह धीरे-धीरे ही उसकी सहायता करता है, ताकि अन्ततः प्लेटो कहने लगे कि भक्त फ़िलॉसफ़र भी होता है और होशियार भी होता है, क्योंकि प्लेटो ख़ुद एक विद्वान् फ़िलॉसफ़र है। प्लेटो जैसे फ़िलॉसफ़र पैग़म्बरों पर वार करते ही रहते हैं, और ऐसा वे बिना कारण नहीं करते, बल्कि इसलिए करते हैं कि इससे उन्हें एक ख़ास तरह की ख़ुशी मिलती है, एक ख़ास तरह का आनन्द मिलता है, जिससे उनमें ऐसा करने की हिम्मत आ जाती है।

722 — शम्स रूमी से कहते हैं कि जब मैंने आप पर वह ज़ाहिर कर दिया जो मैंने पैग़म्बरों और औलिया पर ज़ाहिर नहीं किया तो परमात्मा को ईर्ष्या हुई। आप आदेश को तो मानते नहीं, जैसे आपको आशा हो कि जब तक आपका अस्तित्व बना हुआ है, तब तक यह [शम्स का] अस्तित्व भी बना रहेगा। शम्स आपको ऐसा आदेश इसलिए देता है कि इससे परमात्मा के आदेश का प्रकाश आपको दिखाई देने लगे और इस तरह आप उसके योग्य बन जायेंगे। अभी आप परमात्मा के आदेश को सहन नहीं कर सकते। सहन कर भी कैसे सकते हैं? उसके आदेश का प्रकाश देखकर ही हज़रत मुहम्मद के मुँह से ये शब्द निकले थे "सूरत हूद ने मेरे बाल सफ़ेद कर दिये हैं।"*

---

* क़ुरान के अध्याय 'हूद सूरत' का उद्देश्य परमात्मा के आदेशों का पालन करने की शक्ति प्रदान करना था।

अगर मैं एक बार यह कहता हूँ कि हो सकता है मेरे यह लिखने से किसी को फ़ायदा हो जाये, तो आप चिन्ता करने लगते हैं कि शायद मैं चला जाऊँगा और सोचते हैं कि क्या ये मेरे लिए ऐसा कह रहे हैं। मैं कहता हूँ, "नहीं, आपके लिए नहीं।" मेरे और आपके इस दुनिया से चले जाने के बाद, इससे किसी सच्चे खोजी को फ़ायदा हो सकता है। अब आपको इस योग्य हो जाना चाहिए कि मेरा आदेश मानना आपके लिए कठिन न हो, भले ही वह आदेश दूसरों को कठोर जान पड़े। बायज़ीद भी मेरा साथ सहन नहीं कर सकते थे, पाँच दिन भी नहीं, एक दिन भी नहीं, किसी दिन भी नहीं। केवल ऐसा खोजी ही उसे सहन कर सकता है, जिसकी तरफ़ मेरा दिल झुक जाये, जिस पर मेरा दिल मेहरबान हो जाये।

पूर्ण आत्मसमर्पण की आवश्यकता पर
शम्स का रूमी को उपदेश।

726—कल्पना करो एक ऐसे पन्ने की जिसका एक पृष्ठ तुम्हारी ओर हो और दूसरा प्रियतम (परमात्मा) की ओर। तुम केवल वही पृष्ठ पढ़ते हो जो तुम्हारी ओर है, लेकिन तुम्हें वह पृष्ठ भी पढ़ना चाहिए जो उस प्रियतम की ओर है।

मन प्रियतम की पुस्तक नहीं पढ़ सकता।

735—परमात्मा के नामों* में से एक नाम मुरीद है, और मुरीद की कोई मुराद तो होती ही है। अगर कोई "खोजी" है तो 'जिसकी उसे खोज है' वह भी ज़रूर होगा। किसी ने शम्स से कहा, "यह तो एक आम बात है।"

* मुसलमानों का विश्वास है कि परमात्मा के कई नाम हैं, लेकिन वह नाम जो प्रकट नहीं है, जो बोला नहीं जाता और लिखा नहीं जाता—इस्मे आज़म (शब्द)—उस तक कोई पूर्ण सन्त के द्वारा ही पहुँच सकता है।

शम्स ने जवाब दिया, "लेकिन मैंने खोजी को महत्त्व दिया है। खोजी होना कोई साधारण बात नहीं है, क्योंकि खोज की अगर एक किरण भी दुनिया के लोगों पर पड़ जाये तो वे सहन नहीं कर पायेंगे; वे जल जायेंगे; उनकी दुनिया उलट-पलट हो जायेगी। खोजियों में से एक था मूसा, जिसकी खोज के कारण एक पहाड़ चकनाचूर हो गया था। तो फिर 'जिसकी खोज है', उसका होना कोई साधारण स्थिति कैसे हो सकती है?"

शम्स: सच्चा जिज्ञासु दुर्लभ है।

752—क्या कोई मुर्दों से भक्ति करने की आशा करता है? अगर कोई आकर एक मृत इनसान से कहे, उठो और भक्ति करो तो बुद्धिमान् लोग कहेंगे कि इसका सिर फिर गया है। इसे पागलख़ाने ले जाओ और ज़ंजीरों से बाँध दो। कोई नीम पागल आदमी भी चाहेगा कि उस इनसान को पागलख़ाने में बन्द कर दिया जाये या मार डाला जाये।

रूह का परिन्दा जब
उड़ जायेगा तेरे जिस्म के कुएँ में से,
तो पा लेगा छुटकारा वह
रोज़ों की बेइज़्ज़ती से,
बन्दगी की शर्मिन्दगी से। (अज्ञात)

जब शिष्य मुर्दे जैसा हो तो कोई यह आशा कैसे करेगा कि वह उठकर भक्ति करेगा?

संसार और उसके धार्मिक रीति-रिवाज
से विमुखता।

795 — बायज़ीद बस्तामी से पूछा गया, "क्या आप पानी पर चल सकते हो?" उसने जवाब दिया, "सूखी लकड़ियाँ पानी पर तैरती हैं, परिन्दे हवा में उड़ते हैं, और जादूगर रातों-रात ज़मीन के एक किनारे से दूसरे किनारे पर पहुँच जाते हैं। लेकिन इनसान का काम है दिल को ख़ुदा की राह में लगाना, कहीं और नहीं।"

ध्यान को एक बिन्दु पर केंद्रित करने पर शम्स के विचार।

परमसत्ता के बारे में शम्स के वचन

कल्पना करो एक ऐसे पन्ने की
जिसका एक पृष्ठ तुम्हारी ओर हो
और दूसरा 'प्रियतम' की ओर।
तुम केवल वही पृष्ठ पढ़ते हो जो तुम्हारी ओर है,
लेकिन तुम्हें वह पृष्ठ भी पढ़ना चाहिए जो 'प्रियतम' की ओर है।

शम्स, मक़ालात 726

परमात्मा

हाँ, यह ठीक है कि एक पल बहुत छोटा होता है,
लेकिन प्रभु के साथ बिताया पल अनन्त होता है।
शम्स, मक़ालात 662

117—"ख़ुदा यक़ीन रखनेवालों के साथ लेन-देन करता है..." (क़ुरान 111/9)। इसका मतलब है कि परमात्मा उन्हें वह देता है जो अविनाशी है और वे उसे वह देते हैं जो मिथ्या और नश्वर है।

175—किसी ने पूछा, "भक्त और परमात्मा के बीच कितनी दूरी है?" शम्स ने उत्तर दिया, "उतनी ही दूरी जितनी परमात्मा और भक्त के बीच है।" अगर कोई यह भी कहे कि वह दूरी तीस हज़ार साल की है तो भी सच नहीं होगा, क्योंकि उस दूरी का न कोई अन्त है न माप। जो अपार है उसे मापा नहीं जा सकता, और जो अनन्त है उसे गिना नहीं जा सकता। इनसान को इतना ज़रूर समझ लेना चाहिए कि जिसका अन्त है, "अनन्त" उससे दूर, बहुत दूर है। यह केवल आलंकारिक भाषा है जिसका अनन्त के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। परमात्मा और शब्दों में भला क्या मेल है?

बुद्धि से परमात्मा को समझने का प्रयत्न न करने की शम्स की सलाह।

188 — पहले मुझे यह बताओ कि "अलिफ़" क्या है, ताकि मैं तुम्हें बता सकूँ कि "बे" क्या है। तुम कहते हो कि यह बताने में लम्बा वक़्त लगेगा, लेकिन मेरे लिए तो लम्बा और छोटा बराबर हो गये हैं, इसलिए इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि वह लम्बा है या छोटा? ये तो आकार और रचित वस्तु की विशेषताएँ हैं। पहला और आख़िरी, ये शब्द रचित पदार्थों के लिए हैं। जब निराकार नहीं था, तब न तो कुछ पहला था न आख़िरी, और न ही कुछ गुप्त था न प्रकट।

विशेषताएँ आकारवाली वस्तुओं का वर्णन करती हैं, निराकार का नहीं।

189 — परमात्मा के दूत [हज़रत मुहम्मद] ने कहा था, "मुझे जोनाह से ऊँचा मत मानो। बहिश्त की तरफ़ उनकी चढ़ाई ह्वेल के पेट में से हुई थी, जब कि मेरी सात आसमानों से परे। लेकिन ख़बरदार! इस कारण से मुझे ज़्यादा ऊँचा पद मत दो।"* अगर परमात्मा से मिलाप के लिए एक जगह दूसरी जगह से बेहतर हो तो वह जगह बदलने के लिए भागता रहेगा, और इस तरह जगह के अधीन हो जायेगा।

परमात्मा सर्वव्यापक है।

236-7 — कितनी विचित्र बात है! तुम परमात्मा से मित्रता को क्या समझते हो, उस परमात्मा से मित्रता को जिसने पृथ्वी रची है, आकाश रचे हैं, और यह सृष्टि रची है? क्या तुम समझते हो कि परमात्मा से मित्रता इतनी आसान है कि बस, तुम जाओ...उसके पास बैठो और उससे बातचीत करो। क्या तुम समझते हो कि यह मित्रता करना उतना ही आसान है जितना एक ढाबे में जाना और खाना शुरू कर देना?

यह मित्रता तुम्हारी बे-लगाम कल्पना की उड़ान से भी परे है।

---

* एक हदीस।

245-6 — अध्यात्म-विद्या के सभी बड़े विद्वान् भाग्यवाद का शिकार हो गये हैं, लेकिन प्रभु का मार्ग उससे अलग है। भाग्यवाद से परे भी कुछ सूक्ष्म तत्त्व हैं। परमात्मा कहता है कि तुम शक्तिस्वरूप हो। फिर तुम अपने को भाग्यवादी क्यों कहते हो? परमात्मा तुम्हें अच्छे कर्म करने तथा बुरे कर्मों से बचने का आदेश देकर, वचन देकर और धमकियाँ देकर, और अपने पैग़म्बर तुम्हारे पास भेजकर तुम्हें समझाता है कि तुम सक्षम हो।

क़ुरान में भाग्यवाद पर कुछ आयतें मौजूद हैं, लेकिन सिर्फ़ थोड़ी-सीं। परमात्मा भक्त की तरफ़ पहले आता है, और फिर भक्त जल्दी ही उसकी तरफ़ बढ़ जाता है।

मनुष्य की क्षमता पर
शम्स के विचार।

247 — *ग़म ख़ुशी में बदल जाता है तेरी दया से,*
जीवन अमर-अविनाशी हो जाता है तेरी दयादृष्टि से,
हवा तेरी गली से गर कुछ धूल उड़ा ले जाये नरक में
तो आग वहाँ की बदल जायेगी अमृत-जल में। (अज्ञात)

प्रेम संसार में चाहे एक समस्या है,
लेकिन यह मधुर है।
शराब यह सिर दर्द चाहे बहुत देती है,
फिर भी यह मधुर है।
प्रेम करना चाहे कठिन है इस दुनिया में,
लेकिन क्योंकि तुझ जैसी सुन्दरी से
पड़ जाता है वास्ता इनसान का,
काम यह मधुर है। (बाक़र्ज़ी)

303—परमात्मा स्वयंभू (अपने आप से) है। रची हुई कोई भी हस्ती परमात्मा नहीं है, चाहे वह हस्ती हज़रत मुहम्मद हों या कोई और।

655—"परमात्मा महान् है!" [अल्लाहो अकबर] फिर छोटा कौन है? छोटा वह है जिसके बारे में किसी ने कल्पना की है कि वह आकाशों, स्वर्ग और स्वर्ग के सिंहासन तथा ज्योतियों का रचयिता है। इसका अर्थ है कि परमात्मा तुम्हारी कल्पना से बहुत बड़ा है। और इसका मतलब है कि परमात्मा को सिरजनहार कहना ही काफ़ी नहीं। परमात्मा के निकट आओ, ताकि तुम उसकी महानता का अनुभव कर सको। उसे खोजो, ताकि तुम उसे पा सको।

तंग आ गये जो दुनिया से,
भूखे हैं तुझसे मिलाप के।
बहादुर बनकर जी रहे जो दुनिया में,
तड़पते हैं तेरे वियोग में।
क्या मिलेगा हिरन की आँखों को
जो तुलना की जाये तेरी आँखों से?
तेरी ज़ुल्फ़ें तो, ऐ प्रभु!
बाँध सकती हैं पंजे दुनिया के शेरों के। (अज्ञात)

शम्स: असली परमात्मा की खोज करो,
कल्पना के परमात्मा की नहीं।

662—हाँ, यह ठीक है कि एक पल छोटा होता है, लेकिन प्रभु के साथ बिताया पल अनन्त होता है।

701—जब वह परमात्मा को गाली देता है तो अपने आप को गाली देता है। भला वह परमात्मा को कैसे दुःख दे सकता है? वह अपना ही नुक़सान

करता है। ऐसे शब्द उनके मुँह से कैसे निकल सकते हैं? क्या वे परमात्मा को नहीं जानते? सना'ई ने कितना ठीक कहा था: तुम्हारे सब देवता परमात्मा पर केवल प्रहार कर रहे हैं।

हमारे व्यवहार का प्रभाव परमात्मा पर नहीं पड़ता,
ख़ुद हम पर पड़ता है।

789—परमात्मा से एकरूपता का अर्थ है इस बात को समझना कि सब कुछ परमात्मा का है, उसी से आया है, उसी के सहारे क़ायम है और उसी में वापस समा जाता है।

आकाश, धरती और इन दोनों के बीच जो कुछ है, वह परमात्मा का है।

789-90—जो यह जानता है कि उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं है, उसे अपने परमात्मा के अस्तित्व का ज्ञान होता है। जो समझता है कि उसका शरीर रचित है और नाशवान् है, उसे अपने परमात्मा के अरचित और अविनाशी होने का ज्ञान होता है। जो जानता है कि उसका शरीर बेवफ़ा है [एक परदे की तरह है], उसे अपने परमात्मा के वफ़ादार होने का ज्ञान होता है। और जो मानता है कि ग़लती करना उसका स्वभाव है, वह जानता है कि उसका परमात्मा उदार-हृदय तथा क्षमाशील है।

816—परमात्मा तुम्हारा काम एक बार नहीं, सात लाख बार करेगा। तुम उसकी कोई सेवा न करो तो भी वह तुम पर दया की वर्षा कर सकता है। लेकिन यह परमात्मा की प्राचीन परम्परा नहीं है। उसका 'शब्द', 'हक़' है, और यही उसकी प्राचीन परम्परा है।

परमात्मा की प्राचीन परम्परा है कि पहले हम
कोशिश करें, तब उसकी दया होगी।

पूर्ण सन्त

मेरी हस्ती वह रसायन है जिसे ताँबे पर सीधे उँडेलने की आवश्यकता नहीं है। ताँबा मेरी संगति में रहने से ही रसायन जैसा हो जाता है और उससे एकरूप हो जाता है। यही रसायन की पूर्णता है।

शम्स, *मक़ालात* 148

75—सभी पैग़म्बर एक-दूसरे की मिसाल देते हैं। ईसा मसीह ने कहा था, "ऐ यहूदियो, तुम मूसा को अच्छी तरह नहीं जान पाये। आओ और मुझसे मिलो ताकि तुम मूसा को अच्छी तरह समझ सको।" हज़रत मुहम्मद ने कहा था, "ऐ ईसाइयो और यहूदियो, तुम ईसा मसीह और मूसा को अच्छी तरह नहीं समझ सके। आओ और मुझसे मिलो ताकि तुम उन्हें भी समझ सको।" सभी पैग़म्बरों ने एक-दूसरे की मिसाल दी है। उनके वचन एक-दूसरे के वचनों की व्याख्या करते हैं और उनके अर्थ को स्पष्ट करते हैं। हज़रत मुहम्मद के साथियों ने उनसे पूछा, "ऐ ख़ुदा के पैग़म्बर, हर पैग़म्बर ने अपने से पहले आनेवाले पैग़म्बर का उदाहरण दिया है, लेकिन आप तो आख़िरी पैग़म्बर हैं, फिर आपका उदाहरण कौन देगा?" हज़रत ने जवाब दिया, "जो अपने मन को जानता है, वह अपने ख़ुदा को जानता है।"

उनके कहने का मतलब था कि "जो मेरे मन को जानता है, वह मेरे ख़ुदा को भी जानता है।"

सब सन्तों का आध्यात्मिक सन्देश एक ही है।

81—अगर कभी तुम्हारे गुरु के चेहरे का रंग बदल जाए और तुम्हें अप्रिय लगे, तो और कोई भी चीज़ मदद नहीं करती। अगर कोई चीज़ सहायता करती है तो वह है आधी रात को तड़प रहे सच्चे दिल से उठी फ़रियाद और पुकार, "हे प्रभु, मेरी आँखों पर से यह परदा हटा दे, और मेरे रास्ते से यह रुकावट दूर कर दे।" क्या तुम्हें याद नहीं कि तुमने अपने गुरु की ऊँची अवस्था पहले देखी है और उनका नूर तुम तक पहुँच गया है। ज़रूर कोई परदा रहा होगा जिसके कारण अब वे बदले हुए दिखते हैं।

किसी भी विद्वान् की बुद्धि
साफ़-साफ़ देख सकती है
कि जो घूमता है
उसे घुमानेवाला कोई है। (निज़ामी)

अब जब कि यह परदा पड़ा हुआ है, इसे जला डालने के लिए प्रबल इच्छा की आग की ज़रूरत है। नहीं तो मुझसे किसी को कुछ भी हासिल नहीं होगा, न तो रूहानी तौर पर और न दुनियावी तौर पर।

112—यहाँ एक बड़ा भयंकर भँवर है जिससे डरकर हर कोई दूर भाग रहा है। विरला ही कोई ऐसा तैराक होता है जो उसे अकेला पार नहीं करता, बल्कि किसी दूसरे को पकड़ लेता है और उसको अपने साथ पार ले जाता है।

जब यह तैराक पानी में ग़ोते खा रहा होता है, लोग समझते हैं कि यह भँवर में फँसा ग़ोते खा रहा है।

समुन्दर में भँवर तो है, पर भँवर के बीचो-बीच एक तंग रास्ता भी है। यह निश्चित है कि जो कोई भी पार जा सकता है, सिर्फ़ इस भँवर में से होकर ही जा सकता है।

समुन्दर संसार है, मृत्यु भँवर है, तैराक गुरु है, और
तंग रास्ता अन्दर का रूहानी रास्ता है।

125-6 — जिसे संसार की असलीयत का ज्ञान नहीं, उसे संसार भयानक लगता है। अगर एक बार मनुष्य संसार को जान लेता है तो उसके लिए इसका अस्तित्व ही नहीं रहता। फिर अगर कोई उससे पूछे कि संसार क्या है तो वह जवाब देता है, "जो इस संसार के बाद का संसार नहीं है।" जब वे उससे पूछते हैं कि बाद का संसार क्या है तो उसका जवाब होगा, "आनेवाला कल।" और तब वे उससे पूछते हैं, "यह आनेवाला कल क्या है?" शब्दों की पहुँच बहुत सीमित है, इसलिए भाषा की सीमा भी तंग हो जाती है। सब सन्त-महात्मा भाषा के बन्धन से मुक्त होकर परमात्मा के विशुद्ध गुणों के संसार में प्रवेश करने का प्रयत्न करते हैं। परमात्मा के गुण क्या उसके सारतत्त्व से अभेद हैं या उसके सारतत्त्व से भिन्न हैं? लोग क्या कहते हैं? क्या वे इस बारे में एकमत हैं? नहीं, वे एकमत नहीं हैं। संसार सदा एक-सा नहीं रहता, बदलता रहता है, इसलिए शब्दों का आशय भी बदलता रहता है।

किसी ने एक दरवेश से जो हकीम सना'ई से मिलने गया था, पूछा, "हर बार एक अलग बात कहनेवाले उस व्यक्ति ने क्या कहा?" दरवेश ने नीचे देखा और कहा, "दुनिया के सब लोग हर बार अलग ही बात कहते हैं, सिवा उस व्यक्ति के जो आज़ाद है, जो बार-बार बदलने के कारण अपवित्र नहीं हुआ और धीरे-धीरे निजघर की ओर बढ़ रहा है। वरना लोग तो हर बार रंग बदलते रहते हैं। कोई यहूदी है तो कोई ईसाई, और कोई पारसी..."

हम भाग्यशाली हैं कि परिवर्तन से प्रभावित नहीं होते
और धीरे-धीरे निजधाम की ओर बढ़ रहे हैं।

133 — यह जान लो कि फ़क़ीर की दृष्टि में मनुष्य-देह एक परदा है। फ़क़ीर प्रेम का सार है और प्रेम का सार अनादि है, जब कि मनुष्य संसार के रंगमंच पर अभी कल ही आया है।

प्रभु के प्रेम में जिनका अहं मिट गया है और जिनका नहीं
मिटा, उन दोनों के अन्तर पर शम्स के विचार।

155-6 — दो दरवेश एक-दूसरे से मिलते हैं; दोनों के जीवन में प्रेम की भावना का मुख्य स्थान है [दोनों प्रेम-मार्ग पर चलनेवाले हैं]। एक दरवेश दूसरे को सादर प्रणाम करता है क्योंकि वह आत्मसमर्पण करके अपने लक्ष्य पर पहुँचा है। दूसरा दरवेश यह जानते हुए कि पहला क्या कर रहा है, क्रूरता से जवाब देता है, क्योंकि वह जानता है कि अनन्त धैर्य और प्रभु की इच्छा को सदा ख़ुशी से स्वीकार करने में ही आनन्द की प्राप्ति है। इस दूसरे दरवेश को सौभाग्य [प्रभु-प्राप्ति] का मार्ग सूरज से भी ज़्यादा साफ़ दिखाई देता है।

शम्स के अनुसार कड़वी दवा (यह कठिन रास्ता) बेहतर है।

161 — सभी प्रेमी बुरे को अच्छा नहीं समझेंगे। ऐसे प्रेमी भी हैं जो हर चीज़ को उसके असली रूप में देख सकते हैं, क्योंकि वे उसे परमात्मा के प्रकाश में ही देखते हैं। इसलिए जो ग़लत नहीं है, उससे वे कभी प्यार नहीं करते।

जिस सौन्दर्य ने नाश हो जाना है,
इनसान के लिए उससे प्रेम करना असम्भव है। (अज्ञात)

शम्स के विचार में पूर्ण सन्त की सामर्थ्य।

173-4 — शम्स ने कहा: "शैतान" का अर्थ न तो नया है और न ही बनाया गया है, लेकिन उसका रूप है। परमात्मा जानता था कि शैतान अस्तित्व में आयेगा, उसी तरह जैसे जीवात्माओं का अस्तित्व रूप धारण करने से पहले

भी मौजूद था। इसलिए पैग़म्बर जब शैतान को मनुष्य की नाड़ियों में घुसता और ख़ून की तरह उनमें बहता हुआ बताते हैं, तो नि:सन्देह इसका यह मतलब नहीं कि ऊँचा टोप पहने भद्दी सूरत वाला शैतान जैसा कि उसे चित्रित किया जाता है, इनसान के ख़ून में बहता है।

शैतान इनसान के ख़ून में तो प्रवेश कर सकता है, लेकिन दरवेश के शब्दों में नहीं, क्योंकि दरवेश ख़ुद नहीं बोल रहा होता। दरवेश तो मिट जाता है, उसका अपना अस्तित्व ख़त्म हो जाता है। जो शब्द वह बोलता है वे परमात्मा की तरफ़ से आते हैं। जब तुम बकरी की खाल से बैगपाइप बनाकर उसमें फूँक मारते हो, तो जो आवाज़ तुम्हें सुनाई देती है वह तुम्हारी होती है, बकरी की नहीं। बकरी तो मर चुकी है, उसका अन्त हो गया है। और अगर तुम ढोल बजाते हो और तुम्हें एक आवाज़ सुनाई देती है, तो क्या जानवर के ज़िन्दा रहते हुए उसके शरीर पर प्रहार करने पर तुम्हें वही आवाज़ सुनाई देगी? समझदार व्यक्ति दोनों आवाज़ों का अन्तर जानते हैं। ये प्रतीक किसी ज़रूरत को पूरा करने के लिए बनाये जाते हैं। कामिल दरवेश के अन्दर ख़ुद ख़ुदा बोलता है, तो फिर तुम उसके शब्दों में दोष कैसे निकाल सकते हो?

किसी ने कहा, "अगर कोई सवाल नहीं सुनता या सवाल सुनने पर परेशान हो जाता है, तो ख़ुद उसमें कोई कमी है।" मैंने जवाब दिया, "जिसकी समझ पूर्ण है, वह इसे भी कमी नहीं समझता। वह जानता है कि परमात्मा में कोई कमी नहीं है। धैर्य न होने के कारण किसी को कमी दिखाई देती है। तुमने जो कहा, क्या उसका कारण अधीरता नहीं थी?"

अगर तुम इन्तज़ार करोगे तो जवाब और जवाब देनेवाला दोनों मिल जायेंगे। अगर तुम्हें जवाब न भी मिला, तो भी मतलब तो तुम समझ ही जाओगे। धैर्य का यही लाभ है कि सुननेवाले की क्षमता बढ़ जाती है जिससे उसके ज्ञान में बढ़ौतरी के लिए उसे शक्ति मिलती है। अगर वह दरवेश पहले एक सवाल का जवाब देता था तो अब सौ सवालों का जवाब देगा और वह मुलाक़ात सुखद होगी। फिर जब भी वह दरवेश उस मुलाक़ात को

याद करेगा उसकी मीठी याद के कारण दरवेश का झुकाव उन लोगों की तरफ़ हो जायेगा। उस याद से मिलनेवाली ख़ुशी और उसका वह झुकाव बहुत कारगर और बहुत लाभदायक होगा क्योंकि उस दरवेश ने यहाँ से नहीं, बल्कि परमात्मा से, ज्ञान प्राप्त किया है। परमात्मा की कृपा से वहाँ का ज्ञान यहाँ आ गया है।

धैर्य के फलस्वरूप पूर्ण उत्तर मिलते हैं।

227-8 — एक भिखारी को जिसके पास पिछले साल रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं था, इस साल चाँदी के सौ सिक्के मिल गये हैं और इसलिए वह ख़ुश है। लेकिन वह कुलीन राजकुमार, जो धन-दौलत और समृद्धि में ही जन्मा-पला है, उस भिखारी की ख़ुशी पर केवल हँस देता है।

शम्स के अनुसार पूर्ण सन्त और कम आध्यात्मिक उपलब्धि वाले महात्माओं में अन्तर।

239 — "लोगों के साथ उनकी बुद्धि की क्षमता के अनुसार बातचीत करो, अपनी बुद्धि की पहुँच के अनुसार नहीं।"*

पैग़म्बरी क्या है? इसकी वास्तविकता क्या है? पैग़म्बरी के फ़र्ज़ के दरवाज़े कैसे बन्द हो गये? क्या अब कोई इनसान नहीं बचे? किसी ने पूछा, "किसी भेद को प्रकट करने का सही तरीक़ा क्या है?" शम्स ने जवाब दिया, "वही जो इस हदीस में बताया गया है: 'लोगों के साथ उनकी बुद्धि की पहुँच के अनुसार बातचीत करो।'"

241 — सब राज़ों में से एक अलिफ़ (अल्लाह का प्रतीक) को ही ज़ाहिर किया गया था। दरवेश जो कुछ भी कहते हैं, वह सिर्फ़ इस एक अलिफ़

* एक हदीस।

का वर्णन करने के लिए ही कहते हैं, और इसमें सन्देह नहीं कि यह अलिफ़ अभी तक पूरी तरह समझ में नहीं आया है।

हाय! मुश्किलें अपनी हल करने की
कोशिश में ही मर जाते हो।
संयोग में तुम हुए हो पैदा,
वियोग में लेकिन मर जाते हो।
बैठते हो समुन्दर के किनारे,
प्यासे लेकिन सो जाते हो।
बैठते हो ख़ज़ाने के ऊपर,
ग़रीबी में लेकिन मर जाते हो। (अत्तार)

249—जब कोई पूर्ण सन्त तुम्हें कुछ समझाता है तो इसका मतलब है कि तुम्हारी आँखों और तुम्हारे मन पर परदा पड़ा हुआ है, और मैं (शम्स) वह परदा हटा रहा हूँ। इनसान को सिर्फ़ पूर्ण सन्त की संगति की ज़रूरत होती है। उनकी ज़रूरत होना और किसी की भी ज़रूरत होने से ज़्यादा अच्छा है।

267—"मैं न अपने सृजित आकाश में और न ही धरती में समा सकता हूँ, केवल एक सच्चे भक्त के अन्दर ही समा सकता हूँ।*" जो मांसपेशी के इस टुकड़े को दिल कहता है, वह काफ़िर है, और वह उस इनसान से ज़्यादा गया-गुज़रा है जो जीज़स को [केवल] परमात्मा का पुत्र कहता है।†

हम सबके हृदय, नास्तिकों के भी और आस्तिकों के भी, परमात्मा का निवास-स्थान हैं।

---

* एक हदीस।

† शम्स समझा रहे हैं कि जीज़स का स्तर केवल परमात्मा के पुत्र का न होकर उससे कहीं ऊँचा है।

316—एक दिन उस विद्वान् व्यक्ति को आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हो गया। उसने अपनी सब पुस्तकों को उठाकर ताक पर रख दिया और विद्वानों का पहरावा उतार दिया। वह शोक में डूबा इधर-उधर घूमता रहा और यही कहता रहा, "हमने अपना सारा जीवन यही बहस करने में गँवा दिया कि बहिर्मुखी रीतियाँ कैसे निभायें। परमात्मा की पुस्तक हमने पीछे फेंक दी है। अगर परमात्मा हमसे पूछे कि तुमने अपना जीवन कैसे बिताया, अपनी आँखों से तुमने क्या देखा और कानों से क्या सुना और मन में तुम कैसे विचार रखते हो, तो हम क्या जवाब देंगे?"

इस व्यक्ति ने परमात्मा की पुस्तक का जो ज़िक्र किया है उसका संकेत लिखित पुस्तक की ओर नहीं, बल्कि उस महात्मा की ओर है जो परमात्मा के मार्ग पर हमारा मार्गदर्शक बनता है। वही वह पुस्तक है, वही आयत और वही सूरत।* उस आयत में और आयतें समायी होती हैं।

बग़दाद के उस काफ़िर को भी वह लिखित पुस्तक [क़ुरान] इस हद तक याद थी कि वह जज बन गया, उसने ख़ूब पैसा कमाया और बहुत-से घर बना लिए। उसने बलवान् व्यक्ति चुने, उन्हें हथियारों से लैस किया, और खलीफ़ा को बन्दी बनाने के लिए तथा बग़दाद का शहर अपने कब्ज़े में करने के लिए छिपकर आक्रमण करने की योजना तैयार की। उसका क़ुरान का ज्ञान इतना गहरा हो गया था, और इसलाम के क़ानून पर आधारित उसके न्याय में इतना पैनापन आ गया था कि उसे बग़दाद का क़ाज़ी नियुक्त कर दिया गया, लेकिन अन्दर से वह अब भी एक काफ़िर ही था।

सच्चे ज्ञान का स्रोत पुस्तक नहीं, सन्त होते हैं।

इसलिए, अब हम समझ गये हैं कि प्रभु का सच्चा भक्त ही हमारा रक्षक है, लिखित शब्द या पुस्तक नहीं। प्रभु का भक्त उन लोगों के बीच छिपा

---

* क़ुरान का अध्याय।

रहता है जो प्रभु-भक्त होने का दावा करते हैं। वह अपनी दीनता के कारण नहीं, बल्कि इसलिए लोगों से छिपा रहता है कि उसका प्रकाश अत्यन्त उज्ज्वल होता है, जैसे सूर्य का उज्ज्वल प्रकाश चमगादड़ से छिपा रहता है।

इनसान सन्त के पास ही बैठा होता है, लेकिन वह इनसान उससे बेख़बर होता है। उस पर संसार के मोह का परदा पड़ा होता है, इसलिए वह अन्धा और बहरा हो चुका होता है। संसार से जिसको जितना अधिक प्यार होता है, उतनी ही तीव्रता से वह संसार की ओर आकर्षित होता है। केवल 'प्रियतम' का ध्यान ही उसे अपनी ओर आकर्षित करता है, जिसके फलस्वरूप संसार उसे असार तथा नीरस प्रतीत होता है। 'प्रियतम' का ध्यान वह परदा है जिसके कारण उसे प्रभु के अलावा और कोई दिखाई नहीं देता। जिस दिन उस व्यक्ति को सन्त के महत्त्व का ज्ञान हो जायेगा, वह चिल्ला उठेगा, "काश! मैं पहले ही उनके पास गया होता और उनकी संगति करता!" देखो, कितना पवित्र है उनका साथ, कितनी नि:संग है वह संगति!

337—वह क्या है जिसे सन्त (औलिया) संतोष कहते हैं, और 'फ़क्र' का नाम उन्होंने किसे दिया है? 'फ़क्र' का नाम उन्होंने उस हालत को छिपाने के लिए दिया है जिसमें किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रहती और अविनाशी साम्राज्य प्राप्त हो जाता है।

फ़क्र वह अवस्था है जिसमें मनुष्य के पास
परमात्मा के सिवा और कुछ नहीं होता।

360—कुछ लोगों के लिए यह शरीर एक आवरण है, एक परदा है, एक मुसीबत है। वे चाहते हैं कि कुछ समय के लिए इसे हटा दिया जाये ताकि प्रकाश की कोई किरण दिखाई दे जाये। अन्य कुछ लोगों के लिए यह शरीर

एक नेमत है, सुखद है, क्योंकि वे सूरज के ठीक सामने हैं और अगर शरीर का यह परदा हटा दिया जाये तो वे मर जायेंगे।

शम्स के व्यक्तित्व की सहजता!

382—सुनो! सुनो! मेरा ध्यान पूरे वुजूद की ओर रहता है, मानों केवल यही सम्पूर्ण सृष्टि हो। फिर तुम यह क्यों कहते हो कि मतलब समझना ज़रूरी है? महत्त्व तो आकार का है, चाहे बात इससे उलट जान पड़ती है। एक समय मतलब समझना लक्ष्य था। अब कहो कि अगर जवाब न दूँ तो तुम्हारे मन को कष्ट होगा!

परमात्मा क्या कहेगा यह कोई नहीं जान सकता।

जीवित सतगुरु के माध्यम से ही परमात्मा
को जाना जा सकता है।

414—मैं सौ घोड़े साथ लिए एक घोड़े पर सवार हूँ, और मेरा ध्यान तुम पर केन्द्रित है। तुम कहीं और व्यस्त हो जाते हो। तुम ऐसा कर सकते हो, लेकिन मैं नहीं। मेरा पूरा ध्यान तुम पर केन्द्रित है। मैं पूरी तरह तुम्हारा हो गया हूँ। पूर्ण रूप से तुम्हारा बन जाने की मुझे यह क़ीमत चुकानी पड़ रही है।

611—उस 'मित्र' के दो हाथ हैं, लेकिन तुम चाहे कितना ही ढूँढ़ लो, तुम्हें उसका बायाँ हाथ नहीं मिलेगा। उसके दोनों हाथ दायें हाथ हैं।

645—मैं जानता हूँ कि अमीन अल-दीन उस 'प्रियतम' को प्यारा है। 'प्रियतम' का प्यारा ख़ुद 'प्रियतम' है।

एकरूप होने की अवस्था पर
शम्स के विचार।

646—'प्रियतम' की गली में एक नशीला पदार्थ है। वे उसे खाते हैं और अपना विवेक खो बैठते हैं। फलस्वरूप वे न तो उसका घर खोज पाते हैं और न उस तक पहुँच पाते हैं।

अन्दर के दृश्यों का आकर्षण परमात्मा से एकाकार के मार्ग पर प्रगति में बाधक है।

646—एक वर्ग दुखियों के लिए दुआ करता है और दूसरा वर्ग, [जो कि पूर्ण सन्तों का वर्ग है], ख़ुद दुआ है। लोगों को भक्ति के लिए प्रेरित करते हुए परमात्मा अपनी शक्ति और दया दोनों दिखा सकता है, लेकिन एकान्त में [आन्तरिक मार्ग पर] केवल दया ही दया है।

691—राजा [परमात्मा या पूर्ण सन्त] अपना सोना, अपना राज्य या अपनी धन-दौलत, कुछ भी देने से इनकार नहीं करता, सिवा इन दोनों के: पहला अपना विश्वासपात्र और दूसरा अपना अनुपम मोती। मोती को वह किसी ऐसे स्थान पर रखेगा जहाँ ख़ज़ाँची भी उसे न देख सके। कभी-कभी उसके हाथ में पकड़ा मोती किसी अत्यन्त विशिष्ट जिज्ञासु को अपने प्रकाश की झलक दिखा देता है, लेकिन फिर वह ईर्ष्यावश उसे छिपा लेता है। जब उसके विश्वासपात्र का प्रश्न आता है, वह उसकी झलक को प्रकट नहीं होने देता।

तुम चाहे ऊपर को कूदना चाहो या नीचे को, मोती तो चमकेगा ही। आख़िर तुम हो कौन? एक छोटा-सा कीड़ा। फिर भी, अगर कोई किसी को कोई चीज़ दिखाकर उसे फिर छिपा लेता है, तो जिसने उसे एक बार देख लिया है वह उससे इनकार नहीं करेगा, और उसके होने की सम्भावना पर विचार करेगा।

तुम्हारी याद के लिए यह एक अच्छा स्मृतिचिह्न है।

शम्स: अन्दर के मोती को सँभालकर रखना और विशेष शिष्य से बहुत प्यार करना।

692—अगर कभी कोई आकर कहता है, "'शब्द' का रहस्य [कलाम] ख़ुद 'शब्द' से अलग है जो न ध्वनि है न अक्षर," तो तुम उससे दोनों में अन्तर पूछते हो, उसके पैरों में गिरकर वह रहस्य पूछते हो। वह इतने तर्कसंगत ढंग से बात करता है कि वह राज़ साफ़-साफ़ तुम्हारी समझ में आ जाता है और तुम्हें उसमें परमात्मा के गौरव, शक्ति और महानता के चिह्न दिखाई देते हैं, फिर भी मेरा तो वह केवल छोटा भाई है।

मनुष्य के हृदय में [प्रेम की] इतनी तड़प होनी चाहिए कि वह सब विचारों, सारी कल्पनाओं और सब शंकाओं को जलाकर राख कर दे, उनकी धज्जियाँ उड़ा दे।

शम्स परमात्मा के प्रति अपने गहरे प्रेम को व्यक्त करते है।

697—अगर इस देश का कोई काफ़िर इस दरवाज़े से प्रवेश करता है, हमारा दीदार करता है, हम पर विश्वास करता है और हमारा अनुयायी बन जाता है, तो उसे इन तथाकथित शैख़ों की अपेक्षा अधिक लाभ होगा। इन शैख़ों में बहुत अहंभाव है, और इनके दिल में प्रभु को पाने की चाह, जो इनकी पूँजी है, समय की हवा के झोंकों के साथ उड़ गई है, और ये ख़ुद दुनिया भर में बिखर गये हैं।

असली शिष्य और नक़ली शैख़।

736-7—वह कहता है कि ख़ुरासान के एक इतने प्रतिष्ठित व्यक्ति का बेटा [रूमी] तब्रीज़ के एक व्यक्ति [शम्स] के पीछे चलता है। तो क्या ख़ुरासान की धरती तब्रीज़* के पीछे-पीछे चलती है? वह व्यक्ति एक सूफ़ी होने का दावा करता है और नेक-पाक ज़िन्दगी बिता रहा है, फिर भी उसके पास इतना ज्ञान नहीं है कि यह जान ले कि महत्त्व अपने देश का नहीं है।

---

* तब्रीज़ ईरान के ख़ुरासान से भिन्न एक प्रदेश के एक शहर का नाम है।

अगर इस्तंबोल के किसी व्यक्ति को परमात्मा के अस्तित्व का अनुभव है तो मक्का के निवासी को उसका अनुयायी बन जाना चाहिए। "वतन का प्यार धर्म का हिस्सा है।"* हज़रत मुहम्मद का इरादा मक्का की तरफ़ इशारा करने का कैसे हो सकता है, क्योंकि मक्का तो इसी दुनिया में है और धर्म का सम्बन्ध इस दुनिया से नहीं है। इसलिए धर्म जो कहता है उसका इस दुनिया से बिलकुल सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। कहते हैं कि मुहम्मद साहिब का मतलब शायद मक्का से रहा हो, लेकिन भाव मक्का हो या भाव मक्का ही था–इन दोनों में फ़र्क़ है।

वह देश जिसकी सब सच्चे भक्तों को तलाश है और जिससे उन्हें प्यार है, परमात्मा का धाम है।

प्रतीक के रूप में प्रयुक्त शब्द का शाब्दिक अर्थ लेना।

770—बातें और शब्द केवल उन लोगों के लिए हैं जो परमात्मा से अपरिचित हैं। यदि शब्दों का यह उद्देश्य न हो तो उनका क्या लाभ है? जैसा कि आप देख सकते हैं, परमात्मा के दूत उन लोगों को बुलाते हैं जो परमात्मा से परिचित नहीं हैं। इसके अलावा इतना कुछ कहने की और क्या ज़रूरत है?

अगर परमात्मा की हुज़ूरी में पहुँच गये हो, उससे मिलाप हो गया है, तो बातचीत की ज़रूरत ही कहाँ रह जाती है? हाँ, तब एक ख़ास तरह की बातचीत होती है, लेकिन उसमें शब्दों का प्रयोग नहीं होता, उसमें आवाज़ से काम नहीं लिया जाता। लेकिन यह भी जुदाई की निशानी है। परमात्मा से एकता की अवस्था में शब्दों और आवाज़ के साथ या उनके बिना, किसी तरह की बातचीत की गुंजाइश नहीं रहती।

---

* एक हदीस।

जब ऐसे दो व्यक्ति जिन्होंने परमात्मा का संग प्राप्त कर लिया है आपस में मिलते हैं, तो वे तन्मयता या समाधि की अवस्था में पहुँच जाते हैं। लेकिन तन्मयता की अवस्था में भी परमात्मा के प्रेमी शैख़ में ऐसी चेतना क़ायम रहती है जिसमें उसे संसार का बोध रहता है। परमात्मा के गुण "ख़बीर" [जिसको सब ख़बर है] का यही अर्थ है।

आन्तरिक तन्मयता की अवस्था में शब्द अनावश्यक हैं।

820—किसी कसौटी, तराज़ू या आईने को तुम कितनी भी रिश्वत देने को तैयार हो जाओ, वे वास्तविकता को बदलने के लिए तैयार नहीं होंगे। कोई व्यक्ति एक तराज़ू के पास गया और बोला, "मेरे चाँदी के सौ सिक्कों के दो सौ बना दो, तो मैं उनमें से पचास तुम्हें दे दूँगा।"

पवित्रात्मा सत्य ही दरसायेगा, उसे तुम धोखा नहीं दे सकते, रिश्वत नहीं दे सकते।

845—जिसकी तलाश की जाती है, उसे परमात्मा की रज़ा का अधिक ज्ञान होता है। वह तो परमात्मा की रज़ा से भी अधिक छिपा होता है। उसे परमात्मा की रज़ा का ज्ञान होता है, लेकिन रज़ा को उसका ज्ञान नहीं होता। इसलिए वह जो भी करता है, उस मामले में परमात्मा की वही रज़ा होती है। जो कोई विरोध या हस्तक्षेप नहीं करता, वही 'प्रियतम' होता है। वह परमात्मा की रज़ा में ही राज़ी होता है और वह जो कुछ भी करता है, रज़ा के अनुसार ही करता है। और वह जब किसी को देखता है तो उसका आदि, वर्तमान और उसका अन्त, सब देख लेता है। उसका विश्वास पक्का होता है। जब परमात्मा से आरम्भ हुई परम्परा में कोई तबदीली नहीं आती, तो वह 'प्रियतम' उसके विपरीत कैसे चल सकता है? और जहाँ उसे सम्भावना तथा आशा दिखाई देती है, वह स्थिति को ठीक कर देता है।

तुमने कहा कि जब शैख़ की कृपा-दृष्टि उस व्यक्ति पर पड़ गई तो उसका कार्य सिद्ध हो गया, लेकिन वह समझता है कि काम उसने ख़ुद किया। जिस व्यक्ति का आन्तरिक उत्थान की ओर झुकाव ही नहीं है, उस पर वह शैख़ प्रभाव कैसे डाल सकता है? उसके अन्दर शैख़ का प्रभाव भी ख़त्म हो जायेगा, क्योंकि वह ख़ुद तो नष्ट हो ही चुका है।

शैख़ वही करता है जो परमात्मा चाहता है।

दिव्यता की प्राप्ति— आन्तरिक मार्ग

जब तक कोई दोबारा जन्म न ले, वह दयानिधान परमात्मा के धाम में क़दम नहीं रख सकता, और न ही वह दिव्यता प्राप्त कर सकता है।

शम्स, मक़ालात 679

83-4 — अगर क़ीमती रत्न को एक लम्बे काले कपड़े में लपेटकर, कपड़े की दस तहों में छिपाकर, लकड़ी के मोटे डिब्बे में डालकर फ़र के कोट की जेब में रख दिया गया है, वह अगर दिखाई नहीं देता, तो इसमें हैरानी की क्या बात है? उन सब तहों के अन्दर छिपा होने पर भी रत्न की चमक क़ायम रहती है, और चाहे उसे दिखाया न भी जाये, तो भी वह व्यक्ति जिसकी दृष्टि ने पूर्णता प्राप्त कर ली है उसकी चमक देख सकता है। लेकिन कितनी हैरानी की बात है कि जब उस रत्न को उन तहों में से निकालकर किसी की हथेली पर रख दिया जाता है तब भी लोग उसे देख नहीं सकते। वरना, अगर वे उसे देख सकते – परमात्मा तो उनके साथ होता ही है – तो फिर वे हम लोगों के साथ जो हज़रत मुहम्मद के हृदय

और आत्मा की सन्तान हैं, न कि मिट्टी-पानी की बनी सन्तान,* उनके साथ सुकरात, हिप्पोक्रेट्स, यूनान के वासी या ब्रदरहुड ऑफ़ प्योरिटी जैसे विषयों पर चर्चा क्यों करते?

आत्मारूपी बहुमूल्य रत्न माया और प्रारब्ध की तहों में लिपटा हुआ है।

84—आत्मिक आनन्द की अवस्था, आत्मा के दर्शन करने की अवस्था से बहुत निचले स्तर की होती है। उस अवस्था में पहुँचने के बाद इनसान परमात्मा के रास्ते पर तरक़्क़ी शुरू कर देता है, और आख़िरकार इसी जन्म में परमात्मा का दर्शन कर लेता है।

86-7—जब कोई दार्शनिक मौत और मौत की यातना के बारे में अपने विचार प्रकट करता है, तो वह दलीलें देकर यह समझाने की कोशिश करता है कि आत्मा पूर्णता प्राप्त करने के लिए और उस पूर्णता का फल भोगने के लिए संसार में आई है। इस आधार पर वह कहता है कि जब आत्मा संसार से प्रस्थान करेगी तो वह सब इच्छाओं से मुक्त होगी।

अब तुम्हें असलीयत पर विचार करना चाहिए। शरीर का मोह छोड़ो, शरीर केवल भ्रम है। शरीर तो आत्मा के साथ ही चलेगा। जब आत्मा ने शरीर के साथ सम्बन्ध जोड़ लिया और उसका इस शरीर से लगाव हो गया तो ऊपर का दरवाज़ा बन्द हो गया। आत्मा को दूसरी तरफ़ जाने की आज़ादी नहीं रही। इस तरफ़ इसे धन-दौलत, सम्मान, पत्नी, साथी और मित्र आदि का संग मिला और अनेक प्रकार की ख़ुशियों का अनुभव हुआ, जिससे इसका झुकाव संसार की ओर हो गया। अब अगर कोई इससे मौत का ज़िक्र भी करे तो इसकी हज़ार बार मौत हो जाती है। लेकिन अगर यह दूसरी दुनिया

* पूर्ण सन्त हज़रत मुहम्मद के हृदय और आत्मा की सन्तान होते हैं, और आम लोग मिट्टी-पानी की बनी सन्तान होते हैं।

के अद्भुत दृश्यों की एक झलक भी देख सकती तो वहाँ जाने को उत्सुक हो जाती। उन्हें देख लेने के बाद इसे ऐसा लगता कि मरना मौत नही, ज़िन्दगी है।

हज़रत मुहम्मद कहते हैं, "जिनका भरोसा पक्का है वे मरते नहीं, केवल जगह बदलते हैं।" मौत और बात है और जगह बदलना दूसरी बात है। उदाहरण के लिए, अगर तुम एक छोटे-से तंग, अँधेरे मकान में रहते हो जहाँ तुम सुख नहीं पा सकते या टाँगें नहीं पसार सकते, और वहाँ से निकलकर तुम किसी बहुत बड़े मकान में चले जाते हो, जहाँ बगीचा है और बहता हुआ पानी है, तो इसे मौत नहीं कहा जा सकता।

ये शब्द शीशे की तरह साफ़ हैं। अगर तुमने अपने अन्दर प्रकाश और आनन्द का अनुभव किया है जिससे तुममें मरने की चाह पैदा हुई है, तो तुम भाग्यशाली हो। हमारे लिए भी प्रार्थना करो। अगर तुम्हारे अन्दर वह प्रकाश और उत्साह नहीं है, तो अपने को उसके लिए तैयार करो। चाह पैदा करो और कोशिश करो। क़ुरान से हमें पता चलता है कि अगर तुम इस तरह की अवस्था की चाहें पैदा करने की कोशिश करोगे तो इसे प्राप्त भी कर लोगे। इसलिए कोशिश करो। पक्का विश्वास रखनेवाले कुछ ऐसे सच्चे और निष्ठावान् पुरुष और स्त्रियाँ दोनों हैं जिन्हें मृत्यु की लालसा है। ये शब्द एक साफ़ आईना हैं जिसमें तुम अपनी दशा का प्रतिबिम्ब साफ़-साफ़ देख सकते हो। अगर तुम अपने हर काम और हर स्थिति में मौत के लिए तैयार हो तो अच्छी बात है। जब तुम निश्चय न कर सको कि दो व्यवसायों में से तुम्हें कौन-सा चुनना है तो आईने में देखो और अपने आप से पूछो कि मौत के लिए कौन-सा अधिक उचित है। तुम्हें या तो पूरी तरह जाग्रत होकर मौत को गले लगाने के लिए तैयार रहना चाहिए और उसका इन्तज़ार करना चाहिए, या दृढ़तापूर्वक उस अवस्था को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

तुम समझते हो कि जो जीवन का आनन्द लेता है, उसे मरते समय कम दु:ख होता है। असल में उसे ज़्यादा दु:ख होता है क्योंकि उसे इस दुनिया से ज़्यादा लगाव होता है।

मौत के कष्ट और क़ब्र के बारे में तुम जो कुछ भी सुनते हो, वे केवल बाहरी और सतही अवस्था का वर्णन होता है। लेकिन मैं वह बयान कर रहा हूँ जो सतह के नीचे है।

क्या हम मौत के लिए तैयार हैं?

92—जब प्रेमी अपने 'प्रियतम' से मिलता है तो हो सकता है वह ऐसा व्यवहार करे कि जैसे उसे संकोच हो रहा है। लेकिन पूरी तरह 'प्रियतम' का हो जाने से पहले संकोच करना उचित नहीं।

92—जो व्यक्ति मस्ती [समाअ] की हालत में झूम रहा था, उससे मैंने कहा कि गति दो तरह की होती है। एक गति तब होती है जब किसी को यातना दी जा रही हो या छड़ी से पीटा जा रहा हो। दूसरी तब होती है जब कोई किसी सुगन्धित बूटी और डैफ़ोडिल तथा ट्यूलिप के फूलों के बगीचे में सैर कर रहा हो। इसलिए हर गति को ठीक मत समझो।

सच्ची समाअ और झूठी समाअ के अन्तर पर शम्स के विचार।

शमा के पतंगे ने भी
वैसी ही उड़ान भरी।
रोशनी पकड़ने की कोशिश में
आग में वह जा गिरा। (अज्ञात)

चूँकि मनुष्य वासना की आग से जन्म लेता है, इसलिए उसके सब काम उत्तेजना से भरे होते हैं। इस आधार पर वह कल्पना कर लेता है कि प्रभु के भक्त और उसमें कोई अन्तर नहीं।

ग़लत नज़र से ही वह
देख सकता था दूसरों को।
क्योंकि नज़र उसकी अभी भी
उसके अस्तित्व की सीमा को
बींध नहीं पाई थी। (अज्ञात)

92-3—प्रभु के भक्त को यह एहसास नहीं हुआ कि उसकी अपनी अवस्था इसके विपरीत थी। उसने आग तक पहुँचने की कोशिश की, लेकिन रोशनी में जा गिरा। सो तुम अपनी उन आँखों से उसे मत देखो। तुम उसकी अनमोल संगति को ख़त्म कर दोगे।

प्रकाश के खोजियों और वासना की आग को खोजनेवालों में अन्तर पर शम्स के विचार।

96—एक शैख़ ने कहा, "बातों का दायरा बहुत बड़ा है, क्योंकि हर कोई जो कुछ कहना चाहता है और जिस हद तक कहना चाहता है, कह सकता है।" मैं कहता हूँ कि बातों का दायरा असल में बहुत छोटा है। बड़ा तो उस अर्थ का दायरा होता है जो शब्दों की तह में छिपा होता है। बातों के दायरे से परे जाओ ताकि तुम वह दायरा भी देख सको और उसका फैलाव भी देख सको। ग़ौर से देखो, और देखो कि तुम उस बड़े दायरे से दूर होते हुए भी उसके नज़दीक हो या उसके नज़दीक होते हुए भी उससे दूर।

और नज़दीक आओ, शारीरिक रूप से भी, क्योंकि "निकटता एक वरदान है।"* लेकिन बातचीत के दौरान अगर तुमसे कोई बात न करे तो भाग मत जाना। यह मत कहना कि रास्ते के रहस्यों के बारे में वे केवल

* अरबी की एक कहावत।

बातें ही कर रहे हैं, उससे आगे नहीं बढ़ रहे। इसका कारण है कि तुम्हारे अपने अन्दर और बाहर बहुत-सी ऐसी चीज़ें इकट्ठी हो गई हैं जो नहीं होनी चाहिएँ। जब तक तुम्हारे अन्दर और बाहर से ये सब निकल नहीं जातीं और तुम अकेले और ख़ाली नहीं हो जाते, तब तक इन्तज़ार करो।

चाहे तुम्हारा आचरण निर्मल है और तुम्हारे हृदय में घृणा और द्वेष की भावनाएँ और चोरी करने की प्रवृत्ति नहीं है, फिर भी तुम्हारे अन्दर गुप्त रूप से चोरी की भावना और कुछ बुरी प्रवृत्तियाँ मौजूद हैं। डेविड के समय में चोरी की एक घटना हुई। चाहे किसी को उसकी ख़बर नहीं हुई, फिर भी हर किसी को विश्वास था कि इनसाफ़ की ज़ंजीर किसी कारण से ही वापस आकाश की तरफ़ उठी है।* इसी तरह पवित्रता, ख़ुशी तथा खिले हृदय के गुण किसी जिज्ञासु से अकारण ही वापस नहीं ले लिए जाते।

अगर तुम केवल अपनी पवित्रता और नेकी की प्रशंसा करना छोड़ दो और उसके बजाय उन छिपी हुई दूषित प्रवृत्तियों की गन्दगी को दूर करने में लग जाओ, तो जो पवित्रता और स्वभाव की मधुरता तुम्हें मिली है उसमें वृद्धि हो जायेगी।

99—अर्थ के अन्दर की दुनिया से एक अलिफ़† बाहर आया, और जिस किसी ने भी इस अलिफ़ को समझ लिया, उसने सब कुछ समझ लिया, और जिसने इसे नहीं समझा, उसने कुछ नहीं समझा। इसे समझने के इच्छुक सभी जिज्ञासु बेंत के वृक्ष की तरह काँपते हैं, लेकिन उन्होंने [कुछ दरवेशों ने] कुछ ज़्यादा ही विस्तार और बारीकी से इसकी व्याख्या कर दी है। वे कहते हैं कि इस पर सात सौ परदे अँधेरे के पड़े हैं और सात सौ रोशनी के।

* परमात्मा ने डेविड को आदेश दिया था कि किसी के अपराधी या निरपराध होने का निर्णय करने के लिए आकाश से एक ज़ंजीर लटका दो। जब कोई अपराधी उस ज़ंजीर को छूता था तो वह वापस आकाश में उठ जाती थी।

† सूफ़ियों की पारिभाषिक शब्दावली में अलिफ़ अल्लाह का प्रतीक है।

उन्होंने जिज्ञासुओं को सत्य का मार्ग नहीं दिखाया है, बल्कि उन्हें गुमराह करके सत्य से वंचित कर दिया है। जो जिज्ञासु इस सोच में पड़े थे कि उन सब परदों को कैसे हटाएँ, (दरवेशों ने) उन्हें निराश कर दिया है।

उस एक परदे के बग़ैर बाक़ी सब परदे कुछ नहीं हैं, और वह परदा है वुजूद का, अस्तित्व का।

जो अपने अहं को पूरी तरह नष्ट करके परमात्मा में विलीन नहीं हुए हैं, यह उपदेश देते हैं कि परमात्मा हमारी पहुँच के बाहर है।

102—एक व्यक्ति टहल रहा था। उसके रास्ते में एक बहुत बड़ा, तेज़ और गहरे पानी का नाला आया। उसने सोचा कि अगर मैं तैरकर इसे पार करने की कोशिश करूँ तो हो सकता है कि डूब जाऊँ, और अगर मैं कूदकर इसके पार जाने की कोशिश करूँ तो शायद इसमें गिर जाऊँ। अब उसकी चिन्ता के कारण को दूर करना चाहिए। "अपने मन को मार डालो (क़ुरान 2/54)।"

मन ही हमारी समस्या है। इसकी बात मत सुनो।

103-4—अध्यात्म-विद्या के दो विद्वान् बड़े गर्व के साथ इस विद्या के रहस्यों और इसके ज्ञाताओं के पद पर वाद-विवाद कर रहे थे। एक ने कहा, "उस गधे पर बैठा व्यक्ति मेरे लिए परमात्मा है।" दूसरे ने कहा, "उसका गधा ही मेरे लिए परमात्मा है।" सच्चाई यह है कि अध्यात्म-विद्या के ज़्यादातर विद्वान् कट्टर भाग्यवादी हैं, इसलिए अगर कोई उनके शब्दों में उलझ जाता है तो उसकी आँखों पर परदा पड़ जाता है जो उसे असली रास्ते पर नहीं आने देता। असली रास्ता तो कोई और ही है।

किसी ने पूछा कि वह दूसरा रास्ता कौन-सा है। मैंने जवाब दिया: उदाहरण के तौर पर, मैंने अभी-अभी जो तुम्हें बताया, वह सुनकर अध्यात्म-विद्या के दूसरे विद्वानों की बातों में तुम्हारी दिलचस्पी जाती रही। वह परदा इसी तरह

का है। पूर्ण सन्तों में हृदय को अन्दर तक छू लेने की क्षमता होती है। उनके शब्द मन को बेध देते हैं। लेकिन तुम उनकी बातों को कैसे समझ सकते हो, क्योंकि तुम्हारा हृदय तो भावावेश से भरा है। भावावेश से हमारा अभिप्राय कामवासना से नहीं है। हमने पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि यह भावावेश कामवासना को ख़त्म कर देता है। जब तुम इस अवस्था में होते हो जिसमें ऐसा भावावेश पैदा होता है तो अगर तुम्हारे सामने स्वर्ग की सौ अप्सराओं का भी शृंगार किया जा रहा हो, तो भी वे तुम्हारे लिए दीवार में लगी ईंट ही होती हैं। जब तुम अध्यात्म-विद्या से सम्बन्धित बातें सुनते हो या पढ़ते हो तो तुम नशे में डूब जाते हो। यह वह भावावेश है जिससे तुम प्रभावित हुए हो, क्योंकि यह भावावेश उस परदे की रोशनी है। "परमात्मा के पास पहुँचने से पहले रास्ते में रोशनी के सत्तर हज़ार परदे हैं।"* इस समय तुम भावावेश की लहरों में डूबे हुए हो, फिर तुम असली रोशनी की चमक की चर्चा कैसे कर सकते हो? अगर तुम करो भी तो वह मात्र भावावेश ही होगी। इस भावावेश की तुलना परमात्मा के प्रकाश की चमक के साथ कैसे की जा सकती है?

...अपने शैख़ के अच्छे शब्दों, अच्छे कर्मों, निर्मल चरित्र और सुन्दर मुखड़े से ही सन्तोष न कर लो, क्योंकि उन सबसे परे भी कुछ है। उसकी खोज करो।

पवित्र प्रकाश और परदे में छिपा प्रकाश।

106-7—कुछ लोग जब एक नहर को छलाँग लगाकर पार करना चाहते हैं तो हो सकता है कि वे तेज़ी से छलाँग लगाने के लिए पहले कुछ क़दम पीछे हटें, जो ठीक भी है। लेकिन अगर वे दूसरे इरादों से पीछे हटते हैं तो वे भगोड़े हैं। इसमें कोई शक नहीं कि इस नहर को पार करनेवाले नास्तिक और आस्तिक में अन्तर है। नहर के इस किनारे पर रुक जाने पर कोई भी

* एक हदीस।

लुटेरा तुम्हें अपना शिकार बना सकता है, लेकिन दूसरे किनारे पर तुम्हारे साथ ऐसा नहीं हो सकता। उस तरफ़ तुममें न केवल अधिक बल होगा, बल्कि तुम्हें मदद भी मिलेगी और चोर भी तुम पर हावी नहीं हो सकेंगे।

अगर तुम कूदकर नहर को पार करने की कोशिश में बहुत ज़्यादा पीछे हट जाओ तो ज़्यादा फ़ासला तय करने के कारण शरीर में होनेवाले दर्द को लेकर तुम्हें दुःखी नहीं होना चाहिए। तुम्हारे दोनों पैरों को दूसरी तरफ़ पहुँचने के लिए काफ़ी ज़ोर चाहिए, क्योंकि बहाव इतना तेज़ है कि अगर तुम्हारा एक भी पैर पानी में पड़ गया तो वह तुम्हें नीचे खींच ले जायेगा।

करनी करो और आन्तरिक शान्ति प्राप्त करने के लिए
उसकी क़ीमत अदा करने के लिए तैयार रहो।

115-6—तीर क्या है? ये शब्द ही तीर हैं। वह तरकश कौन-सा है जिसमें ये तीर पड़े हैं? मुक़ामे हक़ ही तरकश है। और कमान कौन-सी है? हक़ की शक्ति कमान है। इस तीर का कहीं अन्त नहीं। "मान लो कि अगर मेरे ख़ुदा की बातें लिखने के लिए समुन्दर स्याही बन जाये तो इससे पहले कि ख़ुदा की बातें ख़त्म हों, वह स्याही ख़त्म हो जायेगी... (क़ुरान 109/18)।" भाग्यशाली है वह जो इस तीर से बिंध जाता है। यह तीर उसे मुक़ामे हक़ में पहुँचा देगा। इस तरकश में शब्दों के ऐसे तीर हैं जिन्हें मैं चला नहीं सकता क्योंकि इनका अर्थ कोई नहीं समझ सकता। जो तीर चलाये भी जायेंगे, वे लौटकर फिर इसी तरकश में आ जायेंगे।

116—क्या तुम दूसरे कामों में व्यस्त हो? देखो, तुम कुछ भी करो, हमारी तरफ़ से मुँह न मोड़ना, और हमें छोड़कर चले मत जाना।

119—प्रेमी की हालत प्रेमी ही जानता है, विशेषकर वह प्रेमी जो आज्ञा का पालन करता है। अगर मैं यह बताऊँ कि किस हद तक आज्ञा का पालन

करना चाहिए तो कुछ भले प्रेमी भी निराश हो जायेंगे। आज्ञा मानने का मतलब है "आज्ञा" के बारे में कोई शिकायत न करना, और अगर कोई शिकायत करता भी है तो वह आज्ञा का उल्लंघन कभी नहीं करता।

128—परमात्मा के मार्ग पर चर्चा करने में तुम जितनी मेहनत करते हो, उससे ऐसा लगता है कि तुम ज्ञान का सहारा लेकर इस मार्ग पर चलना चाहते हो। इस मार्ग पर आ जाने के बाद इस पर चलने के लिए प्रयत्न और उद्यम करना ज़रूरी है। उदाहरण के लिए, अगर तुम मौलाना रूमी के साथ सौ साल अलेप्पो या दमिश्क के रास्ते पर चर्चा करते रहो तो क्या वह मुझे अलेप्पो से यहाँ [कोन्या] लाने में सफल होगी? जब तक रूमी चाँदी के चार सौ सिक्के ख़र्च न करें, बहुत-से ख़तरों का सामना न करें, अपनी दौलत दाँव पर न लगायें, जब तक वे यह न कहें कि उन्हें ख़तरों और झूठी निन्दा की कोई परवाह नहीं, तब तक यह काम पूरा नहीं होगा, मैं यहाँ नहीं पहुँच पाऊँगा।

जब तुमने कहा कि रास्ते की जानकारी प्राप्त करने के बाद ही रास्ते पर चला जा सकता है, तो मेरा जवाब था, "मैंने तुम्हें विस्तार से बता दिया है कि आक़सरा कैसे पहुँचा जा सकता है, लेकिन तुम अभी तक वहाँ नहीं पहुँचे हो। फिर तुम यह क्यों पूछते हो कि आक़सरा के परे क्या है?" अब मैं तुमसे कह रहा हूँ, "आक़सरा जाओ, इतनी दूर तो पहुँचो, मैं तुम्हारे साथ हूँ।" फिर तुम ख़ुद देखना और मालूम करना कि कौन-से रास्ते पर जंगली जानवरों और चोरों का ख़तरा नहीं है, और मलत्य जाना बेहतर है या अबोलोस्तान।*

अनुभव से ही सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है।

---

* शम्स बहाए वलद को सम्बोधित कर रहे हैं जो रूमी के पुत्र और शम्स के शिष्य थे। पहली बार कोन्या छोड़ने के बाद शम्स अलेप्पो गये। रूमी ने पता लगा लिया कि वे कहाँ हैं और बहाए वलद को उनके लिए उपहार तथा कविताएँ देकर उन्हें वापस लाने के लिए भेजा। शम्स के इस दृष्टान्त में कोन्या के निकट के ये नगर आध्यात्मिक मार्ग पर मील-पत्थरों के प्रतीक हैं।

131—शब्दों और बातों को करनी का रूप दो, काम की केवल बातें ही न करते रहो। तब तुम समझ सकोगे कि शान्ति दरवेशों के दिल में होती है।

145-6—जब गुरु और शिष्य के बीच परदा आ जाता है, तो रात-सी हो जाती है। जब अँधेरा हो जाये तो तुम्हें गुरु को याद करने में दृढ़ता से लगे रहना चाहिए और उस परदे को हटाने की कोशिश करनी चाहिए। अँधेरा जितना बढ़े और गुरु तुम्हें जितने ज़्यादा अप्रिय लगें, तुम्हें उनकी सेवा करने की उतनी ज़्यादा कोशिश करनी चाहिए। अँधेरे की लम्बी अवधि के कारण तुम्हें उदास और निराश नहीं होना चाहिए, क्योंकि जितनी ज़्यादा देर तक अँधेरा रहेगा, उतनी ज़्यादा देर तक प्रकाश रहेगा। जब परदा नहीं रहता तो तुम्हें प्रकाश और आनन्द का अनुभव होना स्वाभाविक है क्योंकि प्रकाश और आनन्द परमात्मा के सारतत्त्व का सीधा प्रभाव है, "जो मेरी रूह उसमें फूँकती है (क़ुरान 29/15)"।

असली काम तभी शुरू होता है जब अँधेरा हो जाता है या अकेलापन महसूस होता है और 'मित्र' की याद नहीं रहती, जिससे तुम्हारा मन तुम पर हावी हो जाता है और विचार करना शुरू कर देता है। जब मन प्रकाश और प्रेम में मग्न होता है तो मुँह से एक शब्द भी नहीं निकल सकता। मन चाहे कितनी ही व्याख्या और कितना ही विश्लेषण करे, तुम्हें अनजान और मूर्ख होने का बहाना ही करते रहना चाहिए, क्योंकि स्वर्ग में रहनेवाले अधिकांश लोग सीधे-सादे स्वभाव के होते हैं।

नरक में रहनेवाले लोग ज़्यादातर बुद्धिमान् दार्शनिक और दूसरे ज्ञानवान् लोग होते हैं जिनकी बुद्धि ही उनके लिए परदा बन जाती है। उनके हर एक विचार से दस गुना और विचार जन्म लेते हैं।

कभी-कभी लोग कहते हैं कि परमात्मा के पास जाने का कोई रास्ता नहीं है। कभी कहते हैं कि अगर रास्ता है तो बहुत लम्बा है। हाँ, वह लम्बा तो है, लेकिन जब तुम उस पर चलते हो तो तुम्हें इतना अधिक आनन्द

आता है कि रास्ता लम्बा नहीं लगता। नरक की काँटों से भरी धरती के चारों ओर फूलों और ख़ुशबूदार हरी घास के मैदान हैं, लेकिन जब नरक की दुर्गन्ध आने लगती है तो वह रास्ता जो पहले सुहावना लगता था, अब अप्रिय लगने लगता है। स्वर्ग के बाग़ के चारों ओर काँटों से भरी धरती है, लेकिन वह धरती भी तुम्हें आनन्ददायक लगती है क्योंकि वहाँ फूलों की वह सुगन्ध तुम्हारा स्वागत करती है जो प्रभु के प्रेमियों को उनके 'प्रियतम' की ख़बर देती है।

प्रभु के मार्ग पर चलने की ख़ुशी का वर्णन नहीं किया जा सकता।

147—जब अंगूर अभी पके नहीं होते तो माली उन्हें वहाँ रखता है जहाँ न तेज़ धूप हो न घनी छाया, ताकि विकास की प्रक्रिया के पूरी होने से पहले वे न जलें न सूखें। उसके बाद धूप उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचाती। जब तक वे पककर मीठे नहीं हो जाते, तब तक माली को सर्दी और उसके हानिकारक प्रभाव की चिन्ता रहती है। जब वे मीठे रस से भर जाते हैं तो बर्फ़ पड़ने पर भी वे बढ़ते रहते हैं।

शम्स रूमी से: गुरुरूपी माली शिष्यों की तब तक रक्षा करता है जब तक वे मन के दायरे से बाहर नहीं निकल आते।

यह मनुष्य जो परमात्मा के प्रकाश में इतना गहरा डूबा हुआ है, लेकिन फिर भी आनन्द के नशे में मस्त है, अभी आध्यात्मिक मार्गदर्शक बनने के योग्य नहीं है। मस्ती की अवस्था में वह दूसरों को चेतन कैसे कर सकता है? इस मस्ती से परे एक वह अवस्था है जिसमें मनुष्य सचेत रहता है। जो व्यक्ति ज्ञान की वह अवस्था प्राप्त कर लेता है, उसके लिए दया का स्थान शक्ति से ऊपर है, लेकिन उस व्यक्ति के लिए जो अभी उस अवस्था में नहीं पहुँचा है, जो अभी तक उस आनन्द में मतवाला है, दया और शक्ति बराबर हैं। जिसमें दया की भावना प्रबल है, वह इस योग्य है

कि दूसरों का मार्गदर्शन करे। परमात्मा की दया और शक्ति में कोई अन्तर नहीं, लेकिन उसका सारतत्त्व दया है। इसलिए उसमें दया प्रमुख और प्रबल है।

रूमी से कहे शम्स के वचन।

150-1—गुरु का आदेश विशेष रूप से चुना गया एक बीज है जो निश्चित रूप से फूटेगा, और इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह बढ़कर एक फलदार वृक्ष बन जायेगा। कुछ लोग उस आदेश को बदलने, या उससे कुछ हटकर काम करने की कोशिश करते हैं, और फिर जब इससे लाभ नहीं होता तो गुरु को दोष देते हैं। गुरु के आदेश में शिष्य ख़ुद दख़ल देता है। वह समझता है कि उसका काम जल्दी ही पूरा होनेवाला है, लेकिन जो चीज़ वैसे बिलकुल नज़दीक होती, उससे अब वह सैकड़ों मील दूर होता है।

अगर शुरू में ही काम को हलका या कम करने की कोशिश की जाती है तो बाद में उसे हलका करने के जो सैकड़ों अवसर आ सकते थे, हाथ से निकल जाते हैं।

अगर बच्चे को पता हो कि बचपन की नासमझी के कारण वह कोई काम कर रहा है, तो ऐसा काम वह कभी नहीं करेगा।

मैंने समझा था कि तुमने अपने विचारों और कल्पनाओं से छुटकारा पा लिया है,
लेकिन वह अहं जिसकी तुम पूजा करते हो, और जिसके कारण तुम यह सोचते हो कि तुम्हें छुटकारा मिल गया है,
अभी भी मौजूद है। (रूमी)

मैंने तुम्हें कोई काम करने का आदेश दिया था। तुमने किया क्यों नहीं? उसने जवाब दिया, "मैंने कारण बता दिया था।"

जवाब में मैंने कहा, "तुम्हारे उस बहाने से मुझे तसल्ली नहीं हुई।" मैंने सच बात नहीं कही। अन्दर से मैं चाहता था कि तुम मेरे कहे के अनुसार चलो ताकि तुम्हें दु:ख-दर्द से छुटकारा मिल जाये। अगर हम तुम्हें इस दुनिया में दर्द से नहीं बचाते तो दूसरी दुनिया में तुम्हारी सहायता कैसे कर सकते हैं जहाँ हर कोई बेबस हुआ अपनी ही उलझनें सुलझाने में लगा है?

गुरु का कहा मानों, मन का नहीं जो ख़ुद ही असफलता का प्रबन्ध करता है।

154—सलाह के नसीहत भरे शब्द ख़ुशक़िस्मत इनसान के आईने को चमका देते हैं, लेकिन बदक़िस्मत इनसान उनसे अपने आईने को और गन्दा और काला कर लेता है। असल में, वह आईना ही नहीं जो चमकाने से ज़्यादा गन्दा हो जाये।

ग्रहणशीलता पर शम्स के विचार।

159—जैसे कवि तुक मिलाना चाहता है, रोगी स्वास्थ्य, और क़ैदी आज़ादी चाहता है, और बच्चे सप्ताह के अन्त का इन्तज़ार करते हैं, वैसे ही जो प्रभु पर न्योछावर हो जाते हैं, वे मौत चाहते हैं।

परमात्मा से स्थायी मिलाप की आशा की ख़ुशी।

160—जब किसी क़िले पर एक उच्छृंखल या अनुशासनहीन व्यक्ति का शासन हो तो उसका नाश करना ज़रूरी है। ऐसा करनेवाले को सम्मानित किया जाता है। लेकिन उस क़िले की मुरम्मत करना पाप है, विश्वासघात है। एक बार जब क़िले को उस उच्छृंखल व्यक्ति के कब्ज़े से छुड़ा लिया जाता है, राजा उसमें दाख़िल हो जाता है, और उस पर राजा का झण्डा लहरा दिया जाता है, तब उसे नष्ट करना विश्वासघात होगा और उसकी मरम्मत करना कर्तव्य, पुण्य और सेवा।

विश्वास जब तक नहीं बदलता काफ़िरी में,
और काफ़िरी नहीं बदल जाती विश्वास में,
ख़ुदा की बन्दगी करनेवाला व्यक्ति तब तक
नहीं हक़दार मुसलमान कहलाने का। (रूमी)

धर्म, माला और मठ
आधार हैं संयम के।
जनेऊ, काफ़िरी और मयख़ाना
खम्भे हैं सब प्रेम के। (अज्ञात)

उच्छृंखल मन को वश में करना।

162—रूहानियत के दो रास्ते हैं: एक तो सन्तों और पैग़म्बरों का आन्तरिक अनुभव का रास्ता, और दूसरा मन की शुद्धि तथा प्रयास और उद्यम द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने का रास्ता। अगर दोनों में से एक भी रास्ता नहीं अपनाया जाता तो नरक के सिवा और क्या रह जाता है? "ईमान रखनेवाले तो मानों एक होते हैं (क़ुरान 31/21)।" इसलिए पैग़म्बर कहते हैं, "ऐ अजनबी! तुम तो मेरा हिस्सा हो। तुम मुझे क्यों नहीं जानते? आओ, तुम मेरा हिस्सा हो। पूर्ण से बेख़बर मत रहो। आओ, मेरी पहचान करने की कोशिश करो।"

लेकिन वह व्यक्ति उत्तर देता है, "मैं आत्महत्या कर लेना बेहतर समझूँगा; मैं न तुम्हें जानना चाहता हूँ, न तुमसे कोई सम्बन्ध रखना चाहता हूँ।" असल में, वह दुनिया से जितना ज़्यादा अकेला पड़ता जाता है, उतना ही ज़्यादा सोचने और कल्पना करने लगता है, और वह सोच और कल्पना ठीक उसके सामने आकर खड़ी हो जाती है और उसकी प्रगति में बाधा डालती है।

लेकिन आज्ञापालन या आत्मसमर्पण के रास्ते पर वह जितना आगे बढ़ता है, उतना ही अधिक अनुभव प्राप्त करता है; एक सत्य के बाद दूसरा सत्य उसके सामने प्रकट होता जाता है।

ज्ञान-मार्ग और प्रेम-मार्ग पर शम्स के विचार।

172—एक वर्ग के लोग आध्यात्मिक ज्ञान पर धाराप्रवाह भाषण देते हैं, दूसरे वर्ग के काव्यमयी भाषा में बात करते हैं, और एक अन्य वर्ग के लोग सीधी-सादी वार्तिक भाषा बोलते हैं। हर वर्ग पूरी इकाई का एक हिस्सा है, लेकिन "पूरी इकाई" नहीं। परमात्मा का 'शब्द' पूरी इकाई है। उस पूरी इकाई को थामे रहो ताकि वे तमाम हिस्से तुम्हारे हिस्से बन जायें, और उनके अलावा कुछ और भी तुम्हारा हिस्सा बन जाये। एक हिस्से को ही न पकड़े रहो, कहीं ऐसा न हो कि पूरी इकाई हाथ से निकल जाये। अगर किसी के बाग़ में कोई वृक्ष उगने लगता है तो उसे चाहिए कि पूरे वृक्ष का ध्यान रखे ताकि उसकी सब शाखाएँ और उसका तना भी उसके लिए सुरक्षित रहें। अगर वह केवल एक ही शाखा की देखभाल करेगा तो बाक़ी शाखाओं को खो बैठेगा, और यह ख़तरा रहेगा कि कहीं वह शाखा भी टूटकर उसके हाथ से न जाती रहे, और उसका समय और जीवन निरर्थक बीत जायें।

'शब्द' पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता पर शम्स के विचार।

180—बुद्धि घर की दहलीज़ तक ही जाती है, घर में प्रवेश नहीं कर सकती। मनुष्य के अन्दर बुद्धि एक परदा है, हृदय एक परदा है और मन भी एक परदा है।

181-2—अगर तुम उस वस्तु को कसकर पकड़े रहोगे जो महत्त्वपूर्ण है, तो भोजन, वस्त्र, सम्मान आदि गौण वस्तुएँ जिनके लिए तुम रो रहे हो,

अपने आप तुम्हारे क़दमों में आ गिरेंगी। तुम महत्त्वपूर्ण वस्तु के लिए रोओ और शिकायत करो। अगर एक बार तुम उस अवस्था में पहुँच जाओगे तो शिखर पर बैठे सब लोग, नेता, फ़ौज के और दूसरे बड़े-बड़े अफ़सर, आकर तुम्हारे सामने झुकेंगे, फिर भी तुम उनकी ओर ध्यान नहीं दोगे। तुम उन्हें चाहे कितना ही 'जाओ, जाओ' क्यों न कहते रहो, वे जायेंगे नहीं। लेकिन अगर तुम गौण वस्तुएँ प्राप्त करने की कोशिश करते रहोगे, तो जो वस्तु महत्त्वपूर्ण है वह हाथ से निकल जायेगी और गौण वस्तुएँ भी हाथ नहीं आयेंगी।

"तुमने मुझसे उस व्यक्ति से बात करने को कहा था ताकि वह तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करे। ऐसे काम जो तुम मुझसे कहते हो, मैं नहीं करता। मुझसे कहने के बजाय तुम ख़ुद ऐसा चलन क्यों नहीं अपनाते जिससे उस जैसे हज़ारों लोग तुम्हारे पास आयें जो तुम्हारी सेवा के लिए तैयार हों।"

तुम पूछते हो, "मैं क्या करूँ?"

मैं कहता हूँ, "अपना पूरा ध्यान उस 'एक' में लगा दो जो सत्य है, जो लक्ष्य है, सब सत्यों का सार और सब लक्ष्यों का परमलक्ष्य है, उस 'मूल तत्त्व' में नहीं जिसका महत्त्व एक दिन ग़ैरज़रूरी हो जायेगा। डटकर उस 'एक' की खोज करो। जो चीज़ तुम्हें तुम्हारे लक्ष्य से दूर रखती है, उसे बहुत बड़ी रुकावट समझो। अगर तुम उस रुकावट को छोटी समझते हो तो इसका मतलब है कि तुमने अपने लक्ष्य की बहुत कम क़ीमत डाली है।"

पहले उसकी ओर ध्यान दो जो मुख्य (परमात्मा) है। बाक़ी सब कुछ अपने आप मिल जाता है।

195—उसने अपने अन्दर मौजूद उस मूल तत्त्व को, जो मुख्य है, तुच्छ समझकर उसकी ओर से ध्यान हटा लिया है, और फलस्वरूप एक ग़ैरज़रूरी चीज़, जिसकी कभी क़द्र नहीं होगी, उसके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हो गई है। उसने ख़ुशी को त्याग दिया है और दु:ख की पूजा कर रहा है।

यह सांसारिक अस्तित्व, तुम्हारा सांसारिक जीवन जिस पर तुम्हें इतना गर्व है, दुःख से भरा हुआ है। दुःख से हमारा मतलब है ख़ुशी का न होना; इसका और कोई मतलब नहीं है। यही दुःख है। ख़ुशी तो मानों मन्द गति से बहता पवित्र, निर्मल जल है, जो जहाँ भी बहता है, वहाँ उसी क्षण एक अद्भुत कली खिल उठती है।

जल सभी वस्तुओं के जीवन का आधार है। यह जल अपने स्रोत के जल से मिलकर सजीव हो जाता है, इसमें मिठास आ जाती है, निर्मलता आ जाती है। दुःख जल की एक काली, तेज़ धारा के समान है। यह धारा जहाँ भी जाती है वहाँ कलियाँ मुरझा जाती हैं, और जो कली खिलना चाहती है, वह भी खिल नहीं पाती।

हमें केवल मुख्य वस्तु को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए, बाक़ी सब कुछ तुच्छ है।

195-6—परमात्मा की महिमा अपार है, क्योंकि 'पूर्ण पुरुष' के अलावा इतने ज्ञान को कौन सँभाल सकता है? जो कुछ वह देखता है, उसका और मार्ग के रहस्यों का वर्णन करने के लिए उसे विवश होकर प्रतीकों का सहारा लेना पड़ता है, जैसे चेहरे पर ख़ूबसूरत तिल या गेसू; नहीं तो ये चीज़ें भला परमात्मा के किस काम की हैं?

पहुँच सकता नरक में
मैं गर तुम्हारी ज़ुल्फ़ों तक,
तो बेइज़्ज़ती होती मेरी
स्वर्ग का वासी होने में। (रूमी)

नरक में ज़ुल्फ़ों का क्या काम? इनसान को अपनी आँखें खोलने के लिए, अपने कान खोलने के लिए, परमात्मा का ध्यान करना चाहिए, सन्तों की

शरण लेनी चाहिए। उसे अपने मन के कहे अनुसार पूजा करना छोड़ देना चाहिए क्योंकि अपनी पूजा को छोड़कर ही परमात्मा की भक्ति की जा सकती है।

'प्रियतम' के सौन्दर्य और मार्ग के रहस्यों के लिए प्रतीकों का उपयोग।

202—यह बात समझ लो कि विद्या एक बहुत भारी परदा है। मनुष्य विद्या में ऐसे डूबता जाता है जैसे कुएँ में या गहरी खाई में डूब रहा हो। फिर आख़िर में वह पछताता है, क्योंकि वह जान जाता है कि वह कटोरा ही चाटता रहा, जिससे वह उस दावत से वंचित रह गया जो कभी ख़त्म नहीं होती, क्योंकि लफ़्ज़ और बोल तो केवल ख़ाली कटोरा हैं।

करनी करो, लफ़्ज़ों में न खोये रहो।

208—"एक घण्टा परमात्मा का ध्यान करना बाहर की साठ साल की भक्ति से बेहतर है।"* इस ध्यान करने का मतलब है कि एकाग्रचित्त होकर सच्चे दरवेश की भक्ति करना जिसमें कोई दिखावा नहीं होता। निश्चय ही ऐसी भक्ति उस भक्ति से बेहतर है जो सिर्फ़ दिखावे की भक्ति होती है। जो समय मनुष्य ने खो दिया है, उसकी कमी वह भक्ति द्वारा पूरी कर सकता है, लेकिन यदि भक्ति में दिल नहीं लगा तो उससे होनेवाली कमी वह किसी तरह पूरी नहीं कर सकता। मुसलमान फ़क़ीर दिल लगाकर भक्ति करने की कोशिश करते हैं। उनके विचार में इसके बिना सच्ची भक्ति हो ही नहीं सकती, चाहे मन के सन्तोष के लिए वे दिखावे की भक्ति भी करते रहते हैं। जब दिल भक्ति में लगा हो, तब अगर गेब्रियल† भी आ जाये, तो वे उसे बाधा समझकर दुतकार देते हैं।

एकाग्रचित्त होकर भक्ति करना।

---

* एक हदीस। † एक फ़रिश्ता।

218—मैंने कहा, "हमारे पास आने की पहली शर्त यह है कि इनसान अपने आप से, अपने अहं से, नफ़रत करने लगे। यही पहला क़दम है।" तब ओहद अल-दीन ने पूछा, "अगर आप मेरे पास आ जाओ और हम इकट्ठे रहें तो क्या होगा?" मैंने जवाब दिया, "हम दोनों को शराब का एक-एक प्याला लेकर वहाँ आना होगा जहाँ दरवेश समाअ के लिए इकट्ठे होते हैं और एक-एक करके सबको पेश करना होगा।" उसने कहा, "मैं ऐसा नहीं कर सकता।" तब मैंने उससे कहा, "तो मेरा साथ तुम्हारे बस की बात नहीं है। शराब के इस एक प्याले के लिए तुम्हें अपने सभी शिष्यों और कुल दुनिया को बेच देना होगा।"

सही या ग़लत की परवाह न करते हुए आत्मसमर्पण पर शम्स के विचार।

220-1—मैंने आपसे कह तो दिया कि मैं आपसे जुदा हो रहा हूँ, पर असल में मैं आपको छोड़कर नहीं जा सकता। मैं चाहता हुआ भी जा नहीं सकता था। फिर भी आपको इस बात का अभिमान नहीं होना चाहिए कि मैं आपसे अलग नहीं हो सकता। "यह मत सोचो कि ख़ुदा तुम्हारे साथ चालें नहीं चल सकता...(क़ुरान 07/99)।" और "... ख़ुदा से रहमत की दुआ करो (क़ुरान 10/62)।" उसके पास बहुत रहमत है, ऊँची से ऊँची रहमत है। धार्मिक क़ानून का विद्वान् होने से ही सन्तोष न कर लें और कहें, "मैं कुछ और चाहता हूँ, सूफ़ी से, आरिफ़* से, ज़्यादा होना चाहता हूँ, जो भी पद मेरे सामने आये उससे ज़्यादा, आसमान से भी ज़्यादा चाहता हूँ...।" कहते हैं कि दुनिया में जो कुछ भी है, वह सब इनसान के अन्दर मौजूद है। तो कहाँ हैं सात आसमान, ये सितारे, सूरज और चाँद?

शम्स रूमी से अपने अन्दर ही चरम लक्ष्य पर पहुँचने की बात कर रहे हैं।

---

* आध्यात्मिक ज्ञान के मार्ग का ऐसा पथिक जिसने अभी परमात्मा से एकत्व प्राप्त नहीं किया है, लेकिन जिसे परमात्मा का दर्शन करने की क्षमता प्रदान कर दी गई है।

222-3—वह सूफ़ी अपने शिष्य से कह रहा था कि नाभि-चक्र से सुमिरन करो। मैंने उसे बताया कि नाभि-चक्र से नहीं, बल्कि अपनी आत्मा की गहराई से सुमिरन करो, और ये शब्द सुनकर वह उलझन में पड़ गया।

हम जिसकी तरफ़ भी अपना मुँह करते हैं, वह इस आशा से सारी दुनिया से मुँह फेर लेता है कि हम उसे [अपना ख़ज़ाना] दिखायेंगे, लेकिन हम दिखायेंगे नहीं। हज़रत मुहम्मद ने कहा था, "जिस मकान [मनुष्य-शरीर] पर हमें गर्व है, उसमें रहते हुए ही शरण ले लो।" हमारे अन्दर एक मोती मौजूद है, और जिसे भी हम यह मोती दिखा देते हैं, उसके लिए मित्र और परिचित पराये हो जाते हैं। एक और रास्ता, प्रेम का रास्ता भी है जो आसान और सुहावना है। उसका पैग़म्बर होने या धर्मदूत होने के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है, आध्यात्मिक ज्ञान या धार्मिक अधिकार की बात तो दूर रही।

गुप्त रहने वालों* ने परमात्मा से पूछा, "हम अपने को लोगों के सामने कैसे प्रकट करें और क्या बतायें कि हम कौन हैं?" परमात्मा ने उत्तर दिया, "कह दिया करो कि तुम्हारा सम्बन्ध मुहम्मद से है और तुम मुहम्मद की राह पर चलते हो।" वैसे वे भला (हज़रत मुहम्मद के) अनुयायी क्यों होते, क्योंकि जब उनके नूर का प्रकाश हज़रत मुहम्मद पर पड़ा तो वे बेहोश-से हो गये। हम उन लोगों को हज़रत के अनुयायी कैसे कह सकते हैं?

पूर्ण सन्त अज्ञात रहते हुए हमारे बीच रह सकते हैं।

एक बार जब मैलाना बैठे हुए थे तो एक शिष्य ने कहा, "नमाज़ का वक़्त हो गया है।" सिवा मौलाना के, हम सबने नमाज़ पढ़ना शुरू कर दिया, जो [पहले ही] ध्यान में बैठे थे। मैंने दो-चार बार [अपने अन्दर] नज़र डाली और

---

* पूर्ण सन्त।

देखा कि हम सभी ने जो नमाज़ अदा कर रहे थे, नमाज़ के अगुआ सहित, असली नमाज़ छोड़ दी थी और क़िबला* की तरफ़ पीठ किये खड़े थे।

सच्ची एकाग्रता के बारे में शम्स के वचन।

223—देखो, कितने लापरवाह और नासमझ हैं लोग! एक सूर्य उदय हुआ है जो अनन्त और अनादि है। अनन्त और अनादि क्या होता है? लगता है ये गुण अभी हाल ही में सामने आये हैं। आदि को अनादि कह दिया जाता है और अन्त को अनन्त। इन गुणों [समय और स्थान के गुणों का] भला परमात्मा से क्या सम्बन्ध? एक सूर्य उदय हुआ है और सारा ब्रह्माण्ड प्रकाश से जगमगा उठा है। ये लोग घोर अँधेरे में हैं, इन्हें सूर्य का कुछ पता ही नहीं।

मुर्शिद संसार में है और लोग बेख़बर हैं।

224—तुम कहते हो कि हज़रत मुहम्मद और मुसलमान ये है, वे हैं [दूसरों से बढ़कर हैं]। तुम मूर्तिपूजा करनेवाले की निन्दा करते हो जो अपना मुँह एक पत्थर या एक चित्रित दीवार की तरफ़ करता है। पर तुम ख़ुद भी तो अपना मुँह एक दीवार† की तरफ़ करते हो। इसलिए इस मामले में ज़रूर कोई गुप्त कारण होगा, मुहम्मद साहिब का कोई उद्देश्य रहा होगा जो तुम्हारी समझ में नहीं आ रहा, क्योंकि क़ाबा इसी दुनिया में है और सब लोग उसकी तरफ़ मुँह करके सिजदा करते हैं। जब तुम उस क़ाबे को उनके बीच में से हटा देते हो तो वे सिजदे में एक-दूसरे के सामने होते हैं: एक आदमी दूसरे के दिल की तरफ़ सिजदा कर रहा होता है और दूसरा उसके दिल की तरफ़।

हमारी भक्ति का असली केन्द्र क्या है?

---

* मक्के में एक इमारत में रखा काला पत्थर जिसकी तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ी जाती है।

† क़ाबे की दीवार की ओर संकेत है।

224—उसने सौ बार मुझसे एक चोग़े* के लिए प्रार्थना की है, और मौलाना ने सौ बार उसे बताया है कि मैं चोग़ा नहीं दिया करता; मेरे शब्द और जो कुछ भी ज्ञान वह मुझसे प्राप्त करता है, वही मेरा दिया चोग़ा होता है। जब तुम परमात्मा का साक्षात्कार कर लोगे तो मैं तुम्हारा चोग़ा अपने सिर पर रख लूँगा और तुम मेरा चोग़ा अपने सिर पर रख लोगे।†

प्रेमी और 'प्रियतम' का एक-दूसरे में समा जाना।

228—शुरू-शुरू में परमात्मा के प्रति प्रेम में बेचैनी होना और उसकी खोज में भ्रमण करना ज़रूरी है, चाहे 'जिसकी खोज होती है' उसका कोई विशेष स्थान नहीं है।

231—उसका दावा है कि वह प्रेम करता है। अब इन्साफ़ करो: अगर परमात्मा ने तुम्हें अपना लिया होता और तुम्हें सचमुच प्रेम होता, तो क्या ऐसे शब्द तुम्हारे मुँह से निकलते? तुम्हारे सिर से पाँव तक आग की लपटें निकल रही होतीं।

233—शैतान को सन्त के प्यार की आग के सिवा और कुछ नहीं जला पायेगा। मनुष्य के सारे तप और संयम मिलकर भी शैतान को कभी नहीं बाँध सकेंगे। इसके विपरीत, वह और अधिक बलवान् हो जायेगा क्योंकि वह तो विषयभोग की इच्छा की आग से पैदा होता है। उस आग को केवल सन्त का प्रकाश ही बुझा सकता है।

केवल पूर्ण सन्त इच्छाओं की आग को बुझा सकते हैं।

---

* सूफ़ियों में यह प्रथा थी कि एक शैख़ जब किसी को शिष्य के रूप में अपनाता था तो उसे एक चोग़ा देता था।

† ईरान की सभ्यता में किसी के सिर पर कुछ रखना उसे अत्यन्त सम्मान देने का सूचक है।

233—हममें अभी भी बात करने की योग्यता नहीं है; काश! हममें सुनने की योग्यता होती। इनसान जो कहता है और जो सुनता है, उसमें उसका पूरा ध्यान होना चाहिए। हमारे दिल पर ताला लगा है, कानों पर ताला लगा है और ज़बान पर भी ताला लगा है। आन्तरिक ज्योति का थोड़ा-सा प्रकाश इनसान तक पहुँचता है, लेकिन अगर वह और अधिक कृतज्ञ हो जाये तो यह प्रकाश बढ़ जायेगा। जो इनसान आभार महसूस करता है उसकी हालत कहती है, "मुझे चीज़ों के असली स्वरूप का दर्शन करवाओ।"*

234—जिस तरह संगीतकार के सामने कोई व्यक्ति संगीत पेश नहीं कर सकता जब तक कि वह संगीत में निपुण न हो और कोई ख़ास धुन न सुना रहा हो, उसी तरह एक धर्मोपदेशक की उपस्थिति में कोई प्रवचन नहीं कर सकता। ऐसी स्थिति में संगीतकार कह रहा है कि अगर तुम पहले नहीं जानते थे कि ऐसी असाधारण धुनें भी हैं तो अब जान गये हो।

अगर अभी आपका आध्यात्मिक विकास नहीं हुआ है तो अब हो जायेगा, क्योंकि अब आप हमारे पास आ गये हैं। रास्ते में कई द्वार खुलते हैं। जल्दी ही सब कुछ दिखाई देने लगेगा। अगर आपको अभी तक विशेष सफलता नहीं मिली तो अब मिलेगी, क्योंकि वे सभी परदे जो आपके सामने हैं, आपने ख़ुद ही अपनी आँखों पर डाले हैं। विकास के कई रास्ते खुल जायेंगे। परमात्मा भक्त को उसके कर्मों के अनुसार ही फल देता है। अभी तो आपको कई मधुर और सुखद अनुभव प्राप्त होंगे।

शम्स रूमी से बात कर रहे हैं।

235—कोई व्यक्ति इमारत बनाने के लिए ज़मीन खोद रहा है, और कोई दूसरा आकर उससे कहता है कि तुम इस अच्छी ज़मीन को क्यों बरबाद कर

* एक हदीस।

रहे हो? उसके लिए इमारत खड़ी करने और ज़मीन बरबाद करने में कोई फ़र्क़ नहीं है। अगर तुम ज़मीन को बरबाद नहीं करते तो वह ख़ुद बरबाद हो जाती है। क्या यह सच नहीं कि इमारत बरबादी के नीचे ही छिपी होती है?

परमात्मा के मार्ग पर प्रगति करने के लिए मन और अहं को मारना ज़रूरी है।

258—अगर तुम रास्ते से ज़रा-सा भी भटक जाओगे तो ख़ुद को रेगिस्तान में पाओगे। आक़सरा से थोड़ी दूर चलकर ही तुम कोन्या पहुँच जाओगे। अगर भटक गये तो निपट बियाबान में पहुँच जाओगे। रास्ता देखो और पूछो कि क्या यही वह सड़क है जिस पर जाना है। ऐसे लोग हैं जो तुम्हें ग़लत रास्ते पर डाल देंगे, या ऐसा भी कोई हो सकता है जो चोर हो। सूझबूझ से काम लो और समझने की कोशिश करो, क्योंकि रास्ते में से कई सड़कें निकलती हैं, कोई एक तरफ़ जाती है तो कोई दूसरी तरफ़। तुम्हें दायीं ओर जाना है। एक बार कोन्या पहुँच जाओगे तो फिर सोच-विचार और सही या ग़लत की पहचान की ज़रूरत नहीं रहेगी। वह मालिक इन्साफ़ करता है और वहाँ कोई किसी पर ज़ुल्म नहीं करता।*

आन्तरिक मार्ग पर मार्गदर्शक के साथ यात्रा करो।

258-9—कहा जाता है कि यह दोहराते रहना चाहिए, "ख़ुदा के सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। वही मेरा क़िला है। जो कोई इस क़िले में दाख़िल हो जाता है, वह ज़ुल्म से बचा रहेगा।"† हज़रत मुहम्मद ने कहा था "जो कोई इस क़िले में दाख़िल हो जाता है," यह नहीं कि जो इस क़िले का केवल नाम लेता है। नाम लेना तो बहुत आसान है, जैसे तुम यह कहो कि

* एक हदीस।

† इसी अध्याय में नं. 128 भी देखिए।

"मैं क़िले के अन्दर गया था," या यह कि "मैं दमिश्क गया था।" सिर्फ़ ज़बान के सहारे तो तुम पल भर में पृथ्वी पर और आकाश में कहीं भी जा सकते हो, दिव्य सिंहासन तक और स्वर्ग में भी पहुँच सकते हो।

जो पवित्र हृदय से और ईमानदारी के साथ यह दोहराता है, "ख़ुदा के सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है," वह स्वर्ग जायेगा। जब तुम इसका जाप करने के लिए बैठते हो तो दिमाग़ काम करना बन्द कर देता है।

वह एक है, लेकिन तुम कितने हो? तुम तो छः हज़ार से भी ज़्यादा हो। तुम्हें एक होना पड़ेगा, वरना तुम्हें उसकी वहदत यानी पूर्ण एकता से क्या फ़ायदा? तुम लाखों कणों जैसे हो, जिसमें से हर एक कण को एक इच्छा ने, एक विचार ने, वश में कर रखा है। अगर तुम उन शब्दों को सच्चे दिल से दोहराओगे और उन पर ईमानदारी से अमल करोगे, तो तुमसे स्वर्ग का वायदा करने की कोई ज़रूरत नहीं रहेगी, क्योंकि तुम्हारी अवस्था स्वर्ग जैसी बन जायेगी।

भटकते मन को सिमरन और ध्यान के द्वारा एकाग्र करना।

लोगों को उनका भविष्य बता देने से उन्हें अच्छा लगता है और उनका उत्साह बढ़ जाता है, कम नहीं होता। हम ही वह भविष्यवक्ता हैं। अगर केवल शब्दों से या सतरंगा चोग़ा पहन लेने से ही काम पूरा करना सम्भव होता तो विद्वान् चिल्ला-चिल्लाकर अपनी बात कहते कि हमें नमाज़ पढ़ने का एक सतरंगा 'मुसल्ला' (आसन) दिखाई देता है। ऐ शैख़, हमारी सलाह है कि रंगों को त्याग दो।

ध्यान अन्दर एकाग्र करो, बाहरी आडम्बर व्यर्थ है।

260-1—अगर तुम मोह के काले पानी में छलाँगें लगाते रहोगे तो तुम्हारी हर ख़ुशी और हर सुख तुम्हारे लिए दुःख का ही सन्देश लेकर आयेंगे।

शम्सः हमें मोह की क़ीमत चुकानी पड़ती है।

"इसलिए, उनके लिए सख़्त सज़ा का एलान कर दो। (क़ुरान 24/84)"

ख़ुशी और ख़ुशख़बरी इनसान को अच्छी लगती हैं लेकिन इनका परमात्मा के साथ, जो सब देखता और सुनता है, कोई सम्बन्ध नहीं है। ख़ुशी अपनी ओट में दुःख का सन्देश लेकर आती है और फैलाव सिमटाव का। किसी की सुन्दरता, पदवी, गुणों आदि से मिलनेवाली ख़ुशी से तुम्हारे मन में अत्यन्त सम्मान और विस्मय की जो भावनाएँ जाग्रत होती हैं, वे खिलती हुई दिव्य कलियाँ लगती हैं, लेकिन अगर तुम एक घण्टे बाद उनको सूँघो तो उनकी दुर्गन्ध तुम्हें बेचैन कर देती है। तुम उस दुःख से जो तुम अनुभव करते हो, और अपने आप से भी, दूर भाग जाना चाहते हो। इसलिए तुम कोई सहारा ढूँढ़ते हो जिसे तुम पकड़े रहो, जैसे बच्चों का सहारा, कला या रोमांचित कर देनेवाले शब्दों का सहारा। एक घण्टा बीतने पर इन सबसे वह जानी-पहचानी दुर्गन्ध फिर आने लगती है जो यह जताती है कि तुम्हारे सपने व्यर्थ थे और तुम्हारा ज्ञान एक फूल, एक काँटेदार झाड़ी, एक आग के समान था।

अपनी आँखों के सामने से ये सब रंग हटा दो ताकि तुम एक और अद्भुत चीज़ और परमात्मा की दूसरी दुनिया देख सको जिसमें इन ख़ुशियों और दुःखों जैसा कुछ भी नहीं है।

इस संसार में शान्ति और ख़ुशी मत खोजो, इसके पार के जगत् की अद्भुत चीज़ की खोज करो।

264—यह शरीर हमारी पाठशाला है। इसका अध्यापक महान् है। तुम्हें मैं यह नहीं बताऊँगा कि वह कौन है। इसका शिक्षक मन है। "मेरा मन मुझे मेरे परमात्मा के बारे में बता देता है।"*

हमारा शरीर एक ऐसी प्रयोगशाला है जिसमें हम आन्तरिक अनुभव से सीखते हैं।

---

* एक हदीस।

266 — *धूल जब बैठ जायेगी तो तुम्हें दिख जायेगा*
कि तुम घोड़े पर सवार हो या गधे पर। (अज्ञात)

कई बार यह धूल बैठी और हमने देखा कि हम एक अरबी घोड़े पर सवार थे। तुम हर किसी से यह नहीं कह सकते, "तुम्हें दिख जायेगा।" जन्म से अन्धे को कैसे दिखाई दे सकता है? इस कथन में संकेत ऐसे मनुष्य की ओर है जिसकी ख़ुदी लगभग ख़त्म हो गई हो और उसने आत्मा का रूप ले लिया है। इस कथन का अर्थ है: ख़ुदी की इस धूल से बाहर आओ।

276 — परमात्मा कहता है, "ऐ मेरे विशेष भक्त, वे यह नहीं जानते कि अगर वे तुमसे प्यार करते हैं तो वे मुझसे प्यार कर रहे हैं और मेरे परमात्मा होने का सत्कार कर रहे हैं। हमने तुम्हारे ही हित के लिए अपने भक्त को, अपने सफ़ेद बाज़ को, इस फन्दे में डाला है। कम से कम शाही बाज़ के चिह्न तो पहचानने की कोशिश करो।"

पूर्ण सन्त सबका आश्रय होता है।

280 — बहुत-से जिज्ञासु आत्मा के स्तर पर पहुँच जाते हैं और अन्तर में आनन्द का अनुभव करते हैं। वे वहीं रह जाते हैं और उस स्तर को "परमात्मा का स्तर" समझते हैं। लेकिन वे परमात्मा के स्तर की नहीं, आत्मा के स्तर की ही बात करते हैं। जब तक परमात्मा उस पर दया करके और स्वयं उसे अपने पास न खींच ले, जिज्ञासु तब तक उस स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता। जिज्ञासु तभी परमात्मा के स्तर पर पहुँच सकता है जब कोई दिव्य पुरुष उसे अपनी छाती से लगा ले और आत्मा के स्तर से खींचकर परमात्मा के स्तर पर पहुँचा दे और उससे कहे, "आओ, मेरे पीछे चलो। यहाँ तुम्हें एक और सुन्दर कहानी मिलेगी। तुम वहीं क्यों रुके हुए हो?"

आत्मा ने अभी मन्सूर को अपना सुन्दर रूप पूरी तरह नहीं दिखाया था, वरना मन्सूर यह न कहते, "मैं परमात्मा हूँ।" जहाँ परमात्मा है, वहाँ "मैं" कैसे हो सकता है? यह "मैं" क्या है? ये कैसी बातें है? अगर मन्सूर आत्मा के स्तर में खो भी गये होते तो उनके अन्दर इन शब्दों के लिए स्थान न होता। वर्णमाला के अक्षर वहाँ भला कैसे समाते?

मार्गदर्शक और प्रेम की संकरी गली, जिसमें
केवल एक के लिए ही जगह होती है।

282 — "परमात्मा ने शरीरों से पहले आत्माओं का सृजन किया," इस हदीस के अर्थ पर विचार करो। अगर तुम यह मान भी लो कि आत्माएँ शरीरों से एक लाख साल पहले रची गई थीं, तो भी वे एक परदा ही हैं क्योंकि वे संयोगवश अस्तित्व में आई हैं, वे रचित हैं। स्पष्ट है वुज़ू (हाथ, पैर और मुँह धोना) द्वारा सारी गन्दगी* साफ़ करना ज़रूरी है क्योंकि तभी कोई परमात्मा की सेवा कर सकता है और उससे प्रार्थना कर सकता है। मैं नहीं जानता कि जो रचित और अपवित्र है वह अरचित और पवित्र 'शब्द' को कैसे ग्रहण कर सकता है। नहीं, यह ज़रूरी है कि मनुष्य आत्मसमर्पण की अवस्था में रहे और किसी को भी बिलकुल पता न चलने दे, ताकि मन का अस्तित्व ही मिट जाये, कुछ भी बाक़ी न रहे।

जब किसी का अस्तित्व पूरी तरह मिट जाता है, तो मानों उसकी आत्मा कहती है, "मैं आ रही हूँ, तुम्हारा अभिवादन करती हूँ। मुझे सिर्फ़ तुम ही दिखाई दे रहे हो। हर कोई किसी न किसी काम में व्यस्त है और उसमें ख़ुश है, सन्तुष्ट है। कुछ लोग आत्मा के स्तर पर हैं, और उसी में मग्न हैं,

* अरबी में 'गन्दगी' शब्द का मूल वही है जो 'आकस्मिक' और 'रचित' शब्दों का है। यहाँ 'गन्दगी' शब्द से संकेत शरीर से बाहर निकलनेवाली चीज़ों की ओर है जिनके कारण नमाज़ से पहले वुज़ू करना ज़रूरी होता है।

दूसरे अपनी बुद्धिमत्ता में लगे हुए हैं और कुछ अपने मन को लेकर उलझे हुए हैं। मैं देखती हूँ कि तुम्हारे साथ कोई नहीं है। तुम्हारे सब साथियों की रुचि जिधर ज़्यादा थी, वे उधर चले गये हैं, और तुम्हें अकेला छोड़ गये हैं। जिसका कोई मित्र नहीं है, उसका मित्र मैं हूँ।"

आत्मसमर्पण के इस वर्णन ने इस क्षण तक का सब कुछ, आदि से लेकर अन्त तक, प्रकट कर दिया है, फिर भी आत्मसमर्पण गुप्त रहता है।

पूर्ण आत्मसमर्पण की गुप्त अवस्था पर शम्स के विचार।

283-4—मनुष्य को अपना ध्यान अपने दिल में केन्द्रित करना चाहिए, अपने स्वभाव या चरित्र में नहीं। अपने दिल को खोजो; लेकिन, फिर दिल क्या है? दिल भी एक परदा है। पूर्ण सन्त परमात्मा में लीन रहता है, लेकिन लोग कहते हैं कि वह अपने आप में डूबा रहता है।

क्या यह सच नहीं है कि जब परमात्मा का अद्‌भुत प्रकाश दिल तक पहुँचता है तो दिल मदहोश हो जाता है, और जब प्रकाश नहीं होता तो दिल की हालत इसके उलट होती है? यह हालत तब तक बार-बार होगी जब तक दिल पूरी तरह पिघल नहीं जाता और उसका अस्तित्व मिट नहीं जाता। तब केवल परमात्मा रह जायेगा।

अन्तिम परदा।

307—रूह की तख़्ती पर एक अलिफ़ लिख दिया गया था। कभी हम कहते हैं कि यह तख़्ती पर लिखा हुआ है, कभी कहते हैं कि ज़मीन पर और कभी यह कि दिल पर। अलिफ़ में ऊपर से नीचे तक उसकी रोशनी और चमक भरी है। बोलनेवाला कहाँ है? ख़ुद आँख कहाँ है? वह नज़र कहाँ है जिससे तुम देख सको?

सब कुछ परमात्मा है; ऊपर, नीचे, आँख और कान,
सब परमात्मा है।

313-4—ज्ञान एक कुशल तीरंदाज़ है, इसलिए यह कमान की डोरी को खींचकर कान तक ला सकता है। यह ज्ञान भौतिक स्तर के ज्ञान जैसा नहीं, उससे परे का ज्ञान है। भौतिक स्तर का ज्ञान कमज़ोर और निचले दर्जे का होता है, जो डोरी को खींच तो सकता है लेकिन उसे काफ़ी पीछे तक नहीं ले जा सकता। लाख कोशिश करने पर भी वह डोरी को केवल मुँह तक ही खींच सकता है। जब डोरी को केवल मुँह तक ही खींचा जा सकता हो तो वह तीर को भला कितनी दूर तक फेंक सकती है? जब तक तुम डोरी को कान तक नहीं खींचते, तीर निशाने पर नहीं लग सकता।

इसलिए मुँह से निकले शब्दों का तब तक कोई महत्त्व नहीं होता जब तक वे अपने अनुभव और अपनी करनी पर आधारित न हों। सांसारिक ज्ञान के शब्द मुँह से निकलते हैं, जब कि इस ज्ञान से परे के शब्द कान तक खींचे गये तीर की तरह आत्मा की गहराई से निकलते हैं।

भौतिक ज्ञान केवल बातें हैं। आध्यात्मिक ज्ञान
आन्तरिक अनुभव से प्राप्त होता है,
और लक्ष्य तक पहुँचता है।

सोच-विचार के बिना निकले शब्द
न कहने के योग्य होते हैं, न लिखने के। (सना'ई)

सोच-विचार करना क्या है? इसका मतलब है यह जानने के लिए पीछे देखना कि क्या हमसे पहले हुए लोगों ने ऐसे शब्दों से या ऐसे काम से लाभ उठाया और वे लोग उनके लिए आभारी हुए या नहीं, और यह जानने के लिए आगे देखना कि इस सब का अन्त क्या होगा। केवल वही इनसान बीत चुके और आनेवाले समय में देख सकता है जिसके सामने दुनिया के मोह ने कोई रुकावट खड़ी नहीं कर दी है। दुनिया का मोह इनसान को अन्धा और बहरा बना देता है। जब यह मोह परमात्मा के प्रेम पर हावी हो जाता

है तो परिणाम अन्धापन और बहरापन होता है। अगर किसी को पश्चात्ताप होता है और उसे कुछ समझ आने लगती है, तो दुनिया का मोह कम हो जाता है और वह रुकावट भी छोटी हो जाती है। ऐसा आम तौर पर अच्छे मित्रों की संगति में होता है, और अच्छे मित्र उसके साथी होते हैं जिसका स्वभाव मधुर होता है और जो कड़वी बात सह लेता है।

314-5—जब उस व्यक्ति ने मुझसे पूछा कि शैतान कौन है तो मैंने कहा, "तुम, क्योंकि इस समय मैं परमात्मा के ध्यान में मग्न हूँ। अगर तुम शैतान नहीं हो तो परमात्मा के ध्यान में मग्न क्यों नहीं हो? और अगर तुम पर परमात्मा की कोई निशानी है तो फिर शैतान की चिन्ता क्यों? लेकिन अगर तुम मुझसे वह प्रश्न न पूछकर यह पूछते कि गेब्रियल* कौन है, तो भी मेरा जवाब होता, 'तुम'।"

318—"जो उसके साथ खाना खाता है जिसे परमात्मा ने माफ़ कर दिया है, उसे भी माफ़ी मिल जायेगी।"† यहाँ खाने का अभिप्राय दूसरी दुनिया के भोजन [अन्दर के रूहानी अमृत] से है जो शहीदों को, जिन्होंने अपने अहं को क़ुरबान कर दिया है, दिया जाता है। उनका खाना रूहानी ख़ुशी है। जब एक बार मन वश में हो जाता है तो मुसाफ़िर विजेता बन जाता है, और जीते-जी शहीद का दर्जा हासिल कर लेता है। जो कोई भी माफ़ी पा चुके इनसान के साथ उसके भोजन में से खाता है, उसे भी माफ़ी मिल जायेगी। नहीं तो, हज़रत मुहम्मद के साथ तो कई ऐसे लोगों ने भोजन खाया था जिन्हें उन पर विश्वास नहीं था। यह विश्वास कि किसी को परमात्मा ने माफ़ कर दिया है, तभी सच्चा होता है अगर इनसान उसी आत्मिक भोजन

---

* एक फ़रिश्ता।

† एक हदीस।

में से खाता है जो हज़रत मुहम्मद ने खाया था। यह उपलब्धि उनमें तुम्हारे विश्वास का इनाम और इस विश्वास के सच्चे होने का चिह्न होता है।

"शहीद" से शम्स का अभिप्राय ऐसे व्यक्ति से है जिसने आध्यात्मिक प्रगति करके अपने अहं को मिटा दिया है।

338-9—काफ़िर कौन है और वह कैसे यह कहने का साहस करता है कि वह काफ़िरी का अर्थ जानता है? काफ़िरी का गुण परमात्मा की देन है। अगर वह समझता है कि काफ़िरी क्या है तो वह एक असाधारण व्यक्ति है, काफ़िर नहीं।

608—जब तुम्हें बुद्धि, तर्क और इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त किये गये भौतिक जगत् के प्रत्यक्ष ज्ञान में स्तर और अन्तर दिखाई देते हैं तो तुम कल्पना करो कि दूसरे जगत् के आध्यात्मिक ज्ञान में कितने स्तर होंगे। लेकिन उससे भी भ्रम उत्पन्न होता है। मेरी तुम्हें यह सलाह है कि तुम अपने कानों में से रूई निकाल दो ताकि तुम कही-सुनी बातों के ग़ुलाम और पाखण्ड तथा भ्रम के क़ैदी न बनो, और न ही आडम्बर या प्रदर्शन में पड़ो। अपनी आँखें और अपने कान खोलो ताकि तुम जान सको कि तुम्हारे अपने अन्दर क्या चल रहा है।

मन की ग़ुलामी और भ्रमों से छुटकारा पाने के लिए अन्दर का कान और आँख खोलो।

612—अपने अन्तर में डूब जाना ही हज़रत मुहम्मद का अभ्यास और उनकी भक्ति थी, क्योंकि दिल से किया गया काम ही असली काम होता है, दिल से की गई सेवा ही असली सेवा, और दिल से की गई भक्ति ही सच्ची भक्ति होती है। मतलब यह कि भक्त को 'प्रियतम' के ध्यान में मग्न हो जाना चाहिए। लेकिन मुहम्मद साहिब जानते थे कि हर किसी को

उस असली अभ्यास की जानकारी नहीं मिल सकती और किसी विरले को ही इस प्रकार की एकाग्रता का भेद दिया जा सकता है, इसलिए उन्होंने मुसलमानों को नमाज़ पढ़ने, रोज़े रखने और हज करने का हुक्म दिया। उन्हें विश्वास था कि इस तरह वे लोग रूहानियत से वंचित नहीं रहेंगे; लोगों के बीच उनकी अपनी अलग पहचान होगी, उनका उद्धार होगा और शायद वे पूर्ण एकाग्रता की अवस्था के निकट भी पहुँच जायेंगे।

वैसे तो भूखे रहने और परमात्मा की भक्ति करने में बहुत अन्तर है। धार्मिक नियमों द्वारा निर्धारित बाहरी कर्तव्यों का सच्ची भक्ति से भला क्या सम्बन्ध?

शम्स धार्मिक रीतियों के पालन और असली आध्यात्मिक अभ्यास में अन्तर बताते हैं। भूखा रहना रोज़े रखने की धार्मिक रीति की ओर संकेत करता है।

613 — मन की आन्तरिक गुहा* के बाहर बहुत-से प्रलोभन, डर, और ख़तरे हैं। मन के बाहर ऐसी लाखों चीज़ें हैं, फिर भी मन आग से घिरे इब्राहीम के समान है और मूसा की तरह, जो अपने शत्रुओं के बीच पले-बढ़े थे, मन भी अपार शक्ति के साथ परमात्मा की भक्ति में मग्न है।

जब प्रभु का साक्षात्कार हो जाता है, तो दुःख और प्रलोभन के लिए मन में कोई स्थान नहीं रहता।

615-6 — परमात्मा के भक्तों में अधिकांश ऐसे होते हैं जिनकी चमत्कार करने की शक्ति गुप्त रहती है, और इसी तरह वे ख़ुद भी छिपे रहते हैं। कहने को और भी बहुत-सी बातें हैं, लेकिन मैं वे बातें कह नहीं सकता। मैंने उन सबका केवल एक तिहाई ही ज़िक्र किया है।

---

* पूर्णतया एकान्त स्थान।

जब लोग कहते हैं कि अमुक व्यक्ति के पास दया ही दया है, वह दया की मूरत है, तो वे बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहते हैं। वे सोचते हैं कि वे जानते हैं पूर्णता क्या होती है। जिसके पास दया ही दया है, वह पूर्ण नहीं है। यह ठीक नहीं कि हम परमात्मा को केवल परम दयालु ही कहें, उसकी शक्ति की बात ही न करें। दया और शक्ति दोनों ही होनी चाहिएँ, पर अपनी-अपनी जगह पर।

जो अज्ञानी हैं उनके पास भी दया और शक्ति दोनों होती हैं, लेकिन वे इच्छा और अज्ञानता से उत्पन्न होती हैं। इसलिए अवसर के अनुकूल नहीं होतीं। कहा जाता है कि सबका एक-सा ही रवैया होता है, हर कोई मित्रों के साथ दया का व्यवहार करता है और शत्रुओं को अपनी शक्ति दिखाता है।

लेकिन हर कोई मित्रों और शत्रुओं की पहचान नहीं कर पाता। अगर हर किसी को यह समझ होती कि उसके मित्र कौन हैं तो ख़ुदा यह न कहता, "सन्तों के साथ दुश्मनी न करो, न ही उन्हें अपना दुश्मन समझो। उनसे दोस्त की तरह मिलो (क़ुरान 1/60)," और न ही यह कहता, "तुम्हारा दुश्मन तुम्हारे बीवी-बच्चों में ही है। इसलिए उनसे दूर रहो (क़ुरान 14/64)।"

मित्र और शत्रु का अन्तर जानने के लिए
एक ज़िन्दगी दो बार जीने की ज़रूरत है।
अकसर मित्र का नक़ाब पहने आते हैं शत्रु,
और ज़रूरत है इनसान को दयावान् मित्र की। (अज्ञात)

इसलिए यह बात कि "एक ज़िन्दगी दो बार जीने की ज़रूरत है," उस इनसान के लिए कही गई है जिसने पहली ज़िन्दगी से अभी छुटकारा नहीं पाया है और नई ज़िन्दगी अभी उसे मिली नहीं है। लेकिन जो दूसरी ज़िन्दगी जी रहा है, वह परमात्मा के प्रकाश के सहारे देखता है। वह जानता है कि

कौन शत्रु है और कौन मित्र। वह सही स्थान और सही समय पर अपनी शक्ति दिखाता है और सही स्थान तथा सही समय पर ही अपनी दया दिखाता है। उसकी शक्ति और दया दोनों अवसर के अनुकूल होती हैं।

उसकी शक्ति और दया दोनों की ज़रूरत होती है, चाहे वास्तव में दोनों एक ही हैं।

624—वह कहता है, "हे प्रभु, मैं जल रहा हूँ। मुझसे यह दर्द सहा नहीं जाता।" परमात्मा ने जवाब दिया, "मैं इसी कारण से तुम्हें जीवित रख रहा हूँ।" वह पूछता है, "लेकिन हे प्रभु, मैं तो जल रहा हूँ। मुझसे तुम क्या चाहते हो?" परमात्मा ने जवाब दिया, "यही जलना तो मैं चाहता हूँ।"

इस रोने और तड़पने का उद्देश्य यह होता है कि क्षमा के सागर में लहरें उठें, और ये लहरें भक्त के आँसुओं से ही उठती हैं। जब तक भक्त के दुःख के बादल न मँडराने लगें, दया का सागर नहीं उमड़ता।

636—तुमने समय को धन्य कर दिया, तुम धन्य हो। वह "पावन रात"* इन्हीं आम रातों में से एक रात होती है।

परमात्मा की भक्ति में बिताई हर रात
पावन रात होती है।

639—वहदत या अद्वैत के संसार के बारे में सोचने से, या यह सोचने से कि परमात्मा एक है, तुम्हें क्या मिलेगा? तुम तो लाखों से भी ज़्यादा टुकड़ों में बँटे हुए हो, और हर टुकड़े की अपनी अलग दिशा है, अपनी अलग दुनिया है। जब तक तुम परमात्मा से एकरूप हो जाने के मार्ग पर चलते हुए

* जिस रात क़ुरान हज़रत मुहम्मद पर प्रकट हुआ था, उसे 'शबे क़द्र' कहते हैं, जिसका शाब्दिक अर्थ है पवित्र रात (क़ुरान 97)।

इन टुकड़ों से छुटकारा नहीं पा लेते, तब तक वह तुम्हें अपनी वहदत के रंग में नहीं रँगेगा। उसके बाद केवल तुम्हारा सिर और उसका सिर्र [आत्मा] ही बाक़ी रह जायेंगे। तभी तुम्हारा सिजदा स्वीकार होगा।

धारणाएँ और भ्रम।

640—अगर तुम किसी दावत पर चाँदी के हज़ार सिक्के ख़र्च कर दो लेकिन नमक के लिए दो सिक्के और ख़र्च न करो, तो सब किये-कराये पर पानी फिर जायेगा। पकवान इतने फीके होंगे कि तुम उन्हें थूक दोगे। जब तुम उनमें थोड़ा-सा नमक डाल दोगे तो सारा खाना स्वादिष्ट हो जायेगा। अगर तुम नमक की केवल बात ही करते रहो पर नमक न डालो और भोजन न चखो, तो इससे तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा।

कठोर तप-त्याग से कोई लाभ नहीं होता, उससे तो अँधेरा छा जाता है क्योंकि उसमें मूल तत्त्व तो होता नहीं।

ज़रूरत तप-त्याग की नहीं, प्रेम का नमक डालने की है।

642—जब किसी सूफ़ी से कहा गया, "अपने अन्दर ध्यान लगाना छोड़ दो, प्रकृति में परमात्मा की दया के चिह्न देखो," तो उसने जवाब दिया, "ये चिह्न सिर्फ़ संकेत हैं। फूल, गुलाब व ट्यूलिप तो अन्दर मिलते हैं।"

दृश्यमान जगत् अन्दर के सत्य का प्रतिबिम्ब है।

643—यह एक गोलाकार चक्र है और इसके अन्दर जाने का दरवाज़ा यहाँ है। तुम बाहर से इस चक्र के गिर्द चलते हो, और जब उस दरवाज़े पर पहुँचते हो जो मुक्ति का द्वार है, तो तुम चूक जाते हो और फिर चक्कर लगाने लगते हो। इस तरह तुम दूरी को बढ़ाते हो और तुम्हें ज़्यादा चलना पड़ता है। जब तुम मुक्ति के द्वार से चूक जाते हो तो तुम मानों बेजान रेगिस्तान में चक्कर काटते रह जाते हो।

मैं सबको बता रहा हूँ कि भोजन का ग्रास मुँह में कैसे डालें, लेकिन लगता है वे ग्रास गरदन के पीछे से हाथ लाकर मुँह में डालने की कोशिश कर रहे हैं। हो सकता है कि ऐसा करने में उनकी नसें फट जायें!

शम्स हमारी असमर्थता पर हँसी उड़ा रहे हैं
कि न तो हम उनकी बात सुनते हैं और
न उस पर अमल करते हैं।

645—हज़रत मुहम्मद का अनुयायी होने का मतलब है उन्हीं की तरह अन्तर में ऊपर की ओर प्रगति करना और परमधाम पहुँचना। इसलिए तुम उनकी बात मानो, उनका अनुसरण करो।

अपने दिल के अन्दर ठिकाना बनाने की कोशिश करो। अगर तुम सांसारिक वस्तुएँ चाहते हो तो उन पर सोच-विचार ही न करते रहो, बल्कि सांसारिक साधनों का उपयोग करते हुए उन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न करो। अगर तुम धर्मात्मा बनना चाहते हो तो उसके बारे में भी बातें न करो, बल्कि भक्ति करो और धर्मात्मा बनने की कोशिश करो। अगर तुम परमात्मा की खोज में हो तो उसके भक्तों की सेवा करके उसे पाने का यत्न करो।

तुम्हें चाहिए एक साथी, जो तुमसे बेहतर इनसान हो,
ताकि उससे तुम्हारा महत्त्व और गरिमा बढ़ जाये। (अज्ञात)

सफलता प्राप्त करने के लिए सही तरीक़ा अपनाना ज़रूरी है।

647—किसी ने पूछा कि क्या मौलाना कभी क़िबला के दीदार के लिए गये थे। शम्स ने जवाब दिया, "क्या कभी ऐसा वक़्त था जब मौलाना का ध्यान क़िबला में नहीं था? क़िबला, क़ाबा और हज के लिए जाने के अलावा वे और करते क्या रहे हैं? तुम भूल गये हो कि तुम्हें अपना ध्यान कहाँ टिकाना है।"

परमात्मा के किसी भक्त को सपने में हज़रत मुहम्मद के दर्शन हुए। उसने उनसे पूछा, "ऐ ख़ुदा के पैग़म्बर, आप हर शुक्रवार की रात को मुझे अपना दर्शन देते थे। पिछले बारह सालों से आपने मुझे बिन पानी तड़पती मछली जैसा बनाकर क्यों छोड़ रखा है?" पैग़म्बर साहिब ने जवाब दिया, "मैं मातम मना रहा था।" हैरान होकर उस व्यक्ति ने पूछा, "आप किसके लिए मातम मना रहे थे?" उन्होंने कहा, "मैं अपने लोगों के लिए मातम मना रहा था। इन बारह सालों में सिर्फ़ सात आदमियों के चेहरे क़िबला की तरफ़ थे, इसलिए वे मुझ तक पहुँच गये; बाक़ी सबने क़िबला की ओर से मुँह फेर लिया था।"

अन्दर की यात्रा के लिए प्रतीकों का प्रयोग करते हुए शम्स
बताते हैं कि मनुष्य नश्वर को अविनाशी
मान लेने की ग़लती करता है।

647-8—जब तुम्हें भक्ति करके ख़ुशी का अनुभव हो गया तो फल तो तुमने पा ही लिया। तुम्हें उस अलौकिक ख़ुशी को न क़बूल करना चाहिए और न ही उसकी तरफ़ ध्यान देना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि तुम उसी में डूबकर रह जाओ। तुम्हारा लक्ष्य ऊँचा, और ऊँचा, उससे भी ज़्यादा ऊँचा होना चाहिए, क्योंकि परमात्मा महान् है [अल्लाह-हो अकबर] का भाव है, जिस किसी चीज़ की भी तुम कल्पना कर सकते हो, उसकी तरफ़ से अपना ध्यान हटा लो।

अपना लक्ष्य और ज़्यादा ऊँचा रखो, क्योंकि परमात्मा सब विचारों और कल्पनाओं से बड़ा है, पैग़म्बरों, दूतों और जोशीले भक्तों के चिन्तन से भी ऊँचा।

648—कहा जाता है कि सृष्टिकर्ता ही सब कुछ है, सृष्टि का कोई अपना अस्तित्व है ही नहीं। अगर सृष्टि न हो तो बिना बोले जानेवाला 'शब्द' ही होगा। जहाँ 'हक़' है, वहाँ न तो बोल होते हैं, न उनकी आवाज़।

650—"आँखों के बिना देखने और कानों के बिना सुनने से इनसान के मन को कोई ख़तरा नहीं हो सकता।"*

अपने अन्तर में देखना और सुनना।

654—क्या तुम दिन में सो लिए थे ताकि तुम सारी रात जागकर 'प्रियतम' के साथ बिता सको? जब मेरी यह इच्छा होती है कि रात को अपने 'प्रियतम' के साथ रहूँ और मिलन का आनन्द लूँ तो मैं दिन में सो लेता हूँ। लेकिन इससे 'प्रियतम' को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। जब वह आ जाता है तो नींद और नींद का विचार दोनों भाग जाते हैं और उनके क़दमों से उठती धूल भी दिखाई नहीं देती।

शम्स अन्दर के मधुर मिलन का वर्णन कर रहे हैं।

661-2—मुँह से निकले शब्द अपने असली स्रोत से नहीं निकले होते, क्योंकि शब्दों का असली स्रोत दिल है।

आओ, हमने साथ मिलकर बहुत कुछ करना है। आप भाग क्यों रहे हैं? आपकी टाँगों को रस्सी से बाँधना पड़ेगा ताकि आप भाग न सकें। लेकिन रस्सी तो आपको मंज़ूर नहीं होगी, इसलिए मैं अपने हृदय और आत्मा से आपके पाँव बाँधूँगा। लेकिन इससे कोई लाभ नहीं होगा, क्योंकि आप वह बन्धन भी खोल देंगे। शरीर को बाँधने से काम नहीं चलेगा। "आपने अपनी बातों से मुझे हिम्मत दी है।"† आपका हृदय बहुत कोमल है; मुझे जो कुछ आपसे कहना है, वह आप सहन नहीं कर सकते। मुझे बहुत कुछ कहना है, मगर मैं मुँह बन्द रखता हूँ। अगर मैं बोलना शुरू करता हूँ तो आपका दिल दुखता है और आप कमज़ोर पड़ जाते हैं। अगर मेरे दिल को हज़ार

* एक हदीस।

† फ़ारसी कविता की एक पंक्ति।

बार भी चोट लगती है तो मेरा मानसिक बल और गौरव ही बढ़ता है। मैं तो नरक, स्वर्ग, बाज़ार, कहीं भी चला जाऊँगा, लेकिन आप नहीं जा सकते क्योंकि आपका दिल बहुत कोमल है।

शम्स रूमी को सम्बोधित कर रहे हैं।

662—मैं सच कहता हूँ, जब तक आपकी नींद आपकी जाग्रत अवस्था जैसी नहीं हो जाती, आपको सोना नहीं चाहिए। जब मालिक जाग रहा हो तो ग़ुलाम कैसे सो सकता है? आप जागते रहें ताकि नींद में आपकी हालत ठीक वैसी ही रहे जैसी जागते हुए होती है।

664—... लेकिन प्रेम की उस दुनिया में दया ही दया है, शक्ति है ही नहीं। हमें [शम्स को] उससे परे गये बहुत अरसा बीत गया है। एक ओर, शारीरिक स्तर पर, शक्ति हमारे निकट है, और नरक इसी ओर है। जब आप सरात* पुल के परे इस नरक को पार कर लेंगे तो स्वर्ग पहुँच जायेंगे। दया का वह संसार अनन्त है, उसका कोई किनारा नहीं।

664-5—मैं आकर आपके पास बैठ गया, लेकिन आप परे हट गये। आपने कहा, "अभी कितनी और दुनियावी उपलब्धियाँ बाक़ी हैं? हम अभी ऊपर की ऊँचाइयों पर नहीं पहुँचे, इसलिए हमें अलग हो जाना चाहिए।" मैंने कहा, "सचमुच? साईंस को हमेशा बहस और दलीलों की ज़रूरत होती है, लेकिन इस अध्यात्म-विद्या को उनकी ज़रूरत नहीं है। इसे आत्मसमर्पण के सिवा किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। जब परमात्मा की तसल्ली हो गई तो फ़रिश्ते ने अपना रुख़ आपकी तरफ़ कर लिया।"

* इसलाम के अनुसार नरक के आर-पार एक पुल है जो बाल से भी बारीक है और तलवार की धार से भी तेज़। मौत के बाद हर किसी को इसे पार करना होता है।

जब आप बाग़बान के पास पहुँच जायें तो बाग़ आपका है। जिस भी वृक्ष से चाहें, फल तोड़ लें।

जो बातें इस समय आप कह सकते हैं, और कोई नहीं कह सकता, और न कह सकेगा। मैं सच कह रहा हूँ। ज्ञानियों से सत्य की बातें सुनें।

शम्स रूमी से आत्मसमर्पण की बात करते हैं।

668 — अपनी मौत के वक़्त सना'ई कुछ बुदबुदा रहे थे। जब लोगों ने ध्यान से सुना, तो उन्हें यह सुनाई दिया:

वह सब जो मैंने कहा, मैं वापिस लेता हूँ,
क्योंकि न तो शब्दों में 'सत्य' है,
न 'सत्य' में कोई शब्द।

शब्द बाहरी रूप हैं, इसलिए नश्वर हैं।
'सत्य' अन्दर है, अनादि है और अविनाशी है।

671 — मैंने प्रभु-प्राप्ति के अनमोल ख़ज़ाने के बारे में आपको अच्छी तरह समझा दिया था और दया करके उस ख़ज़ाने की चाबी आपको दे दी थी, लेकिन परदे अभी भी बनते जा रहे हैं। आप ख़ुद अपना परदा बन जाते हैं।

विचारों का कोई अन्त नहीं है। आप ख़ुद ही अपने मन में विचार पैदा करते हैं, उसे अपना परदा बना लेते हैं और उससे अपना मन बहलाते हैं। फिर आप मन में एक और विचार उठाते हैं, और उसी तरह फिर एक और। लेकिन यह सब व्यर्थ है। इसमें कोई सच्चाई नहीं।

एक विचार भी रास्ते में रुकावट बन जाता है।

673 — उस बेचारे ने हज को जाने का सपना तो देखा, लेकिन कारवाँ के लिए किसी मार्गदर्शक का सपना नहीं देखा।

यात्रियों को पहले तीन दिन का सफ़र एक दिन में तय करना होता है, और वे वहाँ पहुँच जाते हैं जहाँ से रेगिस्तान शुरू होता है। एलान करनेवाले ऊँची आवाज़ में कहते हैं, "सुनो, सुनो! तुम लोग अपना ख़ून बहाने जा रहे हो।"

इस रास्ते पर पिता बेटे की तरफ़ देखता भी नहीं, और बेटा पिता की परवाह नहीं करता, मानों यह कर्मों का लेखा-जोखा होने की घड़ी हो और क़यामत (क़ब्र से उठने का दिन) आनेवाली हो।

हज़ारों लोग वहीं से लौट आते हैं, कहते हैं कि अगर पहला ही पड़ाव ऐसा है तो पच्चीस दिन हम कैसे चल सकते हैं? लेकिन एलानची की ऊँची आवाज़ से बहादुरों का साहस बढ़ जाता है। जब वह चिल्लाता हुआ आगे-आगे भागता है तो साथ-साथ एक कहानी सुनाता जाता है।

जिस नेक काम के दायरे में सब कुछ आ जाता है, उसकी तुलना में जीवन का क्या मोल है?

जिन्होंने अपनी धन-दौलत का त्याग कर दिया, उन्हें धन-दौलत से बेहतर चीज़ मिल गई है, जिन्होंने अपने मन से पीछा छुड़ा लिया है, उन्हें अपने मन से बेहतर चीज़ मिल गई है। वे अब अपने बालों की एक ज़ुल्फ़ को भी चाँदी के सौ सिक्कों से ज़्यादा क़ीमती मानते हैं। मैं बुद्धिमान् लोगों और उनकी बुद्धि की बात कर रहा हूँ। जो पागल धन-दौलत के लिए अपनी जान गँवा देते हैं, उनकी तो बात ही मत करो।

जिसने अपने मन से ज़्यादा अच्छी कोई चीज़ देखी, उसने अपने मन की बलि दे दी, और फिर उसने अपने प्राणों से ज़्यादा अच्छा कुछ देखा, इसलिए उसने अपने प्राणों की बलि दे दी।

"इसमें कोई शक नहीं कि हम कई तरह से तुम्हारा इम्तिहान लेंगे: डर और भूख से, चीज़ों के नुक़सान से, मेहनत के इनाम से, तुम्हारी जान से, लेकिन जो सब्र से सब सह लेंगे, उन्हें हम ख़ुशी की ख़बर देंगे (क़ुरान 2/155)।" यह इसलिए नहीं लिखा गया कि इम्तिहान को लेकर भक्त

चिन्ता करें, बल्कि उन्हें यह शुभ समाचार देने के लिए लिखा गया है कि वे सब्र करना सीख रहे हैं।

विश्वास की मशाल लेकर रेगिस्तान को जाने की ख़ुशी एक बात है, और हज की मंज़िल पर पहुँचने की ख़ुशी कुछ और ही है। अरे, हम तो भक्ति भी ऐसी करते हैं जिसका पता नहीं चलता। "अक़्लमंद को इशारा ही काफ़ी है।"* आराम की कोई जगह नहीं है, और जब तक हम क़ाबे के दरवाज़े पर नहीं पहुँच जाते, हमें कोई विचार भी मन में नहीं लाना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि सोच की उलझन में पड़कर हम अपने ऊँट से गिर ही जायें। हज की प्रार्थना को दोहराने में भी न लगे रहो। किसी भी चीज़ के लिए समय नहीं है। खुजली होने पर सिर को खुजलाना भी सम्भव नहीं, जब तक कि ऊँट अपने कोहान की हिलडुल से ही न खुजला दे।

"एक बच्चा पीछे छूट गया है," कहना या "आओ!" कहना भी सम्भव नहीं। इतना भी कहने में कारवाँ आगे निकल चुका होता है।

शम्स ने हज को परमात्मा की ओर यात्रा का प्रतीक बनाया है, और यात्रा की सफलता के लिए आवश्यक गुण बताये हैं।†

687—चाहे उन्हें कुछ ज्ञान होता है, फिर भी उनका मन डाँवाँडोल रहता है। इससे पता चल जाता है कि उनका ज्ञान आन्तरिक अनुभव पर आधारित नहीं है। आन्तरिक शक्ति यह कहने के लिए मजबूर करती है, "नहीं, मुझे स्वयं

* एक हदीस।

† इन अनुच्छेदों में प्रतीकों के माध्यम से यह बताया गया है कि रूहानी सफ़र के लिए क्या-क्या ज़रूरी है: जीवित सतगुरु, अहं की बलि, साहस, सच्चाई, विवेक, अपनी भक्ति को गुप्त रखना, परमात्मा में विश्वास, निरन्तर स्मरण, मोह का त्याग और परमात्मा की इच्छा के आगे सिर झुकाना।

यह अनुभव करना है।" अनुभव से प्राप्त ज्ञान किसी और की कही बात स्वीकार नहीं करता।

निजी अनुभव आवश्यक है।

687-8—जब तुम्हारी लगन में कमी आ जाती है तो अपने अन्दर इसका कारण ढूँढ़ो। गुरु में तो कोई बदलाव नहीं आया है। ख़ुद से पूछो कि तुम किसके साथ उठे-बैठे, किससे मेलजोल रखा जो तुम्हारी लगन में कमी आ गई है।

... मुझे हमेशा नया और युवा जानो, क्योंकि मैं कभी बूढ़ा नहीं होता। तुम भी कोशिश करो कि कभी बूढ़े न होओ, और अगर तुम्हें मेरे बूढ़े होने का कोई संकेत मिले तो अपने आप से पूछो कि क्या यह अजीब बात नहीं है? अपने आप से पूछो कि क्या तुमने ऐसे लोगों से मेलजोल रखा जिन्हें केवल दुनियावी इच्छाएँ हैं, और अगर नहीं तो ऐसा क्यों हुआ कि तुम अपनी लगन खो बैठे।

अपने आप को दोष दो, और मुझे सत्य की नज़र से देखो।

अपने में फिर से लगन पैदा करो। मुझमें तो पहले जैसी ही लगन है। अपने को परमात्मा तक पहुँचा हुआ सिद्ध करो, मैं तो पहले ही ऐसा साबित हो चुका हूँ [परमात्मा से मिलाप कर चुका हूँ]। तुम्हें मुझमें विश्वास नहीं है, इसलिए मुझे साबित करने की कोशिश कर रहे हो। तुम्हारे विश्वास करने से मैं भला कैसे साबित हो जाऊँगा?

तुमने कहा कि तुमने साबित कर दिया है कि मैं परमात्मा तक पहुँचा हुआ हूँ। फ़रिश्तों ने तुम्हारी गवाही दी है। परमात्मा तुम्हें लम्बी आयु दे! परमात्मा का अस्तित्व साबित करने से भला क्या लाभ? परमात्मा तो है। तुम्हें ख़ुद अस्तित्व प्राप्त करने की ज़रूरत है।

तुमने परमात्मा का अस्तित्व साबित कर दिया है, इसलिए फ़रिश्ते हर रात तुम्हारी प्रशंसा करते हैं।

शम्स शिष्य के अपने निश्चय से डोलने के कारण उसे व्यंग्यपूर्वक डाँट रहे हैं।

690—एक शिष्य ने कहा, "हमें ज़िक्र [सिमरन] दीजिए।" शम्स ने कहा, "वह ऐसा सिमरन न हो कि जिसके लिए तुम सिमरन कर रहे हो उसका तुम्हें ध्यान ही न आये। असली सिमरन दिल ही दिल में किया जाता है।"

690—अहंकारी मन को केवल सच्चे हृदय का सौन्दर्य ही वश में कर सकता है। उसे देखकर उसके हाथ-पाँव एकदम शिथिल हो जाते हैं।

यह बिलकुल वैसी ही बात है जैसे कोई अहंकारी शक्तिशाली राजा किसी को निराश कर देता है और इसलिए वह व्यक्ति राजा को थोड़ा-सा ज़हर दे देता है। ज़हर से राजा के हाथ-पैर शिथिल हो जाते हैं और उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है।

आन्तरिक ख़ूबसूरती मन पर विजय पा लेती है।

695—उसने कहा, "उस व्यक्ति की कितनी आनन्दपूर्ण अवस्था थी। काश, मैं भी उस अवस्था का अनुभव कर पाता!" मैंने कहा, "तुम मेरे मित्र होने का दावा करते हो, फिर भी मेरे सामने ऐसी बात कहने में तुम्हें शर्म नहीं आती?" उसने कहा, "आपका मतलब है कि उसकी हालत ऊँचे दर्जे की नहीं है?" मैंने जवाब दिया, "यह बहुत अच्छी अवस्था है, ऊँचे दर्जे की अवस्था है, लेकिन जो मेरा मित्र है उसे इससे सन्तोष नहीं होगा।"

अपनी अवस्था के लिए तुम यह उदाहरण लो: कोई व्यक्ति वज़ीर के बहुत निकट है और वज़ीर उसे बहुत चाहता है। दोनों एक-दूसरे से ख़ुशी से विचार-विनिमय करते हैं, और एक-दूसरे के विश्वासपात्र हैं। फिर वह व्यक्ति कहता है, "काश, मैं कोन्या का पुलिस अफ़सर होता!" वज़ीर उसे सचमुच अपना दोस्त मानता है। वज़ीर की अपनी महत्त्वाकांक्षा ने उसे बादशाह के बाद सबसे ऊँचे स्थान पर ला खड़ा किया है। बादशाह ने उससे कह रखा है कि मैं सिर्फ़ कहने को बादशाह हूँ, क्योंकि सब काम तुम्हारे हुक्म से चलता है। लेकिन पुलिस का कोई आदमी अगर लाख तारीफ़ करे

और दस बार ज़मीन को चूमे, तो भी बादशाह के सामने जाने का साहस नहीं कर सकता।

शम्स: हम रूहानी लक्ष्य के बारे में उलझन में पड़े रहते हैं।
हमारी पहुँच सबसे ऊँचे लक्ष्य तक है, लेकिन हम
छोटे लक्ष्यों को लेकर दूसरों से ईर्ष्या करते हैं।

700-1—मदहोशी चार प्रकार की होती है, और उसके चार स्तर होते हैं। मन की ऊँची अवस्था के अनुभवों से उत्पन्न हुए भावावेशों की मदहोशी पहले स्तर की मदहोशी है। इस अवस्था से छुटकारा पाना अत्यन्त कठिन है, और सिर्फ़ तेज़ रफ़्तार वाला मुसाफ़िर ही, जो संसार से विरक्त हो चुका है इस अवस्था से आगे बढ़ सकता है।

इससे आगे आत्मा की मदहोशी है। चाहे शिष्य ने अभी अपनी आत्मा को देखा नहीं है, फिर भी उसकी मदहोशी बड़ी गहरी होती है। बहुत गहरी मदहोशी के कारण उसकी दृष्टि में दूसरे शैख़ों और यहाँ तक कि पैग़म्बरों का भी कोई महत्त्व नहीं होता, और जब वह बोलना शुरू करता है तो क़ुरान की किसी आयत या दूसरों की कही बातें याद नहीं करता। उसे लगता है कि दूसरों के शब्दों को दोहराना उसे शोभा नहीं देता, जब तक कि अपनी बात स्पष्ट करने के लिए ऐसा करना ज़रूरी न हो। मदहोशी के दूसरे स्तर से आगे बढ़ना बहुत कठिन होता है जब तक कि उसे आत्मा की वास्तविकता जानने के लिए, और परमात्मा की राह पकड़ने के लिए, परमात्मा के किसी उच्च कोटि के प्यारे भक्त के पास न भेजा जाये।

परमात्मा के रास्ते की मदहोशी तीसरे स्तर की मदहोशी है। यह निराली मदहोशी है, लेकिन यह मौन से जुड़ी है, क्योंकि परमात्मा शिष्य को उस अहं के एहसास में से निकाल लेता है जिसे वह समझ रहा था कि यह मैं ख़ुद हूँ। उसके बाद चौथे स्तर की मदहोशी परमात्मा के ध्यान में खोये रहने की मदहोशी है, और यही पूर्णता है। इसके बाद परमशान्ति की अवस्था आती है।

जब मैं पहले स्तर की मदहोशी का वर्णन करता हूँ तो मेरा भाव स्त्री, धन-दौलत, या दुनिया से नहीं होता। शिष्य तो इन चीज़ों के निकट भी जाने की हिम्मत नहीं कर सकता, क्योंकि उसे अपनी मदहोशी कम हो जाने का डर रहता है। ज़्यादातर दरवेशों में इसी तरह की मदहोशी होती है और वे अन्दर की इस मदहोशी की बात करते हैं। फ़िरौन के जादूगरों में यह मदहोशी शिखर पर पहुँच गई थी, इसलिए निश्चित रूप से आत्मा की सुगन्ध उन तक पहुँच जाती थी। फ़िरौन ने पूर्णता प्राप्त नहीं की थी। वह तर्क से काम लेता था और विनम्र था, लेकिन उसमें वह योग्यता नहीं थी जो उसके जादूगरों में थी। सैयद* में रूह की मदहोशी मौलाना से ज़्यादा थी। मौलाना के पास बहुत ज़्यादा ज्ञान था जिसका इनमें से किसी के साथ भी कोई सम्बन्ध नहीं है। शैख़ अबू बक्र† में परमात्मा के ध्यान में डूबे रहने की मदहोशी थी, लेकिन उनमें गहराई नहीं थी। यह बात इस दरवेश [शम्स] को निजी अनुभव से स्पष्ट हुई है।

710-1—जब मौलाना ने कहा, "ऐसा कोई है जो सबकी आँखों पर पट्टी बाँध सकता है," तो सबने इसे मज़ाक समझा। यह एक तरह का जादू है कि दो आदमी एक ही जगह बैठे हैं, दोनों की आँखें ठीक और स्वस्थ हैं, आँखों में न मिट्टी पड़ी है न दर्द है, पर एक देख सकता है, दूसरे को कुछ दिखाई नहीं देता।

अन्दर की दृष्टि और बाहर की दृष्टि।

हाँ, जो अन्तर में लीन रहता है, उसके बोल मीठे लगते हैं; वे विद्वत्तापूर्ण नहीं हो सकते, लेकिन शिक्षाप्रद होते हैं। वह जिज्ञासुओं से कहता है, "तुम अपने

* सैयद बुरहान अल-दीन मोहक़ेक़े तरमज़ी, जो रूमी के पहले गुरु थे।
† शैख़ अबू बक्रे सल्लेह बाफ़, शम्स के आध्यात्मिक गुरु।

हुनर और ख़ुदी के खारे पानी से भरे हुए घड़े के समान हो।" इसलिए वह कहता है, "खारा पानी गिरा दो ताकि मैं घड़े को मीठे पानी से भर सकूँ—उस पानी से जो ज़िन्दगी को सँवारता है, गालों में लाली लाता है, और स्वास्थ्य देता है, और उस सबको कम करता है जो बीमारी लाता है। लेकिन तुम्हें दूसरा पानी गिरा देना होगा। उस पानी से तुम घड़े को धो भी नहीं सकते क्योंकि वह खारा है। खारे पानी से खारापन कैसे दूर हो सकता है? घड़े को इस मीठे पानी से धोना होगा। एक बार इस पानी से धो लोगे तो तुम्हें ख़ुद दोनों में अन्तर का पता चल जायेगा और तुम घड़े को फ़ौरन मीठे पानी से भर लोगे।"

लेकिन वह जिज्ञासु कहता है, "मुझे यह पानी तो गिरता दिखाई देता है, लेकिन दूसरे पानी से घड़ा भरता दिखाई नहीं देता।" जो व्यक्ति अपने अन्तर में लीन रहता है, वह कहता है, "क्या यह सच नहीं कि तुम्हें मेरी उदारता दिखाई देती है? क्या यह सच नहीं है कि मैं दाता हूँ, दोनों हाथों से देता हूँ, और वायदे का पक्का हूँ?" इसलिए यह ज़रूरी है कि ये गुण मनुष्य को स्पष्ट दिखाई दें, तभी वह बिना हिचक उस खारे पानी को गिरा सकता है। जब तक उसकी हिचकिचाहट दूर नहीं होती, तब तक उसे ये मतलब समझ नहीं आते, और उस पर प्रकट नहीं किये जाते। उसमें तो अहं भरा होता है। पानी से भरे पेट में शीतल जल के लिए जगह कहाँ हो सकती है?

उस आदमी ने अपनी आँखों और अपने चेहरे पर सांसारिक जीवन के हज़ारों परदे डाल रखे हैं, सो ये शब्द उस तक कैसे पहुँच सकते हैं? वह मुझे कैसे देख सकता है?

शम्स: अपने अहं को मिटाकर ही हम वह अमृत प्राप्त कर सकते हैं।

713—एक ऐसा स्वर्ग है जिसमें ऐसे जीव हैं जिनका सृजन किया गया है और जो एक-दूसरे से मिल सकते हैं। लेकिन उस स्वर्ग को समझने के

लिए उसका कोई आरम्भ तो निश्चित करना पड़ेगा, क्योंकि तभी वह बुद्धि की पकड़ में आ सकेगा। मैं उसे अमर कहता हूँ, लेकिन वह अनन्त तत्त्व नहीं जो अनादि है। केवल परमात्मा ही अनन्त है, अनादि है, और असीम है जिसका कोई अन्त नहीं है। मैं तुम्हें स्वर्ग के निवासियों और नरक में रहनेवालों के चिह्न बताऊँगा। जिस दिन उसने रचना रची, तभी से हर दिन, हर पल सब कुछ धनुष से छूटते बाणों की तरह चारों तरफ़ फैल रहा है। यह रचना पूर्णतया असीम है, यहाँ तक कि इसे समझने की कोशिश में बुद्धि हार जाती है।

715 — उन्होंने अपने-अपने वचन निभाने में देरी कर दी, क्योंकि हर कोई कही गई बातों का अलग अर्थ लगाता रहा जब तक कि उसकी हालत* यह नहीं बोल पड़ी:

मान लो, हो जाता है मिलन मेरा
अपने 'मित्र' से,
तो प्राप्त कहाँ से कर सकूँगा मैं
अपना बीता हुआ जीवन फिर से? (अज्ञात)

जो बीत गया सो बीत गया; समय ने सब समेट लिया। अगर खो चुके समय के पछतावे की पूँजी को आगे असली काम में नहीं लगाते तो यह क्षण भी पछतावे का क्षण बन जायेगा। किसी भी क्षण कोई ऐसी ग़लती न करो जिसके लिए बाद में पछताना पड़े।

शम्स हमें अपना असली काम करते रहने की
नियमित रूप से याद दिलाते रहते हैं।

* संकेत सराज नामक व्यक्ति की दशा की ओर है जिसकी शम्स चर्चा कर रहे हैं।

716 — परमात्मा की परछाईं के साये में आ जाओ ताकि किसी भी तरह की उदासीनता और मौत तुम्हें छू न सके। परमात्मा के गुण अपनाओ, और जीवन और अमर अवस्था के प्रति जागरूक हो जाओ। मृत्यु तुम्हें दूर से देखते हुए ख़ुद मर जायेगी। तुम्हारे लिए उसका अस्तित्व मिट जायेगा। तुम अमर जीवन प्राप्त कर लोगे। इसलिए आओ हम चुपचाप काम शुरू करें ताकि किसी के कान में इसकी भनक न पड़े।

यह ज्ञान स्कूल में प्राप्त नहीं किया जाता, और न ही छः हज़ार साल के अध्ययन से प्राप्त किया जा सकता है, जो नूह* की आयु का छः गुना है। भक्त के उस एक क्षण की तुलना में जो वह परमात्मा के साथ बिताता है, अध्ययन के हज़ारों साल का समय कुछ भी नहीं।

अपने घर में पड़े धन के बारे में चुप्पी साधे रखो।

719 — ऐ इमाद [एक शिष्य], जब तुम दावा कर रहे हो कि ख़ुदा तुम्हें दिखाई देता है तो फिर तुम, जिसके निकम्मे शरीर से बदबू आ रही है, यह क्यों नहीं मानते कि यह दरवेश [शम्स] इस योग्य है कि जो मूसा ने देखा वह उसके सही अर्थ को समझा सकता है? इमाद ने कहा, "उन्होंने [मूसा ने] ख़ुदा को उस हालत में नहीं देखा ... ऐसा नहीं है कि ख़ुदा उन्हें बिलकुल नहीं दिखाई दिया।"

शम्स ने कहा, "तो क्या तुम्हारा यह मतलब है कि उस हालत में मूसा का दर्जा तुमसे कम था? तुम यह कैसे कह सकते हो? और मैंने यह कब कहा कि उन्होंने ख़ुदा को उस हालत में देखा था?"

विरोध करनेवाले शिष्य को
शम्स की फटकार।

* एक पैग़म्बर जो अंशतः अपनी बहुत लम्बी आयु के कारण प्रसिद्ध हैं।

727-8—रूहानी ज्ञान दो तरह के भक्तों के पास होता है। कुछ भक्तों में से ज्ञान बाढ़ की तरह बह जाता है; वे एक नाली जैसे होते हैं। दूसरी तरह के भक्त बहुत कम होते हैं, क्योंकि उनमें रूहानी ज्ञान दूसरों तक पहुँचाने की क्षमता होती है। वे ज्ञान का भण्डार होते हैं।

उस समय आपकी (रूमी की) हालत बाहरी सौन्दर्य और आन्तरिक सौन्दर्य दोनों से सुशोभित थी। मैंने पहले कभी आपमें ऐसा सौन्दर्य नहीं देखा था। सभी पैग़म्बरों और सन्तों को ऐसा सौन्दर्यमय चेहरा देखने की चाह रही है।

जो व्यक्ति इस विचार में फँसा बैठा है कि सौ सन्त मिलकर भी हज़रत मुहम्मद के क़दमों की धूल की बराबरी नहीं कर सकते, वह भला कहाँ पहुँचेगा? और उस व्यक्ति से क्या आशा की जा सकती है जो यह मानता है कि क़ुरान में परमात्मा के वचन दर्ज हैं और हदीस में हज़रत मुहम्मद के? अगर वह यहाँ से आरम्भ करता है, तो उसका अन्त क्या होगा, क्योंकि इस सच्चाई की तो उसे बचपन से ही जानकारी रही होगी। वह इसी तंग दायरे में बन्द रहा है। परमात्मा के संसार की विशालता आश्चर्यजनक है, शानदार और अन्तहीन है।

कुछ लोगों के लिए इन बातों को समझना बहुत कठिन है, अत्यन्त कठिन, और कुछ के लिए बहुत ही आसान। असल में, वे इनकी सरलता को देखकर उलझन में पड़ जाते हैं और समझ नहीं पाते कि किसी को इनके बारे में बात करने की भी क्या ज़रूरत है।

शम्स रूमी से परमात्मा के संसार की अन्तहीन विशालता की बात करते हैं।

731—मुझे वैसे तो दुनिया की किसी चीज़ की चाह नहीं, लेकिन अगर मैं किसी से कुछ ले लेता हूँ तो सिर्फ़ इसलिए कि ख़ुद हज़रत मुहम्मद ने भी एक भेंट स्वीकार कर ली थी, और मैं उनका अनुसरण करता हूँ।

अगर तुम्हारे पास चाँदी के एक लाख सिक्के हों और एक सोने से भरा क़िला हो, जो तुम मुझे पेश करो, तो मैं पहले तुम्हारा माथा देखूँगा, और अगर मुझे वहाँ रोशनी दिखाई नहीं देगी और तुम्हारे दिल में कोई चाह नहीं दिखेगी, तो तुम्हारी वह भेंट मेरे लिए गोबर का एक ढेर होगी। अगर मुझे कोई लालच है तो केवल मौलाना का है। मुझे उनके अलावा और कुछ नहीं चाहिए। तुम इतना याद रखो कि तुम अपना लिखा पृष्ठ ही पढ़ रहे हो। 'प्रियतम' के लिखे कुछ पृष्ठ भी पढ़ो। इससे तुम्हें लाभ होगा। तुम्हारे सारे दु:ख इस कारण से हैं कि तुमने केवल अपना लिखा पृष्ठ ही पढ़ा है, और 'प्रियतम' का लिखा एक पृष्ठ भी नहीं। ज्ञान और बोध से एक विचार पैदा होता है; फिर उस विचार के बाद और ज्ञान व बोध, और उस नये विचार और बोध से एक और विचार जन्म लेता है ... और यह सिलसिला चलता ही रहता है।

एक और भी रास्ता है, तंग रास्ता, जिसका इनमें से किसी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। लोगों ने उस रास्ते का नाम भी बदनाम कर दिया है।

'प्रियतम' की पुस्तक प्रेम की कहानी है।

737—जो निर्जीव है उसे भी संयोग और वियोग का अनुभव होता है, लेकिन उसकी कराह सुनाई नहीं देती। "ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उसकी सिफ़त का नग़मा न गा रही हो (क़ुरान 17/44)।"

738—दिल कहाँ है? यह मन ही तो दिल है। वे इसे उपदेश देते हैं कि नरक से बचने के लिए निर्मल हो जाओ और वैरभाव, कंजूसी तथा बुराइयाँ छोड़ दो।

अब थोड़ा-सा दिल के गुण के बारे में भी सुन लो: "मैं पृथ्वी या आकाश में नहीं, बल्कि उस व्यक्ति के दिल में रहता हूँ जिसमें भक्ति-भाव है और मुझ में विश्वास है।" "भक्त के दिल को दयालु प्रभु अपनी दो

उँगलियों में पकड़े रखता है। उसका दिल देखो।"*... ताकि तुम कंजूसी और लालच से पूर्णतया मुक्त दिल देख लो।

सच्चे भक्त के हृदय में परमात्मा का वास होता है।

741—अगर तुम प्रभु के विधान की असलीयत की खोज में हो तो वह है शरीअत [धर्मशास्त्र], तरीक़त [मार्ग] और हक़ीक़त [सत्य]। शरीअत मोमबत्ती के समान है जिसका उद्देश्य रास्ता दिखाना है। जब तुम्हारे पास मोमबती है तो ईमानदारी और सब्र के साथ उसका प्रयोग करो। तुम मोमबती के लिए बत्ती बनाते रहते हो, फिर काटकर उसे ध्यान से देखते रहते हो, रास्ता तय नहीं करते। क्या इसका कोई फ़ायदा है? इस तरह तुम 'सत्य' तक कभी पहुँच कैसे सकते हो? अगर तुम 'सत्य' तक पहुँचना चाहते हो तो तुम्हें उसके रास्ते पर चलना होगा।

उदाहरण के तौर पर, यह मिट्टी का घड़ा खारे पानी से भरा हुआ है। मैं तुम्हें एक दरिया के मीठे पानी के बारे में बताता हूँ और तुम कहते हो, "मुझे वह पानी दो।" मैं कहता हूँ, "पहले घड़े का सारा खारा पानी गिरा दो। जिस चीज़ के लिए जोश है, उसके प्रति उदासीनता लाओ, और जिस चीज़ के प्रति उदासीनता है, उसके लिए जोश पैदा करो। जब तक संसार की विद्याओं को जानने का जोश ठण्डा नहीं पड़ जाता और मन उस ओर से उदासीन नहीं हो जाता तब तक दिव्य ज्ञान नहीं बख़्शा जाता।"†

शरीअत से शुरू करो, फिर 'सत्य' की खोज में निकल पड़ो।

742—पानी और मिट्टी की दुनिया [मानव-शरीर] में आने से पहले, अदृश्य पहाड़ के पीछे, हम [आत्माएँ] गॉग और मगॉग‡ की तरह आपस

---

* दो हदीस।

† इसी अध्याय में 710-711 देखिए।

‡ क़ुरान में चित्रित कुकर्म करनेवाले जो बुराई का प्रतीक हैं।

में मिलजुल कर रह रहे थे। अचानक "नीचे उतरो... (क़ुरान 2/36)" का आदेश मिला और उसके साथ ही हमारी अवस्था बदल गई ताकि हम नीचे उतर सकें।

हमें इस भौतिक मण्डल की सीमा तो दिखाई देने लगी, लेकिन दूर से शहर और जंगल की सीमा दिखाई नहीं दे रही थी, जैसे बचपन में हमें संसार का कुछ भी दिखाई नहीं देता था। थोड़ा-थोड़ा करके हमें संसार भी दिखाई देने लगा।

जाल और चोगे के परिणाम हानिकारक होते हुए भी हम धीरे-धीरे उनकी ओर खिंचे चले गए, लेकिन चोगे की ख़ुशी जाल के कष्ट पर हावी हो गई, वरना हमारा संसार में रहना असम्भव होता।

विषय-भोगों के स्वाद के कारण हम ख़ुशी-ख़ुशी जुदाई के जाल में फँसे रहते हैं।

745—जब कोई कहता है, "अब मुझे विश्वास हो गया," तो इसका मतलब होता है कि उसका मन मर गया है, इच्छाएँ और कामनाएँ ख़त्म हो गई हैं। इस मरने का मतलब है कि फिर किसी अँधेरे का सामना नहीं करना पड़ेगा, हमेशा ख़ुशी की अवस्था रहेगी। लेकिन तुम्हारी ख़ुशी स्थायी क्यों नहीं रहती? इस सब के बावजूद हम यह मानकर चलते हैं कि मन पहले ही मर चुका है, लेकिन यह तो धीरे-धीरे ही मरेगा।

प्रभु-प्राप्ति का यह कार्य किसी दूसरे के सहारे और सहायता पर निर्भर करता है। प्रभु ने इस काम को एक उद्देश्य के साथ जोड़ दिया है। यह काम उस इनसान (गुरु) पर निर्भर है जो आकर तुम्हारे सामने ज़मीन से लेकर आसमान तक फैली, खड़ी दीवार को गिरा देता है। वह उस दीवार को ठोकर मारता है और वह एकदम चकनाचूर हो जाती है। वह तुम्हें यह भी सिखाता है कि तुम्हें वे दीवारें कैसे गिरानी होंगी जो बाद में तुम्हारे सामने आयेंगी।

जब यह तय है कि तुम्हें अपने काम में सफलता प्राप्त करने के लिए उस मार्गदर्शक की दया, उसकी उदारता और उसकी कई तरह की सहायता की ज़रूरत है जिनसे तुम प्रभु की आकर्षण-शक्ति महसूस कर सको, तो फिर परमात्मा की मौज पर निर्भर होकर निठल्ले बैठे रहने से क्या लाभ? वह जो भी करे और कहे, तुम्हें उसमें सन्तुष्ट रहना चाहिए और उसकी आज्ञा मानकर उसका काम करना चाहिए। तुम्हें ऐसा कोई काम हरगिज़ नहीं करना चाहिए जिससे वह अपनी दया का हाथ पीछे खींच ले। तुम्हें तो वह सब करना चाहिए जिससे उसकी रुचि तुममें बढ़े और वह तुम पर और दया करे, तुम्हारी और सहायता करे।

अपना काम करके मुर्शिद की ख़ुशी प्राप्त करो।

745-6—मैं पीता ही चला गया—सुराही से, कटोरे से, प्याले से, बरतन और कलछी से, और तब तक पीता रहा जब तक साक़ी ही लाचार नहीं हो गया।

साक़ी सबको लाचार कर देता है, लेकिन इस 'मनुष्य' ने साक़ी को ही लाचार कर दिया। शराब हमेशा मनुष्य के होश उड़ा देती है, अगर दस प्यालों से नहीं तो बारह से, या अगर कोई भाग्यशाली वह मटका भर शराब पी सकता है, तो उतनी से। शराब बेचनेवाला कहता है कि अगर इस दुकान की शराब ख़त्म हो जाये तो शहर में शराब की और भी बहुत-सी दुकानें हैं। लेकिन ये सिर्फ़ कहने की बातें हैं, वरना एक आदमी भला मटका भर शराब कैसे पी सकता है? सौ आदमी भी ऐसा नहीं कर सकते।

लेकिन संसार ने इस तरह का 'मनुष्य' कभी नहीं देखा जो शराब पर विजय पा सकता है, और जो जितनी ज़्यादा शराब पीता है उतना ही ज़्यादा शान्त और सचेत रहता है। वह गले तक शराब से भरा होता है, फिर भी सचेत रहता है और बाक़ी दुनिया को और सम्पूर्ण सृष्टि को भी शान्तचित्त बना देता है। कितनी हैरानी की बात है यह!

इससे भी ज़्यादा हैरानी की बात कुछ और है। क्या तुम इस मनुष्य को दिव्य मदिरा में डूबा नहीं देखते? इसके पूरे अस्तित्व ने मदिरा का ही रूप ले लिया है क्योंकि मदिरा ने इसे दबोच रखा है। फिर भी एक और 'मनुष्य' से यह हार गया था। वह 'मनुष्य' आया और उसने इसे पछाड़ दिया। उस 'मनुष्य' ने मदिरा पर विजय प्राप्त कर ली है।

फिर भी इस तरह पछाड़ खाकर गिरना हज़ार बार उठ खड़े होने से ज़्यादा अच्छा है।

मदिरा जिसे दबोच लेती है, उसकी रक्षा करती है क्योंकि वह बोल नहीं सकता और अगर वह बात करता भी है तो जो निपट अनजान हैं, वे समझेंगे ही नहीं। इसलिए उसे सिर कट जाने का ख़तरा नहीं होगा। लेकिन जो मदिरा के नशे में धुत नहीं होता, उसमें इसे पचाने की क्षमता नहीं होती, और अगर वह इसके प्रकाश और गन्ध को हज़म नहीं कर पाता और सिर कटवाने का ख़तरा मोल लेता है, जैसा कि हल्लाज के साथ हुआ था।

जिसने मदिरा पर क़ाबू पा लिया है वह दुनिया में एक अजनबी है। दुनिया उसे नहीं जानती। उसके बारे में कोई बात नहीं करता। वह आया, दुनिया को देखा और चला गया। लेकिन जो लोग उस जैसे नहीं हैं वे हज़ारों की गिनती में हैं।

रूहानी शराब की मस्ती की कई अवस्थाएँ हैं, लेकिन रहस्य की बात यह है कि जो इसकी मस्ती में अपना आपा गँवा देता है, उसे यह शान्तचित्त बना देती है और उसकी रक्षा करती है।

760—एक सूफ़ी से पूछा गया: तुम क्या चाहते हो, अभी मुँह पर एक चपत या कल चाँदी का एक सिक्का? उसने उत्तर दिया, "मुझे चपत लगाओ और चलते बनो।"

आज के पल की ख़ुशक़िस्मती गुज़रती जा रही है। इस ख़ुशक़िस्मती को खोने और पछतावे के दु:ख से डरो।

शम्स एक सूफ़ी कहावत "इब्न अल-वक़्त" की ओर संकेत कर रहे हैं जिसका शाब्दिक अर्थ है समय का पुत्र, और भाव यह है कि इसी जन्म में परमात्मा को पा लो।

762—जब जल अपने को गन्दा कर देनेवाले तत्त्वों को अपने में समा लेने से इनकार नहीं करता, तो वह प्यासे की प्यास बुझाने से कैसे इनकार कर सकता है? ऐसा भी जल है जो गन्दा हुए बिना गन्दगी को ग्रहण नहीं कर सकता, इसलिए वह हमेशा गन्दा होने के डर से ही गन्दगी को स्वीकार नहीं करता। लेकिन एक और जल है जिसमें अगर दुनिया की तमाम गन्दगी भी डाल दी जाये तो उसमें कोई बदलाव नहीं आयेगा।

पूर्ण सन्त हर किसी को अपना लेते हैं चाहे उसकी पृष्ठभूमि कैसी भी हो। सत्य को अपवित्र नहीं किया जा सकता।

766-7—प्यार की आग में जलने से मेरी वह दशा हो गई है, जिसे दूसरा कोई भी सहन नहीं कर सकता। मेरे शब्दों से इनसान शक्ति प्राप्त कर सकता है। वे शब्द घाव को भरनेवाली मरहम जैसे होते हैं जो उसे मेरी जैसी दशा में पहुँचने से बचा सकते हैं। फिर भी अगर वह मेरी जैसी दशा में पहुँच ही जाता है तो वह उसे सहन कर सकता है। उसमें इस काम को करने की क्षमता होनी चाहिए, ऐसा न हो कि वह थकान, दु:ख और पछतावा ही महसूस करता रहे।

इनसान जब एक बार रास्ते पर आ जाता है तो उसे इस पर दृढ़ता से क़दम रखने चाहिएँ ताकि हर पल फिसलने से बचा रहे। हमारे पिता* ने

* बाबा आदम की ओर संकेत है जिसने एक ही बार पाप किया था।

भी एक बार पाप किया था, केवल एक ही बार। एक बार के पाप का भी इनसान को दु:ख होना चाहिए, और उसे चौकन्ना व होशियार रहना चाहिए ताकि ऐसा न हो कि उससे दो बार पाप हो जाये। लेकिन अगर फिर भी उससे पाप हो जाता है तो उसे चाहिए कि उसके बारे में कुछ न सोचे, उसकी ओर बिलकुल ध्यान न दे, क्योंकि समय बीत जाता है और दु:ख और पश्चात्ताप का कोई लाभ नहीं होता।

उदाहरण के लिए, झगड़े में हाथ पर चोट लग जाने पर अगर कोई रोने और पछताने लगे तो उसका क्या फ़ायदा? लेकिन अगर वह अपना पैसा लेकर किसी डॉक्टर या सर्जन के पास जाता है तो उसका रोना बन्द हो जायेगा। या अगर वह किसी सर्जन को पैसा भेज देता है तो सर्जन फ़ौरन उसका हाथ ठीक करने के लिए आ जायेगा और उसे इतना आराम मिलेगा कि वह समझेगा कि घाव भर गया है।

शम्स: रास्ते पर टिके रहो; ग़लतियों पर पछताने में समय मत गँवाओ, बल्कि अपने काम में लगे रहो।

794—किसी ने शम्स से आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में पूछा, और शम्स ने जवाब दिया, "आध्यात्मिक ज्ञान के तीन रूप हैं: पहला बोलने से सम्बन्ध रखता है, दूसरा करने से और तीसरा देखने से: विद्वानों का बोलने से सम्बन्ध होता है, भक्तों का करनी से, और सन्तों का देखने से।"

केवल पूर्ण सन्त ही परमात्मा का दर्शन करते हैं; बाक़ी सब तो उसे देखने की कोशिश करते हैं या केवल उसकी बातें करते हैं।

801—... मैं माफ़ी माँगने का सुझाव इसलिए नहीं देता कि तुम अपने अन्दर से बुरे विचार निकाल सको। मैं ऐसा इसलिए करता हूँ कि तुमने जो कुछ भी पढ़ा और जाना है, वह सब भुला दो। तुम्हें उस सबसे छुटकारा पाने

की ज़रूरत है। क्या ज्ञान से परे भी कुछ और है? मैं कहता हूँ कि शैतान इसी ज्ञान से इनसान और उसकी मंज़िल के बीच दीवार खड़ी करता है।

शम्स कहते हैं कि मन में से सब कुछ निकाल फेंको।

852—"ला इलाह इल्ला अल्लाह* [ख़ुदा के सिवा और कोई ख़ुदा नहीं है।]" यह सिमरन दूसरे सब इष्टों को नकारता है [सिवा एक परमात्मा के] और सब काफ़िरों को एकता और वहदत में बँधने का निमन्त्रण देता है। "ला" के बाद "इलाह इल्ला" का भाव सब विचारों, कल्पनाओं और मनोवेगों से बचना है। जब इस सिमरन से ये सब दूर हो जाते हैं तो (अन्दर का) प्रकाश बढ़ जाता है। लेकिन भक्त का काम "ला इलाह इल्ला अल्लाह" (इस सिमरन) के साथ ही ख़त्म नहीं हो जाता, वह इससे परे है।

परमात्मा तक पहुँचने के लिए सिमरन की सीमा से परे जाना ज़रूरी है।

---

* मुसलमान इसका सिमरन करते हैं।

शम्स

कहानी सुनानेवाले के रूप में

जब महात्मा कोई कहानी सुनाते हैं तो उस ज्ञान के लिए जो उसमें निहित होता है, न कि नीरसता दूर करने के लिए। ज्ञान को कहानी का रूप इसलिए दिया जाता है कि भाव और अधिक स्पष्ट हो जाये।

शम्स, मक़ालात 249

शम्स
कहानी सुनानेवाले के रूप में

75-6 — मनुष्य जितना अधिक पढ़ा-लिखा होता है, अपने दिव्य उद्देश्य से उतना ही अधिक दूर होता है। मनुष्य के दिमाग़ में जितनी ज़्यादा उलझनें रहती हैं, अपने लक्ष्य से वह उतना ही ज़्यादा दूर रहता है। लक्ष्य तक पहुँचना दिल* का काम है, दिमाग़ का नहीं।

दिमाग़ से काम लेनेवाले का हाल उस मनुष्य की कहानी से मेल खाता है जिसे किसी ख़ज़ाने का नक़्शा मिला था। नक़्शे के साथ मिले निर्देशों के अनुसार उस मनुष्य को एक ख़ास दरवाज़े में से गुज़रकर जाना था जिसके निकट एक गुम्बददार इमारत थी। क़िबला की तरफ़ मुँह करने के लिए उसे उस इमारत की तरफ़ पीठ करके एक तीर चलाना था। तीर जहाँ भी गिरता, ख़ज़ाना वहीं मिलता। निर्देशानुसार उस मनुष्य ने तीर चलाने शुरू किये। तीर चलाते-चलाते वह थक गया, फिर भी उसे ख़ज़ाना नहीं मिला। जब बादशाह को इस बात की ख़बर मिली तो उसने अपने कुशल तीरंदाज़ों को भेजा। उन तीरंदाज़ों ने अपना पूरा ज़ोर लगाकर तीर चलाये, और तीर जितनी भी दूर जा सकते थे जा गिरे। लेकिन, ख़ज़ाने का कहीं कोई नामो-निशान नहीं मिला।

---

* दिल का मतलब रूहानी दिल से है।

तब उस मनुष्य ने परमात्मा से प्रार्थना की, और उसे ये शब्द सुनाई दिये, "हमने तुम्हें कमान खींचने को नहीं कहा था"। इन शब्दों से प्रेरित होकर उसने तीर को कमान पर रखा और उसे छोड़ दिया। वह ठीक उसके आगे ही गिर गया।

जब दया होती है तो "तुम दो क़दम चले और मंज़िल पर पहुँच गये।"*

परमात्मा के अस्तित्व का अनुभव प्राप्त करने के साथ कठोर संयम का भला कैसे कोई सम्बन्ध हो सकता है? जिसका चलाया तीर सबसे ज़्यादा दूर जाकर गिरता है, वह सबसे ज़्यादा घाटे में रहता है, क्योंकि ख़ज़ाने तक पहुँचने के लिए केवल एक क़दम चलने की ज़रूरत होती है। और वह क़दम क्या है? "जो अपने मन को जानता है वह अपने ख़ुदा को पहचान लेता है।"† मन, जो इस समय स्वामी बना हुआ है और सत्य की ओर से अचेत है, एक विश्वसनीय सेवक बन सकता है।

मन की सीमाओं के कारण हम यह अनुभव नहीं कर सकते कि परमात्मा हमारे अन्दर ही है।

76—कोई उपदेशक सत्य की राह पर चलने के इच्छुक लोगों को उनकी मंज़िल और रास्ते के मील-पत्थर बताने के लिए प्रवचन करता है, और जिस शैख़ ने पूर्णता प्राप्त नहीं की है, वह रास्ते के चिह्न बताने और उसका विस्तृत वर्णन करने के लिए कविता का उपयोग कर सकता है। जिसे और अधिक ज्ञान है, उसकी दृष्टि में वे दोनों अध्यात्म-ज्ञान के नाम पर कलंक हैं।

वे दोनों उस मनुष्य के समान हैं जो मछलियों के बारे में बातें कर रहा था और किसी ने उससे कहा, "तुम चुप रहो। तुम मछलियों के विषय में कुछ नहीं जानते। जिस चीज़ की तुम्हें कोई जानकारी नहीं, उसके बारे में

* यह मूलतः शिबली का कथन है जो जुनैद का एक सनकी शिष्य था।
† एक हदीस।

तुम कैसे कुछ कह सकते हो?" तब उस मनुष्य ने कहा, "क्या मतलब? क्या मैं मछलियों के बारे में कुछ नहीं जानता?" दूसरे ने उत्तर दिया, "नहीं, तुम कुछ नहीं जानते। अगर जानते हो तो मुझे मछलियों के चिह्न और निशान बताओ।" पहले ने जवाब दिया, "ऊँट की तरह मछली के दो सींग होते हैं।" दूसरे ने कहा, "अच्छा, सचमुच! मुझे पता था कि तुम नहीं जानते मछली कैसी होती है, लेकिन अब जब तुमने मुझे उसके चिह्न बता दिये हैं, तो मुझे यह भी पता चल गया है कि तुम गाय और ऊँट का अन्तर भी नहीं जानते।"

दिल खोलकर गर न हँसता ट्यूलिप
तो कौन देख पाता उसका स्याह हुआ दिल?
लोट रहा है चाहे वह अपने ही ख़ून में,
शोक न करना उसके लिए कभी
इसी योग्य होते हैं जिनका काला है दिल। (अज्ञात)

यह ठीक है कि "लोगों से उनकी योग्यता के अनुसार ही बात करनी चाहिए।"* इसलिए किसी की सीमित बुद्धि उसके दुर्भाग्य का कारण बन सकती है।

जो जानते हैं और जो नहीं जानते, उनके बारे में शम्स के विचार।

84-5—बलख़ से रवाना होने से पहले इब्राहीमे अधम† ने अपनी बहुत-सी दौलत रूहानियत के कामों में लगा दी। जब भी वह किसी दरवेश को देखता, उसके लिए हर चीज़ क़ुरबान कर देता। अपने शरीर पर उसने बहुत कष्ट सहे।

* एक हदीस।
† रूमी की तरह इब्राहीमे अधम भी बलख़ का रहनेवाला था जो तब फ़ारस का हिस्सा था और अब अफ़ग़ानिस्तान में है।

अपनी शाही पोशाक के नीचे उसने फटे कपड़े पहने और दिन में गुप्त रूप से उपवास किया और भक्ति की। यह सब उसने परमात्मा को पाने की अपनी इच्छा पूरी करने के लिए किया, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। तब वह सोचने लगा, "मुझे क्या करना चाहिए? कोई दरवाज़ा क्यों नहीं खुल रहा?"

एक रात जब वह हलकी नींद सोया हुआ था तो महल के पहरेदारों ने अपनी सीटियाँ बजाना, लकड़ी के डंडे खटकाना, ढोल बजाना और ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ लगाना शुरू कर दिया। बादशाह ने मन ही मन कहा, "अरे पहरेदारो, तुम किस दुश्मन को मुझ तक पहुँचने से रोक रहे हो? दुश्मन तो मेरे अन्दर सोया पड़ा है। जब हमें परमात्मा की दया की ज़रूरत है तो तुम हमारी क्या रक्षा कर सकते हो? रक्षा तो उसकी दया ही कर सकती है, और कोई नहीं।" जब बादशाह इन्हीं ख़यालों में खोया हुआ था तो अचानक उसके हृदय में प्रभु का प्रेम उमड़ आया। वह करवटें बदलता रहा, अपना सिर तकिये पर पटकता रहा और सो न सका। बड़ी अजीब बात है। प्रेमी भला सो कैसे सकता है?

अचानक उसे तेज़ क़दमों की आहट और महल की छत पर होती हलचल सुनाई दी। ऐसा लगता था जैसे बहुत-से लोग आ-जा रहे हों। बादशाह सोचने लगा, "पहरेदारों को क्या हो गया है? क्या वे छत पर दौड़ रहे लोगों को देख नहीं सकते?" भौचक्का हुआ वह क़दमों की आहट सुनता रहा, हथियारबन्द पहरेदारों को आवाज़ नहीं दे सका। अचानक किसी का सिर खिड़की में से अन्दर घुसा और उसने पूछा, "यहाँ बिस्तर पर तुम कौन हो?" उसने जवाब दिया, "मैं बादशाह हूँ। इस छत पर तुम कौन हो?" जवाब आया, "हमारे ऊँटों की दो तीन क़तारें खो गई हैं और हम उन्हें इस महल की छत पर ढूँढ़ रहे हैं।" "क्या तुम पागल हो?" बादशाह ने पूछा।

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "पागल तो तुम हो!"

बादशाह ने रोब से पूछा, "तुम कहते हो कि तुम्हारे ऊँट खो गये हैं। ऊँटों को क्या कोई यहाँ महल की छत पर खोजता है?"

उस व्यक्ति ने पूछा, "ख़ुदा को क्या कोई शाही तख़्त पर खोजता है? क्या लोग 'उसे' यहाँ खोजते हैं?" और बात वहीं ख़त्म हो गई। उन शब्दों को सुनकर बादशाह वहाँ से चला गया और फिर कभी दिखाई नहीं दिया।

परमात्मा को सही जगह खोजने और उसके लिए क़ुरबानी देने की ज़रूरत पर शम्स के विचार।

87-9 — शाह महमूद के वज़ीर ने उससे कहा, "मैं इस मोती को कैसे तोड़ सकता हूँ?" "तुम ठीक कहते हो" कहकर बादशाह ने उसे दिलासा दिया और उसकी आँखें चूम लीं, जो वज़ीर की बात पसन्द आने का संकेत था। असल में, बादशाह को अक़्लमन्द आदमी की तलाश थी और चूमना अक़्लमन्दी की परख का एक हिस्सा था। फिर शाह महमूद ने वह मोती अपने प्रबंधक को दिया। प्रबंधक हमेशा वज़ीर की नक़ल करता था, और इस वक़्त तो उसने ख़ास तौर पर यही किया क्योंकि उसने बादशाह को वज़ीर की प्रशंसा करते और उसका हौसला बढ़ाते देख लिया था।

बादशाह ने प्रबंधक से पूछा, "क्या यह मोती अच्छा है?" प्रबंधक ने अभद्रता* से जवाब दिया, "यह अच्छे से कहीं बढ़कर है।" "क्या यह बढ़िया है?" "लाख गुना बढ़िया।" मोती की बादशाह द्वारा की गई प्रशंसा से अधिक प्रशंसा करते हुए प्रबंधक ने फिर अभद्रता से जवाब दिया। "अब इसे तोड़ दो," बादशाह ने हुक्म दिया। प्रबंधक ने सोचा कि मैं इस मोती को कैसे तोड़ सकता हूँ क्योंकि वज़ीर तो कहता है कि सारे राज्य की क़ीमत इसकी क़ीमत की एक चौथाई है। उसने बादशाह से कहा, "मैं इसे तोड़ कैसे सकता हूँ?" बादशाह ने पूछा, "क्या अब यह हमारे ख़ज़ाने के क़ाबिल है?" प्रबंधक ने बादशाह के शब्द दोहराते हुए कहा, "जी हाँ,

* गुरु और शिष्य के सम्बन्ध में सूफ़ी शिष्टता को बहुत महत्त्व देते हैं। गुरु के प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रश्न में और शब्द जोड़ना अशिष्टता माना जाता है।

यह ख़ज़ाने के क़ाबिल है।" बादशाह ने कहा, "शाबाश!" और विशेष दया के रूप में उसके साथ बहुत ही अच्छा बरताव किया और शानदार पोशाकें दीं। यह भी एक परीक्षा थी।

मोती एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के पास होते हुए आख़िर अयाज़* के पास पहुँचा। बादशाह ने मन ही मन कहा, "मेरा अयाज़!" बादशाह इस चिन्ता और घबराहट से काँप रहा था कि कहीं ऐसा न हो कि अयाज़ का रवैया भी दूसरों जैसा ही हो। लेकिन यह सोचकर उसने अपने आप को दिलासा दिया, "अगर ऐसा हुआ भी तो क्या? मुझे तो वह हर हाल में प्रिय है।"

कमरा एक तरफ़ से बन्द था। अयाज़ के आस-पास कोई नहीं था। बादशाह ने मोती वापस लेने के लिए हाथ फैलाया। उसे अब भी डर था कि अयाज़ कहीं औरों जैसा ही रवैया न अपनाये। अयाज़ ने बादशाह की तरफ़ इस तरह देखा मानों कह रहा हो, "क्या आपको इस बात का डर है कि मैं क्या कहूँगा जब कि मेरी बुद्धि पूरी तरह परिपक्व हो गई है, मेरा हृदय पूर्णतया पवित्र हो गया है और नम्रता मेरा स्वभाव है?" बादशाह के मन में पहले विचार आया कि अयाज़ से कहूँ "बादशाह सलामत, यह मोती ले लो।" लेकिन फिर सोचा, "नहीं, ऐसा कहना ठीक नहीं होगा" और अयाज़ से कहा, "ऐ ग़ुलाम यह मोती लो।" लेकिन उसके "ऐ ग़ुलाम" कहने के पीछे भावना से भरे "बादशाह सलामत!" शब्द छिपे हुए थे। असल में, अयाज़ को यह कहीं ज़्यादा अच्छा लगा कि उसके लिए बादशाह का प्रेम प्रकट नहीं हुआ। अगर उसे "बादशाह" कहा जाता तो उसे दु:ख होता, क्योंकि तब उसे ज़्यादा परेशानी उठानी पड़ती।

अयाज़ ने मोती ले लिया। "क्या यह अच्छा है?" बादशाह ने पूछा। अपनी सहमति प्रकट करते हुए अयाज़ ने उत्तर दिया, "जी, अच्छा है।" उत्तर देते

* अयाज़ ग़ज़नी के सुलतान महमूद का स्वामीभक्त दास और साथी था। यह बताने के लिए कि प्रभु-प्राप्ति के मार्ग की यात्रा प्रेम, निष्ठा, विश्वास तथा नम्रता माँगती है, सूफ़ी-मत के अनुयायी अकसर इस कहानी का उपयोग करते हैं।

हुए उसने बादशाह के प्रश्न में कोई शब्द नहीं जोड़ा। बादशाह ने पूछा, "क्या यह ख़ूबसूरत है?" "जी, ख़ूबसूरत है।" फिर बादशाह ने हुक्म दिया, "इसे तोड़ दो।" अयाज़ ने पहले ही अनुमान लगा लिया था कि बादशाह क्या हुक्म देगा, इसलिए वह दो पत्थर छिपाकर अपने साथ ले आया था। उसने जेब में से वे पत्थर निकाले और एक ही चोट में मोती तोड़ डाला। मोती चूर-चूर हो गया। हर कोई चिल्ला उठा, "ओह!" अयाज़ ने पूछा, "यह ओह और चिल्लाना कैसा?" दरबारियों ने पूछा, "तुमने इतना क़ीमती मोती क्यों तोड़ डाला?" उसने उत्तर दिया, "क्या बादशाह का हुक्म इस मोती से कहीं ज़्यादा क़ीमती नहीं है?" हर किसी ने अपना सिर झुका लिया और लाखों गहरी आहें भरते हुए अपने आप से पूछा, "यह हमने क्या कर डाला?"

बादशाह ने अपने जल्लादों को हुक्म दिया कि कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक के सब मूर्खों को कमरे से बाहर निकाल दो और मार डालो। लेकिन अयाज़ ने कहा, "ऐ बख़्शनहार जहाँपनाह! बख़्श देने में ज़्यादा बड़प्पन है।"

बादशाह ने जवाब दिया, "मैंने तो अपने को पूरी तरह तुम्हारे हवाले कर दिया है। मेरा ध्यान सदा तुम्हीं में लगा रहता है।"*

सच्चे प्यार पर शम्स के विचार।

90—मनुष्य के कुछ दोष उसके हज़ार अच्छे गुणों पर परदा डाल सकते हैं, जब कि उसका एक सद्गुण उसके हज़ार दोषों को ढक सकता है। शैतान में सब दोष नहीं थे, लेकिन वह घृणा का पुतला था। और उसकी क्या दशा हुई? परमात्मा ने कहा "मैं तुम्हें बददुआ देता हूँ।"†

* यह उद्धरण अरबी कविता की एक पंक्ति है जिसके माध्यम से शम्स ने रूमी के प्रति अपना प्रेम व्यक्त किया है।

† ये शब्द परमात्मा ने शैतान से उस समय कहे थे जब उसने मानव-जाति के प्रतिनिधि आदम को नमस्कार न करके परमात्मा की आज्ञा का उल्लंघन किया था।

नेकदिल इनसान कभी किसी के दोषों पर ध्यान नहीं देते।

एक शैख़ किसी जानवर की लाश के पास से गुज़र रहा था। हर कोई नाक पर कपड़ा रखकर और मुँह फेरकर जल्दी से लाश के पास से निकल जाता था। लेकिन शैख़ ने न तो नाक पर कपड़ा रखा, न मुँह फेरा और न तेज़ी से क़दम बढ़ाये। लोगों ने उससे पूछा, "तुम क्या देख रहे हो?" उसने जवाब दिया, "इस लाश के दाँत ख़ूबसूरत और सफ़ेद हैं, और यह जानवर अपनी हालत के ज़रिये हमसे कुछ कह रहा है।"

यह कहानी फ़रीद अल-दीन अत्तार की रचना 'मुसीबतनामा' से ली गई है। कहानी में शैख़ ईसा मसीह हैं। जानवर की लाश सब जीवों की नश्वरता की ओर संकेत करती है। शैख़ हर चीज़ में परमात्मा का सौन्दर्य देख सकता था, उस चीज़ में भी जो दूसरों को बदबूदार और घिनौनी लगती है।

102-3 — एक व्यक्ति अपने मन से आनन्द लेता है, दूसरा अपने हृदय के द्वारा, और तीसरा परमात्मा के द्वारा आनन्द प्राप्त करता है। तीनों में अन्तर है। आनन्द प्राप्त करने का और कोई उपाय है ही नहीं; उपाय, नि:सन्देह, एक ही है और वह है "ख़ुदा को कर्ज़ दिया करो (क़ुरान 73/20)।" लेकिन परमात्मा को भला किस चीज़ की ज़रूरत है?

"ऐ मूसा, मैं भूखा था और तुमने मुझे खाना नहीं दिया।" "ऐ मूसा, अगर मैं तुम्हारे दर पर आऊँ तो तुम क्या करोगे?" "ऐ ख़ुदा, तुम्हें तो ऐसी चीज़ों की ज़रूरत नहीं है।" "ऐ मूसा, अगर मैं आ गया होता तो ...?"

"ऐसा कैसे हो सकता है?" मूसा के इतना ही कहने पर परमात्मा ने पूछा, "अगर ऐसा हो जाये, तो तुम क्या करोगे?" अन्तत: परमात्मा ने कहा, "मैं बहुत भूखा हूँ। बहस छोड़ो और खाना बनाओ। मैं कल तुम्हारे पास आऊँगा।" मूसा ने खाना तैयार किया। सुबह-सुबह वह सब कुछ तैयार करने लगे, लेकिन जब पूरी तैयारी हो गई तो जाँच करने पर उन्होंने पाया

कि पानी कुछ कम है। ठीक उसी समय एक दरवेश वहाँ आ पहुँचा और उसने कहा, "ख़ुदा के वास्ते मुझे कुछ दो; मुझे कुछ रोटी दो।" मूसा ने "आपका स्वागत है" कहकर उसे दो घड़े पकड़ा दिये और पानी लाने को कहा। दरवेश ने कहा, "मैं हज़ारों तरह से सेवा करता हूँ," और पानी ला दिया। मूसा ने उसे रोटी दी, और दरवेश धन्यवाद करते हुए विदा हो गया।

मूसा ने यह सब कष्ट परमात्मा के लिए उठाया। ऐसा क्यों हुआ? उन्हें सोने-चाँदी का काम करने की कला का सचमुच इतना ज्ञान था कि उन्हें तोरा* को सोने के अक्षरों में लिखने का काम सौंपा गया था। दिन बीत गया और मूसा परमात्मा के इन्तज़ार में बैठे रहे। आख़िर मूसा ने खाना अपने पड़ोसियों में बाँट दिया, लेकिन वह इस समस्या पर विचार करते रहे कि इसमें राज़ क्या है। क्या यह उन्हें अपने पड़ोसियों के प्रति उदार होने का अवसर देने के लिए था? या यह भक्ति थी कि उन्होंने वह किया जो परमात्मा ने उन्हें आदेश दिया था? आख़िर जब [रूहानी अभ्यास के दौरान] आन्तरिक उन्नति का क्षण आया तो मूसा ने परमात्मा से शिकायत की, "तुमने वचन दिया था, लेकिन तुम आये नहीं।" परमात्मा ने उत्तर दिया, "मैं आया था, लेकिन क्या कभी ऐसा होगा कि तुम पानी के दो घड़े लाने का हुक्म दिये बिना मुझे रोटी दो?"

ध्यान रहे कि परमात्मा हमारे अन्दर भी है और दूसरों के अन्दर भी।

105 — हारून-अल-रशीद† ने अपने सेवकों से कहा, "लैला को मेरे पास लाओ। मैं उसे देखना चाहता हूँ क्योंकि मजनूँ‡ ने उसके प्रेम में दुनिया

---

* यहूदियों का धर्म-ग्रन्थ।

† हारून-अल-रशीद अब्बस्सिद राजवंश (सन् 750-1258 ईसवी) के एक ख़लीफ़ा थे।

‡ लैला और मजनूँ प्रसिद्ध प्रेमी थे। गुरु और शिष्य के सम्बन्ध के लिए सूफ़ी इनकी कहानी का प्राय: एक रूपक-कथा के रूप में प्रयोग करते हैं।

में ऐसी हलचल मचा दी है कि पूरब से पश्चिम तक सभी प्रेमी अपनी कहानियों में लैला-मजनूँ की कहानी की झलक देखने लगे हैं।

कई तरह से फ़रेब करके और बहुत-सा पैसा ख़र्च करके वे लोग आख़िर में लैला को हारून के पास ले आये। उत्सुकता-भरे मन से हारून लैला के कमरे में गया जहाँ मोमबत्ती की रोशनी थी। हारून बार-बार थोड़ी देर के लिए लैला को टकटकी लगाकर देखता और फिर नज़र नीचे कर लेता। उसे अपनी उम्मीद के अनुसार उसका सौन्दर्य दिखाई नहीं दिया। उसने मन में सोचा कि अगर मैं इससे कुछ बोलने को कहूँ तो शायद इसका सौन्दर्य दिखाई दे जाये। इसलिए उसने लैला से पूछा, "क्या तुम लैला हो?" लैला ने जवाब दिया, "हाँ, मैं निःसन्देह लैला हूँ, लेकिन तुम मजनूँ नहीं हो। जो आँखें मजनूँ के पास हैं वे तुम्हारे पास नहीं हैं। मुझे मजनूँ की आँखों से देखो। प्रेमिका को प्रेमी की आँखों से देखना चाहिए।"

बुद्धिजीवियों की समस्या यह है कि वे परमात्मा को प्रेम की दृष्टि से नहीं देखते। वे उसे ज्ञान, अध्यात्म-विद्या और दर्शनशास्त्र की दृष्टि से देखते हैं। प्रेम की आँखें एक अलग ही कहानी कहती हैं।

प्रभु के धाम में केवल प्रेम का ही महत्त्व है।

107—इस अधम संसार की चीज़ों से परमात्मा को कोई कैसे लुभा सकता है? उसका भक्त तो बहुत बढ़िया चीज़ से भी ऊब जाता है।

एक सीपी के अन्दर एक मोती बन्द था, और वह सीपी दूसरी सीपियों को देखती हुई संसार की यात्रा कर रही थी। चाहे दूसरी सीपियों में से किसी के अन्दर भी मोती नहीं था, फिर भी वे सीपी और मोती की कहानियाँ सुना रही थीं। जिस सीपी में मोती था, वह भी उनके साथ मिलकर ये कहानियाँ सुनाने लगी। जब दूसरी सीपियों ने उससे पूछा, "क्या तुम्हारे पास वह मोती है? हम तो केवल उसकी कहानियाँ सुनती हैं," तो उसने जवाब दिया, "मैं क़सम खाकर कहती हूँ कि आपकी तरह मैं भी मोती के बारे में सिर्फ़

सुनती ही हूँ।" वे कहतीं, "अरी चालबाज़, धोखेबाज़, वह मोती तो तुम्हारे पास है, लेकिन तुम हमें बहका रही हो," और वह जवाब देती, "नहीं, मैं क़सम खाकर कहती हूँ कि मेरे पास मोती नहीं है।" वह सीपी उसी तरह संसार में घूमती रही जब तक कि एक दिन उसकी एक असाधारण जौहरी से भेंट नहीं हो गई जो मोती को पाने का हक़दार था।

अगर तुम इसको मोती वाली सीपी कहते हो तो औरों को यह नाम मत दो। एक ऐसी सीपी को, जिसके अन्दर परमात्मा के रहस्यों का मोती बनकर तैयार हो गया है, उसी नाम से कैसे पुकारा जा सकता है जिससे मिट्टी के एक ठीकरे को पुकारा जाता है?

शम्स केवल बातें करनेवालों और अमल करनेवाले
में अन्तर बता रहे हैं जो जानता है कि
मोती को कहाँ जड़ा जा सकता है।

108—एक खच्चर ने एक ऊँट से पूछा, "मैं अकसर सिर के बल क्यों गिर जाता हूँ जब कि तुम नहीं गिरते?" ऊँट ने जवाब दिया, "मैं जब पहाड़ी रास्ते पर पहुँचता हूँ तो आगे की तरफ़ वहाँ तक देख सकता हूँ जहाँ रास्ता ख़त्म होता है। मैं लम्बा हूँ, मेरी नज़र तेज़ है, और मैं लगन के साथ काम करता हूँ, इसलिए मैं एक ही नज़र में आगे और पीछे दोनों ओर का सारा रास्ता देख सकता हूँ।"

ऊँट उस शैख़ जैसा है जिसकी नज़र पैनी है। जिस किसी का भी उससे निकट का सम्बन्ध होता है, वह उसके व्यक्तित्व के गुणों को अधिक ग्रहण करता है। जिसके साथ तुम उठते-बैठते हो, निःसन्देह उसका स्वभाव अपना लेते हो, और जिस वातावरण में तुम रहते हो उसका भी तुम पर प्रभाव पड़ता है। पत्थर और पहाड़ देखने से तुम्हें थकान महसूस होती है, और जब हरियाली और फूल देखते हो तो ताज़गी महसूस करते हो, क्योंकि तुम्हारा साथी तुम्हें अपनी दुनिया में खींच ले जाता है।

यही कारण है कि जब तुम आध्यात्मिक रचनाएँ पढ़ते हो तो तुम्हारा दिल हलका हो जाता है और खिल उठता है। जब तुम पैग़म्बरों को याद करते हो तो उनका स्वरूप तुम्हारी आत्मा का साथी बन जाता है।

अच्छी संगति में रहना।

109-10 — दुनियादारों की संगति आग की तरह होती है, कोई इब्राहीम ही इस आग की लपटों से बच सकता है। निम्रोद* ने यह देखने के लिए कि कौन-कौन जल जाता है, बाहर आग जलवाई, जब कि इब्राहीम ने भी आग जलाई, अपने अन्दर प्रभु-प्रेम की आग।

इब्राहीम ने कहा, "ऐ निम्रोद, तुम परमात्मा की शक्ति की उपज हो, जब कि मैं उसकी दया की उपज हूँ। 'मेरे अन्दर क्रोध से पहले दया आ जाती है'।"† इब्राहीम ने पूछा, "अगर दया पहले होती है तो फिर इम्तिहान लेने की क्या ज़रूरत है?" परमात्मा ने उत्तर दिया, "दया निःसन्देह पहले होती है, लेकिन निजी अनुभव के बिना दया नहीं होती।" इसलिए इब्राहीम ने परमात्मा का नाम लिया और आग में कूद गये। तब परमात्मा ने कहा, "अनादि काल से दया की विशेषता यह है कि शक्ति ही शक्ति को जन्म देती है, इसलिए शक्ति की दया शक्ति में ही है।"

हाँ, परमात्मा के मित्रों को हमेशा परीक्षाएँ देनी ही पड़ती हैं।

परमात्मा दया का सागर है, इसलिए उसकी शक्ति चाहे उसका क्रोध जान पड़े, पर वह उसकी दया का ही स्रोत होती है। परमात्मा की शक्ति ने भले ही यह सुनिश्चित कर लिया कि इब्राहीम को आग की लपटों में जाना होगा, लेकिन उसने उसे पूर्ण विश्वास प्रदान करने की कृपा भी की।

---

* यहूदी और इसलामी परम्पराओं से हमें पता चलता है कि निम्रोद नाम के एक बादशाह ने हज़रत इब्राहीम को भट्टी में फिंकवा दिया था, लेकिन वे सही-सलामत बाहर आ गये थे।

† ये शब्द परमात्मा ने मुहम्मद साहिब से कहे थे।

113 — बादशाह ने अपने वज़ीर से कहा, "आओ, मोची से मिलने चलें।" वज़ीर ने जवाब दिया, "बादशाह सलामत, यह ख़याल रहे कि अन्दर दाख़िल होने पर आम दस्तूर निभाने की ज़रूरत नहीं। बस, अन्दर जायें और एक कोने में बैठ जायें। मोची से दुआ-सलाम की उम्मीद न रखें। अगर वह किसी की तरफ़ ध्यान नहीं देता तो उसकी वजह यह नहीं कि किसी भी तरह उस तक पहुँचा नहीं जा सकता या वह किसी को अन्दर आने नहीं देता। कोई भी भिखारी अन्दर जा सकता है। उसकी उदारता का दरवाज़ा हमेशा पूरा खुला रहता है।"

जब बादशाह अन्दर गया तो उसने पाया कि वज़ीर ने जो कहा था वह सही था। मोची को देखने के अलावा और कुछ भी सम्भव नहीं था। बादशाह ने मोची से सिर्फ़ उसका हाथ चूमने की इजाज़त माँगने की हिम्मत की और उसके बाद अपने अहंकारपूर्ण राजसी जीवन में लौट आया।

पूर्ण सन्त के ऊँचे दर्जे के सामने दुनियावी रुतबा कुछ भी नहीं।

114-5 — मैं तैराक और सौदागर की कहानी तुम्हें पहले ही सुना चुका हूँ। सौदागर के पास पचास आदमी थे जो उसका क़ीमती सौदा लेकर जल-थल पर हर जगह की यात्रा किया करते थे। मोती की खोज में एक यात्रा के दौरान उसने एक प्रसिद्ध तैराक के बारे में सुना। जब वह तैराक के पास से गुज़रा तो तैराक उसके पीछे हो लिया। मोती कैसा है और किस हालत में है, यह बात उसके और सौदागर के बीच एक राज़ ही रही। सौदागर को मोती के बारे में एक सपना आया और यूसुफ़ की तरह उसे विश्वास था कि उसका सपना सच्चा है। यूसुफ़ को सपनों का अर्थ लगाने के अपने ज्ञान पर पूरा विश्वास था, इसलिए अब उसने सपने में सूरज, चाँद और एक तारे को अपने सामने झुकते देखा तो उसने उस सपने का सही अर्थ लगाया था। इस योग्यता के कारण यूसुफ़ क़ैदख़ाने में अपना वक़्त ख़ुशी से बिता सका था।

आज तैराक मौलाना हैं, सौदागर मैं हूँ, और मोती हमारा राज़ है। मोती तक पहुँचने का रास्ता केवल मैं ही जानता हूँ, इसलिए लोग मुझसे पूछते हैं कि क्या वे भी मोती तक पहुँच सकते हैं? मैं उन्हें बताता हूँ कि वे पहुँच सकते हैं, लेकिन इस रास्ते पर चलना पड़ेगा। मैं तुमसे कुछ नहीं माँगता। जब तुम ज़रूरत के एहसास से मेरे पास आते हो तो असल में तुम मुझसे परमात्मा तक पहुँचने का रास्ता पूछ रहे होते हो। तुम कहते हो, "मेहरबानी करके हमें बताइये।" मेरा जवाब होता है कि रास्ता यह है। बेशक, तुम्हें आक़सरा से होते हुए ही जाना होगा और "जान और माल से ख़िदमत (क़ुरान 88/9)" के पुल पर से भी ज़रूर गुज़रना होगा। पहले अपनी दौलत का त्याग करना पड़ता है, और उसके बाद भी बहुत कुछ करना होता है। फिर भी, पहली बात तो यही है कि रास्ता आक़सरा से होकर जाता है; दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

अगर तुम आक़सरा में से नहीं गुज़रते हो तो तुम्हारा सफ़र रेगिस्तान में से होगा। राक्षस और भेड़िये ने अगर एक बार तुम्हें रास्ते से भटकते देख लिया तो वे तीर की-सी तेज़ी से तुम्हारे पास आयेंगे, तुम्हारे सफ़र के साथी बन जायेंगे, और तुम्हें निवाला बनाकर एक ही बार में निगल जायेंगे। इसलिए अब तुम क्या करोगे और क्या दोगे? कौन-सी चीज़ तुम्हारे दिल को रोक रही है? इस बारे में मुझे सब बताओ। अगर कोई रुकावट है तो बोलो। मैं तुम्हें रास्ता समझा सकता हूँ ताकि तुम्हारे लिए यह आसान हो जाये। मैं रास्ते को तुमसे बेहतर जानता हूँ।

मैं तुम्हें मोती की यह कहानी सुना रहा हूँ, लेकिन तुम एक पैसा भी छोड़ने को तैयार नहीं हो।

शम्स: दुनिया की धन-दौलत छोड़ दो, अपना सब कुछ
सौदागर के हवाले कर दो, और उसके पद-चिह्नों
पर चलकर मोती हासिल कर लो।

130 — जब एक व्यक्ति ऊँचे स्वर में क़ुरान का पाठ कर रहा था तो बोहलूल* ने उस पर एक पत्थर फेंका। लोगों के पूछने पर कि तुमने ऐसा क्यों किया उसने जवाब दिया, "क्योंकि वह झूठ बोल रहा है।" इससे शहर में खलबली मच गई [क्योंकि ऐसा माना जाता है कि क़ुरान में ख़ुदा के ही शब्द दर्ज हैं]। ख़लीफ़ा ने बोहलूल को बुलाया और उससे पूछा कि उसने ऐसा क्यों कहा। उसने जवाब दिया, "मैं उसकी आवाज़ की बात कर रहा हूँ, उसके शब्दों की नहीं।" ख़लीफ़ा ने पूछा, "उसके शब्द उसकी आवाज़ से अलग कैसे हो सकते हैं? तुम ये कैसी बातें कर रहे हो?" बोहलूल ने जवाब दिया, "फ़र्ज़ करें कि आप ख़लीफ़ा की हैसियत से कुछ लोगों के लिए किसी जगह यह हुक्म लिख देते हैं, "यह हुक्म सुनते ही फ़ौरन चले आओ।" सन्देश ले जानेवाला हुक्म लेकर उनके पास जाता है और पढ़कर सुना देता है। अगर वे हर रोज़ इस हुक्म को पढ़ते रहते हैं लेकिन आते नहीं, तो वे पढ़ने में भले ही ईमानदारी दिखाते हों, लेकिन क्या वे हुक्म मानने में ईमानदार हैं?"

धर्म-पुस्तक पढ़ लेना ही काफ़ी नहीं, उसमें जो लिखा
है उस पर अमल करना भी ज़रूरी है।

134-5 — एक चूहे ने ऊँट की रस्सी अपने दाँतों के बीच दबा ली और ऊँट के आगे-आगे चलने लगा। ऊँट एक बार पहले अपने स्वामी की आज्ञा का उल्लंघन कर चुका था जिसका उसे अफ़सोस था, इसलिए वह चूहे के पीछे-पीछे चलने लगा। चूहे ने सोचा कि मैं अपनी शक्ति से ऊँट को खींच रहा हूँ और ऊँट ने मेरी शक्ति के आगे सिर झुका दिया है। इसी विचार

* बोहलूल एक आत्मज्ञानी था जो अपनी शिक्षा लोगों तक पहुँचाने के लिए एक पागल का-सा आचरण करता था।

की एक किरण ऊँट के मन में भी कौंध गई और उसने सोचा, "अच्छा, मैं अभी तुम्हें सबक़ सिखाता हूँ।"

थोड़ी देर में ही वे एक छोटी नदी पर पहुँचे, और जब चूहा रुक गया तो ऊँट ने उससे रुकने का कारण पूछा। चूहे ने उत्तर दिया कि यह नदी बड़ी है और पानी गहरा है। ऊँट ने कहा, "मैं देखता हूँ कि पानी कितना गहरा है। तुम यहाँ किनारे पर इन्तज़ार करो।" ऊँट पानी में कुछ क़दम चला, और फिर लौट आया और चूहे से कहा, "आ जाओ, पानी ज़्यादा नहीं है, केवल घुटनों तक है।" चूहा बोला, "ठीक है, लेकिन तुम्हारे और मेरे घुटनों में बहुत बड़ा अन्तर है।" ऊँट ने कहा, "अच्छा, तो क्या अब तुम्हें अपने घमण्ड और गुस्ताख़ी पर अफ़सोस है? अगर तुम्हें फिर ऐसी गुस्ताख़ी करने का ख़याल आये तो ध्यान रहे कि तुम किसी ऐसे को ढूँढ़ो जिसके घुटने तुम्हारे घुटनों से ऊँचे न हों।" चूहे ने कहा, "हाँ, मुझे अफ़सोस है, लेकिन कृपा करके मेरी सहायता करो।" इसलिए घुटनों के बल झुककर ऊँट बोला, "ऊपर चढ़ो और मेरे कोहान पर बैठ जाओ। मैं तैरकर यह छोटी-सी नदी पार कर सकता हूँ, बैक्ट्रस* दरिया तो छोटा है, मैं तो समुन्दर भी पार कर सकता हूँ, क्योंकि मैं निडर हूँ।"

मिथ्याभिमान करके पश्चात्ताप करना।

142-3 — रूमी ने कहा, "एक पहलवान जब भी किसी से कुश्ती करने की कोशिश करता, हार जाता था। एक दिन उसने किसी ऐसे असहाय व्यक्ति को हरा दिया जिसने पहले कभी कुश्ती नहीं लड़ी थी, और जो संयोगवश वहाँ उपस्थित था। पहलवान ने उसे गरदन से पकड़ लिया और कहा, 'मैं इसे मार डालूँगा'। लोगों ने पूछा, 'क्यों? इसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? तुम ही वह आदमी हो जिसे दुनिया के तमाम पहलवानों ने हराया है। इस बेचारे

* मध्य एशिया में एक दरिया।

को तुम क्यों मार डालना चाहते हो?' उसने जवाब दिया, 'नहीं, मैं तो इसे ज़रूर मार डालूँगा'। लोगों ने फिर पूछा, 'लेकिन क्यों?' उसने जवाब दिया, 'यह कैसे हो सकता है कि मैं अपनी पूरी ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक ही इनसान को हराऊँ और उसे मार न डालूँ?'

"लोग बादशाह के पास गये और फ़रियाद की, 'ख़ुदा के लिए इस ग़रीब को बचायें।' बादशाह ने हुक्म दिया कि पहलवान को उसके सामने पेश किया जाये। जब लोग उसे ले आये तो बादशाह ने उससे कहा, 'चाँदी के हज़ार सिक्के ले लो और इस आदमी को छोड़ दो जिसे तुमने हराया है।' लेकिन पहलवान ने कहा, 'मनुष्य के शरीर के हर अंग की क़ीमत कम से कम चाँदी के हज़ार सिक्के होती है। इसके शरीर के कितने हिस्से हैं?'

"इनसान की ज़िन्दगी अनमोल है। अगर किसी में नम्रता है और उसे परमात्मा की सच्ची चाह है, तो वह जानता है कि इसकी क़ीमत नहीं लगाई जा सकती।"

मानव-शरीर का महत्त्व तब समझ में आता है जब
आत्मा की दिव्य धरोहर प्राप्त करने के लिए
इसका प्रयोग किया जाता है।

174-5 — जब हज़रत मूसा को आन्तरिक वास्तविकता का अनुभव हुआ तो वे उसमें खो गये, पूरी तरह डूब गये, और उन्होंने परमात्मा से प्रार्थना की, "मुझे दर्शन दो।" परमात्मा ने उत्तर दिया, "क्या तुम मेरा दीदार नहीं कर सकते? अगर तुम इस तरह मेरा दर्शन करना चाहते हो तो कभी नहीं कर पाओगे।" इस तरह हैरान करनेवाले ज़ोरदार शब्दों में प्रार्थना अस्वीकार करने का मतलब था कि जब तुम पहले ही परमात्मा के दर्शन में खोये हुए हो तो यह क्यों कहते हो, "मेरे सामने आओ ताकि तुम्हारा दर्शन कर सकूँ?" वरना यह तो निश्चित है कि हज़रत मूसा के बारे में कोई सन्देह हो ही नहीं सकता जो परमात्मा के मित्र थे, उसे इतने प्यारे थे। क़ुरान के अधिकांश

भाग में उन्हीं के बारे में लिखा हुआ है, और सबसे ज़्यादा ज़िक्र उसी का किया जाता है जिससे सबसे ज़्यादा प्यार होता है।

परमात्मा ने हज़रत मूसा से कहा, "पर्वत को देखो।" परमात्मा के कहने का यह मतलब था कि हज़रत मूसा अपने वास्तविक स्वरूप को देखें और उसके लिए उन्होंने 'पर्वत' शब्द का प्रयोग किया–क्योंकि वह स्वरूप भव्य, शक्तिशाली और स्थायी होता है। परमात्मा का मतलब था: "अगर तुम अपने अन्दर झाँकोगे तो तुम मुझे देखोगे।" यह बात इस कथन जैसी है, "जो अपने मन को जानता है, वह अपने ख़ुदा को जानता है।"* जब हज़रत मूसा ने अपने अन्दर दृष्टि डाली तो उसे परमात्मा का दर्शन हुआ, और परमात्मा को प्रकट हुआ पाकर उसके अहं का पर्वत चकनाचूर हो गया। वरना, परमात्मा क्यों अपने मित्र की प्रार्थना अस्वीकार करता और अपने आप को एक निर्जीव पदार्थ के रूप में व्यक्त करता? इस पर हज़रत मूसा ने कहा, "मुझे अपने किये पर अफ़सोस है" जिसका मतलब था, "मुझे अपने इस गुनाह पर अफ़सोस है कि पहले ही तुम्हारे दर्शन में खोया होने पर भी मैं दर्शन की प्रार्थना करता रहा।"

सब कुछ परमात्मा है, परमात्मा के सिवा और कुछ नहीं।

179—बू नजीब† –परमात्मा उनकी आत्मा को पाप से मुक्त करे–एक आध्यात्मिक समस्या से जूझ रहे थे जिसे सुलझाने के लिए वे चालीस दिन तक भक्ति में बैठे रहे। कभी-कभी उन्हें अपने अन्दर एक दिव्य स्वरूप दिखाई देता जो संकेत देता कि उनकी समस्या एक विशेष शैख़ के पास जाये बिना हल नहीं हो सकती। इसलिए उन्होंने सोचा, "मैं उनसे मिलने जाऊँगा,

* एक हदीस।

† शैख़ ज़िया अल-दीन अबू नजीब अब्द अल-क़ाहिर सोहरेवर्दी जो बू नजीब नाम से जाने जाते हैं, एक प्रसिद्ध फ़ारसी सूफ़ी थे।

पर वे मुझे मिलेंगे कहाँ?" तभी उन्हें अपने अन्दर आवाज़ सुनाई दी, "तुम उनसे नहीं मिल सकोगे।" बू नजीब ने पूछा, "तो मुझे क्या करना चाहिए?" अन्दर से उत्तर मिला, "अपनी चालीस दिन की भक्ति छोड़ दो। आम लोगों की मसजिद में जाओ और नम्रता से पूरी भीड़ पर नज़र दौड़ाओ। हो सकता है कि वहाँ तुम उसका ध्यान अपनी तरफ़ खींच सको और वह तुम्हें देख ले।" अब बू नजीब इस स्थिति में थे।

अगर मुझे मुर्शिद न मिले होते तो मैं ज़िन्दा नहीं रह सकता था।

आध्यात्मिक गुरु की आवश्यकता।

179-80—किसी की मृत्यु पर एक पेशावर मातम करनेवाले को मातम का काम सौंपा गया। उसने मृत व्यक्ति की उपलब्धियों के बारे में पूछा। "क्या वह विद्वान् था?" उत्तर मिला, "नहीं।" उसने पूछा, "क्या वह नेक-पाक था, या उसने इस सम्बन्ध में कोई क़दम उठाया?" जवाब फिर नहीं में मिला। फिर क़िबला की तरफ़ मुँह करके उसने पूछा, "क्या उसके बीवी-बच्चे थे?" "नहीं।" "और कुछ?" लोगों ने कहा, "नहीं।" असल में जो कुछ भी उसने पूछा, मरनेवाले में उसका कोई निशान तक नहीं मिला। इसलिए मातम करनेवाला कहने लगा, "ओ जीवन में भी ख़ुशक़िस्मत रहनेवाले और उससे छुटकारा पाने में भी ख़ुशक़िस्मत इनसान! अत्यन्त उत्तम था तुम्हारा जीने का अन्दाज़, और अत्यन्त उत्तम रहा तुम्हारा मरने का अन्दाज़ भी!"

सत्य तक पहुँचने के लिए अनासक्ति और मन से छुटकारा पाने की आवश्यकता है।

180—किसी ने एक नाई से कहा कि मेरी दाढ़ी के सफ़ेद बाल काट दो। नाई को इतने ज़्यादा सफ़ेद बाल दिखे कि उसने दाढ़ी ही काटकर उस आदमी के हाथ में रख दी और कहा, "तुम्हीं सफ़ेद बाल चुनकर निकाल लो, मैं बहुत व्यस्त हूँ।"

187-8 — अपने एक शिष्य की कहानी सुनाने के बाद, जो चालीस दिन भक्ति करके अपने अन्दर एक ख़ास मुक़ाम पर पहुँच गया था, पैग़म्बर ने कहा: "अगर कोई केवल परमात्मा को पाने के उद्देश्य से भक्ति करेगा, तो उसकी बातों से उसके आन्तरिक अनुभव के ख़ज़ाने का ज्ञान होगा।" उसके बाद उनका एक और शिष्य परमात्मा की चालीस दिन की भक्ति और अनुनय-विनय में लग गया, लेकिन उसे अन्दर कोई प्रगति नज़र नहीं आई। इसलिए वह पैग़म्बर के पास गया और बोला, "पैग़म्बर साहिब, मैंने चालीस दिन पूरी कोशिश की, लेकिन मुझे ऐसा कोई अनुभव नहीं हुआ जो उस व्यक्ति की हालत से मेल खाता हो जिसका क़िस्सा आपने हमें सुनाया था, और मैं जानता हूँ कि आपके बयान में कोई ग़लती नहीं होती।" पैग़म्बर साहिब ने जवाब दिया, "मैंने कहा था, 'केवल परमात्मा को पाने के उद्देश्य से।' सफलता प्राप्त करने के लिए यह ज़रूरी है कि परमात्मा को पाने की इच्छा पवित्र और सच्ची हो, और साथ में दूसरी कोई भी इच्छा या उद्देश्य न हो। किसी और के असाधारण शब्दों और अनुभवों के बारे में सुनकर तुमने उसकी जैसी हालत में पहुँचने का लालच किया, परमात्मा को पाने की कामना नहीं की।"

पैग़म्बर के अनुसार प्रभु-प्राप्ति की अवस्था प्राप्त करने की लालसा और प्रभु को पाने की लालसा में अन्तर।

190-1 — सात सूफ़ी दरवेश कुछ दिनों से एक मकान में इकट्ठे रहने का आनन्द ले रहे थे। उन्हें खाने की ज़रूरत थी, लेकिन वे एक-दूसरे को छोड़कर खाने की तलाश में नहीं जाना चाहते थे। घर के मालिक को जब इस बात की ख़बर हुई, तो उसने आकर शिष्टाचार के नाते दूर से झुककर सलाम किया और पूछा, "आपको किस चीज़ की ज़रूरत है?"

उनमें से एक ने कहा, "जाओ और एक बड़ी दावत की तैयारी करो, हमारे लिए बहुत-सा खाना बनाओ और उसके बाद हर किसी को घर से

बाहर कर दो, ख़ुद भी बाहर चले जाओ। इस बात का ध्यान रहे कि कोई हमें परेशान न करे।"

उसने दावत की तैयारी शुरू कर दी, और अपने आप से कहा, "यहाँ केवल सात आदमी हैं, लेकिन इस ख़्याल से कि कोई कमी न रह जाये मैं बीस आदमियों के लिए खाना तैयार कर रहा हूँ।" "ख़बरदार! आज कोई इस मकान के नज़दीक नहीं आयेगा," कहते हुए उसने अपनी पत्नी और परिवार को वहाँ से हटा दिया। उसने कटोरों में पकवान डाला, बहुत-सी रोटियाँ साथ रखीं और लाकर इन्तज़ार कर रहे उन सात आदमियों से कहा, "यह आपकी सेवा में हाज़िर है। आप मेरी चिन्ता न करें, मैं शाम तक वापस नहीं आऊँगा।" फिर जाने का बहाना करते हुए उसने दरवाज़ा बन्द किया और घर की अटारी में चला गया जहाँ से छत के एक सूराख़ में से सूफ़ियों को देखने लगा। वह यह देखने को उत्सुक था कि वे लोग इतना ज़्यादा खाना कैसे खा सकते हैं।

एक-एक करके सातों ने अपने-अपने कटोरे अपनी तरफ़ सरकाये और खाना शुरू किया। वे तब तक खाते रहे जब तक उनके कटोरे ख़ाली नहीं हो गये और तब उन्होंने कटोरे फिर से भर लिए। अचानक उनमें से एक के पेट में दर्द हुआ और वह मर गया।

क्योंकि हर एक को अपने स्रोत को लौट जाना था, इसलिए उसने परमात्मा को यह कहते सुना, "मेरे पास लौट आओ।" वह इतना सच्चा भक्त था कि परमात्मा में लगभग विलीन हो चुका था। वह इतनी रूहानी तरक़्क़ी कर चुका था कि एक पतला-सा परदा ही बाक़ी रह गया था, जिसमें से दूसरे उसे देख सकते थे।

बाक़ी सूफ़ी खाना खाते रहे। एक घण्टा बीतने पर एक और सूफ़ी के पेट में दर्द हुआ और वह भी मर गया। इसी तरह एक को छोड़ बाक़ी सब सूफ़ी मर गये। जब सिर्फ़ वही बाक़ी रह गया तो घर का मालिक और इन्तज़ार नहीं कर सका। वह नीचे उतरा, दरवाज़ा खोला और बाहर से आने

का बहाना किया। उसने उस सूफ़ी से पूछा, "शैख़ साहिब, खाना कैसा रहा? क्या वह काफ़ी था? क्या वह आपके हुक्म के मुताबिक़ था?" सूफ़ी ने कहा, "नहीं।" "लेकिन कैसे नहीं?" उसने पूछा। "अगर वह भरपूर और काफ़ी होता तो मैं अभी ज़िन्दा न होता, साँस न ले रहा होता।"

सम्पूर्ण और सन्तोषजनक उत्तर वह होता है जिसमें सवाल-जवाब की गुंजाइश नहीं रहती। जब तक और सवाल-जवाब करने की इच्छा बनी रहती है, उत्तर पूरा नहीं होता। अगर एक और शब्द या एक और उत्तर से किसी को आनन्द मिलता है तो इससे यह सिद्ध होता है कि उसके अन्दर अभी भी कोई सन्देह बना हुआ है तथा और स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

भोजन यहाँ प्रश्नों और शंकाओं का प्रतीक है।

194—उन्होंने पैग़म्बर साहिब से प्रार्थना की, "ख़ुदा के लिए हमें कोई निशानी बताइये। हमें बताइये कि आपकी दया-मेहर किस पर ज़्यादा होती है।" पैग़म्बर साहिब ने जवाब दिया, "उस पर जो ख़ुदा को ज़्यादा याद करता है।" अब याद तो ज़बान से भी किया जाता है और रूह से भी।

बायज़ीद बस्तामी जब भी किसी नये शहर पहुँचते तो वहाँ के क़ब्रिस्तान में ज़रूर जाते। एक बार क़ब्रिस्तान में चलते-चलते उन्हें आदमियों की कुछ खोपड़ियाँ मिलीं। उन्हें अन्दर से प्रेरणा मिली, "इन्हें उठाओ और बहुत ग़ौर से देखो।" जब उन्होंने ऐसा किया तो देखा कि कुछ खोपड़ियों के कानों की नलियाँ बिलकुल बन्द थीं, कुछ की एक नली एक कान से दूसरे कान तक जा रही थी, और कुछ की कान से गले तक जाती थी। उसने पूछा, "ऐ ख़ुदा, लोगों को तो ये खोपड़ियाँ एक-सी दिखाई देती हैं, लेकिन तुम मुझे दिखा रहे हो कि ये एक-दूसरे से भिन्न हैं। अब तुम्हीं यह पहेली सुलझाओ। ये खोपड़ियाँ ऐसी क्यों हैं?" तब उन्हें अन्दर से आवाज़ आई, "जिन खोपड़ियों के कानों की नलियाँ नहीं हैं, उन्हें मेरा 'शब्द' सुनाई नहीं दिया। जिनके कान नली से जुड़े हुए हैं, उन्होंने मेरा 'शब्द' एक कान से सुना,

दूसरे से निकाल दिया। केवल उन्हीं ने जिनकी नली गले तक जाती है मेरा 'शब्द' सुना और ख़ुशी से अपना लिया।"

सत्य के बारे में केवल सुनो नहीं, उसका अनुभव भी करो।

213—सब पक्षी सीमुर्ग़ से मिलने गये। रास्ते में सात समुन्दरों को पार करते हुए कुछ पक्षी सर्दी से या केवल समुन्दर की गन्ध से ही मर गये। जितने पक्षी सफ़र पर निकले थे उनमें से केवल दो ही बचे। उन्हें इस बात का अहंकार हो गया कि उनके अलावा सब मर गये और केवल वे ही जाकर सीमुर्ग़ से मिल सकेंगे। जैसे ही उन्होंने सीमुर्ग़ को देखा उनकी चोंचों से दो बूँद ख़ून गिरा और वे भी मर गये। सीमुर्ग़ तो क़ाफ़ पहाड़ से परे रहता है। परमात्मा ही जानता है कि क़ाफ़ पहाड़ से आगे कहाँ तक उड़ने की ज़रूरत है। वे सभी पक्षी केवल उस पहाड़ की गर्द तक पहुँचते-पहुँचते ही मर गये।

फ़रीद अल-दीन अत्तार की पुस्तक 'कॉनफ्रैंस ऑफ़ द बर्ड्स' से ली गई एक प्रतीक कथा जिसमें पूर्ण सन्त की अद्भुत अवस्था का वर्णन है।

230—लोगों ने बादशाह से कहा, "इस अकाल के कारण लोग चिल्ला रहे हैं और शिकायत कर रहे हैं क्योंकि रोटी अब बड़ी मुश्किल से और महँगी मिलती है।" बादशाह ने कहा, "तुम्हारा क्या मतलब है?" उन्होंने कहा, "थोड़ी-सी रोटी की क़ीमत पहले ताँबे का एक छोटा-सा टुकड़ा थी, अब सोने के दो सिक्के है।" "पर सोने के दो सिक्के क्या बड़ी बात है?" बादशाह ने पूछा। उन्होंने कहा, "यह तो बहुत सारा पैसा होता है, पहले से बीस गुना ज़्यादा। इस पर बादशाह ने कहा, "अरे! तुम बहुत कंजूस हो। तुम्हें शर्म नहीं आती?"

बादशाह के लिए इतना पैसा न के बराबर था। उसके लिए महँगाई तब होती अगर लोग उससे कहते कि अपनी भूख मिटाने के लिए उसे अपना सारा राज्य देना पड़ेगा। तब लोगों का डर उसकी समझ में आता।

एक बार तो वह अपनी भूख मिटा लेता, लेकिन अगली बार उसे रोटी कहाँ से मिलती? उसके लिए उसे पूरी ज़िन्दगी इन्तज़ार करना पड़ता।

धर्म में भी यही उसूल लागू होता है। ऊँची पदवी या उपाधि मिलने से मन में बहुत भय उत्पन्न हो जाता है, लेकिन जिसका परमात्मा से मिलाप हो गया है, उसके लिए यह एक मामूली बात होती है। आकाश भी उसका धनुष नहीं खींच सकता। "हमने अपनी वह अमानत आसमान व ज़मीन को पेश की थी... (क़ुरान 33/72)।"* लेकिन ज़मीन और आसमान ने कहा, "तुम जो चीज़ हमारे हवाले करने की कोशिश कर रहे हो, उसका बोझ हम नहीं उठा सकते।" अगर उनकी नज़र सफलता पर टिकी रहती तो उन्होंने कहा होता, "चाहे इस कमान को खींचना मुश्किल है, लेकिन अगर हम इसे अपने हाथ में ले लेते हैं तो हमारे पीछे कोई है जो इसे खींच लेगा।"

असम्भव दिखाई देनेवाला काम भी, परमात्मा की दया से सरल हो जाता है।

236—यह कहानी तीन सूफ़ियों की कहानी जैसी है। एक सूफ़ी ने कहा, "मैं अपने पेट को तीन हिस्सों में बाँट लेता हूँ: एक तिहाई हिस्सा रोटी के लिए, एक तिहाई पानी के लिए और एक तिहाई साँस के लिए।" दूसरे ने कहा, "मैं अपने पेट को दो हिस्सों में बाँटता हूँ, आधे में रोटी, आधे में पानी। साँस तो सूक्ष्म होता है। यह जगह नहीं घेरता।" तीसरे सूफ़ी ने कहा, "मैं अपने पेट को पूरी तरह रोटी से भर लेता हूँ। पानी पतला होता है, यह अपना रास्ता आप बना लेता है, और साँस रहे या न रहे।"

प्रेमी कहते हैं, "हम अपने को प्रेम से भर लेते हैं, हमें और कुछ नहीं चाहिए। ईश्वरीय प्रेरणा सूक्ष्म चीज़ है, वह ख़ुद अपनी जगह तलाश कर लेगी।

* क़ुरान में ऐसा कहा गया है कि परमात्मा ने अपना ज्ञान देने का प्रस्ताव सभी के आगे रखा, लेकिन फिर उसने वह ज्ञान केवल मनुष्य को सौंपा।

बाक़ी हमारा जीवन ही रह जाता है। इसे अगर रहना है तो रहे, वरना यह जा सकता है।"

ज़रूरत रोटी-पानी की नहीं, भरपूर प्रेम की है।

243-4—एक शैख़ एकान्त में ध्यान-मग्न बैठा था। वह बग़दाद में था और नये साल का दिन था। ध्यानमग्न अवस्था में उसने इस दुनिया के परे से आ रही एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी, "हमनें तुम्हें ईसा मसीह जैसी ज़िन्दगी दी है। बाहर आओ और यह ज़िन्दगी लोगों के लिए जियो।" शैख़ ने सोचा, "अजीब बात है। इस आवाज़ का उद्देश्य क्या है? क्या यह एक इम्तिहान है? यह चाहती क्या है?"

आवाज़ फिर आई, और इस बार स्वर अधिक डरावना था। उसने कहा, "प्रलोभन देनेवाले विचार छोड़ो, बाहर निकलो और लोगों के बीच जाओ, क्योंकि हमने तुम्हें ईसा मसीह जैसी ज़िन्दगी दी है।" शैख़ का ध्यान आवाज़ का उद्देश्य जानने में लगा था, इसलिए वह और सोच-विचार करना चाहता था। लेकिन आवाज़ तीसरी बार फिर आई और इस बार और भी अधिक धमकी-भरे स्वर में उसने कहा, "हमने तुम्हें ईसा मसीह जैसी ज़िन्दगी दी है। और अधिक हिचकिचाहट और देरी किये बिना फ़ौरन बाहर जाओ।"

शैख़ बाहर चला गया और नये साल का उत्सव मना रही बग़दाद की घनी भीड़ में घूमने लगा। उसने देखा कि एक मिठाई बेचनेवाला लोगों को उस अवसर के लिए पक्षियों की शक्ल की मिठाइयाँ ख़रीदने के लिए बुला रहा है। शैख़ के मन में ख़्याल आया, "ख़ुदा का नाम लेकर आज़माना चाहिए।" उसने मिठाई बेचनेवाले को आवाज़ दी, और आवाज़ सुनकर लोग रुक गये। वे हैरान थे कि शैख़ तो आम तौर पर खाने की ऐसी चीज़ों की ओर ध्यान नहीं देते, लेकिन इस शैख़ को इन्हें खाने की इच्छा कैसे हुई। शैख़ ने पक्षी की शक्ल वाली एक मिठाई अपनी हथेली पर रखी और उसे

दम दिया (कुछ पढ़ा और फिर फूँक मारी)। फ़ौरन ही चीनी के उस पक्षी पर चमड़ी और पंख निकल आये। उसने पंख फैलाये और उड़ गया।

लोग फ़ौरन उस शैख़ के आसपास इकट्ठे हो गये। उसने चीनी के कुछ और पक्षियों के साथ वैसा ही किया, लेकिन फिर उसे अपने गिर्द इकट्ठी भारी भीड़ पर क्रोध आने लगा। असमंजस में पड़े लोगों ने झुककर उसे प्रणाम किया।

लोगों से छुटकारा पाने के लिए वह शहर के बाहर की तरफ़ जाने लगा, लेकिन भीड़ ठीक उसके पीछे-पीछे चल पड़ी। उसने शौच की आवश्यकता का बहाना बनाते हुए बार-बार लोगों से कहा कि मुझे अकेला छोड़ दो, लेकिन फिर भी वे उसके पीछे-पीछे चलते रहे।

वह दूर तक चला, और मन ही मन में उसने परमात्मा से पूछा, "ऐ ख़ुदा, यह क्या करामात थी जिसने मुझे एक क़ैदी-सा बना दिया है और मैं लाचार हो गया हूँ?" अन्दर से उसे आवाज़ आई, "कुछ ऐसा करो कि लोग चले जायें।" यह सुनकर शैख़ ने पाद छोड़ा। अचानक हर कोई रुक गया। लोगों ने एक-दूसरे की तरफ़ देखा और अविश्वास में सिर हिलाते हुए वहाँ से चले गये।

केवल एक व्यक्ति जो जाने को तैयार नहीं था, वहीं रुका रहा। शैख़ चाहता था कि उसे भी जाने को कहे, लेकिन उस व्यक्ति के चेहरे से सख़्त ज़रूरत की भावना झलक रही थी और विश्वास की ऐसी किरणें फूट रही थीं कि शैख़ स्तब्ध रह गया। आख़िर बड़ी कठिनाई से उसने उस व्यक्ति से जाने को कहा, लेकिन उसने जवाब दिया, "आपके पीछे-पीछे चले आने का कारण आपका पहली बार हवा छोड़ना नहीं था, इसलिए आपके दूसरी बार हवा छोड़ने के कारण मैं आपको छोड़कर जाऊँगा भी नहीं। मेरे लिए आपका दूसरी बार हवा छोड़ना बेहतर था क्योंकि उससे आपको आराम मिला, जब कि पहली बार हवा छोड़ने से आपको दर्द और बेआरामी हुई थी।"

शम्स दो बातों का ज़िक्र करते हैं: पहली परमात्मा की दया का जो पूरे गुरुओं को अपनी आत्माओं को ढूँढ़ने के लिए भेजता है और दूसरी सच्चे प्रेमी की दुर्लभता का।

264 — बायज़ीद बस्तामी की आदत थी कि जब कभी वे हज के लिए मक्का जाते तो रास्ते में हर शहर में से गुज़रते हुए पहले वहाँ के दरवेशों से मिलते। उसके बाद ही वे दूसरे काम करते। जब वे बसरा पहुँचे तो एक दरवेश से मिलने गये, जिसने उनसे पूछा, "ऐ बायज़ीद, आप कहाँ जा रहे हैं?" "मक्का जा रहा हूँ ताकि ख़ुदा के घर* हो आऊँ," उन्होंने जवाब दिया। तब दरवेश ने पूछा, "तुम सफ़र के लिए क्या रसद साथ ले जा रहे हो?" उन्होंने जवाब दिया, "दो हज़ार चाँदी के सिक्के।" दरवेश ने कहा, "उठो और सात बार मेरी परिक्रमा करो और चाँदी के सिक्के मुझे दे दो।" बायज़ीद जल्दी से उठे, अपना थैला खोला, उसे चूमा और दरवेश के सामने रख दिया। दरवेश ने कहा, "ऐ बायज़ीद, तुम कहाँ जा रहे हो? वह मकान ख़ुदा का घर है, और मेरा दिल भी ख़ुदा का घर है। ख़ुदा दोनों घरों का मालिक है, लेकिन मैं क़सम खाकर तुमसे कहता हूँ कि वह मकान जब बना था, तब से लेकर अब तक ख़ुदा ने कभी उसमें क़दम नहीं रखा, और यह मकान उसने जब बनाया, तब से उसने इसे कभी छोड़ा नहीं।"

मनुष्य का शरीर ही असली क़ाबा है।

272 — एक खच्चर ने ऊँट से पूछा कि तुम मेरी तरह अकसर सिर के बल क्यों नहीं गिरते? ऊँट ने जवाब दिया, "मेरे पास तीन ऐसी चीज़े हैं जो तुम्हारे पास नहीं हैं और वे मुझे गिरने नहीं देतीं। एक तो यह कि मैं तुमसे बड़ा और लम्बा हूँ। दूसरी यह कि मेरी आँखें ठीक हैं, ग़लती नहीं खातीं, और इसलिए मैं दूर से नज़र डालकर रास्ते में आनेवाले सब उतार-चढ़ाव देख सकता हूँ, और तीसरी यह कि मैं वैध सन्तान हूँ जो तुम नहीं हो।"†

---

* इशारा क़ाबे की तरफ़ है।

† यहाँ खच्चर को अवैध सन्तान इसलिए कहा गया है कि वह घोड़े और गधी के मेल से पैदा होनेवाली ऐसी सन्तान है जो आगे सन्तान पैदा नहीं कर सकती।

खच्चर ने नम्रतापूर्वक स्वीकार कर लिया और इसलिए वह नाजायज़ सन्तान नहीं रहा। शम्स ने कहा, "अगर वह मानने से इनकार करता तो अवैध होता, लेकिन नाजायज़ होना कोई ऐसी विशेषता नहीं जिसे हटाया न जा सके।"*

नम्रता तथा शैख़ के बारे में जो ख़ुद परमात्मा का पुत्र होता है, शम्स के विचार।

283—एक आदमी शिकायत कर रहा था कि उसका सब कुछ लुट गया। मैंने उससे कहा कि उसका मामला एक ग़ुलाम और उसके स्वामी की कहानी से मेल खाता था जो एक पनसारी था। पनसारी जब भी कटोरे में तेल या शहद तोलता तो ग्राहक को देने से पहले ऊपर-ऊपर से थोड़ा-सा निकाल लेता। ग़ुलाम को यह बात अखरती, लेकिन वह कुछ कह न पाता। एक दिन संयोग से जब शहद का एक बहुत बड़ा कनस्तर खोला गया तो सारा शहद बिखर गया। सही मौक़ा पाकर ग़ुलाम ने कहा, "ठीक है हुज़ूर, लेते तो आप थोड़ा-थोड़ा करके हैं, लेकिन खोयेंगे कनस्तरों के हिसाब से।"

बुरा मत करो, कहीं ऐसा न हो कि वह लौटकर तुम्हारे सिर पर आ पड़े; दूसरों के लिए गड्ढा मत खोदो, कहीं ऐसा न हो कि ख़ुद ही उसमें जा गिरो।

हर कर्म का फल होता है। हम अपना भाग्य इसी तरह बनाते हैं।

285-6—एक प्रतिष्ठित विद्वान्, जिसके कई कुशल विद्यार्थी थे, घोड़े पर सवार एक शैख़ के साथ-साथ चल रहा था। दूसरे विद्वानों ने उसकी आलोचना की, लेकिन जवाब में उसने कहा, "मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि अगर आप लोगों को इनके बारे में रत्ती भर भी जानकारी होती, जैसे

* इस अध्याय में खण्ड सं. 108 इसी तरह आरम्भ होता है, लेकिन उसका मतलब कुछ और है।

कि परमात्मा की दया से मुझे हो गई है, तो आपने मेरे हाथों से इनकी काठी का कम्बल छीन लिया होता, वैसे ही जैसे आप ईर्ष्या के कारण एक-दूसरे से पद छीन लेते हैं।"

फिर भी, जब वह शैख़ के साथ-साथ वापस घर जा रहा था, तो उसने पहले तो अपने मन में उन्हें शैख़ मान लिया, लेकिन फिर उसका मन बदल गया। उसके मन में सवाल उठा कि शैख़ ने एक युवा लड़के के साथ, जो कामवासना जाग्रत कर सकता था, इतनी शिष्टता क्यों बरती। फिर उसने सोचा, "लेकिन, इनका कुछ नहीं बिगड़ता। इनके पास हर ज़हर की दवा है। इन्हीं के बारे में क़ुरान में ये शब्द मिलते है: 'ख़ुदा तुम्हारे सब गुनाह माफ़ कर दे, जो तुम कर चुके हो और जो तुम आगे चलकर करोगे।' (क़ुरान 2/48) और 'ख़ुदा उनके पापों को पुण्यों में बदल देगा (क़ुरान 25/70)'।"

मत करो शिकायत गर पहाड़ साँपों से भरा है,
क्योंकि ज़हर की दवा भी पहाड़ पर ही मिलती है। (सना'ई)

जब उस व्यक्ति पर शैख़ की कृपा-दृष्टि पड़ती तो उसके मन में शुभ विचार उठते, लेकिन जब उसकी मनोवृत्ति नकारात्मक होती और वह उसे शैख़ मानने को तैयार न होता, तो उसका मन अशुभ प्रलोभनों का शिकार हो जाता। वह सोचता, "मैं मान लेता हूँ कि उनका इतना ऊँचा रुतबा है, लेकिन क्या लोगों को गुमराह करना और उनका मन विचलित करना उचित है?" शैख़ को उसकी इस मनोदशा का पता था। उसने मन ही मन उससे कहा, "अरे, तुम हमारे बारे में कैसा सोच रहे हो? क्या तुम फिर भूल गये? क्या तुम सोचते हो कि हम तुम्हें इस हालत में रहने देंगे कि तुम बार-बार पहले मानते रहो और फिर इनकार करते रहो? 'वह दिन के बाद रात और रात के बाद दिन लाता है (क़ुरान 24/49)।' कितनी ही बार वह दिन की रोशनी को रात के गहरे अँधेरे में बदल देता है, और कितनी ही बार वह

रात के अँधेरे के सागर को रोशनी की आग में जला देता है। दुनिया में ऐसा क्या है जिसे परखे बिना स्वीकार या रद्द कर दिया गया हो? फिर भी, आख़िरकार तुम्हें सुधार दिया जायेगा, तुम सीधा रास्ता चुनोगे और जान लोगे कि तुम कौन हो।"

एकता के प्रकाश में द्वैत फीका पड़ जाता है।

297-8—कोई आदमी सड़क पर चला जा रहा था। उसे घोड़े पर सवार एक व्यक्ति दिखाई दिया जो स्वस्थ था और अपने दोनों तरफ़ हथियार लिए हुए था। उसके मन में विचार आया कि इससे पहले कि वह आदमी मुझ पर वार करे मुझे उस पर वार कर देना चाहिए। घुड़सवार ने उसका इरादा ताड़कर कहा, "मेरे बहादुरी के लिबास से मेरी परख मत करो क्योंकि मैं हथियार चलाना बिलकुल भी नहीं जानता।" पहले ने कहा, "तुमने कितने ठीक वक़्त पर ऐसा कह दिया, क्योंकि मैं तुम पर तीर से वार करने ही वाला था। अब आओ ताकि मैं तुम्हें अपने शिष्यों में शामिल कर सकूँ।" दुनिया के मज़हबों में भी यही दस्तूर है।

बलवान् और शक्तिशाली लोगों में हो तुम।
पौरुष के इस अखाड़े में
उतार दो कुलाह अपने अहंकार का
ताकि सर अपना बचा सको।
इस राह पर चल रही ऊँची, नामी हस्तियाँ
न केवल तुम्हारा कुलाह ही उतार लेंगी,
बल्कि मौत की तलवार से
सर भी तुम्हारा धड़ से अलग कर देंगी। (सना'ई)

शम्स: अहंकार त्यागकर पूर्ण सन्त के चरणों में आत्मसमर्पण कर दो।

311-2—सौभाग्य सहायक होता है। एक उदाहरण लीजिए: एक बादशाह ने अपने वज़ीर को बुलाया और उससे कहा, "मेरी इच्छा है कि मेरा बेटा एक बड़ा महात्मा बने जो लोगों को जाग्रत करने के लिए धर्म की शिक्षा दे, और मैं उसका धर्मोपदेश सुनने के लिए उसके मंच के पास बैठूँ। मैं उसे किसके पास भेजूँ ताकि वह एक महात्मा बन सके? इस व्यक्ति के पास, उस व्यक्ति के पास, या किसी और के पास?"

वज़ीर ने जवाब दिया, "यह धार्मिक न्यायशास्त्र के जानकारों का काम नहीं है, और आप बूढ़े हो गये हैं। वे उसे शिक्षा देकर इतनी जल्दी एक समझदार धर्मोपदेशक कैसे बना सकते हैं, जिससे आप उसके मंच के पास बैठकर उसे उपदेश करते सुन सकें? यह तभी हो सकता है अगर उसे अमुक जुलाहा शिक्षा दे।"

बादशाह ने कहा, "तुम बेहतर जानते हो। कुछ करो।" वज़ीर जुलाहे के पास गया और शिष्टाचार के नाते उससे कुछ दूरी पर बैठ गया। जुलाहे ने पूछा, "तुम कैसे हो? तुम बेकार बातें सोच रहे हो।" उसने जवाब दिया, "मैं क्या कर सकता हूँ? मुझे आपके बड़प्पन पर भरोसा है। ख़ुदा के वास्ते अब आप यह ज़िम्मेदारी स्वीकार करें।" "जो ख़ुदा के नाम पर कहते हो तो न कहना मुश्किल है।" वज़ीर ने जुलाहे को नरम पड़ते देखा तो बादशाह को ख़बर दी। बादशाह ख़ुशी में अपने तख़्त से कूदा, जुलाहे से मिलने गया और अपने बेटे को उसकी सेवा में ला खड़ा किया।

बादशाह के बेटे ने दो साल जुलाहे की सेवा की। दो साल के बाद जुलाहे ने कहा, "ऐ लड़के, अब तुम मंच पर बैठकर उपदेश करो।" बादशाह को इस बात की ख़बर मिली तो देखने गया, और रास्ते में पूरा वक़्त यही सोचता रहा, "कितनी अजीब बात है! ऐसा कैसे हो गया? शायद शैख़ लड़के की योग्यता परखना चाहता है।

सारे शहर में खलबली मच गई, और लोग विस्माद से इकट्ठे हो गये। चोग़ा पहने धर्म के छ: हज़ार विद्वान् उसके सामने मंच पर बैठ गये।

उसने पैग़म्बर साहिब के सात हज़ार कथन सुनाये और सब इमामों से पूछा कि क्या हर कथन पैग़म्बर साहिब का है, और उन्होंने कहा, "ख़ुदा की क़सम, उन्हीं का है, यह सही है।" तब उसने कहा, "सुबहान अल्लाह! आप इतने विद्वान् हैं और आपने इतना कुछ सीखा है और उस पर अमल किया है, फिर भी आप अन्धे के अन्धे रहे। ये सब कथन मेरे अपने शब्द थे।" उन्होंने कहा, "सुबहान अल्लाह!"

उदारता जिसका स्वभाव है
वह चाहे बियाबान से भी आया हो,
उसकी आत्मा पर
प्रभु का रहस्य लिखा होता है। (अज्ञात)

जिनको परमात्मा के अस्तित्व का अनुभव है, उनके सामर्थ्य की तुलना शम्स धार्मिक नेताओं के सतही ज्ञान से करते हैं जो इस अनुभव का केवल दावा करते हैं।

320-1 — अहमदे ग़ज़ाली – प्रभु उन पर दया करे – उनके भाई मुहम्मद और उनके दूसरे भाई, सब असली सन्तान* में से थे। उनमें से हर कोई अपने क्षेत्र में अत्यन्त निपुण था। विज्ञान और विद्या के क्षेत्र में मुहम्मदे ग़ज़ाली का कोई सानी नहीं था। उसकी रचनाएँ सूरज से भी ज़्यादा निर्मल थीं, जैसा कि मौलाना ख़ुद जानते हैं। अहमद का दूसरा भाई एक सौदागर था, जो बहुत धनवान् और उदार था। उदारता में उसके बराबर कोई नहीं था, और उसका नाम था उमर। अहमदे ग़ज़ाली को श्रेष्ठ अध्यात्म-ज्ञानियों में बहुत ऊँचा पद प्राप्त था। लेकिन उन्होंने साधारण ज्ञान के क्षेत्र में अध्ययन

* हज़रत मुहम्मद की वंश-परम्परा में उत्पन्न हुए हर व्यक्ति को असली सन्तान कहा जाता है।

नहीं किया था। किसी ने उनके भाई मुहम्मद को ताना देते हुए कहा, "वह भाषण तो दे सकता है, लेकिन बहुत-सी चीज़ों के बारे में वह कुछ नहीं जानता।" मुहम्मद ने धार्मिक न्यायशास्त्र के एक जानकार के हाथ अहमद को अपनी दो पुस्तकें भेजीं और उससे कहा, "जिस जगह अहमद मौजूद हों वहाँ अदब के साथ अन्दर दाख़िल होना, और जिस घड़ी उन्हें देखो तभी से उनकी हर अदा पर नज़र रखना – उनका मुसकुराना, सिर या हाथ को हिलाना या और कुछ भी करना। उनकी हर अदा को अपने दिल में बिठा लेना, जैसे उनका अपनी उँगलियों से कुछ करना या अपनी बैठक बदलना।"

जब वह सन्देशवाहक अन्दर दाख़िल हुआ तो अहमद आराम से ख़ानक़ाह में बैठे थे। अहमद ने उसे देखा और मुसकुराते हुए कहा, "तुम हमारे लिए किताबें लाये हो?" सन्देशवाहक की देह में कम्पन की एक लहर दौड़ गई। उसकी प्रतिक्रिया देखकर अहमद ने कहा, "मैं अनपढ़ हूँ। अनपढ़ और अज्ञानी में फ़र्क़ होता है। अज्ञानी अन्धे होते हैं, जब कि अनपढ़ लिख-पढ़ नहीं सकते। अब तुम पढ़ो और मैं सुनूँगा।" उस व्यक्ति ने हर किताब के अलग-अलग हिस्सों में से थोड़ा-थोड़ा पढ़ा। अहमद ने उससे कहा, "इस किताब की प्रस्तावना में यह पद्य लिखो:

ख़ज़ाने की तलाश में
हो गया तन मेरा तबाह।
भुनकर इश्क़ की आग पर
हो गया दिल मेरा कबाब।
जगह कहाँ है मुझमें अब
ज़ख़ीरेह और लोबाब की?*

* ज़ख़ीरेह (चिकित्सा पर एक पुस्तक) और लोबाब (कवियों की जीवनियाँ) ये दो पुस्तकें ग़ज़ाली को भेजी गई थीं।

प्रीतम के ओठों का अमृत
मेरे लिए अब है शराब*।

जो शब्द से जुड़ गये हैं, उन्हें किताबों की ज़रूरत नहीं होती।

शैतान तो एक बहाना है, आदम [मानव जाति] परमात्मा की दया-मेहर का एक चिह्न। शैतान अँधेरा है, आदम प्रकाश; शैतान निकृष्ट है, आदम महान्।

मनुष्य-शरीर ही ऐसा भौतिक शरीर है जिसे पाकर जीव संसार से ऊपर उठ सकता है।

349—कोई आदमी दरवाज़ा पीट रहा था। मकान मालिक ने दरवाज़ा खोलकर पूछा: तुम कौन हो? अजनबी ने जवाब दिया: मैं परमात्मा का भतीजा हूँ। मकान मालिक बाहर निकला और अभिवादन के बाद उसने कहा: मुझे अपना हाथ दो। मेरे पास तुम्हारे लिए एक बहुत ज़रूरी काम है। फिर वह उस आदमी को मसजिद में ले गया और कहा: यह तुम्हारे चाचा का घर है। यह फ़ैसला तुम्हें करना है कि क्या तुम इसमें दाख़िल होना चाहते हो या नहीं या इसमें से कभी निकलना नहीं चाहते।

चतुराई का जवाब चतुराई से।

621—जब एक बड़ा बादशाह सड़क पर चला जा रहा था तो पास से गुज़रते हुए एक दुःखी आदमी ने उसे अशिष्टता से सम्बोधित किया और उसे बददुआ दी। बादशाह ने एक शब्द भी नहीं कहा, वरना उसके अंगरक्षकों ने उस आदमी के टुकड़े-टुकड़े कर दिये होते। बादशाह ने केवल अपना रास्ता बदला और हुक्म दिया, "हम दूसरे रास्ते से जायेंगे।" अंगरक्षकों ने पूछा,

* सूफ़ी परम्परा में 'शराब' शब्द का प्रयोग अकसर प्रभु-प्रेम की मस्ती के अर्थ में किया जाता है जो 'शब्द' को सुनने से पैदा होती है। यहाँ 'शब्द' को प्रीतम के ओठों का अमृत कहा गया है।

"क्यों, बादशाह सलामत?" बादशाह ने जवाब दिया, "मुझे यही अच्छा लगता है।" बादशाह किसी दुःखी इनसान पर गुस्सा क्यों करता? क्या वह इतने अधम स्वभाव का था कि दुःखी इनसान से झगड़ता? बादशाह केवल उन्हीं को चोट पहुँचाते हैं जो फ़िरौन और निम्रोद* की तरह हठी और अवज्ञाकारी होते हैं।

मन के अहंकार के कारण शैख़ मन को तो डाँट देगा, लेकिन किसी दुःखी व्यक्ति की अज्ञानता के कारण उसे नहीं डाँटेगा।

647—बायज़ीद ने देखा कि उसका मन अहंकार से काफ़ी फूल गया है। उसने पूछा, "तुम किस कारण इतने फूल गये हो?" मन ने जवाब दिया, "यह ऐसा कारण है जिसे आप दूर नहीं कर सकते, और वह है लोगों का आना और झुककर आपको प्रणाम करना, और आपका इसे अपना अधिकार समझना।" बायज़ीद ने कहा, "मैं तुम्हें हरा नहीं सकता। आख़िर में जीत तुम्हारी ही होगी।" मरते समय बायज़ीद ने एक ज़ुन्नार माँगा।

फूले हुए अहं के बारे में शम्स का कथन।

664—पैग़म्बर मुहम्मद के लिए एक आदमी ने एक जोड़ी बढ़िया जूते बनाये—परमात्मा उसे शान्ति दे। पैग़म्बर साहिब को जूते पसन्द आये और उन्होंने उससे कहा, "तुमने जूते बहुत अच्छे बनाये हैं, ये बहुत ही बढ़िया हैं।" उसने जवाब दिया, "पैग़म्बर साहिब, मैं इससे भी ज़्यादा अच्छी कारीगरी दिखा सकता हूँ। मैं इनसे भी बढ़िया जूते बना सकता हूँ।" पैग़म्बर साहिब ने कहा, "तो तुमने ज़्यादा अच्छी कारीगरी किसके लिए बचा ली? अगर तुमने वैसे जूते मेरे लिए नहीं बनाये तो और किसके लिए बनाओगे?"

भरसक प्रयत्न करने के लिए शम्स के विचार।

* फ़िरौन (मिस्र का बादशाह) और निम्रोद (बैबिलोन का बादशाह) के माध्यम से अहं और स्वार्थी मन के प्रलोभनों की ओर संकेत किया गया है।

691—जिसे तुमने कभी देखा नहीं, उसे तुम कैसे समझ सकते हो, या उस पर प्रभाव कैसे डाल सकते हो?

एक किसान ऐसी ही स्थिति में से गुज़रा। जब वह अपनी ज़मीन पर हल चला रहा था तो उसके हल से एक ख़ज़ाने की पेटी का दस्ता कटकर अलग हो गया। बैल के ज़ोर से दस्ता खिंचकर गिर गया। पेटी मोहरबंद थी और एक ही तरफ़ से दिखाई देती थी। ज़ाहिर था कि वह भारी थी और पूरी भरी हुई थी। किसान की जिज्ञासा बढ़ने लगी और वह सोचने लगा, "क्या यह राँगे से भरी हुई है या सीसे से?" उसे यह ख़याल ही नहीं आया कि यह सोने से भरी हुई भी हो सकती है, क्योंकि वह किसी ऐसी चीज़ की कल्पना कर ही नहीं सकता था जो उसकी सोच और समझ के दायरे से बाहर हो। उसके मन का झुकाव और उसके विचार उसे हमेशा घटिया चीज़ की तरफ़ ही खींचते थे।

परमात्मा मन की पहुँच से परे है।

708—दरबान ने पूछा, "तुम कौन हो?" मैंने [शम्स ने] कहा, "यह एक मुश्किल सवाल है। मुझे ज़रा सोचने दो।" मैंने कहा, "बहुत अरसा पहले एक महापुरुष हुआ था। उसका नाम आदम था, और मैं उसकी सन्तान में से हूँ।" दरबान के साथियों ने आपस में सोच-विचार करके योजना बनाई, क्योंकि उनका ख़याल था कि वे मुझे अन्दर जाने से रोक लेंगे और मैं वापस चला जाऊँगा। उन्होंने फ़ैसला किया कि इससे पूछते हैं कि यह किस ख़ानक़ाह से आया है, और उसका सारा ब्योरा भी माँगते हैं।

इससे पहले कि वे मुझसे कुछ सवाल पूछना शुरू करते, मैंने ख़ुद ही उनके सवाल और उनका इरादा भाँप लिया, इसलिए मैंने उनके शैख़ से पूछा, "सूफ़ियों वाला चोग़ा पहनना क्यों ज़रूरी है? मेरे पास अगर चोग़ा नहीं है तो मेरे सूफ़ी होने में क्या कमी है?" उसने कहा, "अच्छा, आगे कहो।" मैंने कहा, "क्या मेरी तरफ़ से शिष्टता और सूफ़ियाना व्यवहार में कोई कमी रह गई है? इस समय मेरे पास चोग़ा नहीं है, क्योंकि उसे रास्ते

में किसी ने चुरा लिया। इससे मेरे सूफ़ी या नेक-पाक होने में क्या कमी आ गई है?" उसने जवाब दिया, "अरे, यह कोई सूफ़ी नहीं है। यह तो सिर्फ़ बातें बनाना जानता है।" मैंने जवाब दिया, "आप जो चाहें कह लें, मैं तो सच्चाई बयान कर रहा हूँ।" तब उसने कहा, "अन्दर आ जाइये। यह खाना आपको मुफ़्त में मिलेगा, जब कि मुझे इसकी मनाही है।" [वह समझ गया कि शम्स इस मज़हबी क़ानून से नहीं बँधे हैं।]

अगले दिन मैंने सूफ़ियों वाला चोग़ा पहना और शैख़ के पास जाकर कहा, "क्या अब मैं एक अच्छा सूफ़ी हूँ?" उसने कहा, "हाँ, अब आप सूफ़ी लग रहे हैं। आप कहाँ से आये हैं?" मैंने जवाब दिया, "झरोखे* से। और कहाँ से आ सकता था मैं?"

जान पड़ता है कि एक यात्रा के दौरान शम्स आश्रय के लिए जब एक ख़ानक़ाह में पहुँचे तो उनका सूफ़ियों वाला चोग़ा खो गया था या उन्होंने उसे छिपा लिया था। कहानी का उद्देश्य वेशभूषा जैसी बाहरी चीज़ और आन्तरिक अवस्था के अन्तर तथा धार्मिक रीतियों के खोखलेपन पर हमारा ध्यान केन्द्रित करना है।

709—सुलतान महमूद को उड़ता हुआ हुमा (एक काल्पनिक पक्षी) दिखाई दिया। उसने फ़ौज से कहा कि जाओ और अपनी-अपनी क़िस्मत आज़मा लो।† हर कोई दायें-बायें दौड़ने लगा, लेकिन अयाज़ उनमें दिखाई नहीं दिया। सुलतान ने अपने आप से कहा, "क्या मेरा अयाज़ नहीं गया? आशा है कि हुमा की छाया उस पर पड़ जायेगी।" उसने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई तो अयाज़ का घोड़ा दिखाई दिया, और साथ ही रोने और कराहने की आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ किसकी है, यह जानने के लिए वह नीचे झुका।

---

* वह स्थान जहाँ से आत्मा मनुष्य-शरीर में प्रवेश करती है और जिसके रास्ते से निकलकर जाती है।

† किसी के सिर पर हुमा की परछाईं का गिरना शुभ शकुन माना जाता है।

उसे घोड़े के नीचे नंगे सिर पड़ा अयाज़ रोता दिखाई दिया। उसने पूछा, "तुम क्या कर रहे हो? तुम गये क्यों नहीं?" अयाज़ ने जवाब दिया, "आप ही मेरे हुमा हैं, और अगर मैं ऐसी कोई परछाईं ढूँढ़ूँ तो वह आपकी ही परछाईं होगी। उसे प्राप्त करने के लिए अगर मुझे आपसे दूर जाना पड़े तो मैं उसकी कामना ही क्यों करूँगा?"

महमूद ने उसे अपने पास खींच लिया, उनकी परछाइयाँ आपस में मिलीं और एक ऐसी परछाईं बन गई जिसकी बराबरी हज़ार हुमाओं की परछाइयाँ भी नहीं कर सकती थीं।

शम्स सच्चे प्रेम का एक उदाहरण देते हैं।

721-2 — एक फ़क़ीर पहाड़ पर रहता था। वह पहाड़ ही था, इनसान नहीं!

अगर वह इनसान होता तो इनसानों में रहता जिनमें बुद्धि और कल्पना-शक्ति दोनों होती हैं, और जो परमात्मा के अस्तित्व का अनुभव कर सकते हैं। फिर वह पहाड़ पर क्यों रहता? एक इनसान भला पत्थरों के साथ क्यों रहेगा? वह कीचड़ था, इसलिए पत्थर की ओर आकर्षित हुआ।

लोगों के बीच रहो, लेकिन उनसे अलग रहो। एकान्त में मत रहो, फिर भी अकेले रहो। पैग़म्बर साहिब का कथन है, "इसलाम में घरबार छोड़कर मठों में रहने का दस्तूर नहीं है।" इस कथन का भाव यह भी है, "शादी से इनकार मत करो।" औरत से शादी तो करो, लेकिन ब्रह्मचारी रहो, जिसका तात्पर्य यह है कि दिल में किसी के भी प्रति मोह न रखो।

बादशाह और शहर के सब लोग पहाड़ पर रह रहे उस आदमी से हर साल मिलने जाते थे। जिस मृदुभाव से उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया था, उसके क़ारण उसकी भूख ख़त्म हो गई थी और उसने खाना-पीना बिलकुल बन्द कर दिया था।

प्रभु का प्यारा दरवेश जब वहाँ से गुज़र रहा था तो उसे यह जानने की उत्सुकता हुई कि यहाँ इतनी भीड़ क्यों जुटी है। उसने कहा, "आज न तो

नये साल का दिन है और न किसी त्योहार का दिन, तो यहाँ क्या हो रहा है? इतनी भीड़ क्यों है?" किसी ने जवाब दिया, "क्या तुम पागल हो? क्या तुम इसकी वजह नहीं जानते? यहाँ पहाड़ पर एक फ़क़ीर रहता है और लोग उसे देखने के लिए इकट्ठे हो रहे हैं।" दरवेश ने कहा, "ऐसी बातें मत करो।" और वह आदमी उसके पैरों पर गिर पड़ा और उससे माफ़ी माँगी।

दरवेश भीड़ में बादशाह के पास गया और उसे सलाम करके बोला, "एक शब्द सुनो।" दरवेश का मधुर वचन सुनकर बादशाह का दिल पिघल गया। वह घोड़े से नीचे उतरा और सोचने लगा, "ये चाहें तो मैं इनके लिए कुछ भी, यहाँ तक कि अपना राज्य और अपनी सुन्दर बेटी भी, क़ुरबान कर दूँगा। अगर ये मेरी पत्नी चाहें तो मैं उसे तलाक़ भी दे दूँगा।" इसलिए उसने दरवेश से कहा, "आप जो चाहेंगे मैं करूँगा, क्योंकि आपकी आवाज़ में एक ख़ास तरह की मिठास है।"

दरवेश ने जवाब दिया, "मैं इसी लिए यहाँ आया हूँ।" बादशाह समझ गया कि दरवेश का ऐसा कोई इरादा नहीं था जैसा उसने सोचा था। दरवेश ने कहा, "दरवेश होने पर इनसान के रवैये में जो मिठास आ जाती है, उसी के कारण परमात्मा ने मुझे वह 'एक शब्द' बख़्श दिया है। और बादशाह सलामत, उस 'एक शब्द' की मिठास से ही मेरी बातों में इतनी मिठास आ गई है कि आप मेरे सामने घोड़े से उतरे और मेरा हुक्म मानने को तैयार हैं। अगर आप इजाज़त दें तो वह 'शब्द' आपके वुजूद में समा जायेगा। ऐ बादशाह सलामत, घड़ी भर के लिए आप लोगों के बीच होते हुए भी अपने आप को उनसे अलग कर लें ताकि मैं आपको वह 'शब्द' बता दूँ।"

बादशाह दरवेश के साथ एक मकान* में चला गया जहाँ उन दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं रहा – दरवेश कौन था और बादशाह कौन।

शम्स कठोर तपस्या और आध्यात्मिकता में अन्तर बताते हैं।

---

* उस आन्तरिक अवस्था की ओर संकेत है जहाँ सब आत्माएँ एक होती हैं।

758-9 — मूसा ने – परमात्मा उन्हें शान्ति दे – कहा, "दुनिया में मुझसे ज़्यादा विद्वान् कौन है?" यूषा (यहोशा) ने कहा, "अहंकार के जाल में मत फँसें क्योंकि आपसे ज़्यादा विद्वान् भी दुनिया में कोई है।" मूसा उनसे नाराज़ नहीं हुए। वे एक खोजी थे, इसलिए आवेश में आये बिना ही उन्होंने जवाब दिया, "क्या? क्या कहा आपने?" यूषा भी पैग़म्बर थे, लेकिन वे कोई आदेश [दीक्षा] नहीं देते थे। तब मूसा – परमात्मा उन पर दया-मेहर करे – ही दीक्षा दिया करते थे।

मैं [शम्स] यह बात एक मिसाल के तौर पर कह रहा हूँ जो मेरे बारे में भी ठीक बैठती है। अगर मुझे कोई ऐसा मिल जाये 'जिसकी खोज होती है' तो मैं भी अपने आप को क़ाबू में रखूँगा, जैसा कि मूसा ने यूषा के साथ बात करते हुए अपने को रखा था। इससे हम दोनों के बीच कोई परदा नहीं आयेगा।

कुछ लोगों का कहना है कि इससे पहले कि मूसा को कोई उनसे बड़ा विद्वान् मिलता अस्सी साल बीत गये, कुछ कहते हैं चालीस, कुछ चालीस हज़ार, और कुछ अस्सी हज़ार।

मूसा से सम्बन्धित इस कहानी* में इतनी आग है कि यह आसमान को जला सकती थी, लेकिन यह बड़े शान्तिपूर्ण ढंग से सुनाई गई है। ख़ैर, आँखों देखी बात पर भरोसा करनेवालों का कहना है कि जब मूसा और यूषा वहाँ पहुँचे जहाँ दो समुन्दर मिलते हैं, तो ख़िज़्र† एंटिओक या अलैप्पो के नज़दीक एक पहाड़ की चोटी पर भक्ति कर रहे थे या घोड़े पर सवार हुए समुन्दर को पार कर रहे थे। ख़िज़्र को उन्होंने दूर से देखा। क़ुरान में ख़ुदा ने ख़िज़्र की इन शब्दों में प्रशंसा की है, "हमारे ख़िदमतगारों में से एक जिसे हमने अपनी मेहर बख़्शी (क़ुरान 65/18)" ऐसी मेहर जो और किसी

* क़ुरान (18/64)।

† एक पैग़म्बर जो अपनी लम्बी आयु और सच्चे मन से उनसे प्रार्थना करने पर राह से भटके लोगों को उनकी मंज़िल तक ले जाने के लिए प्रसिद्ध हैं।

को नहीं बख़्शी गई, "और जिसे हमने अपना इल्म दिया (क़ुरान 65/18)," वह इल्म जो किसी मदरसे या ख़ानक़ाह में, या किसी किताब से या किसी शख़्स के ज़रिये हासिल नहीं किया जा सकता, और जो न कोई उस्ताद सिखा सकता है।

यूषा ने मूसा से कहा, "मैं ख़िज़्र के अत्यन्त संवेदनशील स्वभाव से परिचित हूँ। मैं उनसे बात करने का साहस नहीं कर सकता, कहीं ऐसा न हो कि मेरे पास जो यह थोड़ा-बहुत है इसे भी मैं खो दूँ। लेकिन आप उनसे जुदा हो जायेंगे और फिर कभी नहीं मिलेंगे।" फिर यूषा चले गये।

मूसा अकेले ही ख़िज़्र के पास गये। दोनों में बातचीत हुई। मूसा ने ख़िज़्र से बहुत-से प्रश्न पूछे। अन्त में उन्होंने पूछा, "आप क्या चाहते हैं? क्या मैं आपके साथ चलूँ?" अब यहाँ एक ऐसे व्यक्ति [मूसा] की ज़रूरत पर ध्यान दीजिए जो "परमात्मा से बातें करता है," जो हक़ [परमसत्य] तक पहुँच चुका है। मूसा को "नबी" कहा जाता है जिसका अर्थ है जगानेवाला, पैग़म्बर, क्योंकि मूसा को पहले ही 'सत्य' का ज्ञान हो चुका था। परमात्मा ने उन्हें परमसत्य की वास्तविकता से परिचित करा दिया था, अर्थात् पैग़म्बर की हैसियत से वे परमात्मा से बातें तो कर सकते थे, लेकिन उनके अन्दर परमात्मा प्रकट नहीं हुआ था।

[आख़िर ख़िज़्र इस बात पर राज़ी हो गये कि मूसा उनके साथ चलें, पर शर्त यह थी कि मूसा केवल देखेंगे और कोई प्रश्न नहीं पूछेंगे। कहानी आगे जारी है:]

... जब मूसा ने दूसरा प्रश्न पूछा तो ख़िज़्र ने ग़ुस्से से कहा, "क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि कुछ मत पूछना?" लेकिन यह ग़ुस्सा उनके मन के स्तर से नहीं निकला था, परमात्मा के भक्त के मन में ऐसा कुछ नहीं होता। यह परमात्मा का क्रोध होता है, और उससे ज़रूर बचना चाहिए। फिर मूसा के पास कोई बहाना नहीं बचा और उन्होंने तीसरी बार प्रश्न पूछा, "क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?" ख़िज़्र ने ताली बजाई, ख़ुशी से नाचे,

और कहा, "चलो, जल्दी से मुझसे प्रश्न पूछ लो, मुझे आज़ाद कर दो और अकेला छोड़ दो।" मूसा ने कहा, "अगर आप इस काम का मेहनताना मंज़ूर कर लेते..." ख़िज़्र ने बीच में टोकते हुए कहा, "अब हम अलग होते हैं, एक दूसरे से जुदा होते हैं।" मूसा को–नमस्कार है उन्हें–होश आई, देखा कि महबूब जा चुका था, मोमबत्ती की लौ बुझ गई थी, और साक़ी सो गया था।

भाग्यवान् है वह जिसे कोई प्रभु-भक्त [शैख़] मिल गया है और जिसने मूसा और ख़िज़्र की कहानी मन में बिठा ली है ताकि वह इसे अपने लिए एक उदाहरण माने।

सच्चे प्रभु-प्रेमी के आगे नम्रता और
आत्मसमर्पण की आवश्यकता।

761—किसी शिष्य ने कहा, "मुझे दिन में सत्तर बार परमात्मा का दर्शन होता है।" तब उसके गुरु ने कहा, "अगर तुम बायज़ीद का एक बार भी दर्शन कर लो तो वह परमात्मा का सत्तर बार दर्शन करने से बेहतर है।"

इसलिए दोनों बायज़ीद से मिलने गये। बायज़ीद पर नज़र पड़ते ही शिष्य गिर पड़ा और मर गया। वह इसलिए मर गया कि वह एक प्रेमी और खोजी था, मतलब यह कि उसके मन का अन्तिम अंश भी, जो अभी भी उसके अन्दर था, मिट गया। पहले उसने अपनी कमज़ोरियों के रहते परमात्मा को अपनी सीमित बुद्धि से ही देखा था। वह कल्पना में ही परमात्मा का दर्शन करता था, उसने बायज़ीद वाली क्षमता और शक्ति द्वारा वास्तव में परमात्मा का दर्शन नहीं किया था।

763—ऊन का एक बहुत बड़ा थैला एक मोती से बहस कर रहा है, और कहता है, "मैं तुमसे बड़ा और ज़्यादा क़ीमती हूँ।" मोती कहता है, "ठीक है। तो आओ, पागलों से पूछते हैं, समझदारों से नहीं, क्योंकि पागलों ने

मोती के बारे में सुन रखा है।" पागल जवाब देते हैं, "अगर तुम थैलों में भरे सोने का ढेर भी लगा दो तो तुम मोती की पूरी क़ीमत नहीं चुका सकते। अपनी क़ीमत के बराबर सिर्फ़ मोती ही हो सकता है।" लेकिन बुद्धिमानों का कहना है, "वे पागल हैं। वह अनुपम मोती तो अनमोल है।"

अनुपम मोती का अभिप्राय पूर्ण सन्त से है।

771—चालीस दिन तक दिन में तीन बार एकान्त में बैठने के बाद अबू सईद को अपने अन्दर एक आवाज़ सुनाई दी कि उन्हें अमुक शैख़ के पास जाना चाहिए। जब दो शैख़ इकट्ठे बैठते हैं तो क्या होता है?* दोनों एक-दूसरे में समा जाते हैं। अबू सईद के शिष्यों में से एक के मन में विचार आया कि वह कितना अच्छा समय था जब दो शैख़ इकट्ठे तख़्त पर दिखाई दिये थे।

उस शैख़ को इस विचार का पता चल गया, लेकिन अबू सईद को अपनी एकाग्रता के कारण इसका पता नहीं चला। शैख़ को गहरी एकाग्रता के बावजूद इसका ज्ञान हो गया। अबू सईद एकाग्रता के दौरान मस्त न होने के लिए ही उस शैख़ के पास गया था, और ऐसी अवस्था बहुत दुर्लभ होती है। यह ऐसी अवस्था होती है कि कोई ख़ालिस शराब के सौ मटके पी ले, लेकिन फिर भी वह नशे में न हो। फिर भी उसके होश क़ायम रहें।

उस शिष्य के विचार पर शैख़ को हँसी आ गई, और उस हँसी से अबू सईद को कुछ आन्तरिक अनुभव हुआ और उसकी समस्या का समाधान हो गया। तब शैख़ ने उससे कहा, "तुम कुछ कहो, क्योंकि यही दस्तूर है कि मेहमान पहले कुछ कहता है।" अबू सईद ने कहा, "मैं वह मेहमान हूँ जो शैख़ की सोहबत से फ़ायदा उठाने आया है।"

---

* कहानी शैख़ अबू सईद अबुलख़ैर और शैख़ अबुलहसने ख़रक़ानी की एक मुलाक़ात की ओर संकेत करती है।

798 — हज़रत ईसा – परमात्मा उन्हें शान्ति प्रदान करे – एक सो रहे व्यक्ति के पास से गुज़रे। उन्होंने उससे कहा, "तुम्हें परमात्मा ने बनाया है, तुम उठकर उसकी भक्ति क्यों नहीं करते?" उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "ऐ परमात्मा के दूत, मैं परमात्मा की भक्ति उस तरह से कर रहा हूँ जिस तरह उसे सबसे ज़्यादा पसन्द है।" हज़रत ईसा ने कहा, "वह क्या है?" उसने जवाब दिया, "मैंने दुनिया उन लोगों के लिए छोड़ दी है जिनका ध्यान दुनिया में रहता है।" हज़रत ईसा ने कहा, "सो जाओ, क्योंकि तुम सब नेक-पाक लोगों और कठोर संयम करनेवाले व्यक्तियों से आगे निकल गये हो।"

संसार की ओर से सोये रहना और परमप्रिय
परमात्मा के प्रति जाग्रत रहना।

रूमी के बारे में शम्स के वचन

संसार के अस्तित्व का एकमात्र उद्देश्य दो ऐसे मित्रों का
मिलन है जिन्होंने परमात्मा की ओर मुँह कर लिया हो,
और सांसारिक इच्छाओं से मुँह मोड़ लिया हो।

शम्स, मक़ालात 628

हृदय को मुग्ध करनेवालों का भेद,
जो दूसरों की कहानी में छिपा है,
बता देना बेहतर है।

रूमी, मसनवी

रूमी के बारे में शम्स के वचन

78-9 — भुलक्कड़पन तीन तरह का होता है। एक भुलक्कड़पन वह है जिसमें इनसान इस दुनिया के ध्यान में मग्न हो जाने के कारण परलोक को बिलकुल भूल जाता है। जिनमें इस तरह का भुलक्कड़पन होता है उनके लिए यह दुनिया सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होती है। दूसरी तरह के भुलक्कड़पन का कारण इनसान का परलोक के ध्यान में मग्न रहना है जिससे वह अपने आप को ही भूल जाता है। इस तरह के इनसान के हाथों में दुनिया ऐसी होती है जैसे बिल्ली के पंजों में जकड़ा हुआ चूहा। प्रवचन सुनकर और प्रभु के दास [शैख़] के साथ बातचीत करके वह ऐसी अवस्था में पहुँच जाता है जिसमें एक शैख़ तीस साल नमाज़ के आसन पर बैठने पर भी नहीं पहुँच सकता। तीसरी तरह के भुलक्कड़पन का कारण प्रभु-प्रेम है। प्रेम-मग्न अवस्था में इनसान इस दुनिया और अगली दुनिया दोनों को भूल जाता है। मौलाना की यही अवस्था है क्योंकि उनमें प्रेम की मस्ती है, लेकिन प्रेम की गम्भीरता नहीं। इसके विपरीत मुझमें प्रेम की मस्ती और गम्भीरता दोनों हैं, मैं मस्ती में सब कुछ भूल नहीं जाता।

दुनिया की क्या मजाल है कि वह मेरे लिए एक परदा बन जाये या अपने को मुझसे छिपा ले?

शैख़ परमात्मा के ध्यान में मग्न रहने के बावजूद
संसार के प्रति पूर्णतया सचेत रहते हैं।

99 — मैं अपने आप से बातें कर सकता हूँ, या किसी ऐसे व्यक्ति से जिसमें मैं ख़ुद को देख सकूँ। तुम असल में वह "तुम" हो, जो ज़रूरत जताता है,

वह "तुम" नहीं जो अजनबी बनकर कहता है कि उसे कोई ज़रूरत नहीं है। वह तो तुम्हारा दुश्मन था। मैं उसका दिल दुखाता था क्योंकि वह तुम नहीं थे। तुम्हें मैं दु:ख कैसे दे सकता था? क्योंकि मैं अगर तुम्हारे पैर भी चूमूँ तो डरता हूँ कि मेरी पलकें कहीं उनमें चुभ न जायें और उन्हें घायल न कर दें।

शिष्य को ढालना।

111—उन्हें कुछ [आध्यात्मिक प्राप्ति] उपलब्धि हुई है, क्योंकि मैंने उस ज्योति के प्रकाश के अनुसार ही उनकी लेखनी से शब्दों को जन्म दिया है, और अब तक वे दो पुस्तकें लिख चुके हैं।

अगर मैं मौलाना से कहूँ कि अपने बच्चों को शहर से दूर भेज दें, तो वे ऐसा ही करेंगे।

अगर मैं पाखण्डी हो सकता तो वे [शम्स के आलोचक] मुझे सोने से ढक देते। मैं मौलाना को ही इसलाम का सबसे बड़ा धार्मिक नेता मानता हूँ, किसी और को नहीं। यहाँ और कौन ईमानदार [प्रभु से सच्चा प्यार करने में] है? अगर मैं यही बात क़ाज़ी के बारे में कह सकता तो वह सौ तरह से मेरा हुक्म मानता। अगर मैं हरजाना स्वीकार करता और मौलाना मुझे हर रोज़ चाँदी के सौ सिक्के देते, तो भी वह मेरे उन दु:खों का जो मैंने सहे हैं, उचित हरजाना न होता, ख़ासकर चाँदी के सिक्कों से तो बिलकुल नहीं। मैं आपमें से किसी से भी कुछ नहीं चाहता, अगर कुछ चाहता हूँ तो केवल मौलाना से। मुझे उनके साथ रहकर ही शान्ति मिल सकती है।

मेरी पत्नी मौलाना या किसी और के इतने क़रीब नहीं है जितनी वह मेरे क़रीब है; वह मेरे हुक्म में रहती है और मैंने उसे कह रखा है कि मैं नहीं चाहता मौलाना के अलावा कोई और उसका चेहरा देखे*।

---

* शरीअत की सही व्याख्या के अनुसार स्त्री का चेहरा उसके पति और उससे ख़ून के निकट सम्बन्धियों के अलावा और किसी को देखने की इजाज़त नहीं है।

115—क्या मैं धोखा देने के इरादे से ये शब्द कहूँ या सच्चाई बयान करूँ? मौलाना चाँद जैसे हैं। नज़र मेरी हस्ती के सूरज को नहीं निहार पाती, पर नज़र चाँद को निहार सकती है। आँखें सूरज की तेज़ रोशनी और किरणों को सहन नहीं कर सकतीं, और न वह चाँद ही सूरज तक पहुँच सकता है जब तक कि सूरज उस तक न पहुँचे। "आँखें उसे नहीं देख सकतीं, लेकिन वह आँखों में समाया हुआ है (क़ुरान 103/6)।"

सब कुछ शैख़ की इच्छा पर निर्भर करता है।

121-2—सम्मानित व्यक्तियों में बहुत-से ऐसे हैं जिनके लिए मेरे दिल में जगह है, लेकिन यह बात मैं उनसे कह नहीं सकता। एक-दो बार मैंने उनसे अपने दिल की बात कही, लेकिन न तो वे मेरी बात समझ पाये और न ही उन्होंने मेरी संगति की क़द्र की। जब मैंने मौलाना पर अपना स्नेह प्रकट किया तो इससे हमारा प्रेम और भी बढ़ गया। मैं औरों से सच्ची बात नहीं कह सकता, क्योंकि एक बार जब मैंने ऐसा किया तो लोगों ने मुझे बाहर निकाल दिया था।

अगर मैं केवल सच्चाई बयान करूँ तो शहर के सब लोग तुरन्त मुझे बाहर निकाल देंगे। शहर के छोटे-बड़े सभी, जिनमें मौलाना भी शामिल होंगे, मुझे बाहर निकाल देंगे। आप मुझसे पूछें कि मौलाना यह कैसे कर सकते हैं। जब वे हर किसी को मुझे बाहर निकालते देखेंगे तो सिर्फ़ यह देखने के लिए कि मैं कहाँ जाता हूँ, वे उनकी मदद करने के बहाने उनमें शामिल हो जायेंगे। फिर वे मेरे पीछे आयेंगे। लेकिन मेरे इन शब्दों में भी कुछ छल है। अगर मैं पूरी सच्चाई बयान करूँ तो यहाँ उपस्थित आप सब लोग मुझे मार डालने की कोशिश करेंगे, लेकिन आप ऐसा कर नहीं सकते। नुक़सान आपका ही होगा। चाहें तो कोशिश करके देख लें।

शैख़ को कौन समझ सकता है!

129-30 — उत्साह से भरा कोई खोजी लाख कोशिश करने पर भी वे गुण प्राप्त नहीं कर सकता जो मौलाना में हैं, उनके गुणों में से एक भी नहीं। तुम उनके धैर्य, उनके ज्ञान, उनकी नम्रता, उनकी उदारता के बारे में बात करना चाहते हो? नहीं, यह असम्भव है और इसका कोई लाभ भी नहीं। जो कोई ऐसा करने की कोशिश करता है उसे तो खेद प्रकट करना चाहिए और क्षमा माँगनी चाहिए।

142 — मेरे अन्दर रूहानी ज्ञान और अनुभव का जो प्रकाश है, उसी के कारण मैं ये मीठे और सुखद बोल बोल रहा हूँ। मैं पानी था जो अपने ही गिर्द चक्कर काटता-काटता थम जाता था और उसमें बदबू आने लगती थी। जैसे ही मैं मौलाना से मिला मैं बहता पानी हो गया, ताज़ा, मीठा और अलमस्त।

अपने चहेते शिष्य की संगति में पूर्ण सन्त की ख़ुशी।

144 — इतने ऊँचे स्तर का व्यक्ति [रूमी], जो सब विद्याओं में मुझसे श्रेष्ठ है, सौ बार मेरे सामने झुकता है, और मैं एक बार भी उसके सामने नहीं झुकता। मंच पर से जिस पल मैं एक भी शब्द बोलता हूँ, हर कोई मुझ पर हँस देता है। मैंने ऐसी ही बातें तुम लोगों को इतनी बार बताई हैं, आख़िर तुम उन्हें कब मानोगे?

शम्स रूमी के अनुयायियों को सम्बोधित कर रहे हैं।

ख़ुदा करे उस चेहरे पर हज़ार मेहर और बख़्शिशें हों! ख़ुदा ने मुझे उस चेहरे को चूमने के योग्य बनाया है, चूमने का हक़दार बनाया है। शैख़ मुहम्मद सत्य की खोज में थे और वह मेरे साथ ऐसा ही नाता चाहते थे, लेकिन मैंने उनसे यह नाता नहीं जोड़ा। और क्योंकि मैं आपके साथ वह रिश्ता चाहता था जो शैख़ मुहम्मद मेरे साथ चाहते थे, तो इससे क्या आपकी समझ में आ रहा है कि मेरे मन में आपका क्या स्थान है?

शम्स रूमी से सच्चे प्रेम की बात करते हैं।

163-4 — किसी का पक्ष मत लो। हो सकता है निष्पक्ष रहने से आपका कोई काम बन जाये। "स्वस्थ रहना स्वास्थ्य को ठीक करने से आसान है, जैसे पाप किये जाना पश्चात्ताप करने से आसान है।"* लेकिन अगर गिरती सेहत का दर्द तुम्हें एक बार दबोच ले तो तुम सब्र से उस दर्द को सह लेते हो, और जो नहीं करना चाहिए उसे करने से परहेज़ करते हो। तब तुम बार-बार यह कहते हो, "मैंने पहले सब्र से काम क्यों नहीं लिया? उस हालत में सब्र करना कहीं ज़्यादा आसान होता।"

आपके जिस काम के लिए मैं इस बार आया हूँ, वह काम [आत्मसमर्पण] अगर आप अभी पूरा कर सकें तो अच्छा रहेगा, क्योंकि तब आपके रूहानी लाभ के लिए मुझे दोबारा नहीं आना पड़ेगा। मैं आपको सफ़र करने के लिए नहीं कहना चाहता, इसलिए आपके रूहानी काम के लिए मुझे ख़ुद ही एक बार और आना पड़ेगा।† जुदाई इनसान में परिपक्कवता लाती है। जुदा होने पर आप सोचते हैं, "वे हुक्म मानने बहुत आसान थे, फिर मैंने उनका पालन क्यों नहीं किया? इस जुदाई का दर्द और दुःख सहने से वह हुक्म मानना कहीं आसान था। जो कुछ मैंने छिपाये रखा और कहा नहीं, उसमें मैंने ईमानदारी से काम नहीं लिया क्योंकि मैंने दोनों को [शम्स को और शम्स के आलोचकों को] ख़ुश रखने की कोशिश की, और जो मैंने पहेलियों में कहा, वह सब मुझे साफ़-साफ़ कह देना चाहिए था। कितना मुश्किल था भला यह काम?"

आपकी ख़ातिर मैं पचास बार भी सफ़र कर लूँगा। मेरे यहाँ आने का उद्देश्य आपके काम को पूरा करना है, नहीं तो मेरे लिए दमिश्क और

---

* एक हदीस।

† उन दिनों सफ़र करना कठिन था क्योंकि सड़कें कच्ची थीं और सफ़र आम तौर पर पैदल ही किया जाता था। सरायें कम थीं, कुछ सड़कों पर शायद सिर्फ़ एक ख़ानक़ाह या कारवाँ सराय ही थी। कोई सुविधाएँ भी नहीं थीं, खाना और पानी कठिनाई से मिलता था।

रूम में क्या अन्तर है? इससे मुझे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि मैं क़ाबे में हूँ या इस्तंबोल में? मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। इतनी बात ज़रूर है कि जुदाई से विकास होता है और निखार आता है।

साथ-साथ रहकर व्यक्तित्व का जो विकास होता है और उसमें जो निखार आता है, वह क्या उस विकास और निखार से ज़्यादा अच्छा नहीं है जो जुदाई से आता है? उस व्यक्ति की हालत जो किसी के साथ रहकर, उससे एक होकर, पूरी तरह विकसित होता है, और एक ऐसे व्यक्ति की हालत में जो दरवाज़े के बाहर खड़ा अन्दर आने की अनुमति की प्रतीक्षा करता है, कोई समानता नहीं है। बाहर खड़े रहनेवाले की हालत की तुलना भला उस आदमी की हालत से कैसे की जा सकती है जो अन्दर के दरबार में रहता है?

शम्स रूमी को पहले जुदाई और तड़प का महत्त्व बताते हैं, और फिर कहते हैं कि संगति उससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

170 — किसी ने मौलाना (रूमी) से कहा, "मैं आपसे प्यार करता हूँ, और इसी कारण दूसरों से प्यार करता हूँ।"

शम्स ने कहा, "उससे कहो कि अगर 'दूसरों' से तुम्हारा मतलब मौलाना शम्स अल-दीन तब्रीज़ी से है, और अगर तुम मौलाना की ख़ातिर मुझसे प्यार करते हो तो मेरे लिए इसका महत्त्व ज़्यादा है, बनिस्बत इसके कि तुम मेरे कारण मौलाना से प्यार करते।"

187 — मौलाना रूमी न होते तो ये लोग हमसे कैसे मिल सकते थे? एक दोस्त से मिलने के लिए मुझे सौ दुश्मनों से आँख मिलानी पड़ती है, इसलिए मैं इन सबसे मिलता हूँ। मैंने कल आपके स्वरूप को अपने अन्दर बिठाया और उससे पूछा, "आप इन लोगों को साफ़-साफ़ और सीधा जवाब क्यों

नहीं देते?" उसने जवाब दिया, "इनके सामने मुझसे बोला नहीं जाता और मैं इनका दिल भी नहीं दुखाना चाहता।" फिर मैं उसे जवाब पर जवाब देता रहा ... बहस लम्बी चली। ऐसा कुछ नहीं बचा जिस पर हमने चर्चा न की हो। फिर भी, मानों हमने कुछ कहा ही नहीं। जो अभी पूर्ण नहीं हुए हैं उनके बारे में हमने सब कुछ कह दिया, जब कि जिस बात का ख़ुद हमसे सम्बन्ध है, उसके बारे में हमने कुछ भी नहीं कहा।

अन्दर और बाहर, शैख़ का महत्त्व सबसे अधिक है।

219-20 — मैं अपने आप से ऊब गया था, इसलिए मुझे अपने जैसे ऐसे व्यक्ति की तलाश थी जिसे मैं अपने ध्यान का केन्द्र बना लेता। पता नहीं मेरे यह कहने से कि मैं अपने आप से ऊब गया था तुम क्या समझते हो। अब क्योंकि मैंने किसी को अपने ध्यान का केन्द्र बना लिया है, मैं जो भी कहता हूँ वह [रूमी] समझता है और ग्रहण कर लेता है।

पूर्ण पुरुष को अपने जैसे की तलाश होती है।

220 — अगर मेरी इच्छा मुहम्मद साहिब से बातें करने की होती तो मैं शब्दों के प्रयोग में और अपने कामों में सूक्ष्म बुद्धि से काम लेता, और उनसे चतुराई से बात करता। लेकिन फिर भी मैंने साहस और दिलेरी से आपकी मित्रता की तरफ़ क़दम बढ़ाया। मैंने यह नहीं सोचा कि मेरे शब्द सन्देह पैदा करेंगे, इसलिए मुझे सावधानी से काम लेना होगा, या मुझे चौकस रहना होगा क्योंकि मेरे काम आपको कुछ बातों की याद दिला देंगे। कोई भी ऐसा मित्र नहीं चाहता जो दु:ख दे। मित्र या तो अक़्लमन्द और हमदर्द हो, या फिर बिलकुल नादान हो। वरना वह गीली, सुलगती लकड़ी की तरह सिर्फ़ धुआँ ही छोड़ेगा।

आप कहते हैं कि धुआँ बन्द करने के लिए मुझे आग को बुझा देना चाहिए, पर मैं ऐसा नहीं करना चाहता। आग या तो लकड़ी को निगल

जायेगी या पूरी तरह बुझ जायेगी। आप कहते हैं कि इस तरह की सोच निराली है। हाँ, शायद आपके लिए, लेकिन उसके लिए नहीं जो जलती हुई लकड़ी देख रहा हो।

सच्चा प्रेमी कैसे बनाया जाता है।

221-2 — मैंने आपके साथ वह नहीं किया है जो मैंने अपने शैख़ के साथ किया है। मैं परेशान होकर चला आया। पर वे कहते थे कि वे एक शैख़ हैं। लेकिन, मौलाना रूमी, आप तो कुछ और कह रहे हैं। आप एक अलग तरह के शैख़ हैं, मैंने आप जैसा कभी कोई नहीं देखा। और सबके साथ मेरा अनुभव ऐसा ही रहा है। जब तक मैंने नहीं चाहा, ऐसा कुछ हुआ ही नहीं। जब तक मैं उन लोगों को न बुलाता, वे नहीं आते थे। पैग़म्बर मुहम्मद के वचनों की आप जो व्याख्या करते हैं वह यूसुफ़ द्वारा की गई व्याख्या से ज़्यादा अच्छी होती है, हालाँकि वे सच्चे इनसान थे।

शम्स का प्यार मापदण्ड को ऊँचा कर देता है।

226 — मैं हर किसी को अपना शिष्य नहीं बनाता, सिर्फ़ किसी शैख़ को ही अपना शिष्य बनाता हूँ। और हर किसी शैख़ को भी नहीं, बल्कि एक कामिल शैख़ को ही।

290 — मैं लोगों से बहुत कम मिलता-जुलता हूँ। जो इतने महान् हैं और जिनकी इतनी शान है कि अगर तुम सारी दुनिया को भी छान डालो तो उन जैसा और कोई नहीं मिलेगा, उन्हें मैंने पूरे सोलह साल में सिर्फ़ 'सलाम' ही कहा, इससे ज़्यादा कुछ नहीं।

कोन्या जाने से सोलह साल पहले शम्स ने दमिश्क में रूमी का केवल अभिवादन ही किया था।

318 — जब मैं बहुत-से लोगों के बीच बात करता हूँ तो आपको निश्चित रूप से पता होना चाहिए कि मैं आपके लिए क्या कह रहा हूँ। जो आपके लिए नहीं कहा गया है, उसे अपने लिए मत मान लें। ऐसी अवस्था पक्के विश्वास और भरोसे से पैदा होती है। यह भला कैसा विश्वास हुआ कि आपका मित्र आपके लिए इतना कुछ कहे और आप उसे समझ ही न सके। अगर आप समझ गये थे तो बतायें कि वे क्या बातें थीं। अगर आपको मुझे बताने में डर लगता है तो आपकी समझ पर सन्देह का अँधेरा छा गया है और यह धोखा शैतान का काम है। वह आपको आपके मित्र से जुदा कर देना चाहता है। वही दैत्य आपको पुकार रहा है और आपको सीधे रास्ते से रेगिस्तान की तरफ़ खींच रहा है। उसकी आवाज़ मित्र की आवाज़ जैसी जानी-पहचानी जान पड़ती है। या वह कोई भेड़िया है जो सड़क को ढकने के लिए बर्फ़ को फैला रहा है और आपकी आँखों पर परदा डाल रहा है।

मुझे लगता है कि उन्होंने [रूमी के अनुयायियों] ने आपको मुझसे छीन लिया है, लेकिन वे आपको मुझसे छीन कैसे सकते हैं? इसके बावजूद मैं अपने आप को सुरक्षित नहीं समझ सकता।

शम्स रूमी को अपने शैख़ पर सन्देह न करने की सलाह दे रहे हैं।

628 — संसार के अस्तित्व का एकमात्र उद्देश्य दो मित्रों का मिलन है जो अपना मुँह परमात्मा की ओर रखते हैं, और सांसारिक इच्छाओं से मुँह मोड़ लेते हैं। उद्देश्य न तो नानबाई और नानबाई की दुकान है, और न ही पनसारी और पनसारी का सामान। उदाहरण के लिए, इस समय मुझे मौलाना की संगति से ही आराम मिल रहा है।

629 — आप लोगों को प्रशंसा करने की ज़रूरत नहीं है। मुझे ख़ुद ही उन बातों की ख़बर है। बस, प्रशंसा करना बन्द करें। मैं आपको बता रहा हूँ

कि अगर आप सचमुच मौलाना की प्रशंसा करना चाहते हैं तो कुछ ऐसा करें जिससे उन्हें शान्ति और ख़ुशी मिले, न कि कुछ ऐसा जिससे उन्हें कष्ट और परेशानी हो। जिस बात से मुझे दु:ख होता है उससे, असल में, मैलाना का दिल दुखता है।

शम्स रूमी के अनुयायियों को सम्बोधित कर रहे हैं जो रूमी की प्रशंसा करते हैं और शम्स की महानता को स्वीकार नहीं करते, और इस तरह दोनों को दुखी करते हैं।

660—सूरज सारी दुनिया को रोशनी देता है। वह मेरे मुँह से, मेरे वचनों से, उस रोशनी को झिलमिलाते देखता है; वह रोशनी काले शब्दों के नीचे से भी चमकती है। इस सूरज ने और हर किसी की तरफ़ पीठ कर रखी है, लेकिन इसका मुँह ऊपर आसमान की तरफ़ है और इससे यह ऊपर और नीचे सब को प्रकाशित करता है।

सूरज का मुँह मौलाना की तरफ़ है क्योंकि मौलाना का मुँह सूरज की तरफ़ है।

शम्स सूर्य है, वह दिव्य शक्ति जो हर समय हर किसी के अन्दर विद्यमान है। हमें केवल अपना मुँह इस सूर्य की ओर करने की आवश्यकता है।

665—विवाह केवल एक ही क़िस्म का नहीं होता। यह भी विवाह है:

कितनी दुखदायी है मित्र से जुदाई!
रोओ, कराहो, प्रियतम के अलविदा कहने पर।
मौत हज़ार दर्जे सुखद है मेरे लिए
बनिस्बत इन दो घटनाओं का सामना करने के। (अज्ञात)

इनसान को अपना काम यहाँ पूरा कर लेना चाहिए। आपने तो कर लिया। आपने अपने लिए स्वर्ग में एक निश्चित स्थान बना लिया, और वह स्थान देख भी लिया।

677—कितना महान् है वह इनसान जिसकी क़ीमत सात लोक और सम्पूर्ण सृष्टि है। वे [शैख़] ही असली इनसान हैं। वे ही पैग़म्बर मुहम्मद के [सच्चे] अनुयायी हैं। आपकी [रूमी की] वजह से ही हज़रत मुहम्मद की आँखों में चमक आई है। उन्हें गर्व है कि आप उनके अनुयायी हैं। वे आपका हाथ पकड़ते हैं, आपको मूसा और ईसा से मिलाते हैं, और गर्व करते हैं कि ऐसा इनसान उनका अनुयायी है।

689—अगर आप मुझे देखें, और मैंने मौलाना को देख लिया है, तो आपको लगेगा कि आपने मौलाना को देख लिया है। मैंने सौ बार कहा है कि मुझमें उन्हें देखने की शक्ति नहीं है, और वे भी मेरे बारे में यही बात कहते हैं। लेकिन मैं जानता हूँ कि मौलाना की मौत के बाद आप बहुत पछतायेंगे कि आपने मौलाना को समझा नहीं और यह अवसर गँवा दिया। तब बहुत देर हो चुकी होगी। अब इस अवसर का लाभ उठाएँ और मित्रों के इकट्ठे होने को महत्त्व दें।

अवसर का लाभ उठाओ।

694—जब घने अँधेरे के इतने सारे परदे और रोशनी के हज़ारों परदे हों तो उम्मीद की डोरी कट जाती है।

मैं परमात्मा को साक्षी मानकार क़सम खाता हूँ कि अगर कोई हज़ार किताबें पढ़ लेता है लेकिन उनमें उसका क़ुदरती रुझान नहीं है, तो उसे कोई लाभ नहीं होता। यह तो गधे की पीठ पर मन भर किताबें लादने के समान है।

उन लोगों [रूमी के अनुयायियों] का उनसे इतने लम्बे अरसे से मेलजोल रहा है, फिर भी वे उनकी अवस्था के बारे में कुछ नहीं जानते। तो फिर वे क्या जानते हैं? या वे हासिल क्या कर सकते हैं? उन्हें मौलाना से कोई लाभ नहीं होगा, बस इतना है कि उनकी प्रत्यक्ष नम्रता और सहानुभूति से वे कुछ प्रभावित हो पाये हों। जैसे ही तुम्हें यह एहसास हो जाये कि तुम उनके सामने कोई ग़लत काम कर रहे हो और वे कुछ नहीं कहते, तो समझ लो कि उन्होंने प्यार का बन्धन तोड़ दिया है और वे केवल रस्मी तौर पर प्यार निभाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन ऐसा करके वे तुम्हारे ही दिखाये रास्ते पर चल रहे हैं।

घनिष्ठता से तिरस्कार भले ही उत्पन्न न हो, तो भी लोग उस महापुरुष के व्यक्तित्व के प्रति अन्धे तो हो ही जाते हैं जो उनके बीच मौजूद है।

706 — शैतान ने बहुत कोशिश की, आपको कई चोटें पहुँचाईं, और आपके हाथ से कई चोटें खाईं भी। ऐसा बिलकुल नहीं लगता कि अब वह आपको प्रलोभन दे सकता है। अगर अब वह आपको कोई चुनौती देना चाहता है तो उसे कड़ा संघर्ष करना होगा और बहुत दु:ख उठाना पड़ेगा।

शम्स रूमी से मन के साथ लड़ाई में उनकी जीत के बारे में बात कर रहे हैं।

730 — पृथ्वी के किसी भी आबाद हिस्से में ऐसा कोई नहीं है जो ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में मौलाना की बराबरी कर सके, चाहे वह मूल सिद्धान्तों का क्षेत्र हो, चाहे क़ानून का और चाहे व्याकरण का। अगर ज़रूरी महसूस हो या वे ख़ुद चाहें और उकता न जायें, तो वे तर्कशास्त्र के विशेषज्ञों के साथ जोश से और अत्यन्त मीठे स्वर में गूढ़ बातें उनसे बेहतर कर सकते हैं। मुझे बचकाना हरकतें पसंद नहीं। मैं अगर सौ साल भी कोशिश करूँ

तो उनके ज्ञान और कौशल का दस फ़ीसदी भी हासिल नहीं कर सकता। लेकिन अब उन्होंने इन सबकी तरफ़ बेपरवाही का रवैया अपना लिया है और – मुझे यह कहते हुए शर्म महसूस हो रही है – मेरी बातें सुनते समय वे अपने आप को पिता के सामने बैठा दो साल का बच्चा समझते हैं, या उस व्यक्ति जैसा समझते हैं जो अभी-अभी मुसलमान बना है और इसलाम के बारे में कुछ नहीं जानता। कैसा आत्मसमर्पण है!

शम्स रूमी की उपलब्धियों और उनकी नम्रता के बारे में बात कर रहे हैं।

749 — ऐ पवित्र आत्मा, हम तिनके के नीचे बह रहे पानी जैसे हैं, जो इतनी धीमी और सूक्ष्म गति से बहता है कि तिनके को पानी का बहाव महसूस नहीं होता। अचानक, हम तिनके को ऊपर उठाते हैं और पानी बहता हुआ आगे निकल जाता है।

सौगन्ध है परमात्मा की, आपका दर्शन होना बड़े सौभाग्य की बात है! अगर कोई ऐसे व्यक्ति से मिलना चाहे जो परमात्मा का सन्देश लेकर आया है तो वह मौलाना से मिले जब वे आराम से बैठे हों और कोई शिष्टाचार न निभायें। भाग्यशाली है वह जिसे मौलाना मिल गये हैं!

मैं कौन हूँ? हाँ, मैं वह हूँ जिसे मौलाना मिल गये हैं। भाग्यशाली हूँ मैं!

शम्स द्वारा रूमी की प्रशंसा।

773-4 — यह दिव्य शराब* से भरा एक मटका था जो बड़ी सावधानी से छिपाकर रखा हुआ था, और सब इससे बेख़बर थे। मैंने दुनिया में अपने कान खोलकर रखे और इन्तज़ार करता रहा। यह मटका मौलाना के कारण खुला। जिस किसी को भी कोई लाभ हुआ मौलाना के कारण हुआ।

---

* प्रभु-प्रेम के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त।

सच्ची बात तो यह है कि हम [शम्स] मौलाना [रूमी] के अपने हैं। हमारे इरादे और हमारी आँखों की रोशनी का लाभ उन्हें पहुँचेगा। जब लोग मुझे बताते हैं कि मौलाना ख़ुश हैं तो मैं और ज़्यादा ख़ुश होता हूँ। मैं वही करता हूँ जो वे चाहते हैं। अगर मेरे ऐसा करने से उन्हें ख़ुशी मिलती है तो मैं समाअ में अपनी उँगलियाँ चटकाऊँगा। उनसे बस इतना कह दो कि मुझे बता दें कि वे मुझसे क्या चाहते हैं।

किसी ने कहा कि उन्होंने मौलाना को बताने की कोशिश की कि शायद शम्स यहाँ आयेंगे क्योंकि उन्हें आशा थी कि यह बात सुनकर वे [रूमी] प्रवचन करेंगे, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। अब हमें क्या करना चाहिए? जवाब वही है जो मैं पहले भी दस बार कह चुका हूँ। अगर आप लोगों को उनके प्रवचन एक बार सुनना अच्छा लगता है तो मैं उन्हें सौ बार सुनना चाहता हूँ। उनका प्रवचन सुनने की जो थोड़ी-सी कोशिश आप करते हैं वह व्यर्थ हो जाती है क्योंकि आप उनके शब्दों की व्याख्या करने लगते हैं और उन पर टिप्पणी करते हैं, लेकिन उनके बात करने के अन्दाज़ से ही सौ लाभ मिलते हैं।

शम्स रूमी के लिए अपना प्रेम व्यक्त कर रहे हैं।

774 — मौलाना ने कई बार कहा है, "वे [शम्स] मुझसे ज़्यादा दयावान् हैं।"

मौलाना अपनी मदहोशी में ख़ुश हैं। उन्हें इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि कोई बहुत गँदले पानी में जा गिरा है, या आग में, या फिर नरक में ही। अपनी ठोड़ी हाथ पर टिकाये वे केवल देखते रहते हैं। उसे बचाने के लिए वे पानी या आग में नहीं कूद जाते। मैं भी देख रहा होता हूँ, लेकिन मैं उसे पीछे से पकड़ लेता हूँ और कहता हूँ, "गिरो नहीं मेरे भाई, हममें शामिल होने के लिए बाहर आ जाओ और हमारे साथ मिलकर देखो।" मेरे शब्द और बातें ही "उन्हें पीछे से पकड़ने और बाहर खींच लेने का काम करती हैं।"

शान्त-स्वभाव वाले शैख़ की सहानुभूति।

777-8 — मौलाना के पास जाकर उनके साथ रहने की मेरी पहली शर्त यह थी कि मैं मुर्शिद की हैसियत से नहीं रहूँगा। परमात्मा ने धरती पर ऐसा कोई इनसान पैदा ही नहीं किया जो मौलाना का मुर्शिद बन सके। ऐसा कोई इनसान हो ही नहीं सकता। मैं ऐसा भी नहीं हूँ कि मुरीद बन सकूँ। यह क़ाबिलीयत मुझमें रही ही नहीं।

अब क्योंकि हम दोनों का सम्बन्ध केवल मित्रता और सुख-चैन के लिए है, इसलिए मुझे किसी तरह का छल-कपट करने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए। ज़्यादातर पैग़म्बरों ने सच्चाई प्रकट नहीं की है। छल-कपट करने से मेरा मतलब है अपने दिल की बात न कहकर कुछ और कहना। "जो अपने मन को जानता है, वह अपने ख़ुदा को जानता है।"* असल में उन्हें कहना तो यह था, "...वह मुझे जानता है।" लेकिन हज़रत मुहम्मद को यह कहने में संकोच महसूस हो रहा था, इसलिए उन्होंने कहा, "...वह अपने ख़ुदा को जानता है।" लेकिन अगर उन्होंने अपनी बात ऐसे न कही होती तो उनके साथी उनकी बात सहन न कर पाते। फिर भी, यह इस तरह का छल-कपट है जो उनके साथियों को स्वर्ग ले जायेगा। उनकी सच्चाई उन लोगों को मुक़ामे हक़ तक ले जायेगी। जो कोई भी उनकी सच्चाई स्वीकार करने को तैयार था, वह मुक़ामे हक़ के अधिक निकट हो गया। मैं मौलाना का मित्र हूँ, और मेरा विश्वास है कि वे परमात्मा के सन्तों में से एक हैं। जो परमात्मा के सन्त का मित्र है वह परमात्मा का मित्र है। यह कुछ ऐसा ही दस्तूर है।

शम्स और रूमी परमात्मा में समाकर उससे एक हो गये हैं।

778 — क्या तुम देख रहे हो कि मौलाना ने सिर कैसे झुका लिया है? इसका कारण यह है कि उनका फ़िरौन (मिस्र का बादशाह) जैसा अहं

---

* एक हदीस।

और अभिमान अभी मिटा नहीं। कुछ विद्वान् ऐसे होते हैं जो अपना सिर ऊँचा करके चलते हैं। अगर कोई भी अज्ञानी न होता तो विद्वानों को ज्ञान अर्जित करने के लिए इतना कष्ट उठाने और इतना समय लगाने की ज़रूरत न होती। विद्वानों ने अज्ञानियों के लिए अपने को बलिदान कर दिया। वे उन लोगों के लिए और अपने काम के लिए क़ुरबान हो गये।

अगर लोगों के साथ छल-कपट से बात न करो तो वे तुम्हें मुसलमान नहीं मानते। मैं शुरू से ही सच्चाई के रास्ते पर चलना चाहता था, छल-कपट से दूर रहना चाहता था, इसी लिए मुझे इतना संघर्ष करना पड़ा। उदाहरण के लिए, मौलाना के पास संसार भर का ज्ञान है, वे धार्मिक क़ानून के, उसके नियमों और बारीकियों के ख़ास जानकार हैं, उनके विशेषज्ञ हैं, लेकिन उन्हें पहले इन सबसे मुँह मोड़ना पड़ा, क्योंकि इन सब चीज़ों का परमात्मा की ओर ले जानेवाले मार्ग के साथ और पैग़म्बरों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। बल्कि ये सब चीज़ें तो उनके लिए एक परदा बन गई थीं जिसने उनके मार्ग को उनसे छिपा रखा था। उन्हें नये सिरे से कहना पड़ेगा, "मैं एलान करता हूँ कि एक ख़ुदा के सिवा दूसरा कोई ख़ुदा नहीं है।"*

अब अगर हम उनसे ऐसा नहीं कह सकते तो हम पाखण्ड करते हैं। पीर (गुरु) और मुरीद (शिष्य) होने के लिए सच्चाई ज़रूरी है।

असल में रास्ता पीर और मुरीद के रास्ते से अलग है।

विद्वान् वकील रूमी, शिष्य रूमी बनकर फिर से शिक्षा लेना आरम्भ करते हैं।

789 — अगर वे पूछें, "तुम मौलाना के बारे में क्या कहोगे?" तो तुम्हारा जवाब यह होना चाहिए: अगर तुम उनके कथनों के बारे में पूछ रहे हो तो

* नये सिरे से इसलाम ग्रहण करने का एक चिह्न। इसलाम धर्म का अनुयायी बनने की इच्छा रखनेवाले हर व्यक्ति के लिए इस वाक्य को दोहराना ज़रूरी है।

वे हैं, "दरअसल, जब वे चाहते हैं कि कोई चीज़ वुजूद में आ जाये तो हुक्म देते हैं "कुन फ़यकुन" यानी वुजूद में आ जाओ, और उसका वुजूद क़ायम हो जाता है। (क़ुरान 36/82)।"

अगर तुम उनके कर्मों के बारे में पूछते हो तो वे हैं, "वे हर रोज़ नई शान से चमकते हैं (क़ुरान 29/55)।"

अगर तुम उनके गुणों के बारे में पूछते हो तो वे हैं, "कहो कि वे ख़ुदा हैं, ख़ुदा जो एक है, सिर्फ़ एक (क़ुरान 1/112)।"

अगर तुम उनके नाम के बारे में पूछते हो तो वह है, "वे ख़ुदा हैं, और दरअसल दोनों जहानों में, जो दिखाई नहीं देता उसमें, और जो दिखाई देता है उसमें भी, उनके सिवा दूसरा कोई ख़ुदा नहीं है। वे ही वह हैं जो मेहरबान है, जो रहमान है (क़ुरान 22/55)।"

और अगर तुम उनकी हस्ती के बारे में पूछते हो तो "उन जैसी दूसरी कोई हस्ती नहीं है, और वही है जो सब कुछ देखता और सुनता है। (क़ुरान 11/42)"

शम्स बड़े कौशल के साथ क़ुरान की परमात्मा से सम्बन्धित आयतों का उपयोग करते हुए बता रहे हैं कि रूमी परमात्मा का रूप हो चुके हैं।

अपने बारे में शम्स के वचन

अगर तुमने मुझे देखा है और मुझे पहचानते हो,
तो फिर दु:ख को क्यों याद करते हो?
और अगर तुम ख़ुश हो तो फिर दु:ख में कैसे डूब गये हो?
अगर तुम मेरे साथ हो तो अपने साथ कैसे हो सकते हो?
और अगर तुम मेरे मित्र हो,
तो फिर तुम अपने मित्र कैसे हो सकते हो?
कई साल बीत जाते हैं और फिर, अचानक, कोई मित्र आ जाता है
जिसकी संगति से तुम्हें ख़ुशी और शान्ति प्राप्त होती है।

शम्स, मक़ालात 189–190

अपने बारे में शम्स के वचन

69-71 — अगर मेरे मित्र के चेहरे में केवल एक दोष है और मैं झुककर नम्रता से आईने से प्रार्थना करता हूँ कि वह उस दोष को उससे छिपा ले क्योंकि वह मेरा मित्र है, तो आईना ऐसा करने को राज़ी नहीं होगा। उसका शान्त और गम्भीर स्वभाव अपने आप बोल उठेगा, "यह तो असम्भव है।"

ऐ मेरे मित्र, अब तुम मुझसे आईना माँग रहे हो ताकि उसमें देख सको, और मेरी समस्या यह है कि मैं न तुम्हारी प्रार्थना अनसुनी कर सकता हूँ और न ही इसे ठुकरा सकता हूँ। मैं मन ही मन सोच रहा हूँ कि कोई बहाना ढूँढ़ लूँ जिससे तुम्हें आईना न देना पड़े, क्योंकि अगर तुम्हें बता दूँ कि तुम्हारे चेहरे में कोई दोष है तो तुम सहन नहीं कर सकोगे, लेकिन अगर कहूँ कि आईने में कोई दोष है तो और भी ज़्यादा बुरा होगा।

मेरा प्रेम मुझे बहाना नहीं बनाने देगा, इसलिए मैं कहता हूँ, "मैं अब आईना तुम्हें दे तो दूँगा, लेकिन अगर तुम्हें इसमें कोई दाग़ या धब्बा दिखाई दे तो ख़बरदार! आईने के अपने अन्दर कोई कमी नहीं है, इतना समझ लो कि यह तुम्हारी अपनी ही कोई कमी है; यह तुम्हारा अपना ही प्रतिबिम्ब है। अपने को उत्तरदायी ठहराओ, आईने को नहीं। फिर भी, अगर तुम अपने को दोषी ठहराने को तैयार नहीं हो, तो आईने को नहीं मुझे दोष दो, क्योंकि आईना मेरा है।" इस पर मेरा मित्र कहता है, "ठीक है।

मुझे तुम्हारी शर्त मंज़ूर है। अब मुझे आईना ला दो, क्योंकि मैं अब और सब्र नहीं कर सकता।"

मैं फिर मन में सोचता हूँ कि अगर कोई और बहाना ढूँढ़ लूँ तो हो सकता है कि यह अपनी ज़िद छोड़ दे, लेकिन मेरा दिल नहीं मानता कि मैं ऐसा करूँ। मेरा प्रेम मुझे ऐसा करने की इजाज़त नहीं देगा, इसलिए मैं एक नई शर्त रखने का फ़ैसला कर लेता हूँ।

मैं कहता हूँ, "अगर तुम्हें कोई दोष या दाग़ दिखाई दे तो न तो आईने को तोड़ो न ही इसके मूल तत्त्व को। वैसे सच तो यह है कि इसके मूल तत्त्व को तोड़ा ही नहीं जा सकता।" मेरा मित्र जवाब देता है, "न तो मैं जान-बूझकर ऐसा करूँगा, और न ही ऐसा करने का सोचूँगा। अब मुझे आईना दे दो और देखो कि मैं इसके साथ कितना विनम्र और निष्ठावान् हो सकता हूँ।" मैं कहता हूँ, "अगर तुम इसे तोड़ दोगे तो तुम्हें इसकी भारी क़ीमत चुकानी पड़ेगी, और सख़्त सज़ा भुगतनी पड़ेगी।" यह कहकर मैं आस-पास खड़े गवाहों को बुला लेता हूँ और फिर मित्र के हाथ में आईना थमाकर भाग जाता हूँ।

मेरे मित्र की समझ में नहीं आता कि अगर आईना ठीक है तो मैं भागा क्यों जा रहा हूँ, लेकिन जब वह आईने में देखता है तो उसे अपना चेहरा इतना भद्दा और बदसूरत दिखाई देता है कि उसका जी चाहता है आईने को ज़मीन पर पटक दे और तोड़ डाले। उसे समझ नहीं आता कि मैंने इसके लिए उसे इतना क्यों सताया और तड़पाया। लेकिन फिर उसे अपना वायदा याद आता है, सज़ा और गवाह याद आते हैं। वह सोचता है कि अगर अपने वायदे से न बँधा होता तो वह किस तरह मुझसे बदला लेता।

यह व्यक्ति अपने को पसन्द करता है इसलिए आईने को दोष देता है। अगर इसे अपना असली रूप पसन्द होता तो यह अपनी सूरत को दोषी मानता, न कि आईने को।

सच तो यह है कि यह आईना परमात्मा का ही रूप है, लेकिन यह व्यक्ति इस सत्य को कुछ और समझता है। पर इसे आईना फिर भी पसन्द है,

और आईना इसे पसन्द करता है। असल में, यह आईने को इसलिए पसन्द करता है क्योंकि आईना इसे पसन्द करता है। सिर्फ़ लगता ऐसा है कि बात इससे उलट है।

ख़ैर, आईने का चौकस और सावधान रहना सम्भव नहीं। यही बात कसौटी और तराज़ू पर भी लागू होती है; उन्हें भी सच्चाई पसन्द है। अगर तुम तराज़ू से हज़ार बार भी कहो कि थोड़े को ज़्यादा दिखाये, तो भी वह सिर्फ़ वही दिखायेगा जो सच है, चाहे तुम उसके आगे झुककर हाथ जोड़े दो सौ साल भी विनती करते रहो।

जिन्होंने प्रभु को पा लिया है, उनका हृदय बहुत निर्मल होता है।
जो उसकी ओर देखने का साहस करते हैं, उन्हें वह
आईने की तरह सच्चाई दिखा देता है।

72 — जो दावा करते हैं कि उन्होंने परमात्मा को पा लिया है, उन्हें सम्बोधित करते हुए शम्स कहते हैं: देखो, ये शब्द सर्वशक्तिमान् परमात्मा के निर्मल गुणों और उसके कल्याणकारी शब्दों का उल्लेख कर रहे हैं। ये हदीसें रूहानी ज्ञान का भण्डार हैं और सत्य की बात करती हैं। तुम कौन हो? तुम्हारे पास कहने को क्या है? तुम नेक इनसानों की कहानियों का ज़िक्र कर रहे हो जो ज्ञान से भरी हैं और सत्य की राह दिखाती हैं। हाँ, ऐसी कहानियाँ तो हैं, लेकिन तुम्हारे अपने अनुभव कहाँ हैं? तुम उनके बारे में बात करो। मैं अपने निजी अनुभव के आधार पर बोल रहा हूँ और हदीसों व कहानियों का हवाला नहीं दे रहा हूँ। अगर तुम्हें भी कुछ कहना है तो मुझे बताओ और आओ, हम उसके बारे में चर्चा करें।

जैसे कि मौलाना कहते हैं: जब किसी की परमात्मा के बारे में चर्चा बहुत पेचीदा हो जाती है, तो वह क़ुरान या हदीस का हवाला देकर उस पर समर्थन की मोहर लगा देता है क्योंकि उसका अपना कोई अनुभव नहीं होता।

73—किसी ने कहा कि रूमी के पास दया ही दया है और मौलाना शम्स अल-दीन में दया और शक्ति दोनों गुण हैं। दूसरे ने कहा, "लेकिन हर कोई ऐसा ही होता है।" फिर वह दूसरा आदमी मेरे पास आया, मुझसे माफ़ी माँगी और अपनी बात का ख़ुलासा करते हुए बोला कि उसका इरादा मुझमें कोई कमी बताना नहीं था, वह तो केवल दूसरे से असहमति जताना चाहता था।

अरे मूर्ख! माना कि वे मेरे बारे में बातें कर रहे थे, पर तुम उन बातों पर टिप्पणी कैसे कर सकते हो? ऐसा करने का तुम्हारे पास क्या बहाना है? वह व्यक्ति बता रहा था कि मुझमें परमात्मा जैसे गुण हैं, जिसमें दया व शक्ति दोनों शामिल हैं। वे न उसके शब्द थे, न क़ुरान के, और न ही पैग़म्बर के। वे शब्द वह मेरे बारे में कह रहा था। तुम कैसे जान सकते हो, और कह भी कैसे सकते हो, कि हर किसी में वे गुण होते हैं? दया और शक्ति के दोनों गुण जो मुझमें बताये जाते हैं, हर किसी में कैसे हो सकते हैं?

74—अगर किसी को मेरी बातें सुनने के बाद दूसरों के शब्द कड़वे और रूखे लगते हैं तो यह इस बात की निशानी है कि वह मेरी बात समझ गया है। ऐसा नहीं है कि वह उनमें दिलचस्पी नहीं रखेगा और उनसे बातचीत करना जारी रखेगा, बल्कि उसके मन में उनके प्रति इतनी कड़वाहट और रूखापन आ जायेगा कि वह उनके साथ बातचीत कर ही नहीं सकेगा।

76—जब मैं किसी के साथ होता हूँ तो उसे कोई दु:ख नहीं होता। दुनिया में उसे किसी चीज़ की चिन्ता नहीं होती।

तुम पूछते हो मेरे आँसू लाल क्यों हो गये हैं,
और मैं तुम्हें वजह बताऊँगा, क्योंकि तुमने पूछा है।

तुम्हारे लिए जब प्यार उमड़ा, तो मेरे दिल से ख़ून निकला,
और फिर अचानक वह मेरी आँखों से बहने लगा। (अज्ञात)

शम्स गहरी सहानुभूति प्रकट करके शिष्य की चिन्ता मिटा देते हैं।

77—बचपन से ही मेरे साथ एक अजीब बात होती चली आ रही है जिसकी किसी को कोई ख़बर नहीं, मेरे अब्बा को भी नहीं। वे कहते थे: तुम सौदाई तो नहीं हो, लेकिन तुम्हारा काम करने का ढंग मेरी समझ में नहीं आता। तुम एक फ़क़ीर की तरह भी पेश नहीं आते, वग़ैरह-वग़ैरह। इसलिए मैं उनसे कहता, "मेरी बात को ध्यान से सुनें। आपका मेरे साथ उस मुर्ग़ी जैसा रिश्ता है जिसके नीचे बतख़ के अण्डे रख दिये गये थे। मुर्ग़ी अण्डे सेती रही और जब वे पक गये तो चूज़े अपना खोल तोड़कर बाहर निकल आये। एक दिन जब वे बच्चे अपनी माँ के साथ एक दरिया के पास से गुज़र रहे थे तो पानी में कूद पड़े और तैरने लगे। उनकी माँ तैर नहीं सकती थी क्योंकि वह मुर्ग़ी थी, इसलिए वह कुट-कुट करती हुई दरिया के किनारे-किनारे चलती रही।

"अब, मेरे अब्बा जान, मैं देखता हूँ कि समुन्दर ही मेरी सवारी बन गया है, और यही मेरा घर है, यही मेरी जागीर है। अगर आप मेरे हैं और मैं आपका, तो आयें और इस समुन्दर में कूद पड़ें। वरना और परिन्दों के साथ अपनी दुनिया में लौट जायें। यह आपका इम्तिहान है।"

मेरे अब्बा ने कहा, "अगर तुम अपने दोस्तों के साथ ऐसा सुलूक कर रहे हो तो अपने दुश्मनों के साथ कैसा सुलूक करते होगे?"

78—अगर कोई जान-बूझकर एक उच्च कोटी के महात्मा के साथ अशिष्टता का व्यवहार करता है तो उस पर फ़ौरन कोई भारी मुसीबत आ पड़ती है। कल्पना करो तब क्या होगा जब वह महात्मा इतनी ऊँची हस्ती

का मालिक है कि उसके शब्द और वचन सुनकर इनसान और फ़रिश्ते दोनों दंग रह जाते हैं और उसके सामने अपनी गरिमा और महानता को भूल जाते हैं। उन इनसानों और फ़रिश्तों की हालत उन दर्शकों जैसी हो जाती है जो किसी नाचनेवाले को हिम्मत और दिलेरी के साथ ऊँची खिंची तार पर नाचते देखकर भौचक्के हो जाते हैं। और जब वे उस महात्मा को एक भयंकर काले शेर* की पीठ पर बैठे उसके सिर को थपथपाते देखते हैं मानों वह एक सुस्त गधा हो, तो उनका दिल काँप उठता है।

शैख़ के साथ हमेशा शिष्टता का व्यवहार करो।

78—अगर मैं किसी ऐसे व्यक्ति का अपमान करता हूँ जो सौ साल से नास्तिक है तो वह आस्तिक हो जायेगा, और अगर वह पहले ही आस्तिक है तो सन्त बन जायेगा और परमधाम जायेगा।

79—तुम सब अपराधी हो क्योंकि तुमने कहा है कि मौलाना दुनिया की परवाह नहीं करते और अपनी मरज़ी के मालिक हैं, जब कि मौलाना शम्स अल-दीन पैसा इकट्ठा करते हैं।† अब देखो, अगर मैं तुम्हें माफ़ न कर दूँ तो तुमसे हिसाब माँगा जायेगा, और तुम्हें लगेगा कि तुम्हारा सर्वनाश हो गया है। मैं परमात्मा से पूछूँगा और वह मुझे बतायेगा कि तुमने यह कहा था कि नहीं। फिर वह मुझसे पूछेगा कि मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ या नहीं। मैं उत्तर दूँगा कि उसकी इच्छा ही मेरी इच्छा है। बदले में उसका उत्तर होगा

* मन और भौतिक सृष्टि का प्रतीक।

† रूमी के अनुयायियों के शम्स का साथ रवैया अकसर निरादरपूर्ण होता था। इस बार वे उन्हें फ़क़ीर के बजाय धनवान् का जीवन बिताने का दोषी ठहरा रहे थे। सफ़र करना कठिन था और अकसर पैदल जाना पड़ता था, जो बुढ़ापे के कारण शम्स के लिए कठिन हो गया था। अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए वे छोटा-मोटा काम किया करते थे, जैसे पेटियाँ बनाना और बच्चों को क़ुरान पढ़ाना।

कि उसकी तो सौ बार भी यही इच्छा होगी। बहस लम्बी होगी और देर तक चलेगी। अगर माफ़ी हो भी जाती है लेकिन तुम वही बात दोहराते हो तो तुम्हें कोई फ़ायदा नहीं होगा, और न ही तुम क़यामत के दिन मेरा दीदार कर सकोगे, स्वर्ग में तो बिलकुल नहीं। अगर मैंने अपने पास चाँदी के सौ सिक्के न रखे होते तो मैं कंगाल हुआ पैदल यहाँ से जाता। अगर मेरे वापस आने की कोई उम्मीद न होती तो तुम्हारी क्या हालत होती?

शम्स अपने वहाँ से चले जाने के परिणाम की चेतावनी देते हैं।

81-2—जिसने दोष लगाये उसी के शब्दों में उसे यह उत्तर दिया जा सकता था, "तुम कहते हो कि मौलाना रूमी का व्यक्तित्व बहुत शानदार और नूरानी है, और दिलों में आदर और आश्चर्य का भाव पैदा करता है। तो क्या वे ऐसी बात पर विश्वास करते, उसकी नक़ल करते, या उसे मानते जो सही नहीं है? किस तरह की होती वह शान और कैसा होता वह नूर? तुम कहते हो कि जब मौलाना घोड़े पर सवार हों तो आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत पचास औलिया को पैदल उनके साथ-साथ चलना चाहिए। तो क्या वे एक अन्धे के पीछे चलते? यह बतानेवाले तुम कौन होते हो कि औलिया की पहचान किन गुणों से होती है?"

फिर जब दोष लगानेवाला वह व्यक्ति इस तर्क के आगे बेबस हो जायेगा तो उसके अन्दर प्रकाश हो जायेगा या अँधेरा छा जायेगा, क्योंकि इनसान की बेबसी या तो शैतान को ज़्यादा काला कर देती है और या फ़रिश्तों में ज़्यादा चमक ले आती है।

चमत्कार और सत्य के चिह्न दोनों का एक ही परिणाम होता है। बेबस हो जाने के कारण लोग उनके आगे सिर झुका देते हैं।

अगर वे कहते हैं, "जब मैं किसी सन्त को देखता हूँ तो पहली ही नज़र में उसे पहचान लेता हूँ," तो वे लोग और उन जैसी सोच रखनेवाले दूसरे

लोग, एक भारी भूल कर रहे होते हैं। उन्हें उनके अपने ही भावावेश की आग द्वारा रचा गया एक दृश्य देखने को मिला है जिस पर उन्होंने विश्वास कर लिया है, और इससे वे ख़ुश हो जाते हैं और मदमस्त हो जाते हैं। उन्हें अपने अन्दर ज़्यादा गहराई में जाना चाहिए और उस दृश्य से परे देखना चाहिए, क्योंकि वह दृश्य तो उनकी अपनी ही विषय-वासनाओं की रचना है।

शम्स बताते हैं कि उनका विरोध करनेवालों को कैसे
जवाब देना चाहिए, और इस बात पर बल देते हैं
कि ज़रूरत अनुभव की है, धारणा की नहीं।

82—इस संसार में मेरा आम आदमी से कोई वास्ता नहीं है। मैं उसके लिए नहीं आया हूँ। मैं उन लोगों की नब्ज़ देखने* आया हूँ जो संसार को सत्य की ओर ले जाने का दावा करते हैं।

83—अगर कोई दूसरे शैख़ों की दी दलीलों, उनकी आपसी बहस या क़ुरान की कहानियों का हवाला देकर मेरी बातें सुनना चाहता है, तो वह मेरे मुँह से एक भी शब्द नहीं सुनेगा और न ही मुझसे कोई लाभ उठा सकेगा। लेकिन अगर वह मेरे शब्दों को सुनने की ज़रूरत महसूस करते हुए—क्योंकि ज़रूरत का एहसास ही इनसान की पूँजी है—और मन में नम्रता की भावना लिए मेरे पास आता है तो वह मुझसे लाभ उठा सकता है। वरना, अगर वह अपनी दलीलें और बहस सिर्फ़ एक दिन या दस दिन ही नहीं, बल्कि सौ साल भी जारी रखे तो मैं अपनी ठोड़ी अपने हाथ पर रखे बस सुनता रहूँगा।

गुरु के पास हम सुनने और सीखने के लिए आते हैं, न कि
अपनी विद्वत्ता दिखाने या बहस करने के लिए।

---

* फ़ारसी का एक मुहावरा जो किसी व्यक्ति की सच्चाई पर सवाल उठाता है, उसके ढोंग को उघाड़ता है और उसकी योग्यता पर सन्देह प्रकट करता है।

90—अगर किसी दरवेश के आसपास के लोगों की मनोदशा बिगड़ी हुई है तो उस दरवेश का क्या जाता है? अगर पूरी दुनिया समुन्दरी तूफ़ान की लपेट में आ जाती है तो एक बतख़ का क्या बिगड़ता है?

जैसे बतख़ की पीठ पर पानी नहीं टिकता,
वैसे ही अनुभवी ज्ञानी दूसरों की
मनोदशा से प्रभावित नहीं होते।

93-4—हमारा एक-दूसरे से मिलना बहुत असाधारण बात है। बहुत, बहुत लम्बे अरसे के बाद ही केवल एक बार हम जैसे दो लोगों का मेल होता है। सन्त हमेशा लोगों के सामने प्रकट नहीं होते, लेकिन हम तो स्पष्ट दिखाई देते हैं, फिर भी पूरी तरह से गुप्त हैं। बाहर और अन्दर का यही मतलब है। "और वही पहले है, आख़िर में है, बाहर है और अन्दर है (क़ुरान 3/119)।"

शम्स रूमी से बात कर रहे हैं।

94-5—एक परदा उन ऊँची हस्तियों के लिए भी है जो पूर्ण पुरुष हैं, जिनके लिए परमात्मा ने सृष्टि की रचना की है। वह परदा यह है कि राज़ों के बारे में वे कभी-कभी परमात्मा से बात कर लेते हैं ताकि ऐसा न हो कि वे ख़ुद को सँभाल न पायें। [उन राज़ों की जानकारी होने के कारण] दूसरे मौक़ों पर यह परदा नहीं होता।

मैं राज़ों में बात करता हूँ, शब्दों में नहीं। जब कोई एक बार परमात्मा के 'शब्द' का नशा ले लेता है, वह फिर शराब नहीं पी सकता। शराब के लाख मटके भी वह काम नहीं कर सकते जो परमात्मा का 'शब्द' कर सकता है। जिन्होंने पूरा क़ुरान पढ़ा और समझा है, उनका दायरा भी बहुत छोटा होता है।

जिसे 'शब्द' का पहले अनुभव हो गया है, उसे चाहे यह न भी पता हो कि दुनिया में क़ुरान मौजूद है, फिर भी अगर क़ुरान उसे मिल जाये तो

वह आसानी से उसका वर्णन और व्याख्या कर सकेगा, क्योंकि वह पहले ही असीम परमात्मा से एक हो चुका होगा।

'शब्द' का अनुभव पुस्तकों के ज्ञान से श्रेष्ठ है।

98—मैं परमात्मा के आगे क़सम खाकर कहता हूँ कि जिन लोगों ने सिर्फ़ मेरी बातें सुनकर ही किसी जंगल आदि में चले जाने का विचार बना लिया है, वे उलझन में पड़ जायेंगे। ज़रा कल्पना करो कि शब्दों का अर्थ समझना कितना कठिन है। अगर मैं किसी कविता या आयत का हवाला न दे सकूँ तो क्या मैं एक बात भी नहीं बोल सकता? क्या मैं अपने आप को प्रेरणा नहीं दे सकता या अपने शब्दों को प्रेरणा-भरे नहीं बना सकता? अगर दुनिया में कभी कोई कवि हुआ ही न हो तो क्या फ़र्क़ पड़ जाता? तो मैं क्या हूँ? क्या परमात्मा ने सिर्फ़ मुझे ही बनाया था; या क्या मेरे माँ-बाप ने जंगली जानवरों द्वारा पालन-पोषण के लिए मुझे किसी पहाड़ की चोटी पर छोड़ दिया था? शब्दों का दायरा इतना बड़ा है कि उन्हें अर्थ देना उन्हें क़ैद कर लेना जान पड़ता है, और उस अर्थ के दायरे के परे भी एक अर्थ होता है। यह असली अर्थ अन्य हर अर्थ को अपने अन्दर समेट लेता है, शब्दों को और उनकी आवाज़ को निगल लेता है, जिससे कहने के लिए कुछ नहीं रहता।

सन्त चुप इसलिए नहीं रहता कि उसके पास कहने को कुछ नहीं होता, बल्कि इसलिए कि उसके पास कहने को बहुत कुछ होता है।

एक बार फिर शम्स लिखने-बोलने में न आनेवाले 'शब्द' और लिखे-बोले जानेवाले 'शब्द' में अन्तर बता रहे हैं।

100-1—उन लोगों ने कहा कि रूमी को दुनिया की परवाह नहीं है, लेकिन मौलाना शम्स अल-दीन ऐसे नहीं हैं। मौलाना रूमी ने जवाब दिया,

"तुम ऐसा इसलिए समझते हो कि तुम मौलाना शम्स अल-दीन से प्रेम नहीं करते। अगर तुम उनसे प्रेम करते तो यह न समझते कि वे लालची हैं, और न ही उन्हें नापसन्द करते। प्रेम इनसान को 'प्रियतम' की कमियों के प्रति अन्धा और बहरा बना देता है। ज्यों ही तुम्हें कमियाँ दिखने लगें, समझ लो कि तुम्हारे प्रेम में कमी आ गई है। क्या तुमने देखा नहीं कि जब बच्चा पाख़ाना कर देता है तो माँ सुन्दर और मनमोहक होने के बावजूद बिना हिचकिचाहट उसे कहती है, "तुम्हारे लिए अच्छा है।"

इस पर शम्स ने कहा, "यह तर्क कमज़ोर है। अब मेरी बात सुनो। किसी के पास एक लंगड़ा गधा है जिसे वह दिन-रात चारा देता है और वह गधा उस पर लीद कर देता है। इस व्यक्ति और उस व्यक्ति में अन्तर है जो एक अरबी घोड़े पर सवार है और उस घोड़े ने उसे लाखों ख़तरों, मुसीबतों और चोरों से बचाया है। चाहे यह बात शुरू से उसके भाग्य में थी, फिर भी वह व्यक्ति पूरी तरह से घोड़े का आभारी है।"

मुझे बिलकुल कोई लालच नहीं है। मैं ज़रूरतमन्दों से आशा करता हूँ कि वे ज़रूरत व्यक्त करें, लेकिन सिर्फ़ सच्ची ज़रूरत, दिखावे की ज़रूरत नहीं।

सच्ची ज़रूरत की एक निशानी यह है कि जब तुम शैख़ के साथ बैठे हो तो तुम्हारे चेहरे पर परेशानी और तनाव का कोई निशान न हो। ओ मियाँ झगड़ालू! क्या यह ज़रूरी है कि तुम मुझे बुरा-भला कहो? क्या तुम्हारा मेरे साथ कोई झगड़ा है?

इनसान को उससे चिढ़ हो सकती है जिसने उसे दु:ख पहुँचाया हो, लेकिन किसी दूसरे से वह ख़ुश हो सकता है। एक को देखकर उसे गुस्सा आता है, दूसरे को देखता है तो ख़ुश होता है और सब दु:ख भूल जाता है। फिर भी अगर वह ख़ुश नहीं होता तो इसका कारण है कि वह अपने आप से नाराज़ है। जब उसे अपने आप का सामना करना पड़ता है तो वह दु:खी होता है, जब वह एक ख़ुश दोस्त को देखता है तो हँसता है।

जिसके पास आन्तरिक सत्य हो, वह व्यक्ति जो भी दावा करता है, हम उसे मान लेते हैं और हम उसके आन्तरिक सत्य को भी मान लेते हैं क्योंकि उसने यह दावा किया है।

पूर्ण सन्त केवल हमारी ज़रूरत को महत्त्व देते हैं, जब कि शिष्य ऐसा नहीं करता।

106—एक ऐसा व्यक्ति जिसके दिमाग़ में बहुत-से विचार भरे हुए थे मेरे पास आया और उसने मुझसे कहा कि मुझे दिव्य राज़ बताएँ। मैंने जवाब दिया, "मैं तुम्हें वह राज़ नहीं बता सकता। वह राज़ मैं किसी ऐसे व्यक्ति को ही बता सकता हूँ जिसके अन्दर मुझे सिर्फ़ मैं ही दिखाई दूँ। यह राज़ मैं सिर्फ़ अपने आप को ही बताऊँगा। तुम्हारे अन्दर मैं ख़ुद को नहीं देख पा रहा, मुझे कोई और दिखाई दे रहा है।"

"अगर कोई किसी के पास जाता है तो एक शिष्य, एक मित्र या एक जानी-मानी हस्ती की हैसियत से जाता है। तुम इन तीनों में से कौन हो? क्या तुम किसी और के शिष्य नहीं हो?"

उसने जवाब दिया, "हाँ, लेकिन यह तो आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैं कैसा हूँ। [मैं किसी और का शिष्य हूँ।]"

मैंने कहा, "हाँ, यह तो साफ़ ज़ाहिर है, क्योंकि तुम्हारे अन्दर मैं उसे देख रहा हूँ। जब वह तुम्हारे अन्दर है तो मैं नहीं हूँ, क्योंकि मैं वह नहीं हूँ।"

106—मैंने कहा कि 'इनसान' वही है जिसकी बाहर की हालत उसकी अन्दर की हालत दरसाती है। मेरी अन्दर की हालत पूर्ण शान्ति की है और सदा एक-सी रहती है। अगर यह बाहर दिख जाती, और दुनिया पर मेरा राज्य होता, उसकी देख-रेख मेरे हाथ में होती, तो सारी दुनिया एक रंग की होती [द्वैत ख़त्म हो जाता]; न तलवार रहती न नफ़रत। लेकिन, परमात्मा का यह दस्तूर नहीं है।

परमात्मा द्वैत चाहता है, इसलिए सृष्टि चल रही है।

107—किसी ने कहा, "अगर आप ज़रा रुकें और सुनें ..."

शम्स ने जवाब दिया, "तुम्हारी बात सुनने का मैं सोच भी कैसे सकता हूँ, क्योंकि यह मकान इतना भरा हुआ है कि इसमें एक सूई भी और नहीं समा सकती! तुम कूड़ा-करकट का भरा पूरा संदूक यहाँ रखने के लिए ले आये हो; कहाँ रखूँ मैं इसे? मुझे जगह दिखाओ!"

शम्स का हृदय प्रभु-प्रेम से भरा हुआ है इसमें और किसी चीज़ के लिए जगह नहीं है।

110—जब मैं किसी के ज़रूरत और नम्रता के रवैये का ज़िक्र कर रहा था तो मेरा मतलब था कि तुम्हारा भी ऐसा ही रवैया होना चाहिए। जो लोग सुन रहे थे उनमें से एक, जिसे ये सब बातें अच्छी नहीं लग रही थीं, अपने मन में सोच रहा था, "यह कहने से क्या फ़ायदा कि किसी ने इस तरह सेवा की या इस तरह की नम्रता दिखाई, क्योंकि ऐसी बातों पर किसी को घमण्ड नहीं करना चाहिए।" मैं अपना गुणगान नहीं कर रहा हूँ। मैं रास्ता दिखा रहा हूँ। बादशाह [परमात्मा] को किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, और उस तक ले जानेवाला रास्ता ज़रूरत के एहसास, नम्रता और प्रार्थना में से होकर जाता है।

शम्स: जो बात बुद्धि की पहुँच से परे है, वह उसकी पकड़ में नहीं आ सकती।

111—मैं निर्जीव चीज़ों के कार्यों और शब्दों की बात कर रहा हूँ जिन्हें पढ़े-लिखे लोग स्वीकार नहीं करते। अब मैं अपनी इन आँखों का क्या करूँ? यह बात तो हन्नानेह के रोनेवाले खम्भे* की कहानी जैसी है।

---

* फ़ारसी में यह खम्भा 'सोतूने हन्नानेह' के नाम से जाना जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है, रोता-कराहता खम्भा। हज़रत मुहम्मद मदीना में एक मसजिद में लकड़ी के एक खम्भे का सहारा लिया करते थे। कहा जाता है कि उनकी मृत्यु होने पर यह खम्भा उनकी याद में रो पड़ा था।

117—बायज़ीद को कामिल दरवेश नहीं माना जाता था। फिर भी, खरगान गाँव से गुज़रते हुए उन्होंने कहा था, "150 साल के बाद इस गाँव में एक 'इनसान' पैदा होगा जो पाँच बातों में मुझसे बढ़कर होगा।" उन्होंने जो कहा, वही हुआ। अबुलहसने क़रग़ानी* एक जिज्ञासु बन गये और उन्होंने बायज़ीद के मक़बरे पर ठीक उसी दिन सूफ़ियों का चोग़ा पहना जिस दिन के बारे में बायज़ीद ने भविष्यवाणी की थी।

इसलिए पूर्ण सन्त, जिन पर परमात्मा अपने रहस्य प्रकट कर देता है, श्रेष्ठ जीव होते हैं। परमात्मा कहता है, "उस व्यक्ति ने तुम्हारी निन्दा की।" और मैं कहता हूँ, "क्या तुम्हारी इच्छा से ऐसा नहीं हुआ? क्या तुम शुरू से ही नहीं चाहते थे कि वह ऐसा करे?" तब परमात्मा कहेगा, "नहीं, उसने कठोर शब्द बोले।" और मैं कहूँगा, "तो तुम उसके साथ क्या करना चाहते हो?" वह कहेगा, "जो भी तुम कहो।" और मेरा जवाब होगा, "इस बात को हम यहीं छोड़ दें।"

परमात्मा को अपने अनुभवी जीवों पर पूरा विश्वास होता है।

118—अगर हरिवेह [ईरान का एक शहर] का वह विद्वान् मुझे निर्जीव चीज़ों के रोने और हँसने की बातें करते सुनता तो कहता: "यह क्या कह रहे हो?" किसी दार्शनिक की बुद्धि ऐसी बात की कल्पना भी नहीं कर सकती।

तुम न यह देख सकते हो, न समझ सकते हो कि तुम्हारे अपने हृदय और शरीर में सुख, दु:ख और क्रोध का स्थान कहाँ है। तुम ही वह स्थान [आत्मा] हो जिसके स्वरूप के बारे में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता और जिसे देखा नहीं जा सकता। ज़बान, शब्द, अंग और शरीर के दूसरे हिस्से केवल उसके काम करने के साधन हैं। 'इनसान' उस अवस्था में पहुँच सकता है जिसमें वह यह भी निश्चित रूप से जान सकता है कि

* शम्स से पहले हुए एक सूफ़ी दरवेश।

कुछ समय पहले यहाँ कोई दूसरा 'इनसान' रहता था। बोले जानेवाले शब्दों का ऐसे ज्ञान के साथ भला क्या सम्बन्ध हो सकता है?

आत्मा की अन्तर्निहित शक्ति के बारे में शम्स के विचार।

118—"तुम लोगों को बताओ: मेरे ख़ुदा की तारीफ़ लिखने के लिए अगर समुन्दर स्याही होता, तो इससे पहले कि वे अलफ़ाज़ ख़त्म होते समुन्दर ख़ाली हो गया होता, चाहे उसकी मदद के लिए हम एक और समुन्दर उसके साथ जोड़ देते। (क़ुरान 109/18)।" रोशनी के ये परदे कहीं ख़त्म नहीं होते। जब तक कोई खोजी इन परदों का सामना नहीं करता, यह रास्ता नहीं खुलता। उसे इन अनगिनत परदों में से होकर ही जाना पड़ता है। जहाँ सत्य है, वहाँ शब्दों और उनके अर्थ की ज़रूरत ही क्या है?

अगर तुम समझ रहे हो कि मैं क्या कह रहा हूँ तो समझो कि मैं काफ़िर हूँ। ऐसी बात नहीं है कि वर्तमान पीढ़ी के लिए कोई भव्य पेड़ [पूर्ण सन्त] नहीं है। मिसाल के तौर पर यहाँ एक बहुत बड़ा पेड़ है जो फल से लदा है। सारे विश्व पर इसकी छाया है, और इसे तपते सूरज के नीचे एक ऊसर मैदान के बीचों-बीच बोया गया है। इस पेड़ के नीचे सौ झरने बह रहे हैं। बाक़ी अब तुम कल्पना कर सकते हो। क्या यह कोई नहीं पूछेगा कि इस पेड़ की पौद किस पेड़ से आई है, या इस पेड़ की कौन-सी शाखा इसका मूल है?*

हर पीढ़ी में कोई पूर्ण सन्त हमारे बीच मौजूद होता है।

120-1—कुछ सन्त [औलिया] तुम्हें मंज़िल पर जल्दी पहुँचा देने की कोशिश करते हैं, लेकिन उनमें पर्याप्त शक्ति नहीं होती। अन्य सन्त सूक्ष्म

* लिखित इतिहास हमें बताता है कि सन्त हर समय संसार में मौजूद रहे हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि परमात्मा के अस्तित्व का अनुभव प्राप्त करने की आन्तरिक क्षमता मनुष्य में हमेशा रही है।

स्तर पर काम करते हैं, लेकिन वे बड़े सक्रिय और शक्तिशाली होते हैं, वे जो भी चाहेंगे अवश्य होगा।

उसने मुझे पैग़म्बरों की करामातों और सन्तों के अद्‌भुत कारनामों में अन्तर बताना शुरू किया। उसने कहा कि पैग़म्बर जब चाहें अपनी इच्छा के अनुसार करामात कर सकते हैं। सन्तों के बारे में बात करनेवाला वह भला कौन होता है? उसने सन्तों और उनकी अवस्था के बारे में अपनी कल्पना के अनुसार एक ग़लत धारणा बना ली है। जब मैंने उसी की ख़ातिर उसकी बातों का जवाब नहीं दिया, उन्हें अनसुनी कर दिया, तो उसने कहा कि मुझे उससे इर्ष्या हो रही है और मेरे मन में उसके लिए वैर की भावना है।

मेरा स्वभाव ऐसा है कि मैं काफ़िरों के लिए भी दुआ करता हूँ। मैं कहता हूँ: "ऐ ख़ुदा, उसे निन्दा करने से अच्छा कोई काम दे ताकि वह निन्दा छोड़कर तेरी प्रशंसा करे, और सत्य की दुनिया के काम में लग जाये।" ये कौन लोग हैं जो पूछते हैं कि मैं सन्त हूँ या नहीं। इससे इन्हें क्या वास्ता है? यह जोही* की कहानी जैसी बात है। लोगों ने उससे कहा, "उधर देखो। देखो वे अपने सिरों पर कितने उपहार उठाए हुए हैं।" उसने जवाब दिया, "मुझे इससे कोई वास्ता नहीं।" उन्होंने कहा, "ये उपहार वे तुम्हारे घर ले जा रहे हैं।" उसने जवाब दिया, "फिर तुम्हें इससे कोई वास्ता नहीं!" यही कारण है कि मैं लोगों से दूर रहता हूँ; उन्हें इससे कोई वास्ता नहीं कि मैं कौन हूँ!

124 — आम तौर पर ऐसा ही होता है। अगर लोगों को सच्ची बात दृष्टान्त या प्रतीक-कथा के माध्यम से बताई जाये तो हो सकता है उन्हें कुछ ठेस लगे, लेकिन आम तौर पर इससे उनमें दया की भावना जाग उठती है और

* एक मज़ाकिया व्यक्ति जिसका शम्स ने कई बार ज़िक्र किया है। वह आम तौर पर सत्य को मज़ाक का जामा पहनाकर पेश किया करता था।

दिलचस्पी पैदा हो जाती है। लेकिन, अगर बात इस ढंग से नहीं कही जाती तो न कोमलता की भावना आती है और न ही कोई और भावना जाग्रत होती है। सच्ची बात अगर साफ़ शब्दों में कही जाती है तो उसका कोई प्रभाव नहीं होता। वह केवल उसी व्यक्ति पर प्रभाव डालती है जिसे परमात्मा ने ग्रहण करने की शक्ति देकर आम लोगों से अलग बनाया है और जिसे ऐसा गुण दिया है कि उसे सत्य को जानकर ख़ुशी होती है।

जो व्यक्ति ऐसी अवस्था में हो उससे किसी को कोई प्रश्न नहीं करना चाहिए। ख़ैर, कोई उससे प्रश्न पूछ ही नहीं सकता, क्योंकि वह तो ख़ुद ही उलझन में रहता है। वह सोचता है, "मैं क्या कह सकता हूँ? और मैं किससे कहूँगा? वे लोग ये शब्द समझते नहीं, इसलिए में कुछ नहीं कहूँगा।" लेकिन वह फिर सोचता है और फ़ैसला करता है, "नहीं, मैं कहूँगा।"

उसकी हालत एक साहुरी* बजानेवाले की कहानी जैसी है। एक सुबह वह एक ख़ाली मकान के दरवाज़े पर अपनी साहुरी बजा रहा था, क्योंकि उसके लिए रात दिन में बदल चुकी थी। किसी ने उससे पूछा: "तुम किसके लिए बजा रहे हो? यहाँ तो कोई नहीं रहता।" उसने जवाब दिया, "ख़ामोश! लोगों ने ख़ुदा को ख़ुश करने के लिए सराय और ख़ानक़ाह बनाई हैं। मैं भी ख़ुदा के लिए ही बजा रहा हूँ।"

पूर्ण सन्त लोगों की अज्ञानता के बावजूद उन्हें परमात्मा की तरफ़ बुलाते हैं।

127 — कुछ लोग शैख़ के रूप में प्रसिद्ध होते हैं और उनके बारे में हम सभाओं में और मंच पर से भी सुनते हैं। उनके अलावा ऐसे भक्त भी होते हैं जो अधिक पूर्ण होते हैं, पर फिर भी गुप्त रहते हैं। और कोई ऐसा भी

* एक बाजा जिसकी आवाज़ तुरही जैसी होती है। यह रमज़ान के महीने में रोज़ा रखनेवालों को जगाने के लिए बजाया जाता है।

होता है जिसे लोग खोजते हैं, और कुछ उसे पा भी लेते हैं। मौलाना का विश्वास है कि वह मैं हूँ, पर मैं यह नहीं मानता। अगर मैं वह नहीं हूँ जिसे लोग खोजते हैं, तो मैं एक जिज्ञासु हूँ, और जिज्ञासु की मंज़िल का रास्ता 'जिसे खोजा जाता है' उसके हृदय में से होता हुआ ऊपर जाता है।

परमात्मा मुझे खोज रहा है। ऐसी हस्ती की गाथाएँ जिसे लोग खोजते हैं किसी भी पुस्तक में नहीं मिलतीं। वे गाथाएँ रास्तों या पैग़म्बरों के वर्णनों में नहीं मिल सकतीं। पुस्तकों में भिन्न-भिन्न रास्तों के वर्णन होते हैं, उसके नहीं 'जिसे खोजा जाता है'। लेकिन इस एक व्यक्ति से [शम्स से] केवल उसी एक के बारे में सुना जा सकता है 'जिसे खोजा जाता है,' और किसी के बारे में नहीं।

जिसको परमात्मा की खोज हो, ऐसे भक्त की दुर्लभता और नम्रता के बारे में शम्स के विचार।

135-6 — बाहरी नियमों को मानना और उनका पालन करना, एक-दूसरे को धोखा देने का सबसे आसान तरीक़ा है। कोई इनसान तभी तक मुसलमान, यहूदी या पारसी हो सकता है, जब तक वह क़ब्र में नहीं पहुँच जाता।

मैं नहीं चाहता कि मेरे मित्र दूसरे की भावनाओं का ध्यान रखने का केवल दिखावा करने के लिए कोई काम करें या कोई प्रश्न पूछें, इसलिए मैं नाराज़गी या बेवफ़ाई प्रकट कर देता हूँ। तब लोगों की भावनाएँ उनके मन की असली हालत बयान कर देती हैं, और वे कहती हैं, "अजनबी लोगों से प्यार, मित्रों से नाराज़गी?" हम अपनी मनोदशा के अनुसार उत्तर देते हैं, "हमारे साथ रहने से तुम पर जो दया हो रही है और जो हमेशा होती रहेगी, वह क्या तुम्हें दिखाई नहीं देती? यह ऐसी दया है कि अगर पैग़म्बर और धर्म के प्रचारक ज़िन्दा होते तो अपनी महिमा के बावजूद वे हमारी संगति पाने की कामना करते और कहते, "काश! मैं उसकी संगति कर पाता, पल भर के लिए ही सही।"

इस तरह की सख़्ती इसलिए की जाती है कि मित्र सत्य के साथ सहज भाव से जुड़ जाये और पाखण्ड से दूर रहे, क्योंकि प्रभु का सेवक पाखण्ड से एकदम अछूता रहता है। वह पूर्ण सन्त हर सम्भव तरीक़े से सत्य को अभिव्यक्त करना चाहता है ताकि सत्य पर कोई ऐसा परदा न पड़ा रह जाये जिसका दुष्ट प्रकृति वाला शत्रु उसके शब्दों का ग़लत अर्थ लगाने में प्रयोग करे, और ताकि उसे स्थिति की वास्तविकता का भी ज्ञान हो जाये। प्रभु के सेवक की दया और कृपा अपार होती है। वह इतना निष्पक्ष होता है कि वह सत्य को छिपा नहीं रहने देता और उस सत्य के द्वारा इनसान छुटकारा और आज़ादी पा सकता है।

बाहर की संगति और अन्दर की संगति पर शम्स के विचार।

139 — मेरे सारे शब्द शक्ति और महानता के साँचे में ढले लगते हैं, इसलिए अगर लोगों को मेरी बातें समझ में नहीं आतीं तो यह स्वाभाविक है। ऐसा लगता है कि मैं दावे कर रहा हूँ। क़ुरान और हज़रत मुहम्मद के शब्द ज़रूरत की भावना की आवाज़ हैं, इसलिए मतलब से भरे जान पड़ते हैं। लेकिन मेरे वचन न खोज की भावना की आवाज़ होते हैं न ज़रूरत के एहसास की, और वे इतने ऊँचे स्तर के होते हैं कि उनको देखने में तुम्हारे सिर से टोपी गिर जाती है!

अगर परमात्मा गर्व करता है तो कुछ ग़लत नहीं करता। अगर लोग आलोचना करते हैं तो मानों कहते हैं कि परमात्मा गर्व करनेवाला है। पर यह तो सच है, फिर समस्या क्या है?

143 — तुम कहते हो सबूत दिखाओ। वे लोग मुझसे सबूत माँगते हैं। अगर सबूत मिल जाता है तो इनसान 'हक़' [परमात्मा को] माँग सकता है, लेकिन 'हक़' से वे सबूत नहीं माँगेंगे। ये शब्द सुनकर तुम्हें कैसा लगता है? तुम कहते हो ख़ुशी होती है। बस, और कुछ नहीं? केवल ख़ुशी? इनसान की

इनसानियत* इसमें है कि वह दूसरों को भी ख़ुश कर सके, सिर्फ़ अपने आप को ही नहीं। लेकिन ग़ुलाम† सिर्फ़ अपने आप को ही ख़ुश कर सकता है। दूसरों को भी ख़ुश करना परमात्मा का काम है।

वे कहते हैं कि मौलाना शम्स अल-दीन से हमें न कोई राहत मिलती है न कोई फ़ायदा। जो मुझसे फ़ायदे की आशा रखता है, वह काफ़िर है। जब उसने मुझे पा लिया है, और फिर भी वह फ़ायदे की इच्छा रखता है?

शम्स: पूर्ण सन्त की शरण मिल जाना अपार कृपा की बात है।

146—उसने पूछा, "ख़ुशी क्या है?" मैंने जवाब दिया, "तुम्हारा इस समय यहाँ हाज़िर होना।" लेकिन मैं उसे जान-बूझकर बहका रहा था। वह चिल्लाया, "अगर परमात्मा ने चाहा तो मैं स्वर्ग में जाऊँगा।" मैंने जवाब दिया, "एक लम्बे अरसे से मुझे सब कुछ साफ़ दिखाई दे रहा है, और अब तो वह वर्तमान बन गया है। मेरे लिए 'अगर परमात्मा ने चाहा' जैसी कोई बात नहीं रही।"

नया जिज्ञासु चिह्नों और संकेतों से ही चिपटा रहता है। अचानक उसके मन पर उदासी छा जाती है। बुरी ख़बर आने पर उसकी कोशिशें कमज़ोर पड़ जाती हैं, या अचानक ख़ुशी की एक लहर आती है और उसके क़दम आगे बढ़ जाते हैं।

सूफ़ी सन्त का ध्यान पूरी तरह केन्द्रित होता है और स्थिर रहता है, जब कि शिष्य का ध्यान मन और भावनाओं की आँधियों से इधर-उधर भटकता है।

---

* यहाँ शक्ति, साहस, दृढ़ता और लगन के गुणों को अभिव्यक्त करने के लिए 'इनसानियत' शब्द का प्रतीकात्मक प्रयोग किया गया है। प्रभु के मार्ग पर चलने के लिए इनसान में इन गुणों का होना आवश्यक है।

† यहाँ 'ग़ुलाम' शब्द का अभिप्राय प्रभु के सेवक से है, लेकिन ऐसे सेवक से जिसने अभी अपने अहं पर विजय नहीं पाई है।

148—मेरी हस्ती वह रसायन है जिसे ताँबे पर उँडेलने की ज़रूरत नहीं। ताँबा सिर्फ़ मेरी संगति से मेरे जैसा और मेरा रूप हो जाता है।

यही रसायन की पूर्णता है।

पारस का स्पर्श।

151-3—अगर किसी डॉक्टर से पूछा जाये कि उसने अपने मृत पिता या बेटे को ठीक क्यों नहीं किया, या हज़रत मुहम्मद से पूछा जाये कि उन्होंने अपने चाचा को अज्ञानता के अँधेरे में से निकलने में सहायता क्यों नहीं की, तो उनका जवाब होगा: ला-इलाज बीमारी के साथ उलझना मूर्खता है। लेकिन अगर बीमारी दूर हो सकती हो और उसका इलाज न किया जाये तो यह दया भी नहीं कही जायेगी। कोई व्यक्ति खेत में बीज डाल रहा है। लोग उससे पूछते हैं: जो खेत तुम्हारे घर के नज़दीक हैं, तुम उनमें बीज क्यों नहीं बोते? कैसे बोये? वे दलदली ज़मीन में हैं, इसलिए बीज बोने लायक़ नहीं है।

आध्यात्मिक जागृति के बीज के लिए उपजाऊ ज़मीन ढूँढ़ना।

मेरी बातों से किसी की हानि नहीं होती। बल्कि उनसे सैकड़ों लाभ होते हैं। लेकिन इस दुनिया में कौन-सा ऐसा लाभ है जिससे कुछ लोग वंचित नहीं रह जाते?

अगर नील नदी का जल कॉप्ट लोगों* को ख़ून दिखता है तो इससे वह नदी दोषी नहीं हो जाती। या अगर डेविड† का गाना काफ़िरों को बेसुरा लगता है तो इसका मतलब यह नहीं कि उनके गाने में कोई कमी है।

अगर मेरे शब्द तुम्हें अब बुरे लगते हैं तो भाग मत जाओ। बल्कि मेरे शब्दों को सम्मान दो ताकि तुममें आदर का भाव पैदा हो जाये। श्रद्धा और

---

* हज़रत मूसा के समय से चले आ रहे मिस्र के वासी।

† यहूदियों की धर्म पुस्तक तौरेत (Torah) में डेविड के बारे में कहा गया है कि वे बड़ी सुरीली आवाज़ में गाते थे।

विश्वास के बारे में तुमने जो कुछ भी दावे के साथ कहा है, उसे नये सिरे से बल मिलेगा, और वह तुम्हारी और तुम्हारे पुरखों की दूरदर्शिता की भी गवाही देगा। लेकिन अगर तुम मेरे साथ रूखा और अनुचित व्यवहार करते हो तो यह केवल तुम्हारी मूर्खता और झूठे घमण्ड का प्रमाण होगा। तुमने पहले जो सेवा की है और जो शिष्टता दिखाई है, वह सारी तुम्हारी मूर्खता के आधार पर रही होगी, और तुमने दूसरों को गुमराह भी किया होगा। इसका मतलब है कि अगर मैं अनादर के योग्य था तो तुम मेरे प्रति आदर का भाव क्यों दिखा रहे थे?

मुझे यह कहते हुए दु:ख होता है कि तुम दया की छाया में आराम से सोते रहे और तुमने वियोग की गहराई की ओर ध्यान ही नहीं दिया। अगर तुम कोई ऐसा काम करोगे जिससे दया की डोरी कट जाये तो तुम्हें न तो गुरु का दर्शन होगा और न कभी उसका साथ मिलेगा, सपने में भी नहीं। गुरु की मौज के बिना न तो सपने में और न जाग्रत अवस्था में कोई उसका दर्शन कर सकता है। तुम्हारे पास केवल एक बुझती हुई आशा ही रह जायेगी, एक ऐसी आशा जिसके पूरे होने की सम्भावना ख़त्म हो चुकी होगी। यह ऐसी ही बात है जैसे एक खुसरा आशा करे कि परमात्मा उसे बच्चा देगा। ऐसी आशा तो एक हृष्ट-पुष्ट युवक ही कर सकता है जिसकी जवान पत्नी हो। दोनों आशाओं की तुलना तुम कैसे कर सकते हो? खुसरे की-सी स्थिति तब होती है जब गुरु अपनी दया का हाथ खींच लेता है। अभागा है वह इनसान जिसकी यह हालत हो गई है कि उसे दुआ की ज़रूरत है, जिसका मतलब है कि गुरु उसे ख़ुश करने के लिए प्यार-भरी मीठी-मीठी बातें करके उसे धोखे में रखेगा। वह नहीं जानता कि यही वह समय होता है जब उसे डरना चाहिए। जब बादशाह कठोर शब्द बोलता है तो चिन्ता की कोई बात नहीं होती; उसका बात करने का ढंग बादशाहों को शोभा देता है। लेकिन जब बादशाह तुम्हारे प्रति आदर और सम्मान प्रकट करे, तब तुम्हें डरना चाहिए।

साफ़ दिखने लगें दाँत जब शेर के,
मत समझो तुम पल भर को भी कि वह मुसकरा रहा है। (अज्ञात)

अगर गुरु को मुसकुराते देखो तो यह मत मान लो कि तुम जानते हो कि उसके मन में क्या चल रहा है।

153 — मैं सपने में जो भी बातें कहता, उन्हें मेरे गुरु अगले ही दिन मेरे आगे एक-एक करके दोहरा देते।

जो पूरी तरह यह विश्वास नहीं करता कि गुरु का हर वचन और कर्म सत्य और विश्वसनीय है उसने निश्चित रूप से अपने और गुरु के बीच दूरी पैदा कर ली है। कितनी अजीब बात है! क्या है जो उसे गुरु में विश्वास न करने की प्रेरणा देता है? उसे चाहिए कि एक तरफ़ उस प्रेरणा को रखे और दूसरी तरफ़ वह जिसकी उसे गुरु से मिलने की आशा है। फिर वह ध्यान से आँके कि क्या पहली दूसरी से ज़्यादा क़ीमती है? गुरु एक परम अद्‌भुत, सुखद तथा आनन्ददायक अवस्था में पूर्णतया मग्न है, जब कि शिष्य अभी ऐसी अवस्था में नहीं पहुँचा है। अब गुरु में इससे अधिक दया और अपनापन कैसे हो सकता है?

154 — मुझे ऐसे प्रेमी की ज़रूरत थी जिसे मैं आध्यात्मिक ज्ञान दे सकता। मुझे याद है कि आपने [रूमी ने] एक बार मुझसे कहा था कि आक़सरा जाते हुए आपने एक कारवाँ सराय के निकट एक कुएँ में पत्थर फेंका था। क्या आपको याद है? मुझे यह बात कई बार याद आई है ... जब मैंने कहा था कि मैंने उन्हें [रूमी के अनुयायियों को] माफ़ कर दिया और उन्हें चेतावनी दी कि दोबारा माफ़ नहीं करूँगा, तो मेरा उद्‌देश्य असल में आपको माफ़ करने का था। वरना मेरा उनसे क्या वास्ता?

रूमी से प्रेम के कारण शम्स उनके अनुयायियों के प्रति सहनशील थे।

168—धर्मशास्त्र के विद्वान इन शब्दों का असली भाव समझ न सके। वे थोड़ा-सा ही समझ पाये जिसने शब्दों की रंगत बदल दी। अगर कभी किसी में ऐसा बदलाव आता है तो किसी कारण से आता है। इसलिए मैंने अपने शब्द दोहराये ताकि वे लोग उनका असली भाव समझ सकें। उन्होंने तीखी टिप्पणियाँ कीं जैसे, "यह अपने शब्द दोहराता है क्योंकि इसके पास ठोस ज्ञान नहीं है।" मैंने उनसे कहा कि वे ख़ुद खोखले हैं और उनमें ज्ञान की कमी है जिससे वे ऐसा सोचते हैं। मेरे शब्द सूक्ष्म अर्थ लिए होते हैं, इसलिए वे मुश्किल से समझ में आते हैं। अगर मैं उन्हें सौ बार दोहराऊँ तो हर बार एक नया ही अर्थ लगाया जा सकता है, लेकिन उनके मूल भाव में कोई अन्तर नहीं आयेगा।

सन्तों के वचनों में सत्य की कई परतें होती हैं।

182-3—अब बताओ कि तुम्हारी कल्पना में सूर्य के उदय होने और सितारों के घूमने की क्या तसवीर उभरकर आती है। क्या वही तसवीर जो ज्योतिषी बयान करते हैं? सरसरी तौर पर क़ुरान पढ़ लेने से यह विषय समझ में नहीं आ सकता। आओ, ज़रा सोचें। विश्वास उसी को होता है जो खोजी है। ज्योतिष की जो भी बात समझ में आ सकती हो और तर्कसंगत हो, ज़रूर मान ली जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, मेरा सम्बन्ध शाफ़ेई शाखा से है। अगर इमाम अबू हनीफ़ा की शाखा में कोई अच्छी बात मिल जाये जिससे मेरे काम में मदद मिल सके और मैं उसे न मानूँ, तो वह सिर्फ़ मेरी ज़िद होगी।

185-6—परमात्मा कभी नहीं कहेगा, "मैं परमात्मा हूँ (अनहल हक़)।"* या "मेरी सिफ़्त-सलाह हो, क्योंकि मेरी पदवी इतनी महान् है।"†

---

* यह कथन मन्सूर हल्लाज का माना जाता है।

† यह वचन बायज़ीद बस्तामी का माना जाता है।

अरबी में ऐसा कहनेवाले का [अपनी ऊँची पदवी के बारे में] आश्चर्य प्रकट होता है। परमात्मा भला किसी बात पर कैसे चकित हो सकता है? लेकिन, अगर ऐसा कहनेवाला इनसान है तो यह हैरानी समझ में आती है।

परमात्मा दावा नहीं करता कि
वह परमात्मा है।

186—अगर सारा संसार एक तरफ़ खड़ा हो और मैं दूसरी तरफ़, तो मैं लोगों के सब प्रश्नों का उत्तर दूँगा और उनकी कठिनाइयों को दूर करने के लिए सुझाव दूँगा। मैं अपने प्रवचन में कोई परिवर्तन नहीं करूँगा, न उसका विषय बदलूँगा, और न ही एक पहलू छोड़कर दूसरा पहलू पकड़ूँगा। मेरे कथनों में उत्तरों के अन्दर और उत्तर होंगे तथा शर्तों के अन्दर और शर्तें होंगी। हर प्रश्न के दस उत्तर और उनमें दस प्रमाण होंगे। मेरा कहने का ढंग ऐसा रोचक, आकर्षक और निराला होगा जैसा आज तक किसी भी लेखक ने नहीं अपनाया। जैसा कि मौलाना रूमी कहते हैं, "आपको जानने के बाद मेरी किसी भी किताब में दिलचस्पी नहीं रही।"

188—मैंने आस्तिकों के वर्ग से कहा कि परमात्मा ने उन्हें भाग्यशाली बनाया है, क्योंकि जब ऐसे लोग जो अध्यात्म-ज्ञानी हैं उनके पास आते हैं तो उनकी सेवा करना उन्हें अच्छा लगता है। जब कोई मनुष्य अच्छा भाग्य लेकर आता है तो चाँद उसके दरवाज़े में से अन्दर चाँदनी बिखेरता है।

प्यार की राह का
मैं क़ानून एक बना दूँगा,
अनजान और मूर्ख जिससे
एक क़दम न चलेंगे उस पर। (अज्ञात)

किसी अज्ञानी से बातें करने से बहुत नुक़सान होता है। ऐसा करना हराम* है। अज्ञानी का अन्न खाना भी हराम है। मुझसे अज्ञानी का दिया खाना नहीं निगला जाता। अगर मैं उसका दिया खाना खा लूँ तो मुझे ऐसा लगता है जैसे किसी ने शीशे का सामान बनानेवाले के मकान में, जो फ़र्श से छत तक बिल्लौरी सामान और आईनों से भरा है, गुलेल जैसी चीज़ से ज़ोर से एक भारी पत्थर फेंक दिया है।

अज्ञानता के अँधेरे और निर्मल हृदय के
प्रकाश पर शम्स के वचन।

189 — मैंने इस समय बढ़िया रेशम पहन रखा है। लेकिन तुम्हें वह दिखाई नहीं दे रहा, जैसे एक पशु रेशम की कोमलता को न देख सकता है न पहचान सकता है। क्या यह त्वचा रेशम के समान है? नहीं, बढ़िया से बढ़िया रेशम भी कोमलता में इस त्वचा की बराबरी नहीं कर सकता। "मैंने तुम्हारे ईमान को मुकम्मल कर दिया है ... (क़ुरान 3/5)।" "रूह तुम्हारे जिस्म में मुकम्मल हो गई है।"†

इनसान हो तो ऐसा कि इनसानियत की रंगत हो उसमें,
वरना सामना करना होगा उसे हज़ारों तरह के अपमान का। (अज्ञात)

इतनी उत्तम, सूक्ष्म शक्ति से एकता की स्थिति की झलक
मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में अवश्य दिखाई देती है।

अगर तुमने मुझे देखा है और मुझे जानते हो, तो फिर दु:ख को क्यों याद करते हो? और अगर तुम ख़ुश हो तो दु:ख में कैसे डूब गये हो? अगर तुम

---

* शरीअत के अनुसार वर्जित। शराब पीना और सूअर का मांस खाना भी वर्जित है।
† सना'ई की एक कविता में से एक पंक्ति।

मेरे साथ हो तो अपने साथ कैसे हो सकते हो? और अगर तुम मेरे मित्र हो तो फिर तुम अपने मित्र कैसे हो सकते हो? कई साल बीत जाते हैं और फिर, अचानक, कोई मित्र आ जाता है जिसकी संगति से तुम्हें ख़ुशी और शान्ति प्राप्त होती है।

धूप में पड़े पत्थर के टुकड़े को
कई साल लगते हैं बदक्शाँ का लाल बनने में,
या यमन के सुलेमानी पत्थर में बदलने में।

महीनों लग जाते हैं
ज़मीन के अन्दर पड़े कपास के बीज को
किसी औरत का बुरक़ा
या किसी शहीद का कफ़न बनने में। (सना'ई)

189-90 — अगर तुमने मुझे देखा है तो फिर अपने आप को क्यों देखते हो? और अगर तुम मेरे बारे में बातें करते हो तो फिर अपने बारे में बातें क्यों करते हो? अगर तुम वचनों को याद करते हो और प्रवचनों के बारे में बातें करते हो तो इसका मतलब है तुम संसार की चीज़ों को याद करते हो और अपने बारे में बातें करते हो। जहाँ वह है, वहाँ पूर्ण शान्ति और सुख होता है। वहाँ वचनों और प्रवचनों की गुंजाइश ही कहाँ होती है?

उसकी याद, उसके वचनों तथा विचारों के बारे
में बातें करने से कहीं बेहतर है।

193 — कुछ लोगों को ख़ुशी के लिए बाहर के साधनों की ज़रूरत होती है। औरों का एक क्षण भी ऐसा नहीं होता जब उनके अन्दर परमात्मा की मनमोहक, मधुर और नित्यनूतन प्रेरणाएँ अपना काम न कर रही हों।

मुझे अभी-अभी अन्तर में एक ऐसा अनुभव हुआ है जो अगर किसी और को हुआ होता तो उसने अपनी हस्ती को तार-तार कर दिया होता। मैंने अपना सिर झुका लिया और घण्टा भर चुप रहा। परमात्मा के कुछ भक्त ऊँचे व्यक्तित्व के मालिक होते हैं। परमात्मा तक पहुँचने के लिए जिस साहस की ज़रूरत होती है, क्या उसी साहस के उज्ज्वल प्रकाश से साइनाई पर्वत ध्वस्त नहीं हुआ था? ऐसा कुछ तो है जिसके द्वारा दुनिया रूप लेती है और जो हर वस्तु के अस्तित्व का आधार है। सृष्टि में जो भी कोमलता तुम देखो या जिसका तुम्हें ज्ञान हो, उससे कहीं अधिक कोमलता और निर्मलता सृष्टिकर्ता में है।

अनुभवी महात्माओं के आनन्द का स्रोत।

196 — किसी शहर में एक पागल रहता था जिसे घटनाओं का पहले से ज्ञान हो जाता था और जो रहस्यों की बातें करता था। उसकी परीक्षा लेने के लिए उसे एक कमरे में बन्द कर दिया गया, लेकिन वह कमरे के बाहर मिला। एक दिन मेरे पिता कुछ लोगों से बातें कर रहे थे, और मेरी तरफ़ उन्होंने पीठ कर रखी थी।* वह पागल मुट्ठी बाँधे उनकी तरफ़ लपका, जैसे उन्हें घूँसा मारना चाहता हो। मेरी तरफ़ इशारा करके उसने कहा, "मुझे अगर इस बच्चे का ख़याल न होता तो मैंने आपको इस पानी में फेंक दिया होता!" पानी का बहाव इतना तेज़ था कि हाथी को भी बहा ले जाता, और आख़िर में उसने किसी को भी खारी दलदल में डुबो दिया होता। फिर वह मुड़ा, उसने मुझे सलाम किया और "ख़ुश रहो" कहकर चला गया।

मैंने कभी जुआ नहीं खेला, इसलिए नहीं कि जुए से दूर रहना नैतिक कर्तव्य है, बल्कि बस, खेला ही नहीं। मेरा कुछ भी करने को दिल नहीं चाहता था, लेकिन जहाँ कहीं भी परमात्मा की चर्चा होती, मैं चला जाता था।

---

* फ़ारसी सभ्यता में किसी की तरफ़ पीठ करने को उसका अपमान करना समझा जाता है।

211 — कई बार मैं अपने दोस्तों के पास से गुज़र जाता हूँ और उनका अभिवादन नहीं करता, लेकिन इसका कारण यह नहीं होता कि मेरे मन में उनके लिए कोई बुरी भावनाएँ हैं। वे नहीं जानते कि मैं उनके लिए किस चीज़ की कामना करता हूँ। अगर वे जानते कि मैं उनके लिए कैसी पवित्रता, निर्मलता और दिल की दौलत की कामना करता हूँ, तो वे अभी, इसी क्षण, अपने प्राण मेरे चरणों में रख देते। मेरे मन में कभी बुरे विचार नहीं उठते। जो मन शैतान और प्रलोभनों के पंजे से मुक्त है, उसमें विचार कैसे उठ सकते हैं? शैतान ने इस हृदय में कभी प्रवेश नहीं किया और एक फ़रिश्ता तब तक इसमें रहा जब तक परमपरमात्मा ने उससे यह नहीं कहा, "अब इसमें सदा मेरी दया का निवास होगा। आप कृपया यहाँ से चले जायें।"

मैं तुम्हें यह बात इसलिए बता रहा हूँ कि मनुष्य की अवस्था तीन प्रकार की होती है। एक अवस्था वह होती है जिसमें उसके मन और हृदय शैतान का घर होते हैं। दूसरी वह होती है जिसमें शैतान और फ़रिश्ता दोनों वहाँ आ बसते हैं; कभी एक चला जाता है और दूसरा आ जाता है। तीसरी अवस्था में वहाँ केवल देवदूत निवास करता है; शैतान उसमें प्रवेश नहीं कर सकता।

हमारा लक्ष्य चौथी अवस्था है, इन तीनों में से कोई नहीं।

218 — उन्होंने उससे पूछा कि सूरज से किसका जन्म हुआ, और किसने जन्म लेते ही आँखें खोलकर सूरज की तरफ़ देखा ताकि चन्द्रमा या बुध के बारे में बात कर सके। मैं इस बारे में क्या कह सकता हूँ? सूरज ख़ुद नहीं जानता कि सृष्टि में कोई चन्द्रमा है। चन्द्रमा और सितारों को बिछोड़े का दु:ख भोगना पड़ रहा है। हर कोई चन्द्रमा को देख सकता है और उसे निहार सकता है। लेकिन सूरज के प्रकाश की चन्द्रमा के प्रकाश से भला क्या तुलना! सूरज की तरफ़ कोई देख नहीं सकता, क्योंकि उनकी आँखें उसके प्रकाश को सहन नहीं कर सकतीं।

यहाँ सूरज शम्स हैं।

218—एक ऐसा अद्‌भुत पक्षी है जिसे आग जला नहीं सकती, लेकिन वह पानी में डूब सकता है, और एक पानी का पक्षी है जो पानी में डूब नहीं सकता लेकिन आग उसे जला सकती है। जिसे आग जला नहीं सकती और जो पानी में डूब नहीं सकता, ऐसा पक्षी कोई विरला ही होता है।

पूर्ण सन्त कोई विरला ही होता है।

219—जब कोई मुझे अच्छा लगता है तो मैं उसके साथ निष्ठुरता का व्यवहार करता हूँ। अगर वह ख़ुशी से सहन कर ले तो मैं भोजन के एक निवाले की तरह उसका हो जाऊँगा। दया और ईमानदारी अपने आप में ऐसे गुण हैं कि इनसे तुम पाँच साल के बच्चे का भी प्यार और विश्वास पा सकते हो। लेकिन बेवफ़ाई केवल सच्चा प्यार ही सह सकता है।

क्या हमारा प्यार कसौटी पर खरा उतरता है?

224-5—क्या तुम इस बात पर ग़ौर नहीं करते कि मैं जो भी शब्द चुनता हूँ, उसका अर्थ लेकर मैं समझाता हूँ, क्रम से और विस्तार के साथ उसकी व्याख्या करता हूँ? बोलनेवाला शक्तिशाली है और उसमें कोई दोष नहीं है। मुझे लिखने की आदत कभी नहीं रही। मैं जब लिखता नहीं, तो 'शब्द' मेरे अन्दर रहता है, और हर पल अपना एक अलग ही पहलू दिखाता है।

शब्द तो केवल हक़ (परमात्मा) और उसकी सुन्दरता से परदा हटाने का साधन मात्र होते हैं।

227—जिन्हें परमात्मा को देखने के लिए अन्तर्दृष्टि मिली है, उनके लिए 'मनुष्य' के तेज को देखना परमात्मा को देखने के समान है। आओ, अन्दर आओ ताकि परमात्मा अपने आप को देख सके। परमात्मा अपने आप को

देखता है। वह अपने भक्तों के द्वारा अपने को देखता है। मूसा उस तेज को देखकर ही बेहोश हुए थे।

परमात्मा हमारे द्वारा अपनी भक्ति करता है।

230—मैं जब हज़रत मुहम्मद, ईसा मसीह या और किसी महात्मा के गुणों का वर्णन या चित्रण करता हूँ तो क्या तुम्हें हैरानी नहीं होती कि मुझे उनके गुणों की जानकारी कैसे है? क्या मैं वैसा ही हूँ जैसे वे थे?

एक बार जब कोई व्यक्ति किसी महात्मा के गुणों का बखान कर रहा था तो एक श्रोता उत्तेजित होकर बोला, "काश, मैंने उन्हें देखा होता!" तब किसी ने उससे कहा, "अरे मूर्ख, तुम इस महात्मा को क्यों नहीं देखते जो उनके चरित्र का वर्णन कर रहा है? हो सकता है यह उस महात्मा जैसा ही हो, लेकिन अपने आप को गुप्त रख रहा हो।"

सब महात्मा जिनका परमात्मा से मिलाप हो जाता है एक जैसे होते हैं, लेकिन अधिकांश लोग जीवित महात्माओं की अपेक्षा उनको अधिक महत्त्व देते हैं जो अब नहीं रहे।

235-6—हम [शम्स] अपनी मूँछें कटवा देंगे। हमें जिहाद (धर्मयुद्ध) में शामिल नहीं होना है, इसलिए हमें अपनी मूँछों से काफ़िरों को डराने की ज़रूरत नहीं रही। अगर मूँछों का एक-एक बाल भी भाला बन जाये तो अन्दर का काफ़िर [मन, अहं] उसकी परवाह नहीं करता। जहाँ तक मेरा सवाल है, अपने मन को बस में करने का काम कभी का समाप्त हो चुका है।

236—मेरा अन्दर ख़ुशख़बरियों से भरपूर है। मैं हैरान हूँ कि ये लोग इनके बिना ख़ुश कैसे रह सकते हैं। अगर हर व्यक्ति के सिर पर सोने का मुकुट रख दिया जाये तो उन्हें इससे सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हें

पूछना चाहिए, "इसे लेकर हम क्या करेंगे?" हमें तो उस आन्तरिक विकास की ज़रूरत है। हमें यह इच्छा रखनी चाहिए कि हमारे पास जो कुछ है वह सब ले लिया जाये, और जो सचमुच में हमारी है [हमारी दिव्य धरोहर] वह हमें दे दी जाये। बचपन में लोग मुझसे पूछते थे, "तुम उदास क्यों हो? क्या तुम्हें कपड़े या पैसा चाहिए?" मेरा जवाब होता था, "मैं चाहता हूँ कि आप ये कपड़े भी मुझसे ले लें और मुझे वह चीज़ दें जो मेरी है।"

केवल उस अनमोल वस्तु की लालसा रखनी चाहिए जो प्राप्त करने योग्य है।

239-40—शैख़ मुहम्मद कई बार ज़िक्र करते कि यह व्यक्ति या वह व्यक्ति ग़लती पर था। जब मैं उन्हें ख़ुद ग़लती करते देखता तो कभी-कभी उनसे उसका ज़िक्र कर देता। वे सिर झुका लेते और कहते, "बच्चे, तुम मुझे बुरी तरह फटकार रहे हो।" उनका तो पहाड़ जैसा ऊँचा व्यक्तित्व था। मैं जो भी कहने जा रहा हूँ उसमें मेरी कोई बुरी मंशा नहीं है। हर बार जब वे सूत कातते तो पैग़म्बर का दर्जा हासिल करने के सपने देखनेवाले हज़ारों शैख़ तकली पर से झड़ जाते।* जब कभी उन्हें किसी आन्तरिक अवस्था का अनुभव होता तो वे उसके बारे में मुझसे बात करते। तब मैं उन्हें समझाता कि वह उस आन्तरिक अवस्था को कैसे बनाये रखें।

उदाहरण के लिए, एक दिन हम आपस में यह चर्चा कर रहे थे कि क्या क़ुरान में कोई ऐसी आयतें हैं जो किन्हीं मौजूदा हदीसों से मेल खाती हैं। अगर हैं, तो वे हदीसें सही हैं। फिर उन्होंने मुझे एक हदीस बताई और पूछा, "क़ुरान में इससे मिलती आयत कहाँ है?" मैंने भाँप लिया कि उस समय उनकी मानसिक अवस्था ठीक नहीं थी, कुछ उखड़ी-उखड़ी थी।

* शम्स शैख़ मुहम्मद की ऊँची आध्यात्मिक उपलब्धि की तुलना सूत कातनेवाले से करते हैं और दूसरे शैख़ों को रूई के उन टुकड़ों जैसा बताते हैं जो सूत कातते समय तकली से गिर जाते हैं।

इसलिए मैं चाहता था कि ऐसे शब्द कहूँ जिनसे उन्हें अपने प्रश्न का उत्तर मिल जाये, और वे फिर से एकाग्रता की अवस्था में आ जायें। मैंने कहा, "आप जिस हदीस की बात कर रहे हैं, वह मानने के लायक़ है या नहीं, इस बारे में राय अलग-अलग है। लेकिन 'सब कामिल दरवेश मानों एक ही शख़्स हैं', इससे मिलती कोई आयत क्या क़ुरान में है?" उन्होंने समझा कि मैं उनसे कोई प्रश्न पूछ रहा था, इसलिए उन्होंने तुरन्त क़ुरान का वह हिस्सा पढ़कर सुना दिया जिसका यही मतलब निकलता था। फिर थोड़ा ग़ौर करने पर उन्हें यह एहसास हुआ कि मेरा इरादा उनसे कोई जवाब पाने का नहीं था। उन्होंने कहा, "बच्चे, तुम मुझे गढ़ने में बहुत ज़ोर लगा रहे हो।" वे अपनी बात के आरम्भ में और अन्त में भी मुझे "बच्चे" कहकर सम्बोधित करते थे, और फिर इस बात पर उन्हें हँसी आ जाती थी, क्योंकि उस प्रसंग में बच्चा कौन था?

शम्स ध्यान को फिर से एकाग्र करने में मुहम्मद इब्ने अरबी की सहायता कर रहे हैं।

241—मैंने क़ाज़ी शम्स अल-दीन खो'ई को बताया कि मुझे नौकरी मिलनेवाली है। उसने कहा, "बेटा, तुम्हारा अन्तर इतना संवेदनशील है और तुम भक्ति में इतने गहरे डूबे हुए हो तो फिर क्या तुम काम कर सकते हो?" उन्होंने मुझे कुछ और क़ानूनदानों से मिलाया और कहा, "देखिये इसे! यह ऐसी शानदार और ऊँची हस्ती का मालिक है, फिर भी काम कर रहा है।"

242—मेरा पैग़म्बर मुहम्मद से भाइयों का-सा नाता है, और मैं उन्हें केवल इसलिए भाई मानता हूँ कि कोई ऐसा है जो उनसे ऊपर है। परमात्मा कहीं गया नहीं है। ऐसे अवसर आते हैं जब मैं उनके बारे में बहुत आदर और सम्मान से बात करता हूँ, लेकिन इसलिए नहीं कि ऐसा करना मेरे लिए

ज़रूरी होता है। जो कहता है, "वह ख़ुदा है," उसका रुतबा उससे कहीं बड़ा है जो कहता है, "मैं ख़ुदा हूँ।"*

वह सम्बन्ध जिसकी थाह नहीं पाई जा सकती।

242-3—हमारी मित्रता की जड़ें अभी गहरी नहीं हुई हैं। आप साफ़-साफ़ क्यों नहीं पूछते कि किसने किसको अप्रिय बातें कही हैं? उस व्यक्ति को यहाँ लाओ, वह मेरे सामने वे बातें कहे। तुम सोचते रहते हो कि किन शब्दों का प्रयोग करूँ। तुम वह नहीं कहते जो तुम्हारे दिल में है, क्योंकि तुम उसका दिल नहीं दुखाना चाहते, उसे ठेस नहीं पहुँचाना चाहते। इसलिए, तुम कहते हो "अगर वे [शम्स] अप्रिय शब्दों का प्रयोग करते हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।" इस तरह तुम यह सिद्ध करते हो कि मैं अप्रिय शब्दों का प्रयोग करता हूँ।

जिसमें अच्छाई ही अच्छाई है, वह कोई बुरी बात कैसे कह सकता है?

परमात्मा के कुछ ऐसे सेवक हैं जो द्वेष-भाव के पुतले हैं। उनकी हर बात में दुष्टता भरी होती है। परमात्मा स्वयं कुछ नहीं कहता पर हर कोई, एक पत्थर भी, उसकी प्रेरणा से बोलता है। अगर सब, लगभग एक आवाज़ में, यह कहें कि है एक परमात्मा जो बोलने के लिए आवाज़ और शब्दों का सहारा लेता है, तो मैं कहूँगा एक दूसरा परमात्मा ज़रूर होगा जो उसे बोलने की प्रेरणा देता है। क्योंकि जो ख़ुद कुछ नहीं कहता, बल्कि सब कुछ दूसरों से ही कहलवाता है, अवश्य ही सर्वशक्तिमान् परमात्मा है।

पैग़म्बर ने कहा, "परमात्मा के गुणों को अपनाने की कोशिश करो।" परमात्मा के गुणों में दया और शक्ति दोनों शामिल हैं, अकेली दया नीरस होती है।

रूमी की कमज़ोरी पर अप्रसन्नता प्रकट करते हुए शम्स उन्हें रूहानी सत्यों के प्रति जाग्रत करने के लिए इस अवसर का लाभ उठाते हैं।

---

* मन्सूर हल्लाज की ओर संकेत है।

244-5—मैंने कहा, "तुम्हें चुप रहना चाहिए ताकि तुम्हें बाहर निकलने का रास्ता मिल जाये। बातों से धूल उड़ती है, और केवल वही उस धूल से बचा रह सकता है जो धूल की पहुँच से परे चला गया हो।" फिर भी वह अनाप-शनाप बोलता रहा। मैंने कहा, "जब मैं इस राह पर खोजी था तो जब भी मुझे किसी दरवेश का साथ मिलता, मैं अपना मुँह बिलकुल नहीं खोलता था। मैं सोचता था कि शायद इस दरवेश ने ज़्यादा आन्तरिक अनुभव कर लिया है, इसका रूहानी ज्ञान मुझसे ज़्यादा गहरा है। अगर मैं बोलूँ और यह चुप रहे तो मेरा नुक़सान होगा। अगर इसका ज्ञान मुझसे कम भी है, तो भी यही बेहतर होगा कि मैं चुप रहूँ और सुनूँ, क्योंकि बोलना मौत की तरह कष्टदायक होता है और सुनने से जीवन में मानों ताज़गी आती है।"

वह फिर बोलने लगा, इसलिए मैंने कहा, "पैग़म्बर मुहम्मद के सिवा और कोई मेरी लगाम अपने हाथ में लेने की हिम्मत नहीं कर सकता। वे भी बहुत होशियारी और ज़िम्मेदारी से इसे थामते हैं। लेकिन जब मुझमें जोश भरा हो और दरवेश होने का घमण्ड मेरे सिर पर सवार हो जाये तो वे मेरी लगाम अपने हाथ में कभी नहीं थामेंगे।

इनसान को चाहिए कि ख़ुद चुप रहे और दूसरे की बात सुने।

247—मैंने देखा कि एक शैख़ मुझे देखकर दुविधा में पड़ गया, दूसरे ने कुछ सोचते हुए सिर झुका लिया, तीसरे ने ज़मीन पर लेटकर अभिवादन किया, एक और मिट्टी में लोटने लगा, और आख़िर में आनेवाले शैख़ ने अपने जूतों से अपना सिर पीट लिया। मैंने कहा कि पूरे हाथी को देखकर ही समझ आती है कि असल में वह कैसा होता है। चाहे हाथी का हर एक अंग हमें हैरान कर देता है और हमें उलझन में डाल देता है, लेकिन ख़ुशी हमें तब होती है जब हम उसे पूरा देखते हैं।

पूर्ण सन्त के दर्शन भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से करना।

248-9—सराहना के योग्य है वह प्रेरणा जो हमें किसी पवित्र आत्मा से मिलती है। एक दिन मुझे एक दिव्य आन्तरिक अनुभव हो रहा था जब पड़ोस में से गुज़रते हुए मुझे बीन के बजने की आवाज़ सुनाई दी। उधर से जाते हुए किसी व्यक्ति ने पूछा, "क्या कोई दरवेश बीन की धुन पर समाअ कर रहा है?" मैं एक बहुत ऊँची आन्तरिक अवस्था का अनुभव कर रहा था। मेरे मुँह से ये शब्द निकले, "तुम्हें न दिखाई देता है, न सुनाई देता है," और उसी क्षण उस पथिक ने दीवार को थाम लिया [क्योंकि शम्स ने उसे अन्दर की समाअ का मदहोश कर देनेवाला रस चखा दिया]।

इन लोगों [जिन्होंने प्रभु को पा लिया है] के लिए मनुष्य-शरीर एक पात्र [प्रभु का] होता है। दूसरों को यह एक चमत्कार जैसा लगता है जो उनकी बुद्धि की पहुँच से परे है।

मनुष्य के मन की सीमित शक्ति और शैख़ की असीम दया।

249—शुरू में तो मुझे क़ानून के जानकारों का साथ अच्छा नहीं लगता था, और मैं केवल दरवेशों से ही मेलजोल रखता था। मैं सोचता था कि क़ानून के जानकार दरवेशों के तौर-तरीक़ों से परिचित नहीं हैं। जब मुझे इन दरवेशों के तौर-तरीक़ों की समझ आ गई, और मैंने जान लिया कि वे कितने पानी में हैं, तो मैं दरवेशों के बजाय क़ानून के जानकारों की सभाओं की ओर अधिक आकर्षित हो गया, क्योंकि उन्होंने कम से कम पढ़कर सीखने का कष्ट तो उठाया है जिससे उन्हें उनका वर्तमान ज्ञान प्राप्त हुआ है। लेकिन ये दरवेश तो सिर्फ़ शेख़ी बघार रहे हैं। एक सच्चे दरवेश की अवस्था कैसी होती है?

क़ानून के ईमानदार जानकार और ढोंगी दरवेशों पर शम्स के विचार।

252—परमात्मा आपको सदा सलामत रखे! क्योंकि मौत मुझे बड़ी भयानक लगती है, इसलिए मैंने परमात्मा से प्रार्थना की है कि मेरे सब मित्रों को सदा सलामत रखे। मैं और किसी चीज़ की प्रार्थना नहीं करता,

विशेषतया आपके लिए। आपके हाथों मेरा विकास हुआ है, अन्दर से भी और बाहर से भी, और आपसे मुझे सैकड़ों लाभ प्राप्त हुए हैं। फिर भी, जहाँ तक मेरे धैर्य पर आपके आश्चर्य का प्रश्न है, उस धैर्य का कारण यह है कि मुझमें परमात्मा के गुण हैं [मैं परमात्मा से अभेद हूँ।] मुझमें जो गुण हैं वे उसके गुण हैं, और मेरा धैर्य उसका धैर्य है। कहा जाता है कि परमात्मा में अपार धैर्य और सहनशक्ति है।

252— एक अजनबी अगर मुझे हज़ार बार भी मारे तो मैं उसे कुछ नहीं कहूँगा। जिससे मैं प्यार करता हूँ उसे ऐसा करने पर मैं ज़रूर ज़िम्मेदार ठहराता हूँ। यह सब दया-मेहर ही है।

यह बात मन्सूरे हल्लाज की कहानी जैसी है। जब उन्हें फाँसी दी जानी थी तो मज़हबी पुलिस ने लोगों को आदेश दिया कि इन्हें पत्थर मारो। हर किसी ने विवश होकर पत्थर मारे, लेकिन उनके मित्रों ने पत्थरों के बजाय उन पर फूल फेंके। मन्सूर फ़ौरन कराहने लगे। जब उनसे पूछा गया कि आप इनके फूल मारने पर क्यों कराहे, जब कि दूसरों के भारी पत्थर मारने पर भी नहीं कराहे, तो उन्होंने जवाब दिया, "क्या तुम जानते नहीं कि मित्र की बेवफ़ाई सहन करना अधिक कठिन होता है?"

260—मैं वह पक्षी हूँ जो दोनों पाँवों के बल लटका हुआ है। हाँ, मैं लटका हुआ हूँ, पर मैं 'प्रियतम' के फन्दे में लटका हुआ हूँ, और अचानक मैं बोल पड़ता हूँ, "कहो, तुम कैसे हो?" क्योंकि मैं इस क़ैद की तलाश में ही तो था।

मैं गोदाम [संसार] नहीं ढूँढ़ रहा था, मैं तो सोने-चाँदी की खानें [रूहानी ख़ज़ाना] चाहता था।

यहाँ से और यहाँ के ख़ज़ाने से तो मैं अपने को दूर रख रहा था क्योंकि मुझे परमात्मा के सिवा और कुछ भी रास नहीं आता था, वैसे ही जैसे दूसरे

लोगों को फ़क़ीरी रास नहीं आती लेकिन दुनिया रास आती है। एक ऐसी फ़क़ीरी है जो तुम्हें परमात्मा की ओर ले जाती है और उसके अलावा दूसरी हर चीज़ के लिए तुम्हारे दिल में नफ़रत पैदा कर देती है। और दूसरी फ़क़ीरी है जो तुम्हें परमात्मा से विमुख करके दुनियादारी की ओर ले जाती है।

फूल गर तुम्हें रास नहीं आता,
तो उसका काँटा रास आयेगा।
मंच गर तुम्हें रास नहीं आता,
तो फाँसी का तख़्ता रास आयेगा। (अज्ञात)

तुमने हक़ जताया मेरे दिल पर,
मैंने क़ुरबान कर दी जान भी।
क्या और भी है कुछ करने को?
क्या अब भी हैं क़र्ज़दार तुम्हारे हम? (रूमी)

संसार और परमात्मा, दोनों में से एक को चुनना है।

268—मैंने घर को और सारे शहर को रोशनी के बीच उनके गिर्द घूमते देखा। वह एक ऐसा दृश्य था जिसका ज़बान वर्णन नहीं कर सकती। मैंने जब ऊपर देखा तो मुझे अपने घर की छत दिखाई नहीं दी। उसी स्थिति में मेरे पिता बोल उठे, "ओह! मेरे बच्चे ..." उनकी आँखों से ख़ून की दो नदियाँ बह रही थीं। लगता था कि वे कुछ और कहना चाहते थे, लेकिन उनका मुँह नहीं खुला और उन्हें बुख़ार हो गया, जिससे आख़िर उनकी मौत हो गई।

शम्स के पिता शम्स के तोहफ़े की ताब सहन नहीं कर सके।

268-9—अगर मैं निष्ठुरता से जवाब देता हूँ तो इसमें मेरा इरादा अपने अन्दर से कठोरता निकालने का होता है ताकि वह और न बढ़ जाये। "अगर कोई

किसी ऐसे व्यक्ति को नुक़सान पहुँचाता है जिसने उसे नुक़सान न पहुँचाया हो तो वह गधा है।"* मेरे धैर्य और सहनशीलता की शक्ति अपनी चरम सीमा तक पहुँच चुकी है और मेरा दु:ख से कोई सम्बन्ध नहीं है। मनुष्य को दु:ख तब तक ही महसूस होता है जब तक उसे अपने अस्तित्व का एहसास रहता है, लेकिन मेरा अस्तित्व (अहं) तो मिट चुका है। जब मेरे अन्तर में इतनी ख़ुशी छाई हुई है तो फिर मैं बाहरी कष्ट को अन्दर आने की अनुमति कैसे दे सकता हूँ? कोई रूखा जवाब देकर या कठोर शब्द बोलकर मैं उसे रोक देता हूँ, और उठाकर घर से बाहर फेंक देता हूँ।

270-1—पैग़म्बर मुहम्मद के ग्रन्थों में ऐसा कुछ नहीं है जिससे मैं लाभ उठा सकूँ। मुझे अपने ग्रन्थ चाहिएँ। अगर मैं हज़ार ग्रन्थ भी पढ़ लूँ तो मेरी अज्ञानता ही बढ़ती है।

लोग परमात्मा के सन्तों के रहस्य समझ नहीं पाते, इसलिए जब वे सन्तों की पुस्तकें पढ़ते हैं तो हर कोई अपनी कल्पना से उनका अर्थ लगा लेता है और उस सन्त को दोष देता है जिसके वे शब्द होते हैं। लोग अपने आप को कभी दोष नहीं देते और यह कभी नहीं कहते, "ग़लती इनके शब्दों में नहीं है, ग़लती हमारी अज्ञानता और कल्पना में है।"

सन्तों की शिक्षा को समझने के बारे में शम्स के वचन।

272—उन्होंने मुझसे कहा कि हमारे लिए क़ुरान पर एक टीका लिख दो। मैंने जवाब दिया, "जैसे कि तुम लोग जानते हो, क़ुरान पर मेरी टीका का सम्बन्ध न मुहम्मद से है, न परमात्मा से। मेरी 'मैं' ही [मेरा अहं] मुझे अपनाने के लिए तैयार नहीं। मैं इससे कहता हूँ, "तुम मुझे अपनाने को तैयार नहीं हो, इसलिए यहाँ से चले जाओ। मुझे सिर-दर्द क्यों दे रहे हो?" और इसका

---

* यह कथन शाफ़ेई का माना जाता है।

जवाब होता है, "नहीं मैं नहीं जाऊँगा, और तुम्हें वैसे ही नकारता रहूँगा।" मेरा यह मन भी मेरे वचनों को नहीं समझता। यह उस सुलेख लिखनेवालों जैसा है जिसका लेख तीन तरह का होता था। एक वह जिसे उसके सिवा और कोई नहीं पढ़ सकता था; दूसरा वह जो वह भी पढ़ सकता था और दूसरे भी; और तीसरा वह जिसे न वह पढ़ सकता था, न कोई और। तीसरा लेख मैं हूँ: इसे न 'मैं' समझ सकता हूँ, न मेरे सिवा कोई और।

'सत्य' को केवल पूर्ण सन्त ही समझ सकते हैं,
यह अहं के बस की बात नहीं।

273-4 — हमें दुनिया की चीज़ों में से सबसे अधिक इच्छा धन-दौलत की होती है जो मेरी दृष्टि में भद्दी, दूषित और घृणित वस्तु है। सिर्फ़ किसी की ज़रूरत पूरी करने के लिए या किसी के परम सौभाग्य के लिए ही मैं [उसका धन] स्वीकार करूँगा। वह इतनी ईमानदारी और इतने खुले दिल से पैसा ख़र्च कर रहा है जो सबको बेहद प्यारा होता है और जिसे कमाने में सबका ध्यान केन्द्रित रहता है। जब उसे सचमुच [मेरी] इतनी ज़रूरत है तो मैं इनकार कैसे कर सकता हूँ?

अपनी ज़रूरत ज़ाहिर करने का एक तरीक़ा यह है: जब तुम्हें कहीं बुलाया जाये तो तुम कहो, "हम शैख़ साहिब के बिना तो जा ही नहीं सकते। कृपया पहले उन्हें ढूँढ़ो, क्योंकि हम अकेले नहीं जा सकते।" अगर वे कहें कि शैख़ साहिब वहीं हैं, तो तुम्हारा जवाब हो, "हम तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं करते, यह सरासर धोखा है। वे तो कहीं जाते ही नहीं।" अगर वे कहें, "शैख़ साहिब यहाँ से गुज़र रहे थे, और हम उन्हें बाग़ में ले गये," और अगर तुम उस बाग़ को चले जाओ तो उसमें प्रवेश मत करो। बाहर ही खड़े रहे और कहो, "जब तक हम उन्हें देख नहीं लेते, हम बाग़ के अन्दर नहीं जायेंगे।" तब अगर वे कहें कि शैख़ साहिब अन्दर सो रहे हैं तो तुम जवाब दो, "हम तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे। पहले हम

उनका दीदार करेंगे और उसके बाद ही हम अन्दर जायेंगे। वरना हम वापस चले जायेंगे।"

शम्स कहते हैं कि अन्दर भी और बाहर भी केवल अपने गुरु
में ही विश्वास और उन्हीं के प्रति निष्ठा होनी चाहिए।

275 — मैं जो कुछ कह रहा हूँ, उसे समझो। जब मुझे तुम्हारी लापरवाही याद आती है, तो क्रोध आ जाता है। मुझे तुम पर क्रोध क्यों आता है? तुम मेरे क्रोध का निशाना क्यों बनते हो? मैं सच्चे जिज्ञासुओं के साथ बहुत विनम्र होता हूँ, लेकिन दूसरों के साथ अहंकार और गर्व से बात करता हूँ।

294 — शैख़ औहद कभी-कभी मुझे आदर के साथ समाअ में ले जाते थे, और फिर मुझे वापस अपने निजी निवास-स्थान पर ले जाते थे। एक दिन उन्होंने पूछा, "अगर आप मेरे पास ठहरें तो क्या हर्ज है?" मैंने जवाब दिया, "एक शर्त पर ठहरूँगा। वह यह कि आप बिना झिझक अपने शिष्यों के साथ बैठकर शराब पियेंगे, लेकिन मैं आपका साथ नहीं दूँगा।"* शैख़ औहद ने पूछा, "आप शराब क्यों नहीं पियेंगे?" मैंने जवाब दिया, "ताकि आप एक ख़ुशक़िस्मत गुनहगार बनें और मैं एक बदक़िस्मत गुनहगार।" उन्होंने कहा, "मैं ऐसा नहीं कर सकता।" तब मैंने ऐसा शब्द कहा जिसे सुनकर उन्होंने तीन बार अपना माथा पीटा।

परीक्षा में से गुज़रकर पता चलता है कि हम कितने पानी में हैं।

298-9 — मुझे काफ़िर ज़्यादा पसन्द हैं क्योंकि वे मित्रता का दावा नहीं करते। वे कहते हैं, "हाँ, हम काफ़िर हैं, हम दुश्मन हैं।" जब हम उन्हें

---

* शम्स शराब नहीं पीते थे।

मित्रता का पाठ पढ़ाते हैं, हम उन्हें एकता सिखाते हैं। लेकिन जो मित्र न होते हुए मित्रता का दावा करता है, वह बहुत ख़तरनाक होता है।

हो सकता है कि कोई वेश्याओं को दया की दृष्टि से देखे। हालाँकि वह यह जानता है कि उनका पेशा नाजायज़ है, और अपने दु:ख-दर्द और सज़ा के लिए वे ख़ुद ज़िम्मेदार हैं, फिर भी उसकी आँखों से दया के आँसू बहते हैं, और वह परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उनकी, और सब आस्तिकों की तथा ख़ुद उसकी भी, पाप से रक्षा करे।

अगर तुममें इतनी क्षमता है कि जब तुम अपने मुर्शिद को वेश्यालय में बैठे किसी वेश्या के साथ खाना खाते देखो तो उनके बारे में तुम्हारी राय वही रहती है जो उन्हें इबादत करते और नमाज़ पढ़ते हुए देखने पर होती है, और तुम्हारा उनमें विश्वास तथा उनके प्रति निष्ठा डगमगाते नहीं, तो यह अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। फिर भी, अगर तुम्हारे लिए यह असम्भव है तो तुम कम से कम यह तो कह ही सकते हो, "मैं नहीं जानता कि मुर्शिद के ऐसा करने में क्या राज़ है, लेकिन यह उनके और ख़ुदा के बीच की बात है।" क्योंकि तुममें इतनी क्षमता नहीं है कि तुम वेश्यालय में बैठे मुर्शिद को ठीक वैसा ही जानो जैसा वे क़ाबे में या जन्नत में होते हैं, इसलिए जब तुम उन्हें इबादत करते देखो तो तुम कह सकते हो, "ये मुझे इबादत करते दिख रहे हैं और यह अच्छी बात है।"

शम्स: हममें सन्त को परखने या समझने की क्षमता नहीं है।

300-1—जब मुझे एहसास हुआ कि तुम उस अवस्था में और उसी स्थान पर अटके हुए हो, तो मैंने योजना बनाई और एक युक्ति सोची जिससे तुम वहाँ से निकल सको। मेरा पूरा ध्यान तुम्हारी तरफ़ था और मैं इस सोच में था कि तुम इतना खिन्न और उदास मन लिए उस अवस्था में क्यों थे। सो अब तुम जानते हो कि मेरे दिल में तुम्हारे लिए कितनी गहरी सहानुभूति है।

क्या तुम व्यस्त हो? अब मेरे हाथों को इस तरह मलो। काफ़ी समय से तुमने मेरे हाथों को मला नहीं।

तुम्हारा शुभ कार्य मंगलमय हो। मेरी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं। अगर मैंने तुम्हें परेशान किया है तो मुझे माफ़ कर दो। तुम्हारे लिए मेरी शुभकामनाएँ एक क़िले के समान हैं, जिसमें अगर तुम एक बार दाख़िल हो जाओ तो हर दु:ख-दर्द से बचे रहोगे। तुम संसार में अनोखे हो, सारे संसार से श्रेष्ठ हो।

परमात्मा की दया-मेहर जिसका क़िला है, मकड़ी उसकी रक्षा करेगी। (सना'ई)*

शम्स विनोद-मिश्रित व्यंग्य का सहारा लेते हुए गहरा दया-भाव प्रकट करते हैं।

तुम तो संसार में अनोखे निकले। संसार के सब लोगों में से वह तुम ही थे जिसने मंज़िल पा ली और बाज़ी मार ली।

उन्होंने [रूमी ने] पूछा, "क्या बात है कि कुछ प्रेमियों के गिर्द इतना शोर और इतनी हलचल रहती है, जब कि प्रियतम इतने चुपचाप और शान्त रहते हैं?"

मैंने कहा, "वह शोर और हलचल इस तरह होती है: कोई तुम्हें मेहमान बनाकर एक बाग़ में ले जाता है ताकि तुम अखरोट खा सको। वह पेड़ पर चढ़ता है, खाने के लिए अखरोट तोड़कर उन्हें फोड़ना शुरू कर देता है, और तुम्हें न्योता देता है कि आओ, अपने खाने के लिए पेड़ पर से कुछ

* यहाँ पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद के जीवन की एक घटना की ओर संकेत है। जब उनके शत्रु उनका पीछा कर रहे थे तो मक्का से मदीना को भागते हुए वे रास्ते में एक गुफा में छिप गये। एक मकड़ी ने गुफा के मुँह के आगे जाला बुन दिया, जिससे उनका पीछा करनेवाले धोखा खा गये, और वे सकुशल बच निकले।

अखरोट तोड़ो और उनकी गिरी निकाल लो। ऐसा करने में तुम्हारे हाथ और आस्तीन काले हो जाते हैं।

"लेकिन कोई दूसरा व्यक्ति तुम्हें मेहमान के रूप में बाग़ में ले जाता है, तुम्हें एक अच्छी जगह पर बिठाता है और अपने नौकरों से सब काम करने को कहता है। नौकर पेड़ से अखरोट तोड़ते हैं, उनका खोल और फिर अन्दर का छिलका भी उतार देते हैं। फिर जब वे साफ़, ताज़ा अखरोट खाने के लिए तुम्हारे सामने रखते हैं तो तुम खाते नहीं, बल्कि कहते हो, "ये किस क़िस्म के अखरोट हैं? मैंने न तो अखरोटों को फोड़े जाने की आवाज़ सुनी और न ही मेरे हाथ और आस्तीन काले हुए। मैं ये नहीं खाऊँगा। ऐसी चीज़ मैंने पहले कभी नहीं देखी। परमात्मा जाने ये क्या हैं।"

हम रूहानी राह पर अपनी गति से चलते हैं,
इसलिए पूर्ण सन्त की दया-मेहर को
हमेशा नहीं पहचान पाते।

302—प्रभु के कुछ सेवकों में दु:ख और ख़ुशी को सहन करने की जैसी क्षमता होती है, वैसी दूसरों में नहीं होती। हर बार वे एक पूरा प्याला पी जाते हैं, लेकिन अगर कोई दूसरा उतना पी ले तो फिर कभी होश में नहीं आयेगा। दूसरे नशे में आकर चले जाते हैं, पर वह अनोखा सेवक मटके के ऊपर बैठा रहता है।

मदिरा प्रभु का 'शब्द' है, और सेवक वे हैं जिन्होंने प्रभु को
पा लिया है, इसलिए सुख-दु:ख से विचलित नहीं होते।

304-5—शैख़ मुहम्मद [इब्न अरबी] कभी-कभी दण्डवत् करके कहते, "मैं शरीअत का भक्त हूँ," लेकिन वे मज़हब के नियमों के अनुसार चलते नहीं थे। मुझे उनसे बहुत लाभ हुआ है, पर उतना नहीं जितना आप [रूमी] से हो रहा है। लेकिन हैरानी की बात है कि आपके बच्चे आपको बिलकुल

नहीं समझ पाये हैं। हो सकता है कि वे कभी समझ जायें।* फिर भी, आपको अपनी आध्यात्मिक क्षमता बच्चों पर या किसी और पर प्रकट करने की चिन्ता नहीं है। कोई आदमी एक छोटी-सी चीज़ भी मिल जाने पर दूसरों को दिखाने के हज़ार तरीक़े अपनाता है, जब कि दूसरा अपने को छिपाये रखने के लिए सौ चालें चलता है। जितनी गहराई से मैं अपने को समझने लगता हूँ, उतना ही ज़्यादा परेशान हो जाता हूँ। मेरे सामने यह समस्या खड़ी हो जाती है कि कौन विश्वास के योग्य है और कौन नहीं, और मैं अपनी इच्छा के अनुसार नहीं जी सकता।

तब किसी ने पूछा, "क्या आपका इशारा उस आदमी की ओर है जो नि:सन्देह आपका विश्वासपात्र नहीं है?" मैंने कहा, "तुम कैसे जानते हो कि वह मेरा विश्वासपात्र नहीं है? तुमने ज़रूर ज़्यादा उन्नति कर ली होगी जो तुम्हें इस बात का ज्ञान है।" उसने कहा, "मैं यह इसलिए जानता हूँ क्योंकि वह कहता है: 'ज़रूर ऐसी बात होगी, या ज़रूर वैसी बात होगी।' आत्मसमर्पण की हालत में यह कैसे हो सकता था कि वह कहता: 'ऐसा ही होगा या वैसा ही होगा'?" इस पर मैंने कहा, "फिर तुम ख़ुद क्यों उसकी नुक़ताचीनी कर रहे हो? क्या तुम वही बात नहीं कर रहे हो: 'ऐसा ज़रूर होगा और ज़रूर नहीं होगा'? तुम ख़ुद वही काम कर रहे हो, जब कि कहते तुम यह हो कि ऐसा नहीं करना चाहिए।"

यह बात तो उस हिन्दू जैसी है जो प्रार्थना करते हुए बातें कर रहा था। दूसरा भी प्रार्थना कर रहा था। वह बोला, "अरे, चुप रहो! प्रार्थना करते हुए बातें नहीं करनी चाहिएँ।" या फिर यह ऐसी बात है कि जब कोई फ़ैसला करवाने गया तो उससे कहा गया, "तुम्हारे विरोधी का कोई गवाह नहीं है, इसलिए तुम्हें परमात्मा को साक्षी मानकर क़सम खानी चाहिए।" उसने कहा,

* रूमी के सबसे बड़े बेटे बहा अल-दीन की तरफ़ इशारा है जो शम्स के शिष्य और बाद में रूमी के दूसरे उत्तराधिकारी बन गये थे। इन्हें सुल्ताने वलद कहा जाता है।

"क़सम परमात्मा की, मैं ऐसा नहीं करूँगा! मैं परमात्मा को साक्षी मानकर क़सम खाता हूँ कि क़सम नहीं खाऊँगा।"

शम्स परस्पर विरोधी कथनों का प्रयोग करते हुए, इस बात पर ज़ोर देते हैं कि हमें दूसरों की परख नहीं करनी चाहिए।

306-7—इनसान को बचपन में ही वे गुण अपनाने की कोशिश करनी चाहिए ताकि काम ज़्यादा जल्दी हो जाये। नई टहनी आग में न तपाये बिना भी सीधी हो जाती है। अगर उसे आग में तपाते हैं तो वह सूख जाती है, और उसका रूप बदलना कठिन हो जाता है। जब चमड़े का जूता गीला हो जाये तो उसे पहन लेना चाहिए, ताकि सूखने पर वह पाँव में ठीक से आ जाये और उससे कोई बेआरामी न हो।

बचपन में ही आज्ञाकारी होना सीखना चाहिए।

किसी ने कहा, "किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना या उसे निरुत्साह करना उचित नहीं।" लेकिन मैंने कहा, "अगर मैं उसकी परीक्षा न लूँ तो वह जान नहीं सकता कि वह कितने पानी में है। क्या तुम्हें इन लोगों में विश्वास दिखाई दिया? जब मैंने इन लोगों की परीक्षा लेना अभी शुरू ही किया था, तब क्या तुम्हें इनमें वह विश्वास और ईमानदारी दिखाई दी? इन्हें मैंने कैसे तुम्हारे सामने नंगा कर दिया? जो दिल की गहराइयों से प्यार करने का दावा करता है, उससे चाँदी का एक सिक्का माँगें तो उसकी अक़्ल फ़ौरन हवा हो जाती है, उसकी जान निकल जाती है, उसका सिर चकरा जाता है, और उसके पाँवों तले से ज़मीन खिसक जाती है [पूर्ण सन्त को नकारकर वह उलझन में पड़ जाता है]।"

मैंने उनकी परीक्षा ली ताकि वे ज़रा अपने अन्दर झाँक सकें, और उन्होंने यह कहते हुए मुझे कसूरवार ठहराना शुरू कर दिया, "शम्स ने विश्वास करनेवालों का जोश ठण्डा कर दिया है।" मैंने कहा, "नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया। इसके लिए तो इस शख़्स के प्रति परमात्मा की ईर्ष्या ज़िम्मेदार

है [रूमी]।" वह नहीं चाहता कि हर कोई उन हस्तियों को जान ले, [जिन्होंने परमात्मा को पा लिया है।] उनके माथे पर लिखा है, "इन्हें कोई नहीं समझ सकता।" फिर वे नज़र में कैसे आ सकते हैं?

वे केवल परमात्मा की आँखों में दिखाई देते हैं। अगर तुम उन्हें देखना चाहते हो तो हक़ (परमात्मा) की आँखों के अन्दर जाओ। जिस जीव को रचा गया है वह परमात्मा को, या किसी ऐसी हस्ती को कैसे समझ सकता है, जो परमात्मा की आँखों में समाया है उसे कैसे देख सकता है। वे [परमात्मा की पहचान कर चुके] सन्त और परमात्मा बड़े अनोखे ढंग से एक-दूसरे में समाये हुए हैं, मानों वे एक-दूसरे में अभेद हो गये हों।

हर इनसान की एक विशेष भावनात्मक दशा होती है। मंच पर बैठकर उपदेश देनेवाले उपदेशक की अपनी भावनात्मक दशा होती है; क़ुरान की आयतें सुनानेवाले की अपनी और सुननेवाली की अपनी। शैख़ की, जो खोज रहा है उसकी, और जिसे खोजा जा रहा है उसकी, प्रेमी की और 'प्रियतम' की, हर किसी की अपनी अलग भावनात्मक दशा होती है। हे भगवान्, कितना नादान, कितना अन्धा हो जाता है वह इनसान जिसे अपने अन्धेपन का एहसास न हो!

चाहे मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जिन्हें केवल परमात्मा की आँखों में देखा जा सकता है, लेकिन मुझे उनकी ख़बर तो है। कुछ और ऐसे लोग हैं जो देख सकते हैं और जानते हैं कि वे देख सकते हैं। केवल उन्हें ही अपने वास्तविक स्वरूप का बोध होता है।

ऐ मेरे प्यारे! कब तक पीटते रहोगे उस चीज़ को
*जिसे तुम देख नहीं सकते?**

आध्यात्मिक दृष्टि के धनी और उससे ख़ाली लोगों में अन्तर।

---

* फ़ारसी की एक नीति-कथा।

मेरे पिता ने कहा, "लेकिन मैं तुम्हारा बाप हूँ और तुम मेरे बेटे हो।" मैंने कहा, "यही तो सारे मसले की जड़ है कि आप मुझे अपना बेटा समझते हैं और ख़ुद को मेरा बाप। हज़रत मुहम्मद के रुतबे के साथ आदम कैसे मुक़ाबला कर सकता है?"

शम्स बचपन से ही इनसान की वास्तविकता को समझते थे।

309—मुझमें यह शक्ति और क्षमता है कि अपने दु:ख का उन पर प्रभाव न पड़ने दूँ, क्योंकि अगर ऐसा हो जाता है तो वे मर जायेंगे। जब वे मेरी ख़ुशी को भी सहन नहीं कर सकते तो मेरे दु:ख को कैसे सहन कर सकेंगे? उसमें तो वे भस्म हो जायेंगे।

ठीक उस चोर की तरह जो चिल्ला-चिल्ला कर कहता है, "चोर! चोर!" ताकि भीड़ में वह पहचाना न जाये, शैतान भी वही बात करता है।

सैकड़ों शैतान हैं इस रास्ते पर जगह-जगह
जो इनसानों जैसे दिखते हैं।
ख़बरदार! हर किसी शख़्स को तुम
इनसान मत कह देना। (सना'ई)

इनसान के रूप में शैतान वे होते हैं जिनकी हालत व रंगढंग तुमसे बिलकुल अलग होते हैं।

पूर्ण सन्तों की दया और सहानुभूति और उनके गुणों का स्वाँग रचनेवालों में अन्तर।

317—अगर किसी का उसके भाग्य में लिखा समय अभी नहीं आया है तो वह क्या कर सकता है? वह बिलकुल वैसा ही आचरण करेगा जैसा ये लोग अब करते हैं, क्योंकि जो मुझे नकारते हैं वे मुझे जानते नहीं।

लेकिन, मैं ख़ुश हूँ; और ख़ुश कैसे न होऊँ? क्योंकि ऐसा कभी नहीं हुआ कि जब किसी व्यक्ति ने मुझे मानने से इनकार किया, तब परमात्मा के हज़ारों ऊँचे दर्जे के फ़रिश्तों ने मेरा समर्थन न किया हो। ऐसा कभी नहीं हुआ कि परमात्मा ने—महिमा हो उसकी महानता की—हज़ार बार मेरी प्रशंसा न की हो जब किसी ने मुझे गालियाँ दीं। ऐसा अवसर कभी नहीं आया कि परमात्मा ने हज़ार बार मुझे अपनी दया-मेहर और निकटता का एहसास न कराया हो जब किसी व्यक्ति ने मेरा साथ छोड़ दिया। और ऐसा अवसर भी कभी नहीं आया जब किसी ने मेरी राय ठुकरा दी और हज़ारों सच्चे, सम्मानित व्यक्ति, जो परमात्मा के बहुत नज़दीक थे, मेरे पास न आये हों और मेरे सामने सिर न झुकाया हो।

शम्स के लिए परमात्मा की "हाँ" सारे संसार की "न" से कहीं अधिक महत्त्व रखती है।

317-8—हज़रत मुहम्मद के इस कथन पर मुझे हैरानी होती है, "मोमिनों के लिए दुनिया एक क़ैदख़ाना है।"* मुझे तो कभी कोई क़ैदख़ाना दिखाई नहीं दिया। मैंने यहाँ ख़ुशी, यश और मान-सम्मान ही देखा है। जब एक काफ़िर ने मेरे हाथों पर पानी डाला तो मैंने उसे माफ़ कर दिया और उसने मेरा धन्यवाद किया। वाह, क्या चीज़ है "मैं"!

मैं कुछ समय अपने को कितना तुच्छ समझता रहा हूँ। मैंने अपने को पहचाना ही नहीं। कितनी शान है मेरी! कितना महान् हूँ मैं! मैं ऐसे मोती जैसा था जिसे किसी गन्दे नाले में पड़ा पाया गया। मैं समझ रहा था कि मैं उस गन्दे पानी से बच गया, लेकिन ... ऐसा बिलकुल नहीं हुआ था। अब मैं मीठा बोलता हूँ; क्या यह तुम्हें अच्छा लगता है? आओ, मुझसे हाथ मिलाओ। जब तुम एक मुसलमान भाई से हाथ मिलाते हो तो ऐसा करने

---

* एक हदीस।

से तुम्हारे पाप कट जाते हैं। ऐ मुसलमानो, आओ मुझसे हाथ मिलाते रहो ताकि मैं भी तुमसे हाथ मिला सकूँ।

अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानो।

319—जो मेरा अपमान करता है वह मुझे अच्छा लगता है, और जो मेरी प्रशंसा करता है वह मुझे दु:ख पहुँचाता है। प्रशंसा ऐसी करनी चाहिए जिससे बाद में मुकरना न पड़े, वरना प्रशंसा पाखण्ड हो जाती है और पाखण्डी काफ़िर से भी बुरा होता है। "पाखण्डी दोज़ख़ में वहाँ जायेगा जहाँ आग की तपिश सबसे ज़्यादा हो (क़ुरान 4/145)।"

326—मेरे एक मित्र से पूछा गया कि मैं फ़क़ीर हूँ या क़ानून का जानकार।

उसने जवाब दिया, "क़ानून का जानकार और फ़क़ीर दोनों।"

तब उससे पूछा गया, "फिर उनकी सब बातों में क़ानून का ज़िक्र क्यों होता है?"

मेरे मित्र ने जवाब दिया, "उनकी फ़क़ीरी इतनी खोखली और सतही नहीं है कि वे इन लोगों के साथ सरसरी तौर पर फ़क़ीरी के बारे में बातें करते। उसके बारे में इन लोगों को कुछ बताना बेकार है। वे क़ानून के अपने ज्ञान का प्रयोग करते हुए अपनी बात कहते हैं और राज़ों के बारे में खुली बात नहीं करते ताकि उनकी बातें दोहराई न जा सकें।"

जहाँ तक दुनियावी ज़रूरतों का प्रश्न है, मौलाना जानते हैं कि इस शहर में ऊँचे पद पर आसीन एक व्यक्ति है जो हमसे [शम्स से] मिलना चाहता है, और अगर मैं आज उसे हुक्म दूँ तो आज रात तक मुझे इतना सोना मिल जायेगा जितना इस सभा में बैठे तुम लोगों में से सबसे ज़्यादा अमीर आदमी मुझे दे सकता है। अब क्योंकि मुझे ज्ञान, अध्यात्म-विद्या और दुनियावी ज़रूरतें पूरी करनेवाली चीज़ों का लालच नहीं रहा, इसलिए मैं तुम लोगों को जो कुछ भी करने का हुक्म देता हूँ, वह तुम्हारे भले के लिए

होता है। अगर कोई तुम्हें दरवेशों की कही बातें बताता है तो विश्वास के साथ सुनो, और किसी तरह से नहीं। एक बार जब सुन लो तो उन्हें ठुकरा न दो। और अगर तुम उन्हें ठुकरा ही देते हो, तो फिर क्षमा माँगने के इस औपचारिक ढंग का कोई महत्त्व नहीं रहता। यह तो वैसी ही बात है जैसे कुछ लोग हज़ार बार गुनाह करते हैं और फिर अकड़कर कहते हैं, "ऐ हमारे ख़ुदा, हमने अपनी रूहों के साथ ज़्यादती की है...(क़ुरान 7/23)।," वे ऐसा इसलिए कहते हैं ताकि उनके मन निर्मल हो जायें। नहीं, ऐसे पश्चात्ताप के लिए करनी के रूप में प्रमाण देने की ज़रूरत होती है।

शम्स आध्यात्मिक सत्यों को क़ानून की भाषा में लपेटकर लोगों के सामने रखते हैं।

385—मैं इस सोच में पड़ा हूँ कि कोई मेरी कही बात लोगों तक कैसे पहुँचायेगा। मैं परमात्मा को साक्षी मानकर कहता हूँ कि अगर मौलाना यह काम करें तो वे बात को बेहतर ढंग से कहेंगे, और उसमें मेरे भावों को ज़्यादा सुन्दर बना देंगे। लेकिन फिर भी जो मैं कहता हूँ वह लोगों तक पहुँचेगा नहीं।

385—रूमी की इतनी प्रतिष्ठा है, इतनी गरिमा है कि उनका साथ मेरे कन्धों पर एक बोझ बन गया है। जब मैं इस बोझ से आज़ाद हो जाऊँगा तो बार-बार शुक्र करूँगा और बिना कोई बोझ उठाये ज़िन्दगी बिताऊँगा। चाहे मुझे पूरा विश्वास है कि अगर हज़रत मूसा पैग़म्बर मुहम्मद से कहें कि उन्हें कोई ख़ुदा को माननेवाला दिखाये तो वे [हज़रत मुहम्मद] मौलाना को उनके सामने पेश कर देंगे। फिर भी मैंने यह क़सम खाई है कि जब मेरे कन्धों पर से यह बोझ उतर जायेगा तो मैं अपने सारे कपड़े दान में दे दूँगा।

तरक़्क़ी कर चुके शिष्य का साथ भी गुरु के लिए एक बोझ बन जाता है।

610—मन को, जो आकाश और स्वर्गों के दायरे से भी अधिक विस्तृत, विशाल, कोमल और हलका है, छोटा क्यों किया जाये? और एक सुन्दर संसार को तंग क़ैदख़ाने में क्यों बदला जाये? फूलों के बाग़ जैसे संसार को क़ैदख़ाना बना देना उचित कैसे हो सकता है? इनसान रेशम के कीड़े की तरह अपनी कल्पनाओं, प्रलोभनों और गन्दे विचारों के जाल से अपने इर्द-गिर्द एक खोल बना लेता है, जिसके अन्दर वह बन्द हो जाता है और उसका दम घुट जाता है। मैंने अपने क़ैदख़ाने को फूलों के बाग़ में बदल लिया है। जब मेरा क़ैदख़ाना भी फूलों का बाग़ बन सकता है तो मेरा सचमुच का बाग़ कैसा होगा?

निर्मल मन वाला व्यक्ति अपने लिए सुखद भाग्य बनाता है।

610-1—मैंने पैग़म्बर मुहम्मद के इस एक वचन को छोड़ और किसी वचन का विरोध नहीं किया, "दुनिया वफ़ादार लोगों के लिए एक क़ैदख़ाना है।"* मुझे तो कोई क़ैदख़ाना नज़र नहीं आता। कहाँ है क़ैदख़ाना? लेकिन उन्होंने वफ़ादार लोगों के लिए क़ैदख़ाना कहा था, सेवकों† के लिए नहीं। सेवकों का एक अलग ही वर्ग होता है।

615—मेरे कुछ विद्यार्थी थे। उन्हें सलाह देते हुए मैं प्रेमवश कभी-कभी कठोर शब्द कह देता था। तब वे कहते, "इनका दिमाग़ ज़रूर ख़राब हो गया है, क्योंकि जब हम बहुत छोटे और नादान थे तो ये हमसे इस तरह बात नहीं करते थे।"

मैं उनके मोह के बन्धन काट रहा था।

शिष्यों के हृदय में सतगुरु के आन्तरिक स्वरूप के लिए प्रेम जाग्रत करना।

---

* एक हदीस। † जो परमात्मा से एक हो गये हों।

618-9—उस दिन आपने कहा था कि आँख के दर्द ने आपके मन के मैल को धो दिया था। मैं अपने शब्द फिर वापस ले लेना चाहता था और चुप रहना चाहता था, लेकिन मेरे मन में प्रेम उमड़ रहा था और मैं बोलने का इच्छुक था। कितनी हैरानी की बात है कि इस व्यक्ति को, जो सदा आनन्द-मग्न रहता है, जब एक बार ख़ुशी मिल जाती है तो यह बोलना ही नहीं चाहता। इसलिए मेरे शब्द मेरे अन्दर ही रह गये।

इससे पहले कि मेरी बात ख़त्म होती आप जल्दी से चले गये, इसलिए मैंने किसी और को ढूँढ़ लिया जो ज़्यादा समझदार नहीं था, और उससे बातें करने लगा। वह हैरान और परेशान हो गया। अगर मैं एक मित्र के साथ जिससे मैं प्यार करता हूँ इतने सब्र से पेश आता हूँ, तो सोचो एक अजनबी के साथ मेरा रवैया कैसा होता होगा। मैं शुरू से ही आपकी ओर बहुत आकर्षित हो गया था, हालाँकि जब आपने बोलना शुरू किया तो मैंने भाँप लिया था कि अभी आपमें इतनी क्षमता नहीं है कि आप इन राज़ों को समझ सकें। अगर मैं तब आपको ये राज़ बताता तो इन्हें समझना आपके लिए सम्भव नहीं था। वह समय बरबाद हो गया होता, क्योंकि तब आपमें [ग्रहण करने की] इतनी योग्यता नहीं थी जितनी अब है।

शम्स रूमी से धैर्य के बारे में बात करते हैं।

623—'हक़' [परमात्मा] सिर्फ़ मेरे साथ नहीं है, वह मेरे हाथों में है। उसके वे सभी गुण जिनका तुम अपने प्रवचनों में ज़िक्र करते हो, जैसे, "वह तेज़ नज़र वाला जिसकी नज़र से कुछ नहीं छिपता," मुझे अपने में दिखाई देते हैं; वे मेरे गुण हैं।

क्या तुम्हें इन बिगड़े हुए कुत्तों पर शर्म नहीं आती?
क्या तुम इन बेक़ाबू गधों के कारण अपमानित नहीं होते?
उस शख़्स को दीन की काठी समझा जाता है,

लेकिन काफ़िरी अपना रंगत और ख़ुशबू उससे पाती है।
और उस दूसरे शख़्स को देश का गौरव माना जाता है,
लेकिन देश को उस पर शर्म आती है, उससे नफ़रत होती है। (सना'ई)

इसलिए, तुम लगाम को अपने हाथ में रखो और खींचकर रखो।

बुद्धिमान् और नादान लोगों में फ़र्क़
सिर्फ़ इतना ही है:
बुद्धिमान् लगाम हाथ में पकड़कर सवारी करते हैं
जब कि नादानों के हाथ से लगाम टूटकर निकल जाती है। (अज्ञात)

जो प्रभु से एकरूप हो गये हैं, वे किसी और
ही रंग के घोड़े की सवारी करते हैं।

623-4 — अगर तुम मौलाना रूमी के मित्र हो तो अला* के लिए शतरंज की बिसात मत ख़रीदना। यह उसका शिक्षा ग्रहण करने का समय है। अब समय है कि वह रात के तीसरे पहर से ज़्यादा न सोये, या इससे भी कम सोये। हर रोज़ उसे ज़रूर पढ़ना चाहिए, कम से कम एक पंक्ति तो पढ़े ही। अगर वह मुझे यह कहते सुन ले तो नाराज़ हो जायेगा और वह कहेगा, "वे मुझे काम करने के लिए मजबूर करते हैं।"

लोग 'सत्य' और सच्ची बात को अपना दुश्मन मानते हैं क्योंकि सच्चाई उन्हें काम करने के लिए मजबूर करती है। जब उन्हें आभास हो जाता है कि काम करना पड़ेगा तो वे भाग जाते हैं। कितनी अजीब बात है! कुछ लोगों को अपना जीवन बरबाद करना अच्छा लगता है।

* रूमी का दूसरा बेटा।

625 — यह मेरे माता-पिता का दोष था कि मैं बिगड़ गया। अगर बिल्ली कोई बरतन तोड़ डालती तो मेरे पिता मेरे सामने उसे भी कोई सज़ा नहीं देते थे। हँसते हुए वे कहते "क्या हुआ? कोई बात नहीं। कुछ बुरा होना ही था, और वह इस तरह ख़त्म हो गया। वरना तुम्हारे साथ, तुम्हारी माँ के साथ या मेरे साथ कुछ बुरा हुआ होता।"

627 — मेरा हृदय केवल परमात्मा का ख़ज़ाना है, किसी और का नहीं। इसमें ऊँट हाँकनेवाले का माल क्यों रखा जाये? मैं उसे बाहर फेंक दूँगा। दूसरे लोगों की सोच अलग है। मेरा हृदय राजा के ख़ज़ाने के अलावा और कुछ स्वीकार नहीं कर सकता। जब कोई अहं से मुक्त हो जाता है तो उसे दूसरी तरफ़ से शक्ति अपने आप प्राप्त हो जाती है। उसमें परमात्मा आ बसता है। वैसे तो, क्या कोई ऐसा जीव है जिसमें परमात्मा का वास न हो? नहीं, फिर तो वह सब जो दिलचस्प और लाभदायक है, आत्मा के सामने प्रकट हो जाता है और उसे दिखाई देने लगता है।

पहले मनुष्य का अहं पूरी तरह मिटता है, फिर परमात्मा उसके अन्दर प्रकट होता है।

638 — एक क़ब्र के पत्थर पर लिखा था, "ज़िन्दगी बस यही एक पल है।"

"सूफ़ी मौजूदा पल का बेटा होता है।*" मेरा जीवन मौलाना [रूमी] की उपस्थिति में बीत रही यह घड़ी है। अब मुझे कोई ऐसी सेवा बताओ जो तुम्हारे योग्य हो, और मैं वह सेवा करूँगा [तुम्हें अन्तर में ऊँचाइयों पर ले जाऊँगा] ताकि अगर गेब्रियल† वहाँ देखने की कोशिश करेगा तो उसकी टोपी सिर पर से सरककर नीचे गिर जायेगी।

शम्स उस ख़ुशी का ज़िक्र करते हैं जो उन्हें वर्तमान पल में जीने में मिलती है।

* एक सूफ़ी कहावत। † इसलाम के अनुसार हज़रत मुहम्मद की अन्तर में चढ़ाई के दौरान गेब्रियल उनका मार्गदर्शक रहा, लेकिन वह अन्त तक उनके साथ नहीं जा सका।

640 — अबे तुम तो मेरे बाहरी रूप को भी नहीं समझ सकते! फिर तुम मेरी आन्तरिक अवस्था को कैसे जान सकते हो? पर नहीं, जाओ और बनाये रखो वह विश्वास जो तुम्हें ख़ुशी देता है, जोश दिलाता है, और दूर रहो उस विश्वास से जिससे तुम्हारा जोश ठण्डा पड़ जाता है।

जब तक हमारी आँखें नहीं खुल जातीं, अपने जोश को चाहे वह कैसा भी हो, बनाये रखना चाहये।

646 — मेरा मन नहीं मानता कि सब खोलकर तुम्हें बताऊँ। मैं केवल रहस्यपूर्ण ढंग से बताता हूँ और फिर चुप हो जाता हूँ। तुम्हारे सामने खोलकर रखना अशिष्टता है। लेकिन तुमने मुझे हिम्मत बँधा दी है। चाहे इस जल का स्रोत एक ही है, लेकिन यह दो धाराओं में बँट गया है। कभी सारा जल इस धारा में होता है, कभी उस धारा में। कभी यह धारा सारा जल अपनी तरफ़ ख़ींच लेती है और उस धारा को ख़ाली कर देती है, और कभी वह धारा सारा जल अपनी तरफ़ खींच लेती है। जो इन दो धाराओं से परे जल के स्रोत तक पहुँच जायेगा, वह जलमग्न हो जायेगा, तर-बतर हो जायेगा। उसका किसी भी धारा से सम्बन्ध नहीं रहेगा। वृक्ष के मामले में भी ऐसा ही होता है। अगर कोई व्यक्ति एक टहनी से लटका हुआ है तो जब वह टूटेगी वह गिर जायेगा। अगर वह वृक्ष के तने को पकड़े रखता है तो सारी टहनियाँ उसकी हैं।

शम्स वह चश्मा है जिससे दो धाराएँ निकल रही हैं; शिष्य का लक्ष्य दोनों से परे जाकर एक होना है।

649-50 — समाअ में, जहाँ परमात्मा ने ख़ुद को प्रकट कर दिया हो और परदा उठा दिया हो, कोई कविता की एक पंक्ति भी कैसे सुना सकता है? वहाँ सिर्फ़ देखा जाता है, बोला नहीं जाता। जो अभी इस हालत में नहीं है लेकिन समाअ में शामिल हो जाता है वह अवश्य अपमानित होगा। वह नेकी

और सौंदर्य के बीच अन्धकार जैसा होता है: नंगा, बदनाम, कामवासना और आवेगों से भरा हुआ [क्योंकि उसका अहं अभी भी मौजूद होता है]।

अचानक, मैंने देखा कि मेरी छाती में से एक ज्योति, एक प्रकाश ऐसे निकलने लगा जैसे सूर्य उदय हो रहा हो। मैंने अपना सिर इस तरह हिलाया, और मेरी पगड़ी गिर गई। जब शैख़ ने देखा कि मेरे सिर पर से पगड़ी गिर गई है तो [मेरा साथ देने के लिए] उन्होंने अपनी पगड़ी उतार दी। उस समय मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे मैं अपने आप को देख रहा हूँ। मैं अपनी सब नसें, कंडराएँ, हड्डियाँ, नाड़ियाँ, अँतड़ियाँ और अपने अन्दर के सब अंग देख सकता था। उन्हें देखने में मग्न होने के कारण मैं और कुछ नहीं देख सका।

ये दोनों अनुच्छेद एक ही उद्धरण के हिस्से हैं, लेकिन वह कड़ी खो गई है जो दोनों को जोड़ती थी। अनुमान ही लगाया जा सकता है कि शम्स जब अभी इस राह पर एक मुसाफ़िर ही थे तो उन्हें समाअ के दौरान एक अद्भुत अनुभव हुआ था, और यहाँ वे उसी का उल्लेख कर रहे हैं।

650 — आपके मन में विचार आया कि क्योंकि हर किसी चश्मे का पानी नहीं पीना चाहिए, इसलिए हम दोनों के जुदा होने की नौबत नहीं आयेगी। वे भला जा कैसे सकते हैं? लेकिन आपने यह नहीं कहा, "अगर ख़ुदा ने चाहा," इसलिए मुझे ख़ुशी नहीं हुई।

शुरू से ही मैंने एक बहुत बड़ी सुराही भर रखी है, [प्रेम की मदिरा से] और मैं यह मदिरा न पी सकता हूँ, न फेंक ही सकता हूँ। मैंने दूसरों को तो छोड़ दिया है, लेकिन मेरा दिल मुझे आपको नहीं छोड़ने देता। मैंने आपसे पश्चात्ताप करने को कहा था, कहा था कि फिर वैसा आचरण न करें। जो असत्य है, वह सत्य से मिलानेवाला धनुष के आकार का एक पुल है, और उसी आकार का एक पुल सत्य को असत्य से मिलाता है।

शम्स रूमी को और अधिक गहराई में जाकर बात को समझने की प्रेरणा दे रहे हैं।

657—पूर्ण सन्तों को समझना परमात्मा को समझने से अधिक कठिन है। परमात्मा को तो तर्क के द्वारा समझा जा सकता है। क्या तुमने लकड़ी पर नक़्क़ाशी हुई देखी है? ज़रूर कोई रहा होगा जिसने वह नक़्क़ाशी की, नक़्क़ाशी अपने आप नहीं हो गई। लेकिन ये लोग जो बाहर से तुम जैसे लगते हैं, अन्दर से भिन्न होते हैं। लकड़ी पर नक़्क़ाशी करनेवाले को जानना आसान है, लेकिन उस नक़्क़ाश [पूर्ण सन्त] के बारे में क्या कहोगे? क्या कहोगे उसकी महिमा के बारे में? क्या कहोगे उसकी अनन्तता के बारे में? केवल पूर्ण सन्त ही यह सब जानते हैं, लेकिन वे इस बात की चर्चा कभी नहीं करते।

हम इस सृष्टि के माध्यम से इसके रचयिता के अस्तित्व का अनुमान लगा लेते हैं, लेकिन सन्तों की सही पहचान केवल सन्त ही कर सकते हैं।

661—उस भाट की गाने की आवाज़ अच्छी नहीं थी। किसी ने उससे पूछा, "क्या तुम्हें तुम्हारी अपनी आवाज़ सुनाई नहीं देती?"

जो शब्द मैं बोल रहा हूँ, क्या वे तुम्हें सुनाई नहीं देते? आख़िर ये शब्द घर का मालिक तो नहीं बोल रहा। ये किसी और जगह से आ रहे हैं। क्या तुम्हें हैरानी नहीं होती कि मुझे [रूमी के] घर में प्रवेश की अनुमति कैसे मिल गई और कैसे उन्होंने अपनी पत्नी को मेरा विश्वासपात्र बना दिया जिस पर अगर गेब्रियल की नज़र पड़ जाये तो उसे ईर्ष्या होगी? वे मेरे सामने इस तरह बैठते हैं जैसे रोटी की इन्तज़ार में बेटा बाप के सामने बैठा हो। क्या यह शक्ति तुम्हें दिखाई नहीं देती?

शम्स रूमी के साथ अपने विशेष सम्बन्ध की चर्चा किसी ऐसे व्यक्ति से (शायद रूमी के अनुयायियों से) कर रहे हैं जिसमें शम्स की वास्तविकता को पहचानने की क्षमता होनी चाहिए, लेकिन उसमें है नहीं।

662—अगर हज़रत मुहम्मद ने लोगों को [दीन की] राह पर न बुलाया होता तो क्या किसी को उनसे कोई सरोकार होता? क्या लोगों ने उनसे कोई करामात दिखाने की प्रार्थना की होती? अगर मैंने लोगों से सच्चे मुसलमान [ख़ुदा को पा लेनेवाले] बनने को न कहा होता तो क्या मेरे कोई दुश्मन होते? नहीं, लोगों ने हज़ार तरह से मेरी सेवा की होती।

शम्स नादान लोगों की प्रतिक्रिया बता रहे हैं।

665—तुम्हारे साथ एकत्व मुझे बहुत प्रिय है और मेरे लिए बड़ा क़ीमती है। दु:ख की बात है कि जीवन सीमित है। तुम्हारे साथ एकत्व प्राप्त करने के लिए तुम्हें भेंट करने को मेरे पास सोने का पहाड़ होना चाहिए। जब हमारे पास जीवित परमात्मा है तो हमें मुर्दा देवता (इष्ट) की क्या ज़रूरत है?

आत्मा की अपने आराध्य के साथ एकता।

676—आख़िर मैं क़ानून का जानकार था और मैंने तनबीह* व दूसरी किताबें कई बार पढ़ी थीं। अब मुझे उनमें से कुछ भी याद नहीं आता, कुछ भी नहीं। कभी-कभी चलते-फिरते यों ही मुझे कोई बात याद आती है, और किताब मेरी आँखों के सामने आ जाती है। वैसे कल्पना में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं। आप आएँ मेरे पास, आपकी संगति से मुझे जो ख़ुशी मिलती है वह जवानी की उम्र में और विद्वानों से मेलजोल से मिलनेवाली ख़ुशी से कहीं बढ़कर है।

शम्स अपने अतीत और वर्तमान के बारे में बात कर रहे हैं।

677—मैंने अभी जवानी में क़दम नहीं रखा था कि इस प्रभु-प्रेम के कारण तीस-चालीस दिन मेरी कुछ खाने की इच्छा नहीं हुई। अगर वे मुझसे खाने

* तनबीह इसलामी क़ानून की शाफ़ेई शाखा के बारे में लिखी गई पाँच सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और प्रसिद्ध पुस्तकों में से एक है।

की बात करते तो मैं हाथ हिलाकर मना कर देता और अपना मुँह फेर लेता। कभी-कभार मैं थोड़ा-सा खाना ले लेता, उनका धन्यवाद करता और फिर उसे अपनी आस्तीन में छिपा लेता।

681—अगर कोई बात कहने योग्य है और मुझे कहने से रोकने के लिए सारा संसार मेरी दाढ़ी पर हाथ डाले हुए है, फिर भी मैं वह बात ज़रूर कहूँगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हज़ार साल बाद भी वह बात उस व्यक्ति तक पहुँच जायेगी जिस तक मैं पहुँचाना चाहता हूँ।

683-4—जो नालायक़ है, जिसके सम्बन्ध में सब निराश हो चुके हैं, उसके लिए स्थिति को सुधारने की मेरी ज़्यादा इच्छा होती है। मुझमें इतनी शक्ति है कि "मैं जन्म से अन्धे लोगों और कोढ़ियों को ठीक कर सकता हूँ (क़ुरान 3/49)," उन सबको जिनके लिए कोई आशा न हो।

शम्स हम दुखियों के प्रति अपनी दया और सहानुभूति व्यक्त करते हैं।

686—मैं यह साफ़-साफ़ जानना चाहता हूँ कि हमारे सम्बन्ध का आधार क्या है। यह सम्बन्ध क्या भाइयों का-सा और मित्रता का है या गुरु और शिष्य का? यह दूसरी तरह का सम्बन्ध मुझे पसन्द नहीं।

686—जब आप (रूमी) मुझे अपने से श्रेष्ठ और ऊँचा समझते हैं तो मुझे ऐसा लगता है कि हम दोनों में अन्तर है। मैं आपको साफ़-साफ़ बता रहा हूँ कि हमारी जुदाई का यही कारण है।

686—मैं केवल करनी चाहता हूँ। करनी मैं उसे कहता हूँ जिसे मैं देख सकूँ। उदाहरण के लिए, केवल इसलिए कि मेरे चेहरे पर नाराज़गी झलकती है,

आपका चेहरा भी वैसा हो जाता है। जब मैं हँसता हूँ, आप भी हँस पड़ते हैं। अगर मैं किसी को सलाम नहीं करता तो आप भी नहीं करते।

ऐसा लगता है कि आप किसी और ही दुनिया में रहते हैं जिसका मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं, और कभी-कभी आप मेरी लिखी बातें दूसरों की लिखी बातों में मिला देते हैं। जो आप लिखते हैं मैं तो उसे क़ुरान की आयतों से भी नहीं मिलाता। आपने चाहे दावे के साथ कहा है कि मैं सबसे श्रेष्ठ हूँ, पर मैंने तो ऐसा कोई दावा नहीं किया है। और कभी-कभी जब मैं आपसे लिखने को कहता हूँ तो आप आलसी बने रहते हैं।

692—मेरी आत्मा ऐसे स्थान पर पहुँच गई थी जहाँ से वह आगे बढ़ने का नाम नहीं लेती थी। मैं सोच रहा था कि इससे ऊपर कोई मुक़ाम होगा ही नहीं। फिर वे [मेरे मुर्शिद] मेरी आत्मा में समा गये, और अपार दया-मेहर करके इसे और ऊपर ले गये।

शम्स के मुर्शिद की उन पर कृपा का एक उदाहरण।

693—किसी ने मुझसे कहा कि आप बोला न करें। यह तो वैसी ही बात है जैसे कोई सूरज से कहे कि वह चमकना बन्द कर दे, क्योंकि इससे किसी चमगादड़ का दिल दुख सकता है। सूरज का तो काम ही रोशनी देना है। चमगादड़ अगर दुखी होता है तो इससे सूरज चमकना बन्द नहीं कर देगा। तब किसी शिष्य ने कहा, "चाहे सूरज चमगादड़ों या अन्धों की परवाह नहीं करता और रोशनी फैलाता है, पर सूरज की पूजा करनेवालों को यह डर बना ही रहता है कि वह उन्हें अपने से दूर रखने के लिए कोई चाल न चल दे।"

शम्स ने कहा, "लेकिन सूरज के भक्तों को यह विश्वास ज़रूर होना चाहिए कि सब सूरज का सम्मान करते हैं, इसलिए उसका विरोध करने की हिम्मत कोई नहीं करेगा। भक्त के विश्वास में इतनी शक्ति होती है कि वह

पहाड़ को पार कर सकता है, सात सिरों वाले शेर का मुक़ाबला कर सकता है और उसका कान खींच सकता है। सूरज के लिए प्रेम और उसमें विश्वास की शक्ति के कारण उसे कोई चिन्ता नहीं होगी। प्रेम और विश्वास से इनसान में इतनी हिम्मत आ जाती है कि उसका सारा डर दूर हो जाता है।"

जो देख सकते हैं, उनके लिए सूरज हमेशा चमकता है।

696—अगर आप वैसा ही करते हैं जैसा मैं कहता हूँ, तो जिस काम के लिए मैं यहाँ आया हूँ वह आसान हो जायेगा। मैं जल्दी से एक पत्थर से दूसरे पर कूद जाता हूँ। शतरंज में बादशाह को जिस घर में मात मिल सकती है वहाँ से वह हट जाता है, और जब वह ख़तरा टल जाता है तो वापस उसी घर में आ जाता है। ऐसे बादशाह को कभी हराया नहीं जा सकता। फिर भी जिन गिनी-चुनी स्थितियों में उसे हराने की सम्भावना हो सकती है, उनमें से एक यह है कि कोई कुछ कहे [जो उसे नहीं कहना चाहिए], और आप जवाब में कुछ न कहें। सत्य की ख़ातिर आप कुछ थोड़ा-सा कह सकते हैं, चाहे लोगों की कही हर बात काटने के लिए कई निर्णायक प्रमाण दिये जा सकते हैं।

जब लोग मेरी आलोचना करते हैं तो आपको जवाब देना चाहिए, लेकिन आप चुप रहते हैं, इसलिए मुझे बहुत दु:ख होता है। मेरी उस सारी उलझन और व्याकुलता का कारण यही था कि जब मेरे आलोचकों ने कुछ बातें कहीं तो आप चुप रहे, आपने जवाब नहीं दिया। आपने घर पर मेरी वफ़ा देख ली, मेरी हालत देख ली!

अगर कोई कुछ कहता है तो क्या आप यह नहीं कहेंगे, "मुझे जो दिखाई देता है, साफ़ दिखाई देता है, सूरज की तरह साफ़।" जो मुझे दिखाई देता है, उससे मैं इनकार कैसे कर सकता हूँ? यह कैसे हो सकता है कि आपके कुछ कहने के कारण मैं अपना मन बदल लूँ और कोई ग़लती कर दूँ?

शम्स: दुनिया को शैख़ से अधिक महत्त्व देने
के कारण हम बाज़ी हार जाते हैं।

698—क़ुरान में दो अवस्थाएँ बताई गई हैं, एक बाहर की और दूसरी अन्दर की। उस आन्तरिक अवस्था के अन्दर भी एक और अवस्था है, और यह बात सातों अवस्थाओं पर लागू होती है। क़ुरान का पाठ और व्याख्या करनेवाला एक ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है जो परमात्मा में लीन रहता है, और जिसे इन सातों आन्तरिक अवस्थाओं का ज्ञान है। ये सात परतें क़ुरान का वह हिस्सा हैं जिसका आम लोगों को पता नहीं। इस व्यक्ति को इन सातों के बारे में भी जानकारी है, उसने इन्हें अनुभव किया है। उसे इन सातों का और हज़ारों अन्य अवस्थाओं का भी ज्ञान है। वह एक विशेष और सच्चा जिज्ञासु है। इस सबसे भी परे एक और विशेष अत्यन्त ऊँची अवस्था है, और जिन्होंने वह अवस्था प्राप्त कर ली है उनका क़ुरान में ज़िक्र तक नहीं है, सिर्फ़ इशारा है। वे न पहली श्रेणी में हैं, न दूसरी में। वे ऐसी हस्तियाँ हैं जिन्होंने परमात्मा को पा लिया है, जिन्हें परमात्मा ने चुना है।

शम्स उन महात्माओं का वर्णन कर रहे हैं जो धार्मिक
ज्ञान और विद्वत्ता की पहुँच से परे चले गये हैं,
और जिन्होंने परमात्मा को पा लिया है।

699—अगर कोई मुझे पूरी तरह से जान लेता है तो जब वह मेरे साथ सच्चाई से पेश आयेगा, मैं उसे तुरन्त शान्ति प्रदान कर दूँगा और वह पूरी तरह निश्चिन्त हो जायेगा। उसके मन में जो बात आई है वह क्या मेरे मन में नहीं आई? चालबाज़ी सीखने के लिए सौ चालबाज़ों को यहाँ [शम्स के पास] आना पड़ेगा। लेकिन मैं ऐसा काम क्यों करूँ, वह किस दर्जे की चालबाज़ी होगी, और उससे उसे क्या हासिल होगा? सर्वशक्तिमान् परमात्मा तुम्हें वह प्रकाश प्रदान करे जो उसने अपने गुप्त घर में अपने उन भक्तों के लिए छिपा रखा है जिनको उसने चुना हुआ है।

शम्स अपने ज्ञान, अपने सच्चाई से प्यार और
अपनी दया-मेहर की बात करते हैं।

702 — मैं इस संसार में देखने के लिए आया था, केवल देखने के लिए। जो भी शब्द मैं सुनता, वह श-ब्-द से रहित होता। हर बातचीत बा-त-ची-त से ख़ाली होती। लेकिन इस छोर से मैं शब्दों को सुन सकता था, इसलिए मैंने पूछा, "हे शब्द-रहित 'शब्द', अगर तुम 'शब्द' हो, तो ये क्या हैं?" उसने जवाब दिया, "मेरे लिए ये सिर्फ़ खिलौने हैं।" मैंने कहा, "तो तुमने मुझे यहाँ खिलौनों से खेलने के लिए भेजा है?" उसका जवाब था, "नहीं, तुम ख़ुद यह चाहते थे। तुम्हारी इच्छा थी कि तुम्हारे पास मिट्टी और पानी का बना एक घर [मनुष्य-शरीर] हो, और मुझे न उसकी जानकारी हो, न मैं उसे देखूँ।" उसके बाद हर शब्द जो मैं सुनता, मैं समझ सकता था कि वह किस स्तर और किस स्थान का शब्द है।

'शब्द' सब कुछ जानता है, फिर हम मनुष्य-शरीर के अन्दर छिपे कैसे रह सकते हैं?

703-4 — कुछ महात्मा कहते हैं कि आत्माएँ अनादि हैं। औरों का कहना है कि ये संयोगवश यहाँ हैं, जिसका मतलब है कि ये शुरू से यहाँ नहीं थीं, बल्कि बाद में आईं।

एक लम्बे समय से आत्माएँ यहाँ इकट्ठी हैं। आत्माएँ उस सुव्यवस्थित सेना जैसी हैं जिसे इकट्ठा कर दिया गया है... ,* लेकिन जनसमूह तो कई तरह के होते हैं। कामुक लोग भी इकट्ठे होते हैं, पापी भी और दुराचारी भी। जीवों के इकट्ठे होने से मेरा मतलब उन लोगों से है जिनमें आत्मा मौजूद है। परमात्मा का ज्ञान तो सर्वव्यापी है, परन्तु वह स्वयं उन लोगों के बीच ही मौजूद होता है। "क्योंकि ख़ुदा उन लोगों के साथ है जो ख़ुद पर क़ाबू रखते हैं (क़ुरान 16/128)..." उन्होंने यह भी कहा, "ख़ुदा हमारे

* पैग़म्बर के नाम से प्रचलित एक हदीस। यह आगे इस तरह चलती है, '...जो एक दूसरे को जानती हैं वे अपनापन महसूस करती हैं, और जो एक-दूसरे को नहीं जानतीं उनमें अनबन रहती है।'

साथ है (क़ुरान 9/40)।" इसलिए अगर तातारी* की आत्मा सृष्टि के आरम्भ में हम लोगों से परिचित होती तो आज भी वह वैसी ही होती।

इकट्ठी हुई आत्माओं से परमात्मा ने कहा, "मैं मिट्टी और पानी का एक ख़लीफ़ा [शासक] बनाना चाहता हूँ, और मिट्टी व पानी की दुनिया में तुम सब उसकी औलाद होगे।" उन्होंने कहा, "हे प्रभु, यहाँ तुम्हारे साथ हम आराम से हैं और ख़ुश हैं। हमें डर है कि कहीं हम इस ख़ुशी से वंचित न हो जायें और बिखर न जायें।"

परमात्मा ने जवाब दिया, "मैं जानता हूँ कि तुमने ये शब्द आपत्ति या अशिष्टता के इरादे से नहीं कहे, बल्कि तुम मेरी शरण में आना चाहती हो क्योंकि तुम्हें डर है कि कहीं तुम बिखरकर अलग न हो जाओ। पर यह समझ लो कि मुझमें सब कुछ करने की क्षमता है और मेरी शक्ति कम नहीं होगी। मैं तुम्हें एक-से लबादे और परदे में इकट्ठा कर दूँगा और इस तरह तुम्हें एक-दूसरे का साथी बना दूँगा।"

अब इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस संसार में हमारा कोई लक्ष्य है, कोई ऐसी हस्ती है 'जिसकी हमें खोज है' और जिसके लिए यह शाही तम्बू [संसार] खड़ा किया गया है। बाक़ी लोग उसके अनुयायी हैं, और उसके दास हैं। यह तम्बू उसके लिए है, वह इस तम्बू के लिए नहीं। उस हस्ती की, 'जिसकी खोज है', खोज करनेवाले लोग हैं, लेकिन खोज में लगा हर व्यक्ति उस तक नहीं पहुँच सकता। केवल वही पहुँच सकता है जिसे वह चाहे। अपने बल-बूते पर कोई भी जिज्ञासु उसे नहीं पा सकता। उसे कोई तभी पा सकता है जब वह अपने आप को उसके सामने प्रकट कर दे।

जिस जिज्ञासु ने इस संसार से और इसकी विद्याओं से मुँह मोड़ लिया है और [अपने अन्दर] इतने सूक्ष्म मण्डलों में उसकी खोज की है,

* तातार (तुर्किस्तान का एक इलाक़ा) का वासी। फ़ारसी लोग इस शब्द का प्रयोग मनुष्य के मन के विद्रोही, उग्र तथा विनाशकारी पहलुओं के प्रतीक के रूप में करते हैं।

जिसे उसकी लालसा है, जो उसका स्वागत करने के लिए तैयार है, उसके सामने अगर एक बार वह अपने को प्रकट कर दे तो यह निश्चित है कि वह जिज्ञासु फिर उससे बिछुड़ेगा नहीं।

यह ज्ञान [परमात्मा के अस्तित्व का अनुभव] परिश्रम के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह ज्ञान पाने के लिए अगर कोई आकाश-पाताल एक कर दे, तो भी और ज़्यादा निराशा ही उसके हाथ लगेगी और उसकी आँखों पर और ज़्यादा परदे पड़ जायेंगे। इस स्थिति से वह तभी बच पायेगा अगर वह परमात्मा के संसार में बिना किसी अहं के [उस लक्ष्य को सिद्ध करने के उद्देश्य के बिना] परिश्रम और सेवा करेगा। अगर मैं तुमसे यह कह दूँ कि वह मैं हूँ 'जिसे खोजा जाता है', तो मौलाना मुझसे दूर रहेंगे। भाग्यशाली है वह जो 'उसको' खोजता है और उसके पास पहुँच जाता है, और जिसके पास 'वह' पहुँच जाता है।

'जिसकी खोज की जाती है' और जो निर्मल तथा शक्तिशाली है, वह उन लोगों के लिए आता है जो परमात्मा की खोज में लगे हैं।

705 — मैं जब बोलता हूँ तो मेरे शब्दों में वह [असली आन्तरिक] 'अर्थ' ज़रूर होता है, वह हमेशा मेरे साथ रहता है। मैं चाहे कितना ही बातचीत में व्यस्त हो जाऊँ, वह 'अर्थ' मेरे पीछे लगा रहता है, पूछता रहता है: कहाँ भागे जा रहे हो? मैं चाहे कितना ही पाप कर लूँ, मुझे माफ़ी मिल जाती है।

शम्स हमेशा एकाग्रचित्त रहते थे।

708 — मैंने यह नहीं कहा कि शम्स अल-दीन एक सन्त [वली] है। मुझ पर झूठा इलज़ाम लगाया गया है। मैंने तो यह कहा था कि शम्स अल-दीन जिस किसी को भी बददुआ देता है, वह व्यक्ति तो सन्त है, बशर्ते कि वह बददुआ उस तक पहुँच जाये।

708 — कल्पना करो कि अगर 'प्रियतम' किसी से बात करे तो क्या होगा। अगर 'वह' ख़ुश हो जाये और एक सत्तर साल के नास्तिक पर एक बार भी दया-मेहर की दृष्टि डाल दे, तो उसमें रत्ती भर भी नास्तिकता नहीं रह जायेगी। उसकी नास्तिकता परमात्मा में पूरे विश्वास और आत्मसमर्पण में बदल जायेगी।

711-2 — पवित्रता प्राप्त करने का विज्ञान, और इसके अधीन धार्मिक न्यायशास्त्र के जितने भी नियम हैं, सबसे सरल विज्ञान है। न्यायशास्त्र के सिद्धान्त अधिक कठिन हैं और धर्मविज्ञान के सिद्धान्त और भी अधिक कठिन। सबसे अधिक कठिन विज्ञान दर्शनशास्त्र और आध्यात्मिक विज्ञान हैं जिनके आधार पर वैज्ञानिक, पैग़म्बरों को चुनौती देते हैं। तलवार का डर न होता तो उन्होंने एलान कर दिया होता कि उनका बताया रास्ता सच्चा रास्ता है। इस तरह की बातें करना हर हालत में मूर्खता है। प्लेटो और उसके अनुयायियों ने कहा था, "अगर हर कोई हम जैसा होता तो पैग़म्बरों की ज़रूरत ही न होती," और यह कहना भी मूर्खता है।

अगर प्लेटो को पता लग जाता कि कोई व्यक्ति किसी अदृश्य साधन से मिट्टी को सोना बना सकता है, और अगर वह ख़ुद भी ऐसा कर सकता, तो फिर तो वह उसका भाई हो जाता। पर प्लेटो ऐसा नहीं कर सकता और जानता है कि वह व्यक्ति उससे श्रेष्ठ है, तो फिर उसे उस व्यक्ति का अनुयायी बनने की ज़रूरत क्यों महसूस नहीं होती?

महात्मा सबसे अधिक बुद्धिमान् होते हैं। लेकिन यह जादूगर [शैख़] उनसे बड़ा महात्मा है क्योंकि वे उसके कार्यों से चकरा जाते हैं, और जब उन्हें समझ नहीं पाते तो उन्हें मानने से इनकार कर देते हैं।

करामातें जादू के कौतुकों से अधिक प्रभावशाली होती हैं। पैग़म्बर जब चाहें करामात कर सकते हैं, लेकिन जादू के कौतुक दिखानेवाला व्यक्ति जो परमात्मा का भक्त [शैख़] न हो, ऐसा नहीं कर सकता। पैग़म्बर भी शैख़

का साथ चाहते हैं जो दार्शनिकों से भी बड़ा दार्शनिक होता है, और दूसरे सब लोगों से ज़्यादा बुद्धिमान् होता है। इसलिए कितना भाग्यशाली है वह व्यक्ति जिसे किसी शैख़ का साथ मिल गया है!

जहाँ तक तुम लोगों [रूमी के प्रशंसकों] का सम्बन्ध है, तुम्हारे पास वह बुद्धि नहीं है जो तुम्हें दूरदर्शी बना देती। तुम्हारे पास वह ज्ञान नहीं है जो इस बात के लिए ज़रूरी है कि तुम्हें अपनी करनी पर पछताना न पड़े, या यह न कहना पड़े, "काश! मैंने किसी और तरह से काम किये होते।" इसलिए दरवेश की बातों से तुम्हें कोई फ़ायदा कैसे होगा? जब तुम घटिया चीज़ का भी लाभ नहीं उठा सकते तो बढ़िया चीज़ का लोभ करने का तुम्हें क्या अधिकार है?

रूमी के अनुयायियों को उनकी अज्ञानता
के लिए करारी फटकार।

712—परमात्मा से अपने प्रिय मित्रों की रक्षा के लिए प्रार्थना करने के सिवा मुझे और कोई काम नहीं था। हज़रत मुहम्मद और उनके अनुयायियों की यही परम्परा रही है। हज़रत मुहम्मद ने ख़ुद यही प्रार्थना की थी, "मेरे लोगों को राह दिखाओ क्योंकि ये नादान हैं।"

718—मेरा मन इतना मेरे बस में है कि अगर लाख प्रकार के खाने और स्वादिष्ट पकवान भी, जिनके लिए और लोग अपनी जान भी दे दें, मेरे आगे रख दिये जायें तो मेरी खाने की इच्छा बिलकुल नहीं होगी। जब तक मुझे सचमुच भूख नहीं होगी, मैं नहीं खाऊँगा। अगर मैं ठीक समय पर जई की रोटी भी खाता हूँ तो यह समय से पहले कोई स्वादिष्ट वस्तु खाने से बेहतर है।

आज्ञाकारी मन का इन्द्रियों पर नियन्त्रण होता है।

718—आप हमें अपनी कोई निशानी क्यों नहीं देते? आपने हमसे एक निशानी ली थी, इसलिए हमें भी अपनी एक निशानी दे दें ताकि हम आपको याद करते रहें। हमने अपने कुछ मित्रों को अपने ही तौर-तरीक़े अपनाने की छूट दे दी है। हममें इतनी हिम्मत नहीं है कि उन पर हुक्म चला सकें, लेकिन हमारे कुछ ऐसे मित्र हैं जिन्हें हम हुक्म दे सकते हैं। इसमें ज़्यादा बल है।

दिल में तुम्हें मैं नहीं रखता हूँ,
क्योंकि घायल हो जाओगे।
आँखों में भी नहीं रखता हूँ
क्योंकि छोटे हो जाओगे।
न दिल में न आँखों में
रूह में लेकिन तुम्हें रख लूँगा,
ऐसा करने से तुम मेरी
अन्तिम साँस से जुड़ जाओगे।

तुम्हारे लिए इस प्यार में कोई
मेरे सिवा टिका नहीं रहता।
सिवा मेरे खारी दलदल में
कोई भी बीज नहीं है बोता।
दोस्त और दुश्मन दोनों आगे
करता हूँ मैं बुराई तुम्हारी।
इसलिए कि मेरे अलावा
तुमसे प्यार करे न कोई। (रूमी)

प्रेम के विषय पर रूमी से एक उद्धरण लेकर शम्स
उनके लिए अपना प्रेम व्यक्त करते है।

719 — कभी-कभी कोई प्रेमी 'प्रियतम' की बुराई कर देता है, और इससे कोई नुक़सान नहीं होता। लेकिन अगर कभी उसका नुक़सान हो जाये तो बड़े दु:ख की बात होगी।

जिस दिन मैं परमात्मा से सोना माँगूँगा, देना और माँगना एक ही बात होगी।

परमात्मा से एकरूपता।

729 — मौलाना मुझे काम नहीं करने देंगे। सारे संसार में मेरा एक ही मित्र है, क्या मैं उसकी इच्छा की उपेक्षा कर सकता हूँ? मैं जानता हूँ वे क्या चाहते हैं, फिर यह कैसे हो सकता है कि मैं वह न करूँ? तुम लोग मेरे मित्र नहीं हो, मेरी मित्रता के अधिकारी तुम कैसे हो सकते हो? अगर कोई मेरे शब्द सुन रहा है तो केवल मौलाना रूमी की कृपा से। क्या किसी ने कभी मेरे शब्द सुने हैं? या क्या मैं कुछ कह रहा था? इब्राहीम, तुम तो उस स्कूल में आये थे, क्या तुमने मुझे वहाँ एक शिक्षक के रूप में नहीं देखा? फिर भी, हो सकता है कि कोई 'मनुष्य' गुप्त रूप से परमात्मा की सेवा करे। पर गुप्त रूप से की गई सेवा की तुलना खुल्लमखुल्ला की गई सेवा से कैसे की जा सकती है? जब मैं लोगों में प्रवचन करता हूँ तो ध्यान से सुनो, क्योंकि मेरा प्रवचन रूहानी राज़ों के बारे में होगा। अगर मेरी बातों को जो मैं आम सभाओं में कहता हूँ, कोई सीधी-सादी बाहरी बातें समझेगा तो उसे न उनसे कोई लाभ होगा, न मुझसे। उसे कुछ भी हासिल नहीं होगा। अधिकतर राज़ आम सभाओं में प्रकट किये जाते हैं। हो सकता है कि चुटकुला सुनाने में ही सतर्कता से छिपाया गया कोई गहरा राज़ प्रकट कर दिया जाये।

सन्तों का प्रवचन कोई-कोई ही समझ पाता है।

729-30 — मैं न बुलाऊँ तो भी आपको मुझसे मिलने आना चाहिए। प्यार इसी को कहते हैं। अगर मैं इस बार चला जाऊँ तो आप अपने आप आना शुरू कर देंगे, मुझे आपको बुला भेजने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। मैंने "अगर"

कहा था, यह नहीं कि "यह निश्चित है" मैं चला जाऊँगा। लेकिन प्रेमी के लिए "अगर," "जब तक कि," "मैं चाहता हूँ," और "मैं सोचता हूँ," ऐसे शब्द सुनना भी दु:खदायक होता है।

शम्स रूमी से बात कर रहे हैं।

732 — मौलाना, मैंने उनसे साफ़-साफ़ कह दिया है कि मेरे शब्द उनकी समझ के दायरे से परे हैं। अब आप उन्हें बतायें। सर्वशक्तिमान् परमात्मा ने मुझे निरर्थक विषयों पर प्रवचन करने या उदाहरण देने का आदेश नहीं दिया है। मैं तो उस सत्ता के बारे में बातें करता हूँ, और उन बातों को समझना उनके लिए कठिन है। मैं उसी सत्ता के एक और पहलू पर प्रकाश डालता हूँ, और वह उनके लिए परदे के ऊपर एक और परदा बन जाता है। मेरा हर शब्द अपने अन्दर एक और शब्द छिपाये रखता है। लेकिन मौलाना, आप पर यह बात लागू नहीं होती क्योंकि आप मेरी बात समझते हैं। तभी तो मैंने दिल खोलकर आपको प्यार दिया है।

जब मौलाना ने एक बार उन लोगों से बात कर ली तो उन्होंने हार मान ली, क्षमा माँगी, और चले गये।

शम्स रूमी से बात करते हैं जो उनकी बातें समझते हैं, जब कि दूसरे लोग नहीं समझते।

734 — हम शम्स को आक़सरा या क़ैमाज़ कारवाँ सराय [कोन्या के निकट दो स्थान] से इसलिये नहीं लाये थे कि तुम उनके साथ अशिष्टता का व्यवहार करो। मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ, इस सर्दी के मौसम में किसी दूसरे देश अलैप्पो से आया हूँ। अगर मुझे विश्वास न होता कि रूमी में 'सत्य' को ग्रहण करने की क्षमता है, तो मैं क्यों आया होता? चाहे रूमी का कथन, "आपके पन्द्रह साल के धैर्य के लिए आपको शाबाश!" सच्चा है, लेकिन उन्होंने यह बात प्रश्न के तौर पर नहीं कही। पर असल में, यह प्रश्न ही है,

और उनका प्रश्न यह था, "यह कैसे सम्भव है?" मैं कहता हूँ ध्यान से सुनो, क्योंकि मौलाना रूमी जैसे व्यक्ति के प्रश्न का उत्तर उनके व्यक्तित्व के अनुकूल होना चाहिए। उत्तर यह है, "जिस भक्त की प्रभु को तलाश रहती है, उसमें प्रभु के सब गुण मौजूद होते हैं, इसलिए उसकी शक्ति उतनी ही अथाह होती है जितना उसका धैर्य।" इसलिए जब तुम किसी और के धैर्य की उसके [शम्स के] धैर्य के साथ तुलना करते हो तो उसका धैर्य ज़्यादा लगता है। लेकिन जब उसके धैर्य की तुलना परमात्मा के धैर्य के साथ करते हैं तो पन्द्रह साल का समय बहुत कम होता है, और यह समय पन्द्रह साल हो या हज़ार साल, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

सन्त के असीम धैर्य पर शम्स की टिप्पणी।

734-5—सर्वशक्तिमान् परमात्मा में एक सुगन्ध है जिसको हम वैसे ही अनुभव कर सकते हैं जैसे कस्तूरी और अम्बर की सुगन्ध को, लेकिन वह सुगन्ध इतनी मधुर है कि कस्तूरी और अम्बर की सुगन्ध से उसकी तुलना नहीं की जा सकती।

जब परमात्मा प्रकट होना चाहता है तो पहले सुगन्ध आती है जो उसके आने का संकेत होती है और मनुष्य को मदमस्त कर देती है।

जब मैं जवान था तो उस सुगन्ध ने मेरा असली ध्यान मूलभूत विषय [आध्यात्मिक ज्ञान] की तरफ़ मोड़ दिया। मैं अपने आप से पूछता था, "खाने या सोने का क्या मतलब है? जब तक मैं पहले ख़ुदा को न देख सकूँ जिसने मुझे इस तरह का बनाया, या जब तक वह बिना किसी माध्यम के मुझसे बातें न करे और मैं उससे तरह-तरह के सवाल न पूछ सकूँ जिनका वह जवाब दे, तब तक मैं कैसे कुछ खा सकता हूँ या सो सकता हूँ? क्या मैं इसलिए आया हूँ कि आँखें मूँदकर केवल खाता रहूँ?" जब मैं उससे एक बार आमने-सामने बातचीत कर पाऊँगा, तभी कुछ खा सकूँगा और सो सकूँगा। जब मैं यह जान लूँगा कि मैं कैसे आया हूँ और कहाँ जाऊँगा,

मुझे कौन आज़ादी दिला सकता है और मेरा अन्त क्या होगा, तो मैं आज़ादी से और हलके मन से जी सकूँगा।

यही कारण है कि मैं बचपन से ही नहीं भटका। अगर किसी माँ का एक ही बेटा हो—सुन्दर और अच्छा बेटा, और वह आग में हाथ डाल दे, तो वह माँ उसे बचाने के लिए कैसे कूद पड़ेगी! ऐसे ही परमात्मा की सुगन्ध ने मुझे बचाने के लिए मुझे पकड़ लिया था।

शम्स को बचपन से ही परमात्मा को पाने को धुन सवार थी।

739—आओ, मैं तुम्हारे कान में धीरे से कह दूँ कि अगर मैं कुछ करना चाहूँ और परमात्मा भी मुझे रोकना चाहे, तो मैं उसकी बात नहीं सुनूँगा।

739—मैं तुम्हें संक्षेप में बताता हूँ। मुझे परमात्मा के ऐसे भक्तों से बात करने की ज़रूरत नहीं पड़ी जो आम लोगों से छिपे रहे हों। उन्हें जब मौक़ा मिला तो उन्होंने आकर केवल मेरी सेवा की। बस इतनी-सी बात है। मैंने मौलाना रूमी के अलावा और किसी से कभी बात नहीं की।

740—परमात्मा को अपने भक्त से बहुत प्रेम होता है। अगर मैं घटिया कपड़े पहनता हूँ तो अपनी मरज़ी से। परमात्मा की तो मुझ पर दया ही दया है, वह मुझे खुले हाथों देता है। लेकिन, जहाँ तक ख़ुद मेरा सवाल है, मैं कभी दया दिखाता हूँ और कभी शक्ति। अकेली दया से मैं ऊब जाता हूँ।

740—वह यह 'शब्द' था जिसने युवावस्था में मेरी भूख चुरा ली थी। मैं तीन-चार दिन कुछ नहीं खाता था। इसलिए नहीं कि किसी ने मुझसे कुछ कह दिया था, बल्कि उस परमात्मा के 'शब्द' के कारण जिसके बराबर कोई नहीं है।

मेरे पिता कहते थे, "ओह, मेरा बेटा कुछ नहीं खाता।" मैं कहता था, "लेकिन मैं असल में कमज़ोर तो नहीं हो रहा। मुझमें इतनी शक्ति है कि

आप चाहें तो मैं परिन्दे की तरह खिड़की में से उड़ जाऊँ।" हर चौथे दिन मुझे पल भर के लिए कुछ भूख महसूस होती थी और फिर ख़त्म हो जाती थी। मैं एक ग्रास भी नहीं निगल सकता था।

मेरे पिता पूछते थे, "तुम्हें क्या हो गया है?" मेरा जवाब होता था, "कुछ नहीं। क्या मैं पागल हूँ? क्या मैंने किसी के कपड़े फाड़ दिये हैं?" वे पूछते थे, "लेकिन क्या तुम कुछ खाओगे?" जवाब में मैं कहता था, "आज नहीं।" वे कहते थे, "क्या कल खाओगे? क्या अगले दिन, या उससे अगले दिन?"

अपने शहर के और लोगों का तो क्या कहूँ, मेरे पिता भी मेरी हालत नहीं समझ पाते थे। मैं अपने शहर में एक अजनबी था, और मेरे पिता मेरे लिए किसी दूसरे देश के वासी थे। मेरा मन उनसे फिर गया था। वे मेरे साथ प्यार से बात करते थे, लेकिन मुझे ऐसा लगता था कि वे मुझे पीट रहे हैं, घर से बाहर निकाल रहे हैं। मैं मन ही मन सोचता था, "अगर मेरा अस्तित्व उन्हीं के अस्तित्व से बना है तो मेरा व्यक्तित्व उनके जैसा ही होना चाहिए, और हम दोनों के साथ रहने से उसमें निखार आ जाना चाहिए।" लेकिन यहाँ तो ऐसी हालत थी जैसे बतख़ के अण्डे को मुर्ग़ी के नीचे रख दिया गया हो।*

शम्स एक ऐसी आत्मा थी जिसके भाग्य में
परमात्मा से मिलाप लिखा था।

743—याद रहे, यह मेरा हुक्म है, मेरी इच्छा है, कि जो मैं कहता हूँ उस पर अमल करो। मेरे शब्द केवल दोहराने के लिए नहीं हैं। जो कुछ भी हुआ है, इसलिए हुआ है कि उन्हें केवल दोहराया गया था। मेरे शब्दों को बिलकुल मत दोहराओ। अगर कोई उनके बारे में पूछे तो जवाब दो, "हमने ऐसे शब्द सुने जो सुन्दर थे, मनमोहक थे, आयु को दीर्घ करनेवाले थे, और मन को भाते थे। मैं उन्हें दोहरा नहीं सकता। अगर तुम उन्हें सुनना चाहते हो तो जाओ, जाकर ख़ुद सुनो।"

---

* देखें इस अध्याय का खण्ड 77

अगर वह मेरे पास आता है तो मैं पहचान लूँगा। अगर मैं उसे बताना चाहूँगा तो बताऊँगा, बशर्ते कि वह इस योग्य हो, या अगर मैं उसे नहीं बताना चाहूँगा तो नहीं बताऊँगा।

शम्स अमल करने पर ज़ोर देते हैं, उनके शब्दों को दोहराना या
उनकी व्याख्या करना उन्हें पसन्द नहीं।

750—शब्द गुण बताते हैं। परमात्मा अपने आप को गुणों की सीमा में इसलिए छिपाता है ताकि वह इनसानों तक पहुँच सके। जब तक वह अपने आप को इस सीमा में न रखे, वह उन लोगों तक कैसे पहुँच सकता है जो सीमित हैं? सीमित रहना और असीम हो जाना उसके हाथ में है। मैं यह बातें इसलिए कह रहा हूँ कि जब मैं बोलता हूँ तो मज़ा किरकिरा हो जाता है। परमात्मा के गुण जिस किसी में भी हों, वे उस पर एक ऐसा बोझ होते हैं जिससे वह छुटकारा नहीं पा सकता। करामातें और जादूगरी इनसान के गुण हैं। परमात्मा करामातें नहीं करता। अपने गुण वह उस पर प्रकट करता है जो उसका विशेष भक्त होता है।

शम्स को शब्द अच्छे नहीं लगते क्योंकि वे जानते
हैं कि ये केवल परदों का काम करते हैं।

751—जब तुम किसी शैख़ की संगति में होते हो तो समझो बाक़ी सब शैख़ भी वहाँ उपस्थित होते हैं, और चालीस दिन एकान्त में बिताये बिना तुम स्थायी एकान्त प्राप्त कर सकते हो। तुम्हें ऐसा लगेगा कि तुम हमेशा एकान्त में हो। जब कोई व्यक्ति परमात्मा के भक्तों की संगति में आ जाता है तो परमात्मा उसे स्थायी एकान्त प्रदान करता है।

जो व्यक्ति मेरा शिष्य और अनुयायी नहीं है तो मैं उसका दिल दुखाने के लिए क्यों कुछ कहूँगा जिससे वह राह से भटक जाये? हाँ, मौलाना रूमी से तो मैं हर हालत में कुछ न कुछ कहूँगा। उस दिन मुझे मालूम नहीं

था कि मैं जो कहूँगा वह उनके अहं में हलचल पैदा कर देगा। अगर बात करने से पहले मुझे उनकी भावनाओं का सोचना पड़े तो मैं उनसे कभी बात न करूँ। अगर वे मेरे साथ शिष्टाचार निभाना चाहें तो मैं कहूँगा, "नहीं मौलाना, मैं पहले वह बात कह लूँ जो ज़रूरी है और जो कहना मेरा फ़र्ज़ है। यह शिष्टाचार तुम दूसरे शैख़ों के साथ करना।"

शम्स वही करते हैं जो रूमी के लिए हितकर हो।

751—परमात्मा का आदेश है कि तैयार रहो और योग्य बनो। यह आदिकाल से चला आ रहा आदेश है, इसका आधार परमात्मा का 'शब्द' है जो अनन्त है और नित्य है। लेकिन यह कानों तक नहीं पहुँचता क्योंकि कानों में गन्दगी भरी है और आँखों में भी गन्दगी ही गन्दगी है, जब कि 'शब्द' [कलाम] सूक्ष्म है, उसकी शान निराली है। परमात्मा ने इस दास [शम्स] को उस 'शब्द' के बारे में बात करने के लिए, 'शब्द' को साकार करने के लिए पैदा किया ताकि खोज करनेवाले उस तक पहुँच सकें।

752—जब हम देखते हैं कि किसी को किसी चीज़ में आसक्ति हो गई है, तो हम उसे उस वस्तु को छोड़ देने को नहीं कहते, ताकि उसको कोई दु:ख न हो। हम उस व्यक्ति को उसी हालत में रहने देते हैं, जब तक कि वह समय नहीं आ जाता जब कोई आसक्ति रहती ही नहीं, वैसे ही जैसे घाव के ठीक हो जाने पर पट्टी उतर जाती है।

753—बचपन में जब मैं खेल रहा होता तो मेरी आध्यात्मिक अवस्था जुनैद और बायज़ीद जैसी होती थी, और मैं जानता था कि वे क्या कर रहे हैं। अब बादशाह का बेटा ख़ुद बादशाह बन गया है। वह मैदान में चौगान खेलता है और गेंद को मारता है। इस स्थिति की कल्पना करो! बच्चे के खेल और भाग्य के खेल का अन्तर हर कोई जानता है। वह मैदान में भाग्य

का गेंद अपने कब्ज़े में ले लेता है और फिर किसी दूसरे को दे भी देता है। परमात्मा ने चाहा तो आप [रूमी] दिलचस्प चीज़ें देखेंगे जो देखने योग्य हैं। परमात्मा की खोज का उल्लेख

प्रतीक के माध्यम से किया गया है।

753—मैंने उनसे कहा कि मेरे सामने शराब न पियें। वे बोले: हम क़ाज़ी हैं और मसजिदों व मदरसों की ज़िम्मेदारी हम पर है, इसलिए हम खुलेआम पीने से डरते हैं। लेकिन अगर कोई अपनी कमाई पर निर्भर करता है तो खुले बाज़ार में पीने से क्यों डरे? उनके शब्दों से मेरे मन में घृणा उत्पन्न नहीं हुई, क्योंकि अगर मैं शराब के मटके में भी बैठ जाऊँ तो मेरी इबादत छूट नहीं जायेगी। इसमें मेरा क्या नुक़सान है? लेकिन मुझे जवानी से ही शराब अच्छी नहीं लगी। मैं इससे भागता ही रहा हूँ। जब मैं किसी को इसके नशे में धुत देखता तो यह सोचकर मुझे घृणा होती कि वह मुझे परेशान करेगा। इसलाम में शराब पीना मना है, लेकिन शम्स

क्योंकि परमात्मा से एक हो चुके थे, इसलिए अगर
वे शराब में डूब भी जाते तो, उनके शब्दों में,
"मेरा चोग़ा अपनी इबादत खो नहीं देगा"।

756-7—कोशिश करो कि इस सम्बन्ध के बीच में कोई परदा न आ जाये। मैंने तुमको बता दिया है कि परमात्मा से प्रार्थना कैसे करें: "हे प्रभु, तुमने हमें यह सौभाग्य प्रदान किया है। हमारी इस तक पहुँच नहीं थी। तुमने ही कृपा करके यह हमें दिखा दिया है। फिर दया करो और इसे हमसे वापस न लो।" यह सौभाग्य तुमसे शैतान नहीं, परमात्मा की ईर्ष्या छीनेगी। जिस तरह उसकी दया से यह तुम्हें प्राप्त हुआ है, उसी तरह उसकी ईर्ष्या इसे तुमसे चुराना चाहेगी। फिर भी, अगर संयोग से जुदाई के कुछ दिन आ ही जायें, तो उत्साह के साथ जल्दी कोशिश करो ताकि तुम्हारा फिर मिलाप हो जाये।

मेरी अवस्था ऐसी है कि न तो बच्चे और न ही और कोई चीज़ मेरे लिए परदा बनेगी। अपनी खोज में तुम इतना उत्साह, इतना जोश भरो कि अगर वह जोश किसी को छू ले तो वह भी तुम्हारा साथी बन जाये। ऐसा न हो कि तुम पहली बार की तरह निरुत्साह हो जाओ।* अगर जोश की इस अवस्था में तुम्हें अपने अन्दर कोई अनुभव हो जाये तो वह कितना शुभ होगा! और तब अगर कोई तुम्हारे रास्ते में रुकावट डाले तो वह शैतान होगा। पहले काम परमात्मा की ईर्ष्या ने किया, लेकिन अब शैतान को मौक़ा मिल गया है।

अगर तुम पूरी तरह मेरे अनुयायी नहीं बन सकते तो मुझे कोई परवाह नहीं। मुझे न तो मौलाना की जुदाई से दु:ख होता है, न उनके साथ मिलाप से ख़ुशी। दु:ख और ख़ुशी मुझे अपने अन्दर से मिलते हैं। अब मेरे साथ रहकर जीना मुश्किल है। मैं वह नहीं हूँ जो तुम समझते हो मैं हूँ। मैं वह नहीं हूँ।

क़ुरबान करो तुम जान अपनी।
करो गर धोखा फ़रेब उससे,
मिलाप अपना नहीं बख़्शता 'वह'।
शरीअत† के मटके से कभी भी,
न मिले शराब शराबियों को।
ख़ुदा से एक हो गये हैं जो,
बैठ इकट्ठे शराब वे पीते,
घूँट एक न उन्हें दिया जाता
जो इबादत ख़ुदी की हैं करते। (रूमी)

परदों और अनासक्ति के बारे में शम्स के शब्द।

---

* यह उस वक़्त का ज़िक्र है जब शम्स पहली बार कोन्या गये थे और उन्होंने रूमी के शिष्यों को शिक्षा देने का प्रस्ताव रखा था।

† शरीअत के आचरण-सम्बन्धी नियम।

757 — *नज़र नहीं आता मुझे जब प्रियतम का मुखड़ा,*
तो लाभ क्या 'बहार' की हरियाली का?
या शोक में डूबकर बाग़ में बैठने का?
बजाय घास और फूलों के काँटा भी
उग सकता था बाग़ में।
बजाय बूँदों के पत्थर भी
बरस सकते थे बादल से। (अज्ञात)

धन-सम्पत्ति या पद पाने से मुझे इतनी ख़ुशी नहीं होती जितनी आपके [रूमी के] साथ रहकर होती है। अगर मैं तब्रीज़ जाता हूँ तो वहाँ मेरा बहुत आदर-सम्मान होता है, लेकिन आपके साथ बैठना वहाँ सम्मान पाने से अधिक आनन्द देता है। अगर कोई मुझे ऊँचा पद और धन दे दे लेकिन मेरी बातों को न समझे, तो मुझे ख़ुशी कहाँ? ख़ुशी तो मुझे तब होती है जब कोई मेरी बातों को समझता है।

खोज ऐसी जोश-भरी होनी चाहिए कि जोश की आग से जलने के डर से कोई भी परदा बीच आने की हिम्मत न करे।

759-60 — मैं सर्वशक्तिमान् परमात्मा से प्रार्थना कर रहा था कि मुझे अपने सन्तों [औलिया] की संगति प्रदान करे और मुझे उनका साथी बना दे। मैंने सपने में सुना कि मेरा किसी सन्त [वली] से मिलाप होगा। मैंने पूछा कि वह कहाँ है। अगली रात सपने में मैंने सुना कि वह रूम में है। कुछ समय बाद एक और सपने में मुझे बताया गया कि अभी समय नहीं आया है। "सब कुछ अपने समय से होता है।"

अपने ख़ास शिष्य से मिलने से बहुत पहले ही
शम्स को उसका पता चल गया था।

760-1—मौलाना ने क्या हुक्म दिया है? क्या उन्हें मेरा अकेले घूमना अच्छा नहीं लगता? लेकिन जब मैं अकेला होता हूँ तो पूर्णतया निश्चिन्त होता हूँ। मैं घूमता-फिरता रहता हूँ और जिस भी दुकान में चाहता हूँ बैठ जाता हूँ। उनका तो परिवार है, और वे शहर के मुफ़्ती* हैं। मैं उन्हें हर जगह अपने साथ नहीं ले जा सकता। मैं तो हर किसी गड्ढे में झाँकता रहता हूँ।

मैं आपको [रूमी को] बता देना चाहता हूँ कि मैंने आपके साथ कभी ऐसा व्यवहार नहीं किया जैसे मैं आपका मुर्शिद होऊँ, और मैंने आपके रुतबे की परवाह न करते हुए कह दिया, "आपको अच्छा लगे या न लगे, मैं वहाँ जा रहा हूँ। अगर आप मेरे हैं तो आप भी आ जायेंगे।" बल्कि जो काम करना आपको मुश्किल लगे, उसे करने की आपको कोई ज़रूरत नहीं। जब आप इस तरह दिखावे के लिए मेरे पास बैठते हैं तो मेरे दिल को ठेस लगती है।

चहेते शिष्य के प्रति गुरु की सहानुभूति।

763—इधर आओ, मैं तुम्हें 'प्रियतम' के बारे में, 'जिसकी खोज होती है', एक राज़ बताऊँगा। संसार में ऐसा कोई चिह्न नहीं है जिससे उसका पता लग सके। सब चिह्न खोज करनेवाले के ही होते हैं, 'प्रियतम' के नहीं। सारी बात जिज्ञासु के बारे में ही होती है, और 'प्रियतम' सच्चे जिज्ञासु के सिवा और किसी के सामने नहीं आता। कोई व्यक्ति सच्चा जिज्ञासु तभी होता है जब वह अपनी खोज की रोशनी में किसी का माथा देखकर ही यह जान लेता है कि कोई कितना भाग्यशाली है या निष्ठुर है। सच्चा जिज्ञासु यह देखने आता है कि कहीं कोई ऐसे जिज्ञासु न हों जिनका उससे सम्बन्ध हो 'जिसे खोजा जाता है', और वे न तो आराम कर सकते हैं और न चैन से बैठ सकते हैं [जब तक कि वे अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते।]

---

* मुफ़्ती को मज़हबी क़ानून के मामलों में राय देने का अधिकार होता है।

सन्त उनसे कहता है, "आ गया हूँ मैं, वह अनुपम मोती। मैं ही हूँ 'वह हस्ती जिसकी खोज होती है'! मैं संसार में देखने (खोजने) के लिए आया हूँ।" केवल तब जिज्ञासु कहेंगे, "अब हम आराम करेंगे, यहाँ ठहरेंगे।" वह जवाब देता है, "यह ठहरने की जगह नहीं है।" वे कहते हैं, "तो अब हम चलते हैं।" वह कहता है, "फिर भी आओ, कुछ दिन इकट्ठे देखें। अब हम हर रोज़ मेरी रोशनी में से देखते हैं।"

'जिसकी खोज होती है' वह [शम्स] सोलह साल से 'मित्र' का चेहरा देखता रहा है ताकि वह खोजी [रूमी] इतने समय के बाद आख़िर उसे बातचीत के योग्य समझ ले।

'जिसकी खोज होती है' वह धैर्य और आत्मसमर्पण की भावना से प्रभु की प्रतीक्षा करता है।

764—पूरे संसार में सारी बात खोज करनेवालों के बारे में ही होती है। 'जिस हस्ती की खोज की जाती है', उसका कोई निशान कहाँ होता है? मैं सुन रहा हूँ...जब वह हस्ती 'जिसकी खोज होती है' [सन्त] इस संसार को छोड़कर जाना चाहती थी, उस समय उसमें और परमात्मा में जो वार्ता हुई, वह क्या तुमने सुनी? तब परमात्मा ने कहा था, "पर तुम जा कहाँ रहे हो, मेरे प्यारे?" उस वार्ता के बाद जो हुआ उसके बारे में मैं क्या कह सकता हूँ? आख़िर परमात्मा ने उसे विदा किया। उस विदा करने का मतलब "अलविदा" नहीं था, बल्कि उस पर अपना परमस्नेह और दया-मेहर बरसाना था।

रुक जाओ! ओ ऊँट मेरे,
अब पूरी तरह ख़ुश हूँ मैं।
वक़्त आ गया है, सफ़र सफल हो गया है।
धरती लगती है सुन्दर स्वर्ग जैसी।

वापस आ गया है सब अपनी मूल एकता में।
और अब शुरू होता है जश्न! (अज्ञात)

सन्त का देहावसान: 'प्रियतम' से अनन्त मिलाप के लिए उसका ख़ुशी-ख़ुशी शरीर छोड़ना।

767—मुझे बचपन से ही परमात्मा से प्रेरणा मिलती रही है, इसलिए मैं अपनी बातों से मनुष्य को शिक्षा दे सकता हूँ ताकि वह अपने आप से, [अपने अहं से], छुटकारा पा ले और परमात्मा के मार्ग पर आगे बढ़ सके।

784—मैं किसी की नक़ल नहीं करता हूँ, और जो परमात्मा की सेवा करना चाहते हैं, उन्होंने मेरे वचन पहले ही सुने हुए हैं। मुझे बहुत-से दरवेशों से मुलाक़ात करने और उनकी संगति का मौक़ा मिला है। सच्चे, ईमानदार दरवेशों और धोखेबाज़, बेईमान दरवेशों में क्या अन्तर होता है, इसका मुझे उनकी बातों और उनके कामों से स्पष्ट ज्ञान हो गया है। जब तक कोई बहुत ऊँचे दर्जे का दरवेश न हो और उसका किसी भी चीज़ से कोई लगाव न रहा हो, मुझ ग़रीब का उस पर दिल नहीं आयेगा। यह दिल हर किसी पर नहीं आता, यह पंछी हर किसी चोगे पर चोंच नहीं मारता।

सीमुर्ग़* सब पक्षियों पर दृष्टि डालता है और उनकी तुच्छता और नीचता को ताड़ लेता है। लेकिन बाज़ में उसे कुछ महत्त्वाकांक्षा, कुछ नम्रता और कुछ ग्रहण करने की क्षमता दिखाई देती है। वह उस पर अपनी दया-दृष्टि डालता है, अपनी मेहर का साया करता है। दूसरे पक्षी थोड़ी देर उड़ते हैं, लेकिन आख़िर में गिर पड़ते हैं। बाज़ में चाहे सीमुर्ग़ को देखने की शक्ति नहीं है, लेकिन सीमुर्ग़ की दया-दृष्टि का उस पर प्रभाव तो पड़ता है,

* देखिए शब्दावली और परिचय।

और उसे एहसास हो जाता है कि उसके अन्दर सूक्ष्म रूप में बहुत कुछ विद्यमान है।

ग्रहण करने की क्षमतावाले शिष्य को गुरु की देन।

810—एक दिन शैख़ हाथ में एक सेब लिए हुए थे। उन्होंने ज़ैने तूसी से पूछा, "आप ख़ुदा से क्या माँगेंगे? मैने सेब माँगा था, और उसने वह दे दिया। बायज़ीद ने ख़ुदा से ख़ुदा को माँगा, किसी शख़्स ने कुछ चीज़ माँगी, और दूसरे ने कुछ और।" ज़ैन ने कहा, "मैं ख़ुदा से ख़ुदा को माँगता हूँ।" शैख़ ने पूछा, "क्या आप बायज़ीद के साथियों में से हैं?"

फिर उन्होंने वही सवाल मुझसे पूछा। मैं अभी बच्चा था, और मैंने अपने सिर से उन्हीं की तरफ़ इशारा किया, जिसका मतलब था, "मैं आपको माँगता हूँ।" तब उन्होंने अपना सिर झुकाया और दायें-बायें हिलाया। मैं बोल नहीं सका, मेरा मुँह खुला ही नहीं, लेकिन अपने अन्दर मैं शब्दों, बातों और मतलब से पूरा भरा हुआ था। यह अजीब बात थी। ऐसा कोई विरला ही होगा जो बचपन से ही ऐसा हो।

शम्स को बचपन से ही एहसास हो गया था कि उन्हें केवल गुरु की चाह थी।

813-4—मैं सारी दुनिया की तरफ़ से बेपरवाह रहा हूँ, लेकिन जब आप [रूमी] कहते हैं, "मैं ख़ुश नहीं हूँ" या "मेरा दिल घुटा जा रहा है," तो मेरे अन्दर एक हूक उठती है जिसका असर मेरी रूह पर पड़ता है, क्योंकि आप मेरी रूह में बसे हैं। मेरे प्रिय नेक इनसान, मेरे मित्र, आपको मेरे गले लगने की, क़िबला होने की या मेरी मालिश करने की प्रार्थना कविता के ज़रिये ही करनी होगी। मुझे अपने अन्दर ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि मुझे "माफ़ कर दिया गया है" [कि मेरी मौत नज़दीक आ रही है]। मेरे दूसरे छोर चले

जाने में अब थोड़ा ही समय बाक़ी है। मैं माफ़ी के समुन्दर में डूबा हुआ बहा जा रहा हूँ। हाँ, ऐसे निशान और संकेत मिल रहे हैं।

जिस जीवात्मा ने आध्यात्मिक उन्नति कर ली हो, उसे मौत का समय आने से बहुत पहले ही उसका ज्ञान हो जाता है।

859-60—जिज्ञासु का सफ़र विश्वास से शुरू होता है, और 'जिसकी उसे खोज होती है' उस तक पहुँच जाने पर ही ख़त्म होता है। जहाँ तक हमने इस दुनिया में कभी भी सुना है, 'जिसकी लोग खोज करते हैं', वह हस्ती द्रष्टा बनकर दुनिया को देखने के लिए ही आती है। वह हस्ती कहती है, "आख़िर आपकी एक और दुनिया है, और मैं उसे देखना चाहता हूँ।" परमात्मा जवाब देता है, "तुम मिट्टी से भरी इस जगह से क्या करना चाहते हो?" वह हस्ती पूछती है, "क्या यह सच नहीं है कि तुम्हारी दया-मेहर मेरे साथ है?" परमात्मा जवाब देता है, "यह इस बात पर निर्भर है कि मेरी मेहर तुम तक पहुँचना चाहती है या नहीं। मैं तुम पर और मेहर नहीं करना चाहता क्योंकि मुझे तुम पर अपनी [पहली] दया-मेहर से ईर्ष्या हो रही है।" तब 'जिसकी लोग खोज करते हैं', उस हस्ती ने कहा, "तो फिर मैं चिन्ता क्यों करूँ? मैं तो सिर्फ़ द्रष्टा बना रहूँगा।"

वह हस्ती सिर्फ़ द्रष्टा बनकर आई है। इस दुनिया में वह न तो परमात्मा को खोजने आई है, न पूर्णता प्राप्त करने।

वह हस्ती सिर्फ़ तमाशा देख रही है।

864-5—इस दौरे में मैंने इतना कष्ट भोगा है और मुझे इतनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है कि अगले दो साल में भी मेरी पीड़ा कम नहीं होगी। अगर हरजाने के तौर पर कोन्या को सोने से भरकर भी मुझे पेश किया जाये तो जो मुझे झेलना पड़ा उसकी भरपाई नहीं होगी। लेकिन आपकी [रूमी की] मित्रता की शक्ति बहुत प्रबल थी।

...सफ़र करना मेरे लिए बहुत कठिन है, लेकिन अगर मैं चला जाऊँ तो जो आपने पिछली बार किया उसे दोहराना मत, और मेरी आज्ञा का उल्लंघन मत करना। जो कुछ मैंने आपसे कहा था, आपने उसके बिलकुल उलट किया। मैं और सफ़र नहीं कर सकता और आक़सरा नहीं जा सकता, लेकिन अगर मुझे जाना ही पड़े तो मैं किसी दूसरी जगह रहूँगा ताकि वे लोग मुझे परेशान न करें। पहले मुझे जितना कष्ट उठाना पड़ा था, उसके कारण मैं अगले दो साल तक फिर सफ़र नहीं करना चाहूँगा, जब तक कि सफ़र ऊँट की परदेदार पालकी में न हो और मेरे मनपसन्द मित्रों का न साथ हो।

सच्ची मित्रता पर शम्स के विचार।